नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

भाग १३] जुलाई १९०८। [संख्या १

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥ १ ॥
करहु विलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल ॥ २ ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥ ३ ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न।
राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ ४ ॥

हरिश्चन्द्र।

औद्योगिक शिक्षा

अर्थात्

"औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षा का प्रचार भारतवर्ष में किस रीति से सफलतापूर्वक किया जा सकता है ? *"

[कुँअर प्रतिपाल सिंह लिखित।]

——:-o-:——

मनुष्य के जीवन के लिये (१) भोजन (२) गृह और (३) वस्त्र ये तीन अत्यन्त आवश्यक चीज़ें हैं। इनमें से यदि

* मध्यप्रदेश के कई एक हिन्दी प्रेमी सज्जनों ने इस विषय पर सबसे उत्तम लेख के लिये ५०) रु० का एक ग्रंथोत्तेजक पारितो-

एक का भी अभाव हो तो जीवननिर्वाह में कठिनता होती है। फिर ज्यों ज्यों समय बदलता जाता है और मनुष्य की रुचि बदलती और बढ़ती जाती है, इन तीनों पदार्थों की आवश्यकता भी नए नए उत्तम ढंगों से तथा अधिकता से बढ़ती जाती है। अतएव इन्हीं को पूरा करने में अगणित मनुष्यों का जीवननिर्वाह हो रहा है। वे निज निर्मित और आविष्कृत नवीन नवीन पदार्थों द्वारा मनुष्यों की आवश्यकताओं को उनकी रुचि के अनुसार पूरा करते हैं और साथही स्वयं अच्छा लाभ उठाते हैं।

स्वाभाविक पदार्थों के जीवन की आवश्यकतानुसार निर्मित करने को तथा लाभदायक कार्य को "उद्योग" कहते हैं।

उद्योग की वह शाखा जिसके द्वारा हृदयांगत सुन्दर विचारों की सहायता से मनोहर विचित्र और नवीन पदार्थ मनुष्य की रुचि के अनुसार तय्यार किए जाते हैं "कला" कहलाती है।

इन्हीं दोनों कर्मों के लिये किसी समय तक किसी को सिखाने पढ़ाने तथा ऊंच नीच समझा कर इन कार्यों के लिये निपुण कर देने को "औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षा" कहते हैं।

प्रचीन समय में समस्त संसार में इस शिक्षा का प्रा[illegible] ऐसा प्रबंध था कि विशेष उद्योग, कला और शिल्प की

षिक सभा द्वारा देना विचारा था और उसका रुपया सभा के पास जमा कर दिया था। यह लेख उस परितोषिक के योग्य समझा गया और इसके लेखक को रुपए के बदले में एक सोने का मेडल दिया गया—सम्पादक।

शिक्षा का कार्य विशेष विशेष कुलों और वंशों में होता था। बाप दादे की दुकानों में बैठकर धीरे धीरे बेटा अपना कार्य सीखता था और समय पर उसी उद्यम को करने लगता था। उस समय भारतवर्ष अपने हस्तनिर्मित उत्तम पदार्थों के लिये संसार भर में प्रख्यात हो रहा था। प्राचीन ग्रंथों से स्पष्ट है कि गगनचारी विमान और पशुपत्यास्त्र सरीखे कैसे कैसे विचित्र पदार्थ प्राचीन समय में भारत में तय्यार होते थे। उसके उपरान्त ऐतिहासिक समय में भी यह देश अपने साधारण कार्यों के लिये सब से आगे बढ़ा हुआ था। यहां के बने सूती कपड़े, रंग, हाथीदांत के बने सुन्दर पदार्थ आदि एक जाति के द्वारा दूसरी जाति और दूसरी के द्वारा अन्य योरोपीय देशों में यहां तक कि समस्त संसार में पहुंचते थे और वे देश भारतवर्ष की इन मनोहर वस्तुओं को अलभ्य पदार्थ समझ आदर से लेते थे। इसी प्रकार उस समय में फिनीशिया बासी यहां से पत्थर, काठ, स्वर्ण, जरी आदि के पदार्थ ले जाकर दूसरे देशों में व्यापार करते थे। इन्हीं पदार्थों ने योरोप वासियों के हृदय में भारतवर्ष को ढूंढ निकालने की प्रबल उत्कंठा उत्पन्न करदी थी। यूनान देश ने भी पीछे से उन्नति की। जब यूनानियों ने ईसवी से पूर्व शताब्दियों में उन्नति की और एलेक्ज़ेंड्रिया और रोम नगर भी बढ़े तो इन दोनों के द्वारा अन्य पाश्चात्य देशों के साथ भारतवर्ष का व्यापार भी बढ़ा। रेशम, माणिक, नील, सूत, मिर्च आदि और उनसे बने पदार्थ और रत्न, मलमल, हाथी-दांत, आबनूस इत्यादि के पदार्थ भारतवर्ष से अन्य देशों

को जाते थे और सोना, चांदी इत्यादि अन्य धातुएं; कांच, मूंगा, सुगन्धित पदार्थ भारत में आते थे। छठीं और दशवीं शताब्दियों के अन्तर्गत विदेशी यात्री भारतवर्ष में आए और यहां के कला, उद्योग, शिल्प और मंदिरों की अत्यन्त प्रशंसा करते गए। भारतवासी जहाज़ों द्वारा भी अन्य देशों को आते जाते थे और समुद्रीय व्यापार भी करते थे। भारतीय व्यापारियों ने ही जावाद्वीप आबाद किया था। पोर्चुगालवासी और उसके उपरान्त डच लोग पूर्वी देशों के साथ, जिनमें भारातवर्ष श्रेष्ठ था, व्यापार करके उससे लाभ उठाते थे। यूनान का व्यापार और उसकी कारीगरी पूर्व समय में बहुत उन्नत अवस्था में थी किन्तु भारतवर्ष इन सब से बढ़ा हुआ था। पश्चिम वालों की चढ़ाइयों के कारण भारत की शान्ति तथा व्यापार में बहुत बड़ा धक्का लगा परन्तु फिर भी वह इतना निरुद्योगी नहीं हुआ था कि अन्य देशों से परास्त होता। इसके उपरान्त जर्मनी और फ्रांस ने, और फिर लगभग अठारहवीं शताब्दी के मध्य में, इङ्गलैण्ड ने औद्योगिक उन्नति की। अमेरिका और सबसे पीछे जापान ने भी योरोप का अनुकरण किया। पहिले इङ्गलैण्ड में मुख्यकर ऊन अच्छा होता था परन्तु उसका उपयोग तथा कार्य सन् १०२० के लगमग आरंभ हुआ। चमड़ा रस्सी और लोहे का भी अच्छा काम होने लगा। मेगनाचार्टा ने इङ्गलैण्ड की औद्योगिक दशा की बहुत उन्नति की। तीसरे एडवर्ड के समय में नवीन फ्लेमिश जुलाहे वहां बसाए गए और शिल्प की उन्नति और बाहर माल भेजने का कार्य आरम्भ

हुआ। सन् १६८५ में रेशम का कार्य आरम्भ किया गया किन्तु फ्रांस का रेशम सदा उसको दबाए रहा। लगभग अठारहवीं शताब्दी के अन्त में इंगलैण्ड के व्यापारियों और राजपुरुषों ने औद्योगिक उन्नति की ओर पूरा ध्यान दिया और तब नवीन आविष्कारों के द्वारा वहां के उद्योग और कला ने बहुत उन्नति की। सन् १७६४ में सूत कातने की कल निकाली गई। लोहे का गलाना भी मालूम हुआ। १८१३ में अगिनबोट और १८३०--३६ में वाष्प यंत्र और रेल के अंजन बनाए गए। तड़ित द्वारा समाचार भेजने की विधि का भी आविष्कार हुआ। इसी प्रकार और भी नवीन नवीन आविष्कारों ने और सुशिक्षा के प्रचार ने इङ्गलैण्ड को एक सौ वर्ष के अन्तर्गत ही समस्त संसार में अत्यन्त बलशाली और धनवान देश बना दिया। यह कहना नहीं होगा कि भारतवर्ष इसी क्रम से शक्तिहीन, दीन, दरिद्र और निरुद्यमी होता गया। चीन देश भी किसी समय में अत्यन्त बलशाली और उद्योगी देश हो गया है। अमेरिका और जापान ने भी, जैसा ऊपर लिखा गया है, इङ्गलैण्ड के ढंग पर अच्छी उन्नति की और येही अन्तिम तीन देश अब संसार में सबसे श्रेष्ठ और प्रामाणिक माने जाते हैं। इनकी सुदशा का कारण केवल औद्योगिक शिक्षा का प्रचारही है। निदान इंगलैण्ड में साधारण तथा औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षा और भारतवर्ष में शिक्षा और उत्साह के अभाव के कारण दोनों की दशा में इतना बड़ा अन्तर होगया कि एक समय के समस्त संसार भर के श्रेष्ठ, उद्योगी और धनवान् भारत के मनुष्यों को अपना साधारण

जीवननिर्वाह करने के लिये आधसेर अन्न रोज़ मिलना दुस्तर हो गया है जबकि पूर्व समय के निर्धन इङ्गलैण्ड में एक करोड़ रुपए से कम रखने वाला मनुष्य किसी गिनती मे ही नहीं समझा जाता है। वर्तमान में इङ्गलैण्ड और भारत का घनिष्ट सम्बन्ध है इसी कारण इन्हीं दोनों की दशा का मिलान करना ही उचित समझ पड़ता है।

भारतवर्ष में औद्योगिक शिक्षा और उन्नति के अभाव के अन्य कारणों के साथ साथ मुख्य यह कारण है कि भारतवर्ष का कोई उद्यमी अपने बाप दादे का अल्पलाभज उद्यम छोड़ कभी दूसरा अधिक लाभदायक तथा उत्तम उद्यम करने का ध्यान नहीं करता। भारतवर्ष में अब इस गुर का तो यहां तक पक्कापन होगयो है कि यदि अपने बाप दादे का कार्य छोड़ कोई दूसरा उद्यम अथवा उद्योग करे तो वह हिन्दुधर्मानुसार जातिच्युत हो जाता है अथवा पतित समझा जाता है। तिसपर भी तुर्रा यह है कि जिस प्राचीन विधि सें प्राचीन यंत्रों द्वारा जो कार्य और उद्यम होता आता है उसी ढंग से उसे किया जाता है। यदि कोई कभी उत्तम और अधिक लाभदायक विधि बतलावे भी तो यह कह कर कि "हमारे बाप दादों से यही होता आया है हम नई बात नहीं करेंगे" उसका तिरस्कार कर देंगे। परंतु अब यह प्रथा इंगलैण्ड, अमेरिका, जर्मनी, जापान आदि से उठ गई है। वहां के निवासी पुराने दुर्गम रास्तों की धूल को झाड़ कर गिट्टी पीट कर सुगम मार्ग बना रहे हैं और समय तथा संसार की रुचि और आवश्यकतानुसार नवीन शिक्षा देकर उद्योग और

कला में निपुण होकर नवीन नवीन आविष्कारों द्वारा भारतवर्ष ऐसे फ़क़ीर लकीर के निरुद्यमी देश की चोटी अपने हाथ में पकड़े हुए हैं। अतएव इस विषय में भारतवर्ष को अब उन्हीं देशों का अनुकरण करना श्रेय है।

औद्योगिक शिक्षा और उन्नति के उपलक्ष में सबसे प्रथम धार्मिक और जातीय बाधाओं को दूर हटाने की अत्यन्त आवश्यकता है। इसके कारण उच्च कुल के सुपठित विद्वान विदेश जाकर औद्योगिक और कला सम्बन्धी उच्च शिक्षा प्राप्त करने में हिचकिचाते हैं। भारतवासी व्यवसायियों के औद्योगिक कार्य भी जाति धर्म के बंधनों से जकड़े हुए हैं। उसी प्रकार व्यवसायों के अनुसार जातियां भी होगई हैं। एक व्यवसाय को करने वाला कुल दूसरे व्यवसाय को करने से जाति और धर्म की सीमा द्वारा रोका जाता है। इसी जाति भेद ने भारत के उद्योग का यहां तक सत्यानाश किया कि उच्च जातियां औद्योगिक जातियों को नीचकर्मानुरागी समझने लगी हैं। उद्यमी जातियां अपनी पुरानी लीक को छोड़ कर तथा अपनी दीन दशा और तज्जनित बुद्धि की निर्बलता के कारण उन्नतिशील नवीन ढंगों के स्वीकृत करने में असम्मत और असमर्थ हैं। जब तक वे उत्साहित नहीं की जायगी अथवा कुछ करके उन्हें नहीं दिखाया जायगा तबतक वे अपनी पुरानी कुत्सित चालों को नहीं छोड़ेंगी। आजकल के किसान, जुलाहे, बढ़ई, लुहार, चर्मकार, आदि निर्धन और अशिक्षित होने के कारण व्यापार सम्बन्धी कार्यों में उन्नति करने की अथवा साधारण रीति पर काम चलाने को

भी असमर्थ हैं। इसके अतिरिक्त इस प्रकार की शिक्षा के अभाव का तथा व्यापारिक अवनति का यह भी एक गूढ़ कारण है कि अदूरदर्शी भारतवासी स्वदेशी पदार्थों को बर्तने में संकोच करते हैं और अपने ही देश का गला घोंट कर विदेश को पुष्ट करते हैं। यदि स्वदेशी पदार्थों का रुचि से बर्ताव होने लगे तो यह भी निश्चय है कि उत्तम यंत्रों का अभाव होने पर भी औद्योगिक और कला सम्बन्धी कार्य और शिक्षा कुछ न कुछ होने और उन्नति करने लगे। फिर इसमें भी कोई शंका नहीं कि धीरे धीरे नवीन यंत्रों का निर्माण तथा आविष्कारों का होना भी आरंभ हो जाय। वही कारीगर जो अपने बनाए पदार्थों की खपत न होने के कारण सब प्रकार उद्यमों से विमुख हो शोचनीय दशा के प्राप्त होते जा रहे हैं स्वयं सब कुछ करके दिखला देवें और अपने आप, औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षा का प्रबन्ध करने लगें परन्तु यह बात बहुत दूर की है। समय बदल गया है और इस विषय की शिक्षा का प्रबंध अपने आप धीरे धीरे होने की प्रतीक्षा करना एक प्रकार की भूल अथवा कायरता है। अतएव भारतवर्ष के धनवान् विद्वान और साहसी पुरुषों का, चाहे वे किसी धर्म के अनुगामी हों, मिलकर अपने धन, बुद्धि और प्रयत्न से औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षा के प्रचार के उपलक्ष में संसार के औद्योगिक और कला सम्बन्धी उन्नति किए हुए देशों का अनुकरण करना ही कर्त्तव्य है।

आजकल सरकार की ओर से भी भारतवर्ष में औद्योगिक शिक्षा का प्रचार करने के लिये बड़ा प्रयत्न हो रहा

है । प्रान्तीय गवर्न्मेंण्टों ने इस विषय पर कमेटियां की हैं और उनमें बड़े बड़े राजपुरुषों और विद्वानों की सम्मति ली है । बड़े शोक की बात है कि भारतवासियों की दशा सुधारने के लिये सरकार तो सब कुछ करे किन्तु स्वयं भारतवासी अपने लिये कुछ भी न करें । अतएव सर्कार की इस कृपा के लिये धन्यवाद देकर उन्हें स्वयं भी अपने लिये कुछ करके सर्कार की चिन्ता को दूर करना तथा उसकी इच्छा को पूर्ण करना चाहिए । इसके अतिरिक्त यह भी है कि जब तक अपने लिये भारतवासी स्वयं कुछ नहीं करेंगे तब तक उन्नति का ध्यान केवल स्वप्न सदृश होगा। यदि उन्नति या लाभ की कुछ भी इच्छा है तो आलस्य को छोड़ प्रयत्न करना चाहिए । अब तक इतना नहीं बिगड़ा है कि निराश होना पड़े वरन इतनी शक्ति वर्तमान है कि थोड़े ही समय में सब से आगे बढ़ कर पूर्व श्रेष्ठता को पहुंच सकते हैं । तब हाथ पर हाथ रख चुपचाप बैठा रहना ठीक नहीं है । जो सर्कार करे उसे कृतज्ञता सहित स्वीकार कर औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षा का प्रचार करने के लिये स्वयं भी प्रयत्न करना चाहिए ।

नीचे लिखी पांच बातों का ठीक प्रबंध हो जाने से औद्योगिक शिक्षा का प्रचार और तत्सम्बन्धी उन्नति होने की पूरी आशा है—

१—पाठशालाओं और विद्यालयों का स्थापित होना ।

२—प्रबन्ध ।

३—उत्तेजना ।

४—आभ्यासिक शिक्षा ।

२

५-कोष।

इनके अतिरिक्त एक और भी अत्यावश्यक बात है जिसको "विशेष कर्त्तव्य" के रूप में छठीं विधि मान लिया जाय तो कुछ हानि नहीं। इस प्रकार औद्योगिक शिक्षा के प्रचार के लिये सब मिलकर उपरोक्त ६ बातों का प्रबंध होना चाहिए। वह इस प्रकार हो सकता है-

१—पाठशालाएं और विद्यालय।

(१) देश भर के प्रत्येक ज़िले में अथवा स्थान स्थान पर औद्योगिक पाठशालएं, प्रत्येक प्रान्त में प्रान्तीय विद्यालय और किसी एक मुख्य स्थान पर जातीय विाद्यालय स्थापित करना+।

(२) उन्हीं पाठशालाओं, विद्यालयों और जातीय बिद्यालय के सम्बन्ध में वैज्ञानिक पाठशालाएं, विद्यालय और वृहद् विद्यालय खोलना।

(३) उपरोक्त पाठशालाओं और विद्यालयों में हस्त-कार्य सम्बन्धी कक्षाएं स्थापित करना।

(४) इन्हीं में साधारण देश भाषा और विदेशी भाषाओं की शिक्षा का भी प्रबन्ध रखना।

(५) उपरोक्त प्रान्तीय और जातीय विद्यालयों में यंत्र शास्त्र सम्बन्धी कक्षाएं खोलना।

(६) आलेख्य अथवा चित्र लेखन की कक्षाएं भी इसी क्रम से खोलना।

+ समस्त देश के लिये एक।

(७) औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षकों की शिक्षा के लिये प्रान्तीय और जातीय विद्यालयों में क्रम से "शिक्षक शिक्षालय" खोलना।

(८) औद्योगिक व्यवसायियों और उनके बालकों तथा व्यापारियों को शिक्षा देने के लिये व्यापारिक केन्द्रस्थल पर "निशिपाठशालाएं" खोलना।

२—प्रबन्ध।

(१) उच्चशिक्षाप्राप्त ग्रेजुएट नव युवकों को औद्योगिक वैज्ञानिक और व्यवसायिक उच्च शिक्षा के लिये इंगलैण्ड, जापान, अमेरिका, जर्मनी आदि औद्योगिक उन्नतिशील देशों को भेजना।

(२) इन्हीं विदेशी शिक्षा प्राप्त पुरुषों को निरीक्षक, शिक्षक आदि नियत करना।

(३) प्रान्तों के लिये "स्थानीय औद्योगिक सभाएं" और समस्त भारतवर्ष के लिये एक "जातीय औद्योगिक सभा" स्थापित करना।

(४) जातीय विद्यालय के सम्बन्ध में, पदार्थों की परीक्षा और अनुभव करने और कल्पना तथा आविष्कार करने के उपलक्ष में एक "विशेष शिक्षाविभाग" और "अनुभव शाला" स्थापित करना।

३—उत्तेजना।

(१) औद्योगिक शिक्षा सम्बन्धी "परीक्षा" नियत करना और कृतार्थ विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र देना।

(२) इन पाठशालाओं और विद्यालयों में औद्योगिक "छात्रवृत्तियां" और "पारितोषिक" स्थापित करना।

निर्धनशिल्पकार और व्यवसायियों के बालकों को "बिना फीस के शिक्षा" देना।

(३) औद्यगिक और शिल्प व्यसायियों को उत्तेजित करने के उपलक्ष में ऋण द्वारा उनकी सहायता करना।

(४) देश भर में औद्योगिक और कला सम्बन्धी व्याख्यान देने का, मुख्य मुख्य स्थानों पर मुख्य मुख्य प्रकार की प्रदर्शिनी करने का तथा नवीन आविष्कारों के लिये प्रत्येक पुरुष को पारितोषिक देने का यथोचित प्रबन्ध करना।

(५) औद्योगिक शिक्षा और कार्य सम्बन्धी "पत्र" मातृभाषा हिन्दी में निकालना, इस विषय को "पुस्तकें" भाषा में लिखना और उनका अनुवाद प्रकाशित करना, और भारतवर्ष के सब व्यापारियों की, जो स्वदेशी वस्तुओं का व्यापार करते हों अथवा स्वदेशी वस्तुओं की एक "नाम धाम सूचक पुस्तक" हिन्दी भाषा में तय्यार करना।

(६) शिल्प विद्या के सीखने वालों और आभ्यासिक विद्यार्थियों को शिक्षा देने के लिये कारख़ानों और दुकानों को "पारितोषिक और ऋण" देना।

(७) शिल्प विद्या के शिष्यों और आभ्यासिक विद्यार्थियों को भी कुछ पारितोषिक देना।

(८) राजनैतिक आन्दोलन सम्बन्धी विचारों से प्रथक रहकर "स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार" करना।

४-आभ्यासिक, व्यवहारिक और विशेष शिक्षा।

(१) निजके बड़े बड़े कारख़ानों और शिल्पशालाओं

में शिल्पविद्या के शिष्यों और पाठशालाओं के कृतकार्य विद्यार्थियों को रखकर शिक्षा देना ।

(२) मुख्य मुख्य ज़िले की औद्योगिक पाठशालाओं और सब विद्यालयों के सम्बन्ध में "मार्गदर्शक" शिल्पशालाएं और दुकानें खोलना ।

(३) निज की बड़ी बड़ी दुकानों में कुछ दिन के लिये बैठाकर भी विद्यार्थियों और साधारण औद्योगिक व्यवसायियों के बालकों को, जो किसी असुबीते के कारण पाठशाला में नहीं पढ़ सकते, आभ्यासिक औद्योगिक और व्यवहारिक शिक्षा देना ।

(४) ग्रामीण लुहारों, बढ़इयों, जुलाहों अथवा अन्य व्यवसायियों को मार्गदर्शक कारखानों में लाकर, वहां उन्हें शिक्षा देकर और नवीन प्रणाली का गुण दिखाकर नवीन ढंग से कार्य करने को उनको घर वापिस भेज देना ।

(५) नमूने के यंत्र और पदार्थ जो खरीदें उनके बेचे जाने का और जिनको उचित समझा जाय उनको योंही देने का प्रबन्ध करना ।

(६) अच्छे अच्छे शिल्पकार और व्यवसायियों को निकटवर्ती नगरों अथवा उसी नगर में बुलाकर किसी नियत समय तक पाठशालाओं और कारखानों में उनसे आभ्यासिक शिक्षा दिलवाना और उनसे काम करवाना अथवा उनको शिक्षक के सदृश नौकर रख लेना ।

(७) कुछ ऐसे सुविज्ञ अनुभवी पुरुष, जो हर एक जगह, जहां कोई उन्हें मांगे, जाकर नवीन और उन्नतिशील ढंग से कार्य करने की विधि बता सकें, रखना ।

५—कोष अर्थात् कार्य के लिये धन।

(१) स्वदेशवासियों से इस कार्य के लिये चन्दा लेना।

(२) प्रान्तिक धनवानों से प्रांतीय पाठशालाओं और शिल्पशालाओं को स्थापित करने और छात्रवृत्तियां, पारितोषिक और औद्योगिक व्यवसायियों को ऋण अथवा पारितोषिक देने के स्वरूप में सहायता लेना।

(३) धनवानों को निज के तथा सर्वसाधारण को चन्दे के प्रान्तीय और एक जातीय औद्योगिक कोष अथवा बैंक स्थापित करना।

(४) गवर्न्मेण्ट से आर्थिक सहायता मांगना।

६—विशेष कर्यव्य।

(१) छोटी बड़ी श्रेणी के पुरुषों के बालकों को समान भाव से "हस्तकार्य" की और औद्योगिक शिक्षा देना और भाषा की साधारण पाठशालाओं में भी हस्तकार्य सम्बन्धी कक्षाएं स्थापित करना।

(२) उच्चशिक्षाभिलाषियों को छोड़कर शेष सब को भारतवर्ष की मातृभाषा "हिन्दी" पढ़ाना और उसी के द्वारा सब प्रकार की शिक्षा देना।

(३) साधारण शिक्षा को उन्नति देना और देश में शिक्षितों की संख्या बढ़ना।

(४) सर्वदा सब कार्यों में गवर्न्मेण्ट की सहायता मांगना।

(५) इस कार्य का भार केवल दीन, अशिक्षित, प्राचीन ढांचे के उद्योगी पुरुषों, व्यवसायियों, व्यापारियों और

शिल्पकारों के कंधों पर न डालकर उच्च श्रेणी के धनवानों विद्वानों और साहसी पुरुषों को, जो अल्प समय तथा सहज में ही यथार्थ उन्नति कर सकते हैं, धर्म और जाति द्वेष त्यागकर, परस्पर मित्र भाव और सहानुभूति सहित सँभालना।

(१)

पाठशालाएं और विद्यालय।

प्रत्येक पुरुष इस बात को अच्छी तरह समझता है कि किसी प्रकार की शिक्षा का, बहुत पुरुषों में अधिकता से प्रचार, बिना एक निर्धारित स्थान पर किसी नियत समय तक, उनको इकट्ठा कर बचनों और कार्यों द्वारा बतलाए सहज में ठीक ठीक नहीं हो सकता। ऐसे ही निर्धारित स्थान को पाठशाला शिक्षालय और विद्यालय कहते हैं। बहुत से विद्वानों का यह भी मत है कि जहां बहुत से शिक्षक और विद्यार्थी गण इकट्ठे होते हैं वहां उस विद्या की अधिक उन्नति होती है और उसके सम्बन्ध का ज्ञान भी बढ़ता है। अतः औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षा का प्रचार करने के लिये भी इस विषय की पाठशालाओं, शिक्षालयों और विद्यालयों का स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक है। और वह निम्न लिखित सात विधियों द्वारा पूरा किया जा सकता है—

(१) देश भर के प्रत्येक ज़िले में अथवा स्थान स्थान पर औद्योगिक पाठशालाएं, प्रत्येक प्रान्त में प्रान्तीय विद्यालय और किसी एक मुख्य स्थान पर समस्त देश के लिये एक जातीय विद्यालय स्थापित करना।

ये कहां तक आवश्यक हैं सो कहना नहीं होगा। बिना इनके इस शिक्षा का होना ही असंभव है। ये तीन प्रकार के होने चाहिएं। प्रथम–**ज़िले की पाठशालाएं**, जिनमें प्रत्येक ज़िले के विद्यार्थी अपनी अपनी पाठशाला में शिक्षा पाकर, औद्योगिक कार्यों में निपुण होकर अपने ज़िले की आवश्यकताओं को पूरा करने और उसके स्वाभाविक औद्योगिक व्यवसाय के उन्नति देने योग्य हो जावें। इसी बड़े समूह में से कुछ विद्यार्थी ऐसे भी तय्यार होंगे जो उच्च शिक्षा की अभिलाषा से प्रांतीय विद्यालयों में और वहां से जातीय विद्यालय को और विदेश को भी जावेंगे। इनमें औद्योगिक, और कलासम्बन्धी आरम्भिक शिक्षा का पूर्ण प्रबन्ध रहना चाहिए। इनमें हस्तकार्य की शिक्षा यर अधिक ध्यान होनी चाहिए और वैज्ञानिक शिक्षा भी उतनी होनी चाहिए जितनी आरम्भिक विद्यार्थी के लिये आवश्यक है अथवा जितनी आज कल के साधारण हाई स्कूलों में दी जाती है। उसीके अनुसार एक शिल्पशाला, प्रदर्शिनी और दुकान कृतकार्य विद्यार्थियों को आभ्यासिक शिक्षा देने और निर्मित पदार्थों को बेचने, ज़िले के शिल्प व्यवसायियों और अन्य औद्योगिक कर्मानुरागियों को दृष्टान्त दिखलाने के लिये, खोली जानी चाहिए। इससे कुछ आर्थिक लाभ भी होता जायगा। ये ज़िले की पाठशालाएं और शिक्षालय उच्च शिक्षा की जड़ हैं। द्वितीय–**प्रान्तीय विद्यालय**, जिस प्रकार बिना दूसरे पग के उठाए किसी को भी आगे बढ़ना

असम्भव है उसी प्रकार इस द्वितीय श्रेणी रूप प्रान्तीय विद्यालयों के अभाव से ज़िले की पाठशालाओं से आरम्भिक शिक्षाप्राप्त विद्यार्थियों का भारत के जातीय विद्यालय में अथवा विदेश में जाकर उच्चश्रेणी की शिक्षा सहज ही ग्रहण करने और पूरा अनुभाव प्राप्त करने में अति कठिनता होगी। संसार में जो कार्य क्रम से किया जाता है वही कार्यार्थी को पूर्ण अनुभव और ज्ञान देकर उसकी इच्छा को यथार्थ रूप से पूर्ण करता है। इस प्रकार के प्रान्तीय विद्यालय प्रत्येक प्रान्त के सब से बड़े किसी एक व्यापारिक नगर में स्थापित होने चाहिएं। इनमें ऐसी शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिए जिससे ज़िले के शिक्षालय में शिक्षाप्राप्त विद्यार्थी भारत के जातीय विद्यालय और विदेश में सहजही उच्च शिक्षा प्राप्त करने योग्य पूरे अनुभवी होजावें। क्योंकि इन्हीं प्रान्तिक विद्यालयों में से आरम्भ में कुछ होनहार विद्यार्थी उच्चशिक्षार्थ सीधे विदेश भी भेजे जा सकेंगे और इस प्रकार इस कार्य की शीघ्र गति हो जावेगी। इनमें वैज्ञानिक शिक्षा और अंग्रेजी अथवा अन्य विदेशी भाषाओं की शिक्षा का भी उतना प्रबन्ध होना चाहिए जितना आजकल के युनिवर्सिटी कालेजों में हैं। शेष औद्योगिक आदि शिक्षा का वही प्रबन्ध रहेगा जैसा ज़िले की पाठशालाओं में है। केवल उनकी उच्चता बढ़ जानी चाहिए। यंत्र शास्त्र संबंधी शिक्षा की कक्षाएं भी इनमें होना आवश्यक है। प्रदर्शिनी, शिल्पशाला और दूकान आदि का भी प्रबन्ध विद्यालय की श्रेष्ठता के अनुसार होना चाहिए। आरंभिक शिक्षा के अर्थ ज़िले की पाठशालाओं की कक्षा भी इन

प्रान्तीय विद्यालयों में होनी चाहिएं। क्योंकि यह अधिक उपयोगी और मितव्ययी प्रबन्ध होगा। एक प्रकार औद्योगिक शिक्षा को पूर्ण करने के हेतु ये ही विद्यालय भली भांति सुसज्जित होने चाहिएं। इनमें कृतकार्य होकर विद्यर्थी या तो "शिक्षक शिक्षालयों" में शिक्षा पाकर ज़िले की पाठशालाओं में शिक्षक निरीक्षक अथवा उपदेशक होने योग्य या जातीय विद्यालय में पदार्थों का अनुसंधान, अनुभव, परीक्षा आदि करने को अथवा विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने को पूर्ण हो जावें। इनसे आगे चल के तृतीय देशीय व जातीय वृहद् विद्यालय है। पदार्थों और यंत्रों की परीक्षा, अनुसंधान, अनुभव, नवीन आविष्कार और नमूने की तय्यारी और प्रबंध, व्यवस्थादि करने के लिये यह जातीय विद्यालय अत्यन्त आवश्यक है। इस को कार्यालय भी कहें तो कुछ असंगत नहीं होगा। प्रान्तीय विद्यालय के कुछ होनहार विद्यार्थी, विदेशी शिक्षाप्राप्त नव युवक अथवा और भी अनुभवी महानुभाव, उच्चश्रेणी के व्यवसायी और औद्योगिक उन्नत्यानुरागी इसमें एकतत्रित हो देश भर का कार्य संचालन और स्वाभाविक भूमिज पदार्थों का, भूमि का और शिक्षा प्रणाली का संशोधन, अनुसंधान और परीक्षा करेंगे। नवीन यंत्रों का निर्माण और वर्तमान देशव्यापी यंत्रों का संशोधन करेंगे। शिक्षा की व्यवस्था और कोष बैंक आदि का प्रबन्ध करेंगे। व्याख्यान देने, पत्र निकालने, नामधाम सूची पुस्तक तय्यार करने और प्रदर्शिनियों के लिये समय नियत करने आदि की व्यवस्था करेंगे। देश के व्यवसायियों को उत्तेजित करना,

उत्तम नवीन कार्य अथवा आविष्कारों के लिये पारितोषिक देना, निज के कारखानों में शिल्प विद्या के शिष्यों को शिक्षा देना, ज़िले की अथवा प्रान्तिक पाठशालाओं के शिक्षकों का प्रबन्ध करना, वहां के आय व्यय का हिसाब रखना आदि इसी विद्यालय का कर्तव्य होगा। विदेश के लिये विद्यार्थी चुनना, पाठशालाओं के प्रबन्ध में अथवा शिल्प शालाओं में कोई परिवर्तन अथवा संशोधन करना, देशभर की औद्योगिक शिक्षा की खबर रखना अथवा उसको उत्तेजना देना इसी का कार्य होगा। यहीं जातीय औद्योगिक सभा की बैठक होगी और चन्दा वसूल करने के लिये यहीं से जहां तहां प्रतिनिधि भेजे जायंगे। इस जातीय विद्यालय में जिले की पाठशालाओं के सदृश आरम्भ से लेकर अन्तिम कक्षा तक की औद्योगिक शिक्षा का पूरा प्रबन्ध होना चाहिए और शिल्प सम्बन्धी अथवा वैज्ञानिक प्रदर्शिनी और दूकाने भी रहनी चाहिएं। अनुभवशाला अथवा परीक्षाशाला आदि का इसमें होना तो इसका मुख्य उद्देश्य ही है। निदान यही जातीय विद्यालय औद्योगिक शिक्षा और कार्य का केन्द्र होना चाहिए। और इसी के बल से भारतवर्ष के निर्मित पदार्थों की उन्नति तथा उनके विदेश के बाजारों में पहुंचने की आशा की जा सकती है। तभी औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षा का प्रचार और उसकी उन्नति हुई समझी जायगी।

(२) उन्हीं पाठशालाओं, विद्यालयों और जातीय विद्यालय के सम्बन्ध में वैज्ञानिक पाठशालाएं विद्यालय और वृहत विद्यालय खोलना।

आज कल उन्नतिशील जातियों ने जो महा कौशल और बल प्राप्त किए हैं वे इसी वैज्ञानिक शिक्षा का प्रभाव हैं। नवीन यंत्र, इंजिन, तार आदि का विज्ञान के द्वारा ही आविष्कार हुआ है जिनसे कार्य की गति शीघ्र और सहज हो गई है। उद्योग के प्रत्येक कार्य में वाष्प यंत्रों की सहायता लेकर वस्तु, पदार्थ आदि का शीघ्र निर्माण इतना सहज हो गया है कि एक हज़ार मनुष्य भी मिल कर एक वाष्प यंत्र के बराबर कार्य नहीं कर सकते हैं। थोड़े श्रम और व्यय से ही थोड़े समय में बहुत कार्य होता है। रेल और जहाजों के इंजिनों से असंभव कार्य भी सहज हो गए हैं। रेल द्वारा एक हज़ार मील भी एक दिन में चलना कोई कठिन कार्य नहीं है जब कि और तरह से एक दिन में पचास मील भी यात्रा करना दुर्गम है। धूम्रयान में कैसे सहज में कितनें शीघ्र चल सकते हैं। इन्हीं के द्वारा उन्नतिशील जातियां दूसरे देशों के साथ सुगमता से व्यापार करती हैं और इन्हीं को युद्ध कार्य के योग्य बना अपने आतंक से संसार भर को कँपाती हैं और थल की क़ौन बात जल पर भी पूरा अधिकार किए हैं। तार की विचित्रता तो यहां तक बढ़ी हुई है कि समस्त संसार भर का समाचार घंटे भर में ही ठीक ठीक जाना जा सकता है। यह दैवी तड़िच्छक्ति को उपयोग में लाने का परिणाम है। बिजली का प्रकाश तो रात्रि में भी सूर्य के प्रकाश का काम देता है। यह सब वैज्ञानिक शिक्षा का ही प्रभाव है। अतएव उन्नति करने के लिये वैज्ञानिक शिक्षा वर्तमान् समय में अत्यन्त आवश्यक है।

इस शिक्षा के सम्बन्ध की कक्षाएं जिले की औद्योगिक पाठशालाओं में इतनी शिक्षा प्रदान करने के योग्य होनी चाहिए कि जिससे वर्त्तमान् हाई स्कूलों से कुछ अधिक अनुभव और ज्ञान प्राप्त हो सके। कारण कि इस शिक्षा से एक विशेष लाभ उठाना है इसलिये वह जहां तक उत्तम हो अच्छा है। वैज्ञानिक और पदार्थ विज्ञान सम्बन्धी रसायन क्रियास्थान पूर्ण सुसज्जित और कौतुकागार सुसम्पन्न होना चाहिए। इसी प्रकार प्रान्तीय विद्यालयों में यह प्रबन्ध इतनी उत्तम रीति का हो कि वर्तमान् साधारण विद्यालयों से बढ़कर वैज्ञानिक और रासायनिक क्रिया के अनुभवी विद्यार्थी तय्यार हो सकें। जातीय विद्यालय में अन्य सब प्रकार की आरंभिक और उच्च शिक्षा की वैज्ञानिक और रासायनिक क्रिया अथवा पदार्थ विज्ञान सम्बन्धी कक्षाओं, रासायनिक क्रियास्थान और कौतुकागारों के अतिरिक्त, अनुभव और अनुसंधान, संशोधन आदि भली भांति हुआ करें। इन अनुभवशालादि में कुछ ऐसे पुरुष भी होने चाहिए जो देश में भ्रमण कर भूमि आदि की औद्योगिक परीक्षा और अनुसंधान करें। ऐसे ही उपायों द्वारा वैज्ञानिक शिक्षा और अनुभव की त्रुटि भारतवर्ष से दूर की जावे।

(३) उपरोक्त पाठशालाओं और विद्यालयों में हस्त-कार्य सम्बन्धी कक्षाएं स्थापित करना।

बालकों की रुचि, कार्य चातुर्य शक्ति और बुद्धि बढ़ाने के लिये हस्तकार्य अथवा शिल्प सम्बन्धी कक्षाओं का होना अति लाभदायक है। इनके द्वारा बालक आरम्भ से ही हस्तकार्य तथा निर्माण शक्ति प्राप्त करते हैं। जो बातें

उन्हें पढ़ाई जावें उनको कार्य द्वारा दिखा देने से और उन्हीं के अनुरूप कार्य कराने से उनका पाठ सब प्रकार पूरा होता जावेगा । पढ़ी, सुनी, देखी, सीखी और मनचिंतित बातों को वे कर दिखाने के योग्य हो जावेंगे और उनमें नवीन विचारों और आविष्कारों की योग्यता की जड़ जम जायगी ।

इस प्रकार की शिक्षा छोटे और बड़े, उच्च और नीच वंशीय तथा धनवान् अथवा दरिद्र प्रत्येक जाति के लोगों को समान रूप से देनी चाहिए ।

हस्त और शिल्प कार्य की कक्षाएं जि़ले की पाठशालाओं और प्रान्तीय विद्यालयों में अवश्य होनी चाहिएं । जि़ले और प्रान्तीय विद्यालयों की हस्तकार्य सम्बन्धी कक्षाओं में केवल इतना अनन्तर हो कि जि़ले की पाठशालाओं में सरल और साधारण कार्य की और प्रान्तीय विद्यालयों में उच्च रीति की शिल्प शिक्षा अच्छी तरह हो जाय ।

साधारण भाषा की वर्तमान् पाठशालाओं में भी हस्त कार्य सम्बन्धी कक्षाएं खोली जावें तो औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षा के प्रचार को बहुत सहायता पहुँचे और लोगों की रुचि इस उपयोगी कार्य की ओर बढ़े । अनुभवी बढ़ई, लुहार, आदि जो उत्तम काम कर सकते हों उनको घंटे दो घंटे के लिये यह शिक्षा पाठशाला में देने के लिये अल्प वेतन पर रक्खा जावे । और कार्ड बोर्ड अथवा मोटे कागज़ के नमूने तो स्वयं शिक्षक लोग ही बनाकर दिखा सकते हैं अथवा लड़कों से भी बनवा सकते हैं । इस

कार्य के लिये विशेष शिक्षा प्राप्त शिक्षक होना चाहिए जो सब औद्योगिक शिक्षकों की शिक्षा के लिये खोले गए 'शिक्षक शिक्षालयों' में होवे हीगा। इस प्रकार यह शिक्षा भी अल्प व्यय और उत्तमता से हो सकेगी। औद्योगिक शिक्षा की नींव पक्की करने के लिये इसका होना अत्यावश्यक है।

(४) इन्हीं में साधारण देशभाषा और विदेशीय भाषाओं की शिक्षा का भी प्रबन्ध रखना।

औद्योगिक पाठशालाओं और विद्यालयों में ऐसी शिक्षा का प्रबंध रखना भी उचित जँचता है। क्योंकि ऐसे शिक्षालयों में साधारण शिक्षा होने से उन साधारण शिक्षा के विद्यार्थियों की रुचि विशेष कर इसी विषय की ओर झुकेगी और वे अन्य विद्यार्थियों से कहीं अधिक योग्यता इस कार्य में सहजही प्राप्त कर सकेंगे। इसके अतिरिक्त इससे यह भी एक और लाभ होगा कि वर्त्तमान् शिक्षा प्रणाली की कुछ बातें, जो कि वास्तव में कुछ लाभ-प्रद् नहीं हैं, इन पाठशालाओं से अलग रक्खी जावेंगी। और इस प्रकार देशकी आवश्यकतानुसार सुविज्ञ, परिश्रमी, बलिष्ट और साधारण मच्चे स्वभाव के विद्यार्थी तय्यार होंगे जो कुछ कर दिखावेंगे। क्योंकि इस के लिये चिकने, चुपड़े, तीन तीन बल खाते हुए सुकोमल महानुभावों की आवश्यकता नहीं है, इसमें शौकीन और फुजूल खर्च करने वालों से कुछ नहीं होगा, दृढ़ कार्यार्थी परिश्रमी और जाति के सच्चे प्रेमी स्वच्छ हृदय के युवा ही इस मन्तव्य को पूरा करेंगे और वे अपने निराले ही ढंग की शिक्षा द्वारा बनाए जासकते हैं। इसके अतिरिक्त जब

कि एक स्थान पर एक स्कूल स्थापित होवे ही गा तो उसमें साधारण शिक्षा का प्रबंध करना कुछ अधिक व्यय कर नहीं वरन कुछ लाभदायक ही होगा। अतएव साधारण हिन्दी भाषा और विदेशीय भाषाओं की शिक्षा का प्रबन्ध पाठशालाओं और विद्यालयों में होना चाहिए मातृभाषा हिन्दी को छोड़ अंग्रेजी, जापानी आदि विदेशी भाषाओं की शिक्षा भी उच्च औद्योगिक शिक्षा के लिये अत्यन्त आवश्यक है। क्योंकि इनसे विदेश जाने वाले विद्यार्थियों को विदेश में शिक्षा प्राप्त करने और अपना निर्वाह करने में बहुत सुगमता होगी। यथा जापान में औद्यागिक शिक्षा प्राप्ति के लिये गया हुआ विद्यार्थी यदि जापानी न जाने तो उसे अपने अभीष्ट में पूर्ण साफल्य लाभ करने में कठिनता होगी। इसी प्रकार अन्य विदेशों को जाने वाले विद्यार्थियों के विषय में भी समझना चाहिए। अतः जिस देश को जिसे भेजना हो उसे उस देश की भाषा सिखा देना बहुत ज़रूरी है।

इस शिक्षा का प्रबन्ध इस प्रकार हो कि ज़िले की औद्योगिक पाठशालाओं में अंग्रज़ी, हिन्दी और भारत की अन्य प्रचलित प्रान्तीय भाषाएं जैसा कि अभी साधारण स्कूलों में है, पढ़ाई जानी चाहिएं। ये सभी विद्यार्थियों के लिये आवश्यक हैं। प्रान्तीय विद्यालयों में इस शिक्षा का रूप उच्च शिक्षा से बदल दिया जाय, जैसा कि वर्तमान कालेजों में है। इसके अतिरिक्त अन्य विदेशी भाषाओं की शिक्षा का प्रबन्ध इन प्रान्तिक विद्यालयों में होना चाहिए और वे भाषाएं औद्योगिक उन्नतिशील देशों की अथवा

सभा का कार्यविवरण ।

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २७ जून १९०८ सन्ध्या के छ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

(१) प्रबंधकारिणी सभा के ता० ११ मई और १८ मई के कार्य विवरण सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

(२) निम्न लिखित महाशय सभासद चुने गए—

(१) पं० जगन्नाथ निरुक्तरत्न-नमक मंडी—अमृतसर ३) (२) चैाधरी मथुराप्रसाद सिंह—रामनगर-बनारस ३) (३) बैद्य रामचन्द्र शर्म्मा-गोकुल-ज़िला मथुरा ३) (४) मुनि राजधर्म विजय जी, अँगरेज़ी कोठी-काशी ३) (५) बाबू भोलानाथ C/o बाबू गोकुलचन्द रामचन्द -लक्खी चबूतरा-काशी ३) ।

(३) सभासद होने के लिये निम्नलिखित महाशयों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए-

(१) बाबू बलदेव दास-भदैनी काशी । (२) बाबू मदन मोहन सिंह-महाफ़िज़ खाना-कलक्टरी-बलिया । (३) बाबू दुख भंजन सिंह-कानूनगो गिरदावर-तहसील बलिया । (४) बाबू दुर्गादास क्षत्री-टेलीग्राफ ट्रेनिङ्ग क्लास दिल्ली । (५) पं०विजयानन्द तिवारी-भदैनी-बनारस । (६) गोस्वामी रामचरण पुरी-साक्षीविनायक-काशी । (७) गोस्वमी रामपुरी-साक्षी विनायक, काशी । (८) बाबू गोकुलानन्द प्रसाद वर्म्मा-सब इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स-वेस्ट सीवान-पो० सीवान-ज़िला सारन । (९) बाबू शंभूनाथ-हरतीरथ, काशी । (१०) बाबू राम चन्द्र वर्म्मा, भारतजीवन प्रेस-काशी ।

(४) निम्न लिखित सभासदों के इस्तीफ़े उपस्थित किए गए—

लाला लाजपतराय-लाहोर-निश्चय हुआ कि इनसे प्रार्थना की जाय कि वे अपने इस्तीफ़े पर पुनः विचार करें। श्री सीताराम शरण-भगवान प्रसाद अयोध्या और बाबू कन्हैयालाल-चिवहट्टा काशी-निश्चय हुआ कि इनके स्तीफ़े स्वीकार किए जांय।

(५) मंत्री ने ठाकुर उमराव सिंह तथा बाबू वद्रीप्रसाद, ओवर सियर की मृत्यु की सूचना दी। सभा ने इनकी मृत्यु पर शोक प्रगट किया विशेषतः ठाकुर उमराव सिंह की मृत्यु पर जो इस सभा के जन्मदाताओं में से थे और जिन्होंने इस सभा की पुष्टि के लिये इसकी आरंभ अवस्था में बहुत कुछ उद्योग किया था।

(६) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं—

(१) पंडित वैद्यनाथ शुक्ल-बिहपुर-भागलपुर-श्री काली शतकम १ प्रति, भाषा प्रदीप ४ प्रति, पाटीगणित लोअर प्राइमरी १ प्रति, किंडर गार्टन प्राइमर ५ प्रति, प्रेमसागर २ प्रति, सप्तम एडवर्ड का जीवन चरित २ प्रति, विचित्र संग्रह ८० प्रति, ब्रज विहार १०५ प्रति, बालबोध १ प्रति और सोलह साल की जंत्री १ प्रति (२) बाबू कृष्णचन्दजी काशी-वाल्मीकीय सुन्दर काण्ड का पद्यानुवाद। (३) बच्चा बाबू-काशी-नवाबी-परिस्तान वा वाजिद अली उपन्यास, चन्द्र लोक की यात्रा वा चन्द्र लोक का गमन, मायारानी उपन्यास (४) ठाकुर खुशहाल सिंह-सत्यार्थ प्रकाश (५) बाबू भागवत प्रसाद दास-काशी, भागवत विश्राम। (६) मैनेजर जैन ग्रंथ रत्नाकर-रमा। (७) ठाकुर सूर्य कुमार वर्म्मा प्रयाग-कांग्रेस चरितावली (८) मौलवी मुहम्मद सज्जाद मिर्ज़ा बी० ए० इलाहाबाद-पाठन पद्धति (९) बाबू रामकृष्ण गुप्त बिरुहुनी पो० अर्जीतमल ज़िला इटावा-संध्या, आर्य्य समाज, ईश्वर प्रार्थना, सामाजिक गीतावली (१०) बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा, काशी-खत्री हितकारी की प्रथम वर्ष की फाइल, विचित्र उपन्यास अर्थात बुढ़ापे का विवाह, तांतिया भील, दुर्गा पञ्चरत्न, सिद्धाश्रम लीला और श्रीललितेश्वरज्ञनम (११) ठाकुर हनुमन्त सिंह, राजपूत एङ्गलो ओरियंटल प्रेस आगरा-गर्भाधान

विधि, ठोरों की बीमारियों का इलाज, ग्रहणी कर्तव्य दीपिका और जगत हितैषिणी। (१२) बाबू रामसहाय लाल बुकसेलर गया, दीर्घ जीवन ८ प्रति (१३) बाबू हरिहर प्रसाद अग्रवाल प्रेस गया-कामिनी मदन, जया नाटक और राजसिंह नाटक। (१४) बाबू जगन्नाथ दास अग्रवाल काशी-मनोहरकली। (१५) बाबू हीरालाल बी०ए० नागपुर—Rajpur Copperplates of Madhurantaka Deva (१६) बाबू देवकीनन्दन खत्री, काशी-चरपट पंचरिका स्तोत्र (१७) एशियाटिक सुसाइटी, कलकत्ता-Memoirs of A. S. B. Vol. I Supplement, Journal and Proceedings Vol. IV. Nos 2 and 3 and Extra No. 74, parts 2 and 3. (१८) Indian Antiquary for April 1908 (१९) म्युनिसिपल बोर्ड काशी—Annual Report for 1907—08.

ख़रीदी गईं-काली नागिन उपन्यास भाग १ और २, पुतली महल या गुलाब कुंवरि भाग १, योग समाचार संग्रह, महा सिद्ध सावर तंत्र, वहसी पंडित, दरवारी लाल प्रहसन, शिक्षा प्रदीपिका भाग १, सुनारी, देशी कर्घा, भास्कर प्रकाश प्रवन्धार्कोदय, वेदतत्व प्रकाश भाग ४, स्वामी दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र, आर्य्याभिनय, गंजीना भजन, मुक्ति व्यवस्था, मूर्ति पूजा विचार, मांस भक्षण निषेध, आर्य्य प्रश्नोत्तरी, यथार्थ धर्म निरूपण, कर्म व्यवस्था, क्या हम जीवित हैं, ईश्वर सिद्धि ईश्वर विचार, गुरुकुल ट्रैक्ट नं० १३, जीवात्मा, कन्या सुधार, गाजीमियां की पूजा, वेदों की आवश्यकता, वेद किस पर प्रगट हुए, मसीही मज़हब के नियमों पर अक़ली नज़र अर्थात् ईसाई मत परीक्षा महां अन्धेर रात्रि, संगीत रत्नप्रकाश भाग २-५, पुराण भेद, स्त्री ज्ञान गजरा, हवन मंत्र, ईसू चरित्र भाग १, मृतश्राद्ध मीमांसा, प्रतिमातत्व प्रकाश, ईश्वर भक्ति और उसकी प्राप्ति, कंठी जनेऊ का विवाह, पुराण परीक्षा, यवन मत परीक्षा अर्थात् हज्जतुल इसलाम, तर्क इसलाम, होमपद्धति, आनन्द मार्ग, सुमित्रा अर्थात् स्त्री धर्म शिक्षा, सत्यभास्कर भाग १ स्थावरजीव मीमांसा, शंका कोष, प्राचीनोपनयन पद्धति, श्री हरिश्चन्द्र कला भाग १. शील सूत्र।

(७) मंत्री ने सूचना दी कि सभा के आनरेरी सभासद मिस्टर ई० एच० रडीचे को सी० आई० ई० की पदवी मिली है। निश्चय हुआ कि सभा इस पर परम आनन्द प्रगट करती है और उन्हें बधाई देती है।

(८) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

प्रबन्धकारिणी सभा।

मंगलवार ता० ३० जून १९०८ सन्धा के छ बजे।

स्थान--सभाभवन।

उपस्थित।

बाबू श्याम सुन्दर दास बी० ए० सभापति। मिस्टर गुन्नीलाल शा। बाबू गौरी शंकर प्रसाद। बाबू माधो प्रसाद। बाबू जुगुल किशोर। पंडित राम नारायण मिश्र। मिस्टर ए० सी० मुकर्जी। बाबू घन श्याम दास। बाबू गोपाल दास।

(१) गत अधिवेशन (ता० ८ जून १९०८) का कार्य्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(२) बाबू राम लाल का १५ जून का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभा बेलफोर स्टुअर्ट की Physics Primer के भाषा अनुवाद के कापीराइट के लिये उन्हें जो कुछ देना उचित समझे उसे वे स्वीकार कर लेंगे।

निश्चय हुआ कि यह पत्र आगामी अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किया जाय।

(३) गुर्जर वैश्य सभा के १८ जून और २६ जून के पत्र उपस्थित किए गए जिसमें उन्होंने लिखा था कि उनके पुस्तकालय में "वीर विनोद" का कुछ अंश है जिसे वे पूरा किया चाहते हैं। अतः सभा उन्हें अपने पुस्तकालय से इस ग्रंथ की नक़ल करने की आज्ञा दे।

निश्चय हुआ कि गुर्जर वैश्य सभा में इस ग्रंथ का कितना अंश है वह देखने को मँगवाया जाय और पुस्तकों की खोज के सुपरिण्टेण्डेण्ट से इस विषय में सम्मति पूछी जाय।

(४) संयुक्त प्रदेश की गवर्न्मेंट का ८ जून का पत्र नं० ८७४-१२-१२८ ए उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि हिन्दी पुस्तकों की खोज के लिये गवर्न्मेंट जो सहायता देती है वह संयुक्त प्रदेश और विहार के लिये है।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय और हिन्दी पुस्तकों की खोज के सुपरिण्टेण्डेण्ट को इसकी सूचना दी जाय।

(५) राजपुताने में हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों की खोज के सम्बन्ध में सुपरिण्टेण्डेण्ट ने अपना प्रस्ताव उपस्थित किया।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय।

(६) प्रबन्धकारिणी सभा के बाहरी सभासदों और स्थानिक सभासदों में जिन विषयों में मत भेद हो उनके निर्णय के सम्बन्ध में पण्डित श्याम विहारी मिश्र का प्रस्तव उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि सभा की सम्मति में इसके अनुसार कार्य्य चलना वहुत कठिन है और इस समय इसकी कोई विशेष आवश्यकता नहीं जान पड़ती।

(७) वाबू श्यामसुन्दर दास के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि पृथ्वीराजरसो की नक़ल करने के लिये जो लेखक इस समय नियत है उसका पद तोड़ दिया जाय और १०) रु० मासिक वेतन पर सभा का एक सहायक क्लर्क नियत किया जाय जो ग्रंथों के नक़ल करने के साथ ही साथ प्रूफ देखने का कार्य भी करे तथा आफिस के अन्न कार्य्यों में सहायता दे। यह भी निश्चय हुआ कि पं० विश्वनाथ तिवारी परीक्षार्थ ३ मास के लिये इस पद पर नियत किए जांय।

(८) वार्षिक वजेट के अनुसार जिस जिस मद में खर्च को घटी या बढ़ती हुई थी उसकी सूचना उपस्थित की गई और एक

मद से दूसरे मद में आवश्यकतानुसार बजेट घटाया बढ़ाया गया।

(८) बाबू श्यामसुन्दर दास ने संवत १६६६ की लिखी हुई गोस्वामी तुलसीदास जी की विनय पत्रिका की एक प्रति उपस्थित की।

निश्चय हुआ कि यह नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला में प्रकाशित की जाय और एक हजार के स्थान में इसकी दो हज़ार प्रतियां छपवाई जांय।

(१०) निश्चय हुआ कि मिस्टर ई० एच० रडीचे ने सभा की विशेष सहायता की है अतः उनके सन्मानार्थ (१) सभा प्रति वर्ष जो दो चांदी के पदक देती है उनमें से वैज्ञानिक विषय के लेख का एक पदक "रडीचे मेडल" के नाम से दिया जाया करे (२) उनका एक बड़ा फोटो चित्र सभा भवन में रक्खा जाय (३) उनके जाने के पूर्व सभा में एक दिन वे निमंत्रित किए जांय और सब सभासदों के साथ उनका फोटो उतरवाया जाय और उन्हें सभा की ओर से धन्यवाद दिया जाय।

(११) निश्चय हुआ कि प्रति वर्ष विद्या विषय के लेख के लिये जो मेडल इस सभा द्वारा दिया जाता है वह अगले वर्ष से बाबू राधा कृष्ण दास के नाम पर दिया जाय।

(१२) निश्चय हुआ कि जब तक किसी विशेष पुस्तक के विषय में सभा का कोई विशेष निश्चय न हो तब तक जो पुस्तक सभा द्वारा प्रकाशित हो वह सभासदों को अर्द्ध मूल्य पर दी जाया करे।

(१३) बाबू मोतीचन्द के पत्र उपस्थित किएगए जिसमें उन्होंने ता० ६ जुलाई १९०८ को मिस्टर ई० एचं० रडीचे के सम्मानार्थ टाउन हाल में होने वाली सभा के लिये इस सभा की बेञ्चें मँगनी मांगी थीं।

निश्चय हुआ कि उन्हें बेंचें दी जांय पर उनके जाने आने के सम्बन्ध में विशेष सावधानी रक्खी जाय।

(१४) सभापति को धन्यबाद दे सभा विसर्जित हुई।

३. विशेष साधारण अधिवेशन ।

सभा के आनरेरी सभासद मिस्टर ई० एच० रडीचे सी० आई० ई० को जो इस सभा के बड़े सहायक रहे हैं और इस समय छुट्टी लेकर इङ्गलैण्ड जाते हैं, धन्यवाद देने के लिये सभा का एक विशेष अधिवेशन बुद्धवार ता० ८ जुलाई०८ को सबेरे सात बजे सभाभवन में हुआ। इसमें निम्न लिखित सभासद उपस्थित थे—

मिस्टर ई० एच० रडीचे सी० आई० ई०, महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स, बाबू गोविन्द दास, बाबू श्याम सुन्दर दास बी० ए०, बाबू रामप्रसाद चौधरी, बाबू बटुक प्रसाद खत्री, पण्डित रामचन्द्र नायक कालिया, बाबू कालिदास मित्र, बाबू इन्द्रनारायण सिंह एम० ए०, मिस्टर गुन्नी लाल शा, बाबू रविनन्द प्रसाद बी० ए० एल०एल० बी०, पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०, बाबू घनश्याम दास बी० ए०, मिस्टर ए० सी० मुकर्जी बी० ए०, पण्डित शिव नारायाण शङ्खधार, पण्डित रामचन्द्र शुक्ल, बाबू राजा राम गुप्त, बाबू जुगुल किशोर, बाबू कालिदास माणिक, डाक्टर गणेशप्रसाद भार्गव, बाबू अमीरसिंह खत्री, बाबू बाल मुकुन्द वर्म्मा, पण्डित निक्का मिश्र, पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा, बाबू बेणी प्रसाद, बाबू गौरीशंकर प्रसाद बी० ए० एल०एल बी०, लाला भगवान दीन, बाबू माधव प्रसाद मारवाड़ी, बाबू रूपनारायण वर्म्मा, बाबू गोपालदास, बाबू देवी प्रसाद खजानची, पण्डित केदार नाथ पाठक, बाबू पुरुषोत्तम दास, बाबू सालिगराम सिंह, बाबू संकटा प्रसाद, लाल मंगत राय, पण्डित कन्हैया लाल शर्म्मा, पण्डित आत्माराम हरी खण्डीलकर, पण्डित गोपाल सदाशिव आप्टे, बाबू बालकृष्ण दास ।

सभाभवन के पश्चिम ओर के मैदान में मिस्टर ई० एच० रडीचे के साथ उपस्थित सभासदों का एक फोटो चित्र लिया गया ।

इसके उपरान्त सभाभवन में रडीचे साहब ने इस सभा के साथ जो अनेक उपकार किए थे उनका वर्णन सभापति की आज्ञा से बाबू श्यामसुन्दर दास ने किया और कहा कि जिस जमीन पर यह सभाभवन बना है वह रडीचे साहब के उद्योग से ही सभा को मिली है, भवन बनवाने में जो जो कठिनाइयां उपस्थित हुईं वे सब रडीचे साहब की ही कृपा से दूर होती गईं, जब सभा में एक सुबोध व्याख्यान के समय वे उपस्थित थे और कुछ लोगों से यह सुना कि यदि इन व्याख्यानों के लिये एक मैजिक लालटेन का प्रबंध हो जाता तो बहुत ही उत्तम होता उस समय उन्होंने शीघ्र ही मैजिक लालटेन के लिये १०००) का प्रबन्ध कर दिया। इन्हीं के उद्योग और इन्हीं की कृपा से बनारस के म्युनिसिपल बोर्ड और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ने सभा के पुस्तकालय को ३६०)रु० और ५०)रु० की वार्षिक सहायता देनी स्वीकार की और म्युनिसिपेलिटी ने पानी और नल का टिकट सभा पर माफ़ कर दिया। इन सब बातों से यह विदित हो जायगा कि मिस्टर रडीचे का सभा पर कितना प्रेम रहा है। इस अवस्था में आपके बनारस से जाने का सभा को बहुत शोक है। आपको सदैव स्मरण रखने के लिये सभा ने निश्चय किया है कि सभा का एक नियमित मेडल "रडीचे मेडल" के नाम से दिया जाय, इनका एक बड़ा फोटो चित्र सभाभवन में टांगा गया है और आज इनके साथ उपस्थित सभासदों का एक फोटो लिया गया है। यद्यपि आपने सभा की जितनी सहायता की है उसके आगे उनके सम्मानार्थ सभा ने जो कुछ किया है वह कुछ भी नहीं है तथापि सभा को आशा है कि वे इसे ही स्वीकार करेंगे।

इस पर मिस्टर रडीचे ने सभा को इस कृपा के लिये अनेक धन्यवाद दिए और कहा कि यह सभा बहुत उत्तम कार्य कर रही है और वे जितना चाहते थे उतनी इसकी सहायता न कर सके। वे सभा को कदापि नहीं भूलेंगे और सदा इसकी सहायता करने के लिये उद्यत रहेंगे।

सभा विसर्जित हुई।

प्रबन्धकारिणी सभा।

बृहस्पतिवार ता० ९ जूलाई १९०८ सन्ध्या के ६ बजे

स्थांन--सभाभवन।

उपस्थित।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी सभापति। बाबू श्याम सुन्दर दास बी० ए०। बाबू जुगुल किशोर। बाबू गौरी शंकर प्रसाद। बाबू माधव प्रसाद। बाबू बेणी प्रसाद। रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स। बाबू गोपालदास।

(१) गत वर्ष की रिपोर्ट पढ़ी गई और दोहरा कर ठीक की गई।

(२) आगामी वर्ष के लिये बजेट तयार किया गया और निश्चय हुआ कि यह आगामी वार्षिक अधिवेशन में स्वीकृति के लिये उपस्थित किया जाय।

[बाबू श्याम सुन्दर दास इतना कम हो जाने पर सभा से हटगए।]

(३) हिन्दी कोश के सम्पादक के चुनाव के विषय में आई हुई सम्मतियां उपस्थित की गईं।

निश्चय हुआ कि बाबू श्याम सुन्दर दास हिन्दी कोश के सम्पादक चुने जांय।

(४) मंत्री के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि सभा के चपरासी सुखनन्दन मिश्र का वेतन ता० १ जुलाई १००८ से ६)रु० मासिक कर दिया जाय।

(५) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

वार्षिक अधिवेशन।

बृहस्पतिवार ता० १६ जुलाई १९०८ सन्ध्या के ६ बजे।

स्थान--सभाभवन।

उपस्थित।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी-सभापति, बाबू श्याम सुन्दर दास बी० ए०, बाबू जुगुलकिशोर, बाबू बेणीप्रसाद, बाबू कालिदास माणिक, बाबू अमीर सिंह खत्री, बाबू लक्ष्मी नारायण कक्कड़, बाबू लक्ष्मी नारायण धवन, बाबू सालिगराम सिंह, पण्डित शिव नारायण शङ्खधार, बाबू राजा राम गुप्त, पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा, बाबू रामप्रसाद चौधरी, पण्डित गंगाराम सारस्वत, पण्डित रामनारायण मिश्र, लाला भगवानदीन, पण्डित रामचन्द्र नायक कालिया, बाबू गौरीशंकर प्रसाद, बाबू बटुक प्रसाद गुप्त, बाबू माधव प्रसाद मारवाड़ी, पण्डित केदारनाथ पाठक, बाबू रूपनारायण वर्म्मा, पण्डित कन्हैया लाल शर्म्मा, डाक्टर गणेश प्रसाद भार्गव, बाबू माधव प्रसाद, बाबू ठाकुर प्रसाद, बाबू गोपाल दास, बाबू रामनारायण बाराबंकी (प्रतिनिधि बाबू श्याम सुन्दर दास) ठाकुर गोपाल सिंह राठोर, खरवा, (प्रतिनिधि बाबू श्याम सुन्दर दास) बाबू सीताराम गुप्त देवबन्द, (प्रतिनिधि बाबू श्याम सुन्दर दास।)

पण्डित सोमेश्वर दत्त शुक्ल,
रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स, काशी,
गोस्वामी बृजनाथ शर्म्मा, आगरा, } प्रतिनिधि बाबू श्याम सुन्दर दास।

बाबू भगवती शरण सिंह, बनारस,
बाबू खानचन्द्र ओवरसियर, बरेली,
बाबू शिवकुमार सिंह, ज़िला बांदा, } प्रतिनिधि पण्डित राम नारायण मिश्र।

पण्डित रामाधार तिवारी, मिर्ज़ापुर.
श्रीमत्परमहंस स्वामि राम कृष्णानन्द गिरि, प्रयाग,
बाबू झबूलाल, मिर्ज़ापुर, } प्रतिनिधि म० म० पण्डित सुधाकर द्विवेदी।

बाबू स्वरूप लाल नन्हैारिया, जबलपुर (प्रतिनिधि बाबू जुगुल-

किशोर), राय पूरन चन्द, पटना (प्रतिनिधि बाबू बेणीप्रसाद), एच० हरसुखदेव, कोहिमा (प्रतिनिधि बाबू गोपाल दास)।

(१) पदाधिकारियों और प्रबन्धकारिणी सभा के सभासदों के चुनाव के लिये उपस्थित सभासदों में निर्वाचन पत्र बांटे गए और सभापति ने ४५वें नियम के अन्तर्गत २ उपनियम के अनुसार उनका परिणाम देखने के लिये पण्डित रामनारायण मिश्र और बाबू कालिदास माणिक को नियत किया।

(२) उपमंत्री ने सभा का पन्द्रहवां वार्षिक विवरण पढ़ा। बाबू गौरीशंकर प्रसाद के प्रस्ताव तथा बाबू बटुक प्रसाद गुप्त के अनुमोदन करने पर सर्व्व सम्मति से निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय।

(३) निर्वाचन पत्रों का निम्न लिखित परिणाम सूचनार्थ उपस्थित किया गया—

सभापति।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी।

उपसभापति।

बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०।

बाबू गोविन्द दास।

मंत्री।

बाबू जुगुलकिशोर।

उपमंत्री।

बाबू बेणीप्रसाद।

प्रबन्धकारिणी सभा के बाहरी सभासद।

[पंजाब से]

पण्डित हीरानन्द शास्त्री एम० ए०।

[संयुक्त प्रदेश से]

आनरेबल पण्डित मदन मोहन मालवीय बी०ए०, एलएल०बी०, पण्डित श्याम बिहारी मिश्र एम० ए०।

[मध्य प्रदेश से]

पण्डित माधवराव सप्रे बी० ए०।

[राजपुताना और मध्य भारत से]

मुंशी देवीप्रसाद।

[बंगाल और बिहार से]

राजा कमलानन्द सिंह।

बाबू श्याम सुन्दर दास ने कार्य्य की अधिकता के कारण उपसभापति होना अस्वीकार किया। अतः निश्चय हुआ कि रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स, जिनका वोट बाबू गोविन्द दास के नीचे आया था उपसभापति चुने जांय।

संयुक्त प्रदेश के बाहरी सभासदों में पण्डित श्याम बिहारी मिश्र और ठाकुर गदाधर सिंह के लिये बराबर सम्मति आई थी। सभापति ने अपनी वोट से पण्डित श्यामबिहारी मिश्र को सभासद चुना।

(४) बाबू श्याम सुन्दर दास ने आगामी वर्ष के लिये निम्न लिखित बजेट उपस्थित किया और उसे पढ़कर समझाया।

आय।	व्यय।
२५७१॥≈)१०½ गतवर्ष की बचत	८७०) आफिस के कार्यकर्ताओं का वेतन
२०००) सभासदों का चन्दा	२०००) छपाई
२५००) पुस्तकों की बिक्री	३२५) पारितोषिक
८००) गवर्न्मेंट की सहायता	८२०) पुस्तकालय
१५००) पृथ्वीराज रासो की बिक्री	२०००) पृथ्वीराज रासो
६४००) स्थायी कोश	४००) स्थायी कोश
३०) नागरी प्रचार	

१८०) फुटकर आय	६००) पुस्तकों की खोज
५) ब्याज	२५०) नागरीप्रचार
६००) राजासाहब भिनगाकी सहायता	४००) डाकव्यय
५०) पारितोषिक	१५०) पुस्तकों के लिये पुरस्कार
७७०) पुस्तकालय	२००) फुटकर
२८०) राधाकृष्ण दास स्मारक	६०००) उधार
६०००) हिन्दी भाषा का कोश	५०) मरम्मत
२०८४२॥≤)१०½	५०) असबाब
	३८२।) राधाकृष्ण दास स्मारक
	६३६७॥≡)॥ हिन्दी भाषा का कोश
	२०८६४॥≡)॥

बाबू बेणी प्रसाद के प्रस्ताव तथा बाबू ठाकुर प्रसाद के अनुमोदन पर निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय ।

(५) प्रबन्धकारिणी सभा की निम्न लिखित रिपोर्ट उपस्थित की गई--

"तारीख ८ जूलाई की प्रबन्धकारिणी सभा में हिन्दी कोश के सम्पादक चुनने का विषय उपस्थित किया गया था। इसके लिये एक मास पूर्व सब सभासदों से सम्मति मांगी गई थी। इनमें से अधिकांश महाशयों ने बाबू श्याम सुन्दर दास को सम्पादक चुनने की सम्मति भेजी। प्रबन्धकारिणी सभा के उपस्थित सभ्यों ने भी सर्वसम्मति से इन्हीं को कोश का सम्पादक चुनने की सम्मति दी और इन्हीं को इस आवश्यक कार्य के सर्वथा योग्य समझकर सम्पादक चुनना निश्चय किया। तदनुसार इनसे प्रार्थना की गई कि वे कृपा कर इस भार को ग्रहण करें जिसके उत्तर में उन्होंने यह पत्र भेजा है-

"आपका पत्र नम्बर ८०/१६ ता० १४ जुलाई १९०८ का प्राप्त हुआ सभा ने कोश का सम्पादक चुनने की जो मुझपर कृपा की है उसके

लिये मैं सभा का बहुत अनुगृहीत हूं पर सभा को यह ज्ञात है कि मुझे समय का अभाव रहता है और कोश के लिये कई वर्षों तक कई घंटे प्रति दिन काम करना पड़ेगा। इस अवस्था में मैं इस कार्य का भार लेने में कठिनता देखता हूं। इसके अतिरिक्त सभाने यह निश्चय किया हुआ है कि सम्पादक को पांच हजार रुपया इस कार्य के लिये पुरस्कार दिया जाय। मुझे आज इस सभा की सेवा करते १५ वर्ष हो चुके और मुझ से जहां तक बन पड़ा मैंने इसके उद्देश्यों की सिद्धि और सफलता के लिये उद्योग किया है तथा अब तक मैंने इससे आर्थिक लाभ उठाने की कामना नहीं की, न किसी प्रकार से सभा द्वारा अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने का उद्योग किया है। इसलिये इस कार्य्य का भार स्वीकार करने में मैं यह दूसरी कठिनता देखता हूं अतएव मेरी सभा से प्रार्थना है कि वह किसी दूसरे व्यक्ति को कोश का सम्पादक चुने जो मुझसे अधिक समय लगा सके और सभा की इच्छानुसार पुरस्कार भी लेना स्वीकार करे। कम से कम सभा को इसका उद्योग करना चाहिए। यदि इस की चेष्टा कर लेने पर सभा फिर भी यही निश्चय करे कि मुझे ही इस कार्य को करना चाहिए तो मैं सभा की आज्ञा को सहर्ष सिरोधार्य करूंगा। उस अवस्था में मेरी सभा से यह प्रार्थना होगी कि सम्पादक के पुरस्कार का मद एस्टिमेट में से काट कर उसे सहायकों के मद में व्यय करने की आज्ञा दी जाय। मैं किसी अवस्था में इस कार्य के लिये आर्थिक पुरस्कार स्वीकार नहीं कर सकता। परन्तु साथ ही मेरी ऐसी अवस्था भी नहीं है कि सब काम छोड़कर इस काम में लग जाऊं। इसलिये यह आवश्यक होगा कि मेरे सहायकों की संख्या एक की जगह तीन या चार हो जिसमें कार्य यथासाध्य शीघ्र हो सके। इन्हीं दो शर्तों पर मैं इस कार्य का भार ले सकूंगा परन्तु मैं फिर भी निवेदन करूंगा कि पहिले किसी दूसरे को सम्पादक नियत करने का उद्योग किया जाय और उसमें निष्फलता होने पर मुझे आज्ञा दी जाय। आशा है कि सभा मेरी प्रार्थना पर विचार करेगी"।

अभी इस पत्र पर प्रबन्धकारिणी सभा ने कुछ निश्चय नहीं किया है"।

बाबू बेणी प्रसाद के प्रस्ताव और बाबू गौरी शंकर प्रसाद के अनुमोदन पर अनेक विवाद के अनन्तर निश्चय हुआ कि बाबू श्यामसुन्दर दास को कोश का सम्पादक चुनने के विषय में प्रबन्धकारिणी सभा का प्रस्ताव स्वीकार किया जाय और उस सभा को अधिकार दिया जाय कि बाबू श्यामसुन्दर दास ने जो पत्र भेजा है उस पर विचार करके इस कार्य का वह यथोचित प्रबन्ध करे।

(६) कुंवर प्रतिपाल सिंह, पण्डित गौरी शंकर हीराचन्द ओझा और बाबू ठाकुर प्रसाद के लिये मेडल उपस्थित किए गए।

निश्चय हुआ कि ये मेडल इन महाशयों को सभा के वार्षिक उत्सव के समय दिए जांय।

(७) प्रबन्धकारिणी सभा के नगरस्थ सभासदों के चुनाव का निम्न लिखित परिणाम उपस्थित किया गया--

बाबू श्याम सुन्दर दास बी० ए०, बाबू माधव प्रसाद, पण्डित राम नारायण मिश्र बी० ए०, मिस्टर ए० सी० मुकर्जी बी० ए०, बाबू गौरीशंकर प्रसाद वकील, बाबू कालिदास माणिक, पण्डित माधव प्रसाद पाठक, पण्डित सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा।

(८) पण्डित राम नारायण मिश्र के प्रस्ताव और बाबू कालिदास माणिक के अनुमोदन पर निश्चय किया हुआ कि बाबू श्याम सुन्दर दास और बाबू जुगुलकिशोर ने जिस योग्यता उत्साह और परिश्रम के साथ सभा की सेवा की है उसके लिये उन्हें धन्यवाद दिया जाय।

(९) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।
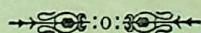
काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय व्यय का हिसाब ।

[१ जुलाई १९०६ से ३० जून १९०८ तक]

आय	धन की संख्या			व्यय	धन की संख्या		
गत वर्ष की बचत	४०३	०	८	आफिस के कार्य कर्ताओं का वेतन	८२०	१०	२
सभासदों का चन्दा	१९४०	५	६	पुस्तकालय	६२२	१२	१½
पुस्तकों की बिक्री	११४४	११	५	पृथ्वीराज रासो	९९९	३	६
रासो की बिक्री	११३२	७	४	नागरी प्रचार	१९६	१४	९
पुस्तकालय	५१५	१०	०	फुटकर	४११	११	९
हिन्दी कोश	१०[illegible]७	०	०	डाक व्यय	४३२	१३	०
फुटकर आय	८२	१४	८	हिन्दी कोश	७२९	४	६
				छपाई	१६८२	११	०
गवर्न्मेंट की सहायता	८००	०	०	स्थायी कोश	४५४	७	०
स्थायी कोश	२०७	१५	०	मरम्मत	९	८	९
नागरी प्रचार	२	१२	३	पुस्तकों की खोज	७१७	०	०
व्याज	१	४	७	पारितोषिक	८५	३	०
राजा साहब भिनगा			०	पुरस्कार	५३	३	०
की सहायता	३००	०	०	असबाब	११	०	०
पारितोषिक	६५	०	०	जोड़	७२२६	६	६½
राधाकृष्णदासस्मारक	९१	०	०	बचत	२५७	१०	१०½
जोड़	७४८४	१	५	जोड़	७४८४	१	५

देना ६८८०)

जुगुलकिशोर, मंत्री ।

यह पुस्तकें

पुस्तककार्य्यालय व भारत प्रेस, बनारस से मिल सकती है।

सोनारी।

यह पुस्तक हिन्दी में सोनारों के फ़ायदे के लिए लिखी गई है इस में कई बातें नई बताई गई हैं जिन सोनारों को बहुत फ़ायदा हो सकता है, जैसे सोना रंगना वग़ैरा, दाम ।)

—:o:—

देशी करघा।

यह ग्रंथ तयार होगया है, आजकल जो लोग हैंड लूम के कारखाने खोलना चाहते हैं और इस विद्या के न जानने के सबब से हिम्मत नहीं कर सकते या ज़्यादा फ़ायदा नहीं उठा सकते उनको बहुत बड़ी मदद और जानकारी इस किताब से होजायगी। इसके बारे में मिस्टर ए० सी० चटरजी, आई० सी० एस० लिखते हैं:- "I have been very pleased to read your book on Handloom weaving...............as the first book on the subject in the Vernaculer, I hope it will have a good sale and your laudable efforts will meet with a due recognition" अर्थात आपकी लिखी देशी करघा नामक किताब को पढ़कर मैं बहुत खुश हुआ, चूंकि देशी ज़बान में यह पहिली ही किताब लिखी गई हैं, मुझे उमेद है कि इसकी खूब बिक्री होगी और आपकी तारीफ़ काबिल मेहनत और काम की लोग खूब क़दर करेंगे"। यह किताब पढ़ने लायक है और इस में बहुत सी तस्बीरें भी दी गई हैं, दाम ॥)।

——:o:o:——

सुघड़ दर्ज़िन।

नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।

स्त्री शिक्षा के लिए बहुत ही अच्छा और उपयोगी ग्रंथ है। इस में सीने परोने, कसीदे काढ़ने, कपड़ों की

मरम्मत करने, कपड़ों के काटने छांटने, मोज़े इत्यादि बुनने की तरकीबें बहुत ही उत्तम रीति से बताई गई हैं और साथही उत्तम उत्तम् चित्र देकर उन्हें स्पष्ट कर दिया है माने सोना और सुगंधि हो गया है। यह किताब ऐसी है कि हर गृहस्थ के यहां अवश्य रहनी चाहिए। स्त्री शिक्षा के लिए ऐसा अनूठा ग्रंथ अब तक नहीं छपा था। दाम ॥)

बाबू राधाकृष्णदास विरचित

प्रतापनाटक

का दूसरा संस्करण छपकर तय्यार है।

मूल्य ।॥)

फूल में कांटा

इस उपन्यास में बड़ी बूदी से साहूकारों के लड़कों के लाड चाव में बिगड़ने की अवस्था का ज़िक्र है यह पुस्तक एक अंग्रेज पुस्तक "पापर मिलओनर" के आधार पर लिखी गई है। मूल्य ॥=)

अष्टाध्यायी

पाणिनि सूत्र वृत्तिः

पं० जीवा राम शर्म्मा विरचित

(संस्कृत और भाषा व्याख्या सहित) मूल्य ३)

सरलव्यायाम

इस पुस्तक में लड़कियों के कसरत करने की रीति भली-भांति बताई गई है इस में लग भग ५० तसवीरें हैं। मूल्य ।=)

चीन दर्पण ।

यह "यात्रा" जिस समय वाक्सरों की लड़ाई हुई थी और हिन्दुस्तान के सिपाही भेजे गये थे उस समय डा० महेन्द्रलाल गर्ग ने अपने तजरुबे से लिखी है। दाम १।)

मेगास्थ नीज़ ।

भारत वर्ष के लग भग २३०० वर्ष के पुराने वृत्तान्त के जान्ने का शौक है तो इस यात्री के लिखे वृत्तांन्त को पढ़िये [इतिहास प्रकाशक समिति ने छापा है] मूल्य ॥)

दुर्गेश नन्दिनी ! दुर्गेश नन्दिनी !!

ऐतिहासिक अति रोचक उपन्यास ।

यह बंगाल के मशहूर उपन्यास लेखक बाबू बङ्किमचन्द्र चट्टोपाध्याय लिखित ऐतिहासिक नावेल है [बाबू गदाधर सिंह द्वारा अनुवादित] अत्यन्त रोचक होने का ही कारण है कि तीसरी बार छपा है उम्दः अक्षर उम्दः कागज़ है। १ भाग ।≤) २ भाग ≤)

"बुन्देलखण्ड का शिवाजी"

महाराज छत्रसाल जी की जीवन चरित्र ।

विदित हो कि "बुन्देलखण्ड केशरी" नामक पुस्तक छप गई है जिसमें बुन्देलखण्ड के महाराज छत्रसालजी के जीवन वृत्तान्त का लेख है, पद्य में लाल कवि कृत छत्रप्रकाश में भी महाराज की वीरता का वर्णन है, किन्तु बुन्देलखण्ड केशरी में महारज के जन्म से लेकर अन्त पर्य्यंत उनकी समस्त वीरता, धीरता, पुरुषार्थ, नीति चातुर्य्य और देशहितैषिता का क्रम से गद्य में वर्णन है साथ ही इसके बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास और प्राणनाथ जी का जीवन चरित्र भी संक्षेप में है और तसवीर छत्र साल जी की इस के साथ है। मूल्य २ भाग का ॥।)

प्राचीन भारतवर्ष के सभ्यता का इतिहास ।

(मि० रमेश चन्द्रदत्त के लिखे हुए पुस्तक का अनुवाद)

यह पुस्तक काशी "इतिहास प्रकाशक समिति" की ओर से छपी है। हिन्दी भाषा में अपने ढंग का नया इतिहास है और भाषा में इतिहास के अभाव को दूर कर रहा है। इस पुस्तक के अधिक बिकने से नये इतिहास "समिति" की ओर से निकल सकेंगे अवश्य मंगाइये। मूल्य-भाग पहिला १) भाग दूसरा १) भाग तीसरा १)

मेज़ीनी-आप इस जीवनी को [illegible] पढ़ने के बाद ही जान
सकेंगे पंजाब के मशहूर लीडर ला० लाजपतराय की लिखी पुस्तक
का अनुवाद है (बाबू केशवप्रसाद सिंह द्वारा अनुवादित । दाम ।)

महर्षि शंकर स्वामी का जीवन चरित्र ।

यह पुस्तक पढ़ने योग्य है इसमें शंकर स्वामी के जीवनी पर बड़ी विद्वता के साथ बहस की है किताब बड़ी शिक्षादायक है ग्रन्थ करता का नाम पं० राजाराम प्रोफ़ेसर है । मूल्य ॥)

उपनिषद भाषा अनुवाद ।

भारतवर्ष की प्राचीन फ़िलासफ़ी का अनुवाद ।
पं० राजाराम द्वारा अनुवादित ।

तलवकारोपनिषद	≶)॥	वाजसनेयसंहितोपनिषद	≶)॥
प्रश्न-उपनिषद	।)	कठ-उपनिषद	।≶)
माण्डूक्य-उपनिषद	।-)	बृहदारण्यक-उपनिषद	२≶)

पारसियों का इतिहास ।

(पारसी जाति के इतिहास का वर्णन है) पं० राम- नारायण मिश्र बी० ए० लिखित ≶)

बनिता विनोद ।

स्त्री शिक्षा के [illegible] सियों को शुभ सम्बाद ।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने स्त्रियों के पढ़ने की उत्तम पुस्तकों का अभाव देखकर महाराजा साहब भिंगा के प्रस्ताव और सहायता से एक अति शिक्षादायक "वनिता विनोद" नाम की पुस्तक छपवाई है । १६ उपयोगी विषय हिन्दी के १२ चुने हुए लेखकों की लिखी हुई ३३० पन्ना डिमाई ८ पेजी की पुस्तक का । मूल्य १)

लखनऊ की नवाबी ।

यह ऐतिहासिक मनोहर पुस्तक सरल हिन्दी में उत्तम कागज पर छप गई है । इस पुस्तक में लखनऊ के बादशाह नसीरुद्दीन हैदर के समय का सच्चा वृत्तान्त है, जिसे एक अंग्रेज ने, जो बहुत दिनों तक उनके नौकर रह चुके थे, बड़े मनोहर रीति से लिखा है । इस में उनकी वे लहरबहर, जिनके लिये कि 'लखनऊ की नवाबी' विख्यात है, लिखी गई है । हाथियों, गेंड़ों, शेरों की लड़ाईयां, शिकार के दृश्न ऐसी उत्तम रीति से दिखाए गए हैं कि वाह वाह । बादशाही महलों और ताजियेदारी इत्यादि के वर्णन इस उत्तमता के साथ लिखे गए हैं, मानो हजूर वे दृश्य आंखों के सामने हो रहे हैं । पहला भाग मूल्य ॥।) दूसरा भाग ॥।)

सभा के पारितोषिकों की सूची।

१ इस वर्ष के सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्नलिखित विषय नियत हैं। ये लेख ३१ दिसम्बर १९०८ तक सभा में आजाने चाहिएं।

वैज्ञानिक विषय।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव।

साधारण (विद्या) विषय।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था।

२ डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल—यह सोने का मेडल उस व्यक्ति को दिया जायगा जिसका लेख "छूत वाले रोग और उनसे बचने के उपाय" पर सबसे उत्तम होगा। लेख सरल हिन्दी में होना चाहिए और सभा के पास ता० ३१ दिसम्बर १९०८ तक आजाना चाहिए।

३ संयुक्त प्रदेश के न्यायालयों में जो अर्जीनवीस सब से अधिक अर्जियां लिखकर [illegible] १९०८ में दाखिल करेगा उसे २५) रु० का एक पुरस्कार दिया जायगा और जो उससे कम अर्जियां देगा उसे १५) रु० पुरस्कार दिया जायगा। ये पुरस्कार एकही ज़िले के दो अर्जीनवीसों को न मिलेंगे। न वे इसे पा सकेंगे जो सभा की ओर से इस कार्य के लिये वेतन पर नियत हैं। जो लोग इस पुरस्कार को पाया चाहें उन्हें उचित है कि दो प्रतिष्ठित वकीलों के हस्ताक्षर सहित ७ जनवरी १९०९ तक सभा को सूचना दें कि उन्होंने कितनी अर्जियां सन् १९०८ में दाखिल की हैं।

५००) का पुरस्कार—सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका के आधार पर जो हिन्दी का सब से उत्तम व्याकरण लिखेगा उसे यह पुरस्कार दिया जायगा। व्याकरण ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा के पास आजाना चाहिए।

यदि कई व्याकरणों के भिन्न भिन्न अंश उत्तम समझे जांयगे तो यह पुरस्कार उन सब लोगों में बाँट दिया जायगा और उन ग्रन्थों को घटाने बढ़ाने आदि का इस सभा को पूरा अधिकार होगा। सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका दो पैसे का टिकट डाक व्यय के लिये भेजने पर सभा के मंत्री से मिल सकती है।

हिन्दीभाषा में नवीन आविष्कार।

INDIAN METEOROLOGY.

वृष्टि प्रबोध।

भारत का वायु शास्त्र।

प्राचीन वृष्टि विद्या का भण्डार।

इस ग्रन्थ की भूमिका के आधार पर ही जगद्विख्यात 'भारतमित्र' समाचार पत्र में—'दुर्भिक्ष के कारण और बचने का उपाय' पर—अभी कई लेख निकल चुके हैं, जिनकी प्रशंसा सर्वत्र हो रही है।

सुभिक्ष दुर्भिक्ष को पहिले ही से जान लेने की एक मात्र पुस्तक [illegible] सियों के

इस कार्य पर [illegible]कर्त्ता ने 'प्रचीन ज्योतिः शास्त्री' 'दैवज्ञभूषण' आदि की उपाधि प्राप्त की है।

वर्षा जानने की आवश्यकता, वर्षा जानने की विधि, और वर्षा होने का उपाय—ये तीनों विषय इस ग्रन्थ में विस्तार से वर्णित हैं जिस से विद्वान तो क्या साधारण से साधारण मनुष्य को भी बहुत समय पहिले से सुगमता पूर्वक वर्षा आदि का ज्ञान हो जावेगा। वर्षा के लिये पश्चिमी विद्वानों के बेरोमटिर थर्मामीटर आदि यंत्रों का भी निवेचन किया गया है। ३५० पृष्ठ का ग्रन्थ होने पर भी मूल्य केवल रु० १।)

पं० मीठालाल व्यास ब्यावर—राजपुताना

भाग १३] Registered No. A 414 [संख्या २

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

सम्पादक--श्यामसुन्दर दास बी० ए०
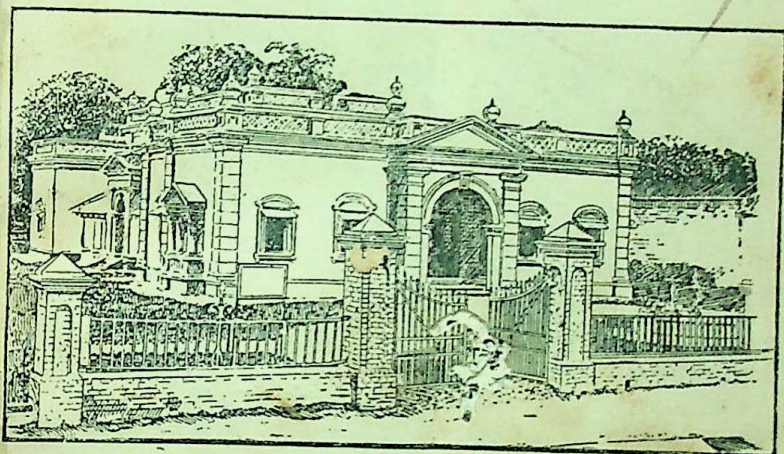
प्रति मास की १५ ता० को

काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित ।

जूलाई १९०८ ।

Printed by Madho Prasad at the Bharat Press, Benares, for the Publisher.

प्रति संख्या का मूल्य =) वार्षिक मूल्य १)

विषय ।

पृष्ठ

जहां विद्यार्थियों को भेजना उचित समझा जाय, उस देश की हों। जातीय विद्यालय में भी उन्हीं भाषाओं में, उन विद्यार्थियों की जो विदेश जाना चाहें, शिक्षा होनी चाहिए और उसीकी उच्चशिक्षा भी हो जिससे विद्यार्थियों को औद्योगिक कार्य के सम्बन्ध में उस भाषा का पूरा बोध होजाय।

(५) उपरोक्त प्रन्तीय और जातीय विद्यालयों में यंत्र शास्त्र सम्बन्धी कक्षाएं खोलना।

इसका वही प्रबन्ध होना चाहिए जैसा रुड़की इंजीनियरिङ्ग कालेज अथवा शिवपुर कालेज में हैं। इसका न होना औद्योगिक शिक्षा में बड़ी भारी त्रुटि रह जाना है। इसकी शिक्षा पाए विद्यार्थियों को यंत्र निर्माण, संचालन, मरम्मत आदि और उनके सम्बन्ध का ज्ञान होगा; वे गृह, पुल, सड़क, नहर आदि बनाने के योग्य; होंगे, अनुसंधान और माप आदि का काम करने में निपुण हो जावेंगे और इस प्रकार औद्योगिक शिक्षा का एक पूर्ण अंग पुष्ट होगा।

इस शिक्षा का प्रबन्ध प्रान्तीय विद्यालयों में और जातीय विद्यालय में होना चाहिए। और जातीय विद्यालय में उपरोक्त रुड़की अथवा शिवपूर कालेजों के बराबर वरन उनसे अधिक शिक्षा होनी चाहिए और धीरे धीरे उसकी यहां तक उन्नति हो कि वह उन्नतिशील देशों के इंजीनियरिंग कालेजों के सदृश सब प्रकार से सम्पन्न और परिपूर्ण हो जाय। ज़िले की पाठशालाओं में इस इंजीनियरिंग शिक्षा की साधारणतः कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ती।

४

(६) आलेख्य अथवा चित्र लेखन की कक्षाएं भी इसी क्रम से खोलना ।

कला की शिक्षा और उन्नति के लिये ये अत्यन्त आवश्यक हैं; यंत्र शास्त्र की शिक्षा की ये मूल हैं । इनके द्वारा चित्र खींचने, नमूने के चित्र बनाने, गृह आदि के काल्पनिक चित्र बनाने आदिक में सहायता मिलती है । इसी की शिक्षा प्राप्त कर भारतवर्ष के राजा रवि वर्मा अपने सुन्दर चित्रों के लिये संसार भर में प्रसिद्ध हो गए हैं । फ्रांस आदि के बने अगिनित चित्र भारतवर्ष का करोड़ों रुपया जबरदस्ती खींचे लिए जा रहे हैं । ऐसे अनेक दृष्टान्त इस शिक्षा की उपयोगिता के वर्तमान् हैं अतएव इसकी ओर ध्यान न देना बड़ी भारी भूल करना है ।

ज़िले की औद्योगिक पाठशालाओं में वर्तमान हाईस्कूलों के बराबर इस आलेख्य शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिए और प्रान्तीय विद्यालयों में इसको पराकाष्टा तक पहुंचा देना चाहिए । जातीय विद्यालय में इस विषय की ऐसी शिक्षा होनी चाहिए कि जिससे सुयोग्य चित्रकार आदि तय्यार होवें ।

(७) औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षकों की शिक्षा के लिये प्रान्तीय और जातीय विद्यालयों में क्रम से "शिक्षक शिक्षालय" खोलना ।

सुयोग्य शिक्षकों के बिना उत्तम शिक्षा का होना असम्भव है, और विदेश से शिक्षक बुलाने में अतिव्यय होना निश्चय है अतएव यहीं शिक्षक तय्यार होने का प्रबन्ध करना अत्यन्त आवश्यक है । शिक्षकों की शिक्षा के

लिये विद्यालयों में शिक्षालय खोलना चाहिए। इस भांति जिले की औद्योगिक पाठशालाओं के लिये जातीय विद्यालय में शिक्षक तय्यार होंगे। इसके अतिरिक्त कुछ विदेशी शिक्षा प्राप्त पुरुष भी शिक्षा देने के लिये आरम्भ में तय्यार रहेंगे, परन्तु यथार्थ में इन्हीं शिक्षालयों के शिक्षित शिक्षकों पर ही शिक्षा कार्य निर्भर रहेगा और यही अत्यन्त लाभ दायक होगा। अतएव शिक्षक शिक्षालयों का उचित प्रबन्ध होना भी औद्योगिक शिक्षा प्रचार में सफलता प्राप्त करने के लिये अति आवश्यक है।

(८) औद्योगिक व्यवसायियों और उनके बालकों तथा व्यापारियों को शिक्षा देने के लिये व्यापारिक केन्द्र स्थल पर "निशि पाठशालाएं" खोलना।

नए ढंग से काम करने के लिये व्यवसायियों तथा शिल्पकारों को उत्साहित करने की यह विधि भी बहुत अच्छी जँचती है। दिन भर अपनी दूकानों में काम करने के उपरान्त संध्या समय वे इनमें शिक्षा पासकते हैं। यदि किसी जिले की साधारण औद्योगिक पाठशाला ऐसे स्थान पर हो तो उसी के सम्बन्ध में निशिपाठशाला खोलना अच्छा होगा। अब भी कई स्थानों में शिल्पकार आदि के लिये निशि पाठशालाएं हैं। इनमें मुख्य कर दो बातों पर ध्यान देना चाहिए। प्रथम साधारण भाषा की शिक्षा देना और द्वितीय व्याख्यानों और नमूनों द्वारा नवीन ढंग की वस्तुएं तय्यार कराना तथा इस प्रकार उनके निर्माण का सरल और अल्प व्यय उपाय बताना, दृष्टान्तों द्वारा दिखाना अथवा शिल्पकारादि की रुचि नवीन प्रणाली की ओर

खींचना । ऐसे स्थान पर जहां ज़िले की पाठशाला न हो इसको (निशि पाठशाला) सूक्ष्म रूप से ज़िले की पाठशाला के सदृश ही सुसज्जित रखना चाहिए । केवल विज्ञान आदि की शिक्षा, जो अधिक समय लेती है, उसमें नहीं होनी चाहिए । उसमें तो वेही बातें, जिनकी जांच हो चुकी है और जो उपयोगी सिद्ध हो गई हैं, सिखाई जानी चाहिएं । अथवा यों कहिए कि इसकी शिक्षा अल्पव्यय अथवा थोड़े समय में पूर्ण फल देनेवाली होनी चाहिए, जिससे व्यवसायी गण अपने साधारण काम को करते हुए नवीन ढंग को धारण कर तुरन्त ही उससे लाभ उठाने लगें । यदि "निशि पाठशाला" के विद्यार्थियों से कुछ मासिक फ़ीस भी ली जाय तो कोई बुराई नहीं । ये पाठशालाएं प्रत्येक स्थान पर जहां कोई प्रख्यात औद्योगिक कार्य होता हो, अथवा जिस नगर में औद्योगिक व्यवसायियों की जनसंख्या अधिक हो, वहां खोली जावें । यदि उसी स्थान पर कोई जिले की पाठशाला अथवा विद्यालय हो तो उसी के सम्बन्ध में अन्यथा स्वतंत्र रूप से ये खोली जानी चाहिएं सौर इनका उद्देश्य शीघ्र फलदायी शिक्षा होना चाहिए । निदान इन निशि पाठशालाओं का मुख्य उद्देश्य व्यवसायियों में साधारण शिक्षा तथा औद्योगिक ढंग से काम करने की विधि का, जो शीघ्र फलदायक हो, प्रचार करना होना चाहिए ॥

(२)

प्रबन्ध ।

ऐसे बड़े कार्य को विधि पूर्वक चलाने के लिये उत्तम

व्यवस्था अथवा प्रबन्ध का होना भी अत्यावश्यक है और वह निम्न विधियों द्वारा भली भांति हो सकता है।

(१) उच्च शिक्षाप्राप्त ग्रेजुएट नव युवकों को औद्योगिक, वैज्ञानिक और व्यवसायिक आदि उच्च शिक्षा के लिये इङ्गलैण्ड, जापान, अमेरिका, जर्मनी आदि औद्योगिक उन्नतिशील देशों को भेजना।

जापान ने इसी ढंग से व्यवसायिक और औद्योगिक उन्नति की है। इस विषय में भारतवर्ष की स्थिति पूर्व जापान ऐसी हो रही है अतएव उसी का अनुकरण करना श्रेयस्कर है। भारतवर्ष में औद्योगिक शिक्षा का एक प्रकार से अभाव सा है। स्वयं अनुभव प्राप्त करके इसकी उन्नति करने में बहुत समय लगेगा। इससे दूसरे देशों से उस विद्या को लाना बहुत जरूरी है, प्रथम-नवयुवक ग्रेजुएट, जिन्हों ने वर्तमान कालेजों में विज्ञान आदि की विशेष शिक्षा प्राप्त की हो सीधे विदेश भेजे जाकर वहां के कारखानों और औद्योगिक विद्यालयों में शिक्षित किए जांय और वेही लोग लौट कर शिक्षक, निरीक्षक, व्याख्यान दाता, कारखानों के संचालक, अनुभवशालादि के कार्यकर्ता, नेता आदि बन कर कार्य चलावें और औद्योगिक कार्य की उन्नति के लिये दृढ़ सहायक हों। जिन औद्योगिक बातों की देश में त्रुटि है अथवा जिनका अभाव है उनको लोग विदेश से लावें और उनका देश में प्रचार करें, विदेशीय उन्नति शील ढंगों पर यहां कार्य करें अथवा करने की विधि का प्रचार करें। ऐसे विदेशीय औद्योगिक शिक्षाप्राप्त नव युवकों द्वारा शीघ्र इस उद्देश्य में साफल्य लाभ की आशा है।

अब भी बहुत से महानुभाव विदेश से औद्योगिक शिक्षा पाकर देश को लौट आए हैं। उनमें से कई एक ने तो स्वयं अथवा किसी को सहायता से कारखाने खोले हैं जो देश के लिये अत्यन्त उपयोगी प्रतीत हुए हैं। कुछ लोग पूंजी के अभाव के कारण वर्तमान बड़े बड़े कारखानों में नौकरी करने के विचार में हैं। किंतु कैसे शोक की बात है कि कितने ही उत्साही नव युवक औद्योगिक शिक्षा प्राप्त करने का विचार बांधे बैठे हैं पर धनाभाव से विदेश जाकर अपनी आकांक्षा पूरी नहीं कर सकते। इतने बड़े देश में कोई ऐसे सुकार्य के लिये उनका सहायक नहीं होता। देश में ऐसे ऐसे धनी वर्तमान हैं कि यदि वे एक ही वर्ष का अपनी ब्रैंडी का मूल्य अथवा रंडी का खर्च ऐसे कार्य के लिये देदें तो कितनों ही की इच्छा सहज में पूर्ण हो जाय और देश का बड़ा भारी उपकार हो। निदान देश के शुभचिन्तकों का यह भी उद्देश्य होना चाहिए कि धनवानों की आंखों पर से अदूरदर्शिता का पर्दा हटाकर उनके द्वारा ऐसे ऐसे देशोपकारी कार्य करावें।

नव युवकों को विदेश भेजने का ऐसा प्रबन्ध होना चाहिए कि अभी तो जितने अधिक हो सकें उतने विद्यार्थियों को शीघ्र विदेश भेजा जाय फिर प्रति वर्ष कुछ नियत संख्या भेजने का नियम कर दिया जाय और उनमें से प्रत्येक विद्यार्थी औद्योगिक कार्य की विशेष शाखा के लिये चुना जाय। अभी तो कालेजों के उच्च शिक्षा प्राप्त नव युवक ही इसी नियमानुसार विदेश भेजे जांय और इसके उपरान्त जब जिले की पाठशालाएं, प्रान्तीय

विद्यालय और जातीय विद्यालय स्थापित हो जांय तब उन्हीं में से चुन कर विद्यार्थी बाहर भेजे जांय। किंतु जैसा ऊपर लिखा गया है वह कार्य शीघ्र ही आरम्भ हो जाना चाहिए और कालेजों के होनहार ग्रेजुएट बाहर भेजे जाने चाहिएं। क्योंकि जितनी जल्दी ऐसे विदेशीय औद्योगिक शिक्षा प्राप्त नव युवकों की संख्या भारतवर्ष में बढ़ेगी उतनी ही जल्दी और सुगमता से औद्योगिक शिक्षा का प्रचार सफलता पूर्वक होगा। वेही लोग आकर शिक्षकों आदि का आसन ग्रहण कर कार्य का सम्पादन करेंगे और इस उद्देश्य को पूरा करेंगे।

(२) इन्हीं विदेशीय शिक्षा प्राप्त पुरुषों को निरीक्षक, शिक्षक आदि नियत करना।

वर्तमान में देखा जाता है कि भारत के कितने ही विदेशीय शिक्षाप्राप्त नव युवक पूंजी के अथवा व्यवसाय के अभाव से बहुत दुःख उठाते हैं। अतः उनको किसी कार्य में लगाना और उनके द्वारा देश को लाभ पहुंचाना उनके तथा इस उद्देश्य के पक्ष में बहुत उपयोगी और लाभदायक होगा। पाठशालाएं, कारखाने आदि खोल कर उनमें उनको रखना चाहिए जिससे उनका भी निर्वाह हो और यह कार्य भी योग्यता पूर्वक अच्छे ढंग से बहुत किफायत के साथ चल निकले। इसके उपरान्त ज्यों ज्यों शिक्षित युवा देश में आते जावें त्यों त्यों उनको काम में लगाया जाय और उनके गुण से देश का उपकार किया जाय। वे ही लोग शिक्षक, निरीक्षक, अनुसंधानक, नेता आदि नियत किए जांय। इस विधि से दो लाभ होंगे अर्थात एक

तो युवक गण विदेश शिक्षा प्राप्त कर लौटने पर व्यवसाय रहित रहने के भय से छूटेंगे और इस प्रकार उनमें विदेश में जाकर उच्च श्रेणी की औद्योगिक शिक्षा प्राप्त करने की रुचि बढ़ेगी और देश योग्य होगा। दूसरे, पाठशालाओं और विद्यालयों के लिये न रहेंगे विदेशी शिक्षकों के स्थान में पूर्ण सुयोग्य सस्ते स्वदेशी शिक्षक आदि तय्यार होते रहेंगे और उनके द्वारा विदेश की विद्या भी भारतवर्ष में आती रहेगी।

(२) प्रान्तों के लिये स्थानीय औद्योगिक सभाएं, और समस्त भारत के लिये एक जातीय औद्योगिक सभा स्थापित करना।

यह बात निश्चित है कि जिस कार्य को पांच आदमी मिलकर करते हैं उससे शीघ्र साफल्य की बहुत आशा होती है और वह सहज ही प्राप्त होती है। किसी बड़े कार्य के लिये तो ऐसी सुयोग्य पंचायत के सम्मिलित प्रयत्न की अत्यन्त आवश्यकता है। यह कार्य छोटा अथवा सहज नहीं है अर्थात् इसी औद्योगिक कार्य की उन्नति पर ही भारतवर्ष का भाग्य अटक रहा है, अत एव इसके लिये भी विद्वान और देशहितैषी पंचों की जरूरत है। इसलिये देश के मुख्य मुख्य उद्योगी, व्यवसायी, अनुभवी, विद्वान, साहसी, सुयोग्य और धनवान पुरुषों की सभाएं स्थापित होनी चाहिएं जो अपनी स्थिति के अनुसार इस औद्योगिक शिक्षा सम्बन्धी उद्देश्य की सफलता का प्रबन्ध करें।

ऐसी सभाएं कम से कम प्रान्त पीछे एक अवश्य होनी चाहिएं और उन सब की केन्द्रीस्वरूप एक मुख्य

जातीय सभा समस्त देश के लिये होनी चाहिए। इनके कार्यालय प्रान्तीय और जातीय विद्यालयों में रहें और नियमित समय पर इनके वार्षिक अधिवेशन स्थान स्थान पर, जो बदलते रहा करें, हुआ करें। प्रान्तीय औद्योगिक सभा अपने प्रान्त से कभी बाहर नहीं होनी चाहिए और जातीय सभा समस्त भारतवर्ष में, जिस जिस स्थान पर उचित समझा जावे, होवें। ये ही सभाएं औद्योगिक शिक्षा से सम्बन्ध रखने वाले समस्त कार्यों की करने वाली और संचालक होंगी। नियमों का संशोधन, पाठशाला आदि की दशा पर विचार, चन्दा आदि का इकठ्ठा करना, शिक्षा-प्रणाली का संशोधन, विदेश के लिये विद्यार्थियों को चुनना, कारखाने और प्रदर्शिनी आदि खुलवाना, शिक्षक, निरीक्षक, उपदेशक आदि नियत करना, औद्योगिक पत्र निकालना इत्यादि इन्हीं के कर्तव्य होंगे। कोई उत्साही, उद्योगी, व्यवसायी, विद्वान, देशहितैषी; धनवान पुरुष औद्योगिक विभाग के कार्यकर्ता आदिक इनके सभासद हो सकेंगे। और देश में औद्योगिक शिक्षा का प्रचार और उन्नति करने के लिये उत्तम उत्तम विधियों का अवलम्बन करेंगे। ऐसी सभाओं के लिये नियम भी बनाने चाहिएं। किम्बहुना, ऐसी सभाओं का होना अत्यावश्यक है क्योंकि येही सब कुछ करेंगी। इनके स्थापन करने में किंचित विलम्ब न होना चाहिए क्योंकि जब ये स्थापित हो जांयगी तभी यथार्थ कार्य का आरम्भ होगा। नेशनल कांग्रेस के साथ में एक इण्डस्ट्रियल कान्फरेंस भी दो साल तक हुई है किंतु अब स्वयं नेशनल कांग्रेस ही झमेले में पड़गई है इससे

उस इण्डस्ट्रियल कान्फरेंस का होना कुछ असम्भव सा प्रतीत होता है। अतएव इस मन्तव्य के अनुसार प्रान्तीय और जातीय औद्योगिक सभाओं का स्थापित हो जाना बहुत ही आवश्यक है।

(४) जातीय विद्यालय के सम्बन्ध में पदार्थों की परीक्षा और उनका अनुभव करने और कल्पना तथा आविष्कार करने के उपलक्ष में एक विशेष शिक्षा विभाग और अनुभव-शाला स्थापित करना।

औद्योगिक उन्नति के लिये इस अनुभवशाला का होना अति आवश्यक है। ऐसी अनुभवशाला में स्वाभाविक पदार्थों की परीक्षा विज्ञान की सहायता से की जायगी और उनसे अनेक प्रकार के लाभ उठाए जावेंगे। नवीन और प्राचीन यंत्रों की परीक्षा और उनका संशोधन इसी अनुभव-शला में होता रहेगा और उनमें समय समय पर आवश्यकीय परिवर्तन किया जायगा। विदेशीय यंत्रों के ढंग पर देश की आवश्यकतानुसार नवीन यंत्र बनाए जांयगे अथवा संशोधन करके प्राचीन यंत्रों ही की उन्नति की जायगी और इन्हीं के द्वारा कार्य करने की प्रथा प्रचलित की जायगी। इसी शाला के सम्बन्ध में नमूने आदि तय्यार करने का भी एक विभाग रहना चाहिए जिसमें पदार्थों और वस्तुओं के नए नए नमूने तय्यार किए जांय और वे साधारण कारख़ानों, पाठशालाओं, शिल्पशालाओं और कौतुकागारों में रक्खे जांय तथा प्रदर्शिनियों में भेजे जांय और इस प्रकार नवीन नवीन वस्तुओं के तय्यार होने का सुभीता हो।

इस शाला के सम्बन्ध में सुयोग्य पुरुष और विद्यार्थी जो पूर्ण रूप से औद्योगिक शिक्षा पाकर कारख़ानों और

पाठशालाओं में कार्य करके भली भाँति अनुभव प्राप्त कर चुके हैं, काम करेंगे और समय समय पर देश अथवा विदेश में पर्य्यटन करके नवीन नवीन बातें उसमें जोड़ते रहेंगे।

ऐसी शाला जातीय विद्यालय से मिली हुई ही रहनी चाहिए क्योंकि वही जातीय औद्योगिक सभा का कार्यालय, व्यवस्थापकों का स्थान और औद्योगिक शिक्षा का केन्द्र होगी और इस विषय के अच्छे अच्छे अनुभवी, विद्वान और उत्साही पुरुषों का वहां सम्मेलन होता रहेगा। इस-लिये अनुभवशाला के भी वहीं रहने में बहुत सुभीता होगा और उसकी यथेष्ट उन्नति होसकेगी।

(३)

उत्तेजना।

ऐसे बड़े कार्य के लिये उत्तेजना और उत्साह की अत्यन्त आवश्यकता है अन्यथा इस उद्देश्य की सफलता में शंका होगी। बहुत से औद्योगिक व्यवसायी ऐसे हैं जो उत्तेजना और उत्साह के अभाव से केवल अपने जीवन निर्वाह मात्र के लिये थोड़ा सा कार्य कर लेते हैं और कुछ ऐसे भी हैं जो सर्वथा निराश होकर ऐसे उपयोगी कार्य को छोड़ बैठे हैं, नहीं तो वेही लोग बहुत कुछ कर दिखलाने की सामर्थ्य रखते हैं।

इस देश की औद्योगिक शिक्षा प्रणाली एक प्रकार मृतप्राय हो रही है अतएव इसके लिये ऐसे उपायों की ज़रूरत है जिनसे लोगों का चित्त इसकी ओर आक-र्षित हो और वे किसी न किसी तरह इसमें योग देना स्वीकार करें। इसके लिये निम्न लिखित विधियों द्वारा उत्तेजना देना बहुत उपयोगी होगा:—

(१) औद्योगिक शिक्षा सम्बन्धी परीक्षा नियत करना और कृतार्थ विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र देना।

देखा जाता है कि किसी सीमाबद्ध कार्य के करने में मनुष्य की अधिक रुचि होती है क्योंकि वह जानता है कि अमुक श्रेणी तक उसे कर लेने से वह एक प्रामाणिक योग्य पुरुष गिना जायगा और इस प्रकार उसके मन को संतोष रहता है और कार्य करने को उसका उत्साह बढ़ता है। ऐसी ही दशा साधारण शिक्षा के सम्बन्ध में देखी जाती है, फिर ऐसा ही औद्योगिक शिक्षा के सम्बन्ध में होना अत्यावश्यक है। अतएव औद्योगिक शिक्षा की सीमाएं नियत कर परीक्षाओं का प्रबन्ध होना चाहिए। इसकी पृथक पृथक कक्षाओं के योग्य क्रमानुसार परीक्षा का नियम होना चाहिए और उसके लिये कृतकार्य विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र भी मिलना चाहिए। प्रथम, मध्यम, उत्तम और विशारद परीक्षाएं शिक्षा की योग्यता के क्रम से नियत की जांय, उनका समय नियत किया जाय और उनका प्रबन्ध उसी प्रकार हो जैसा वर्तमान साधारण परीक्षाओं का है।

(२) इन पाठशालाओं और विद्यालयों में औद्योगिक छात्रवृत्तियां और पारितोषिक स्थापित करना और निर्धन शिल्पकार और व्यवसायियों के बालकों को बिना फ़ीस के शिक्षा देना।

शिक्षा की उत्तेजना तथा उसके प्रचार के लिये ये कैसी उपयोगी हैं सो सब पर विदित है। कितने ही बालक औद्योगिक शिक्षा के प्रेमी होकर भी धनाभाव से पढ़ने में असमर्थ हैं उनको मुफ्त शिक्षा दी जाय। कितने ही बालक

पारितोषिक और छात्रवृत्तियों के लोभ से पढ़ेंगे और जो पाठशालाओं में रहकर भी चित्त से नहीं पढ़ते उनको उत्तेजित करने के लिये ये बहुत कुछ उपयोगी होंगे। अतएव सब बातों को विचार कर यही कहना पड़ता है कि इनका स्थापित होना बहुत ज़रूरी है और इनके न होने से औद्योगिक शिक्षा के प्रचार के उपायों में बड़ी भारी त्रुटि रह जायगी।

(३) औद्योगिक और शिल्प व्यवसायियों को उत्तेजित करने के लिये ऋण द्वारा उनकी सहायता करना।

बहुत से ऐसे उत्साही व्यवसायी हैं जो औद्योगिक कार्य की उन्नति करना चाहते हैं परन्तु धनाभाव से अपनी इच्छा पूर्ण करने में असमर्थ हैं। कोई कोई नवीन ढंग से कार्य करना भी चाहते हैं, कोई नवीन वस्तुएं तय्यार करना चाहते हैं और कोई अपने कारखाने को बढ़ाना चाहते हैं परन्तु दरिद्रता वश कुछ नहीं कर सकते। अतएव ऐसों को ऋण देकर उत्तेजित करना तथा इस प्रकार उनकी सहायता करना अत्यन्त उपयोगी है। यह भी शिक्षाप्रचार का एक ढंग है। निरीक्षकों की रिपोर्ट पर सभा अपने कोश से, देश के किसी भाग में स्थित व्यवसायी को, इस प्रकार का ऋण देवे, और धनवान लोग अपने गांव, निकटवर्ती गांव ज़िले प्रान्त या देशभर में जहां चाहें वहां अपनी उदार चित्तवृत्ति के अनुसार ऐसा ऋण देवें। ऋणलेने वालों से लिखा पढ़ी करली जावे और इस ऋण को अदा करने का समय नियत कर लिया जावे। जहां तक हो सके धनवान लोग इस कार्य को प्रान्तीय अथवा जातीय सभा से

सम्मति लेकर करें तो बहुत ही अच्छा हो और यथार्थ पात्रों ही के हाथ में ऐसा ऋण पहुंचे।

(४) देश भर में औद्योगिक और कला सम्बन्धी व्याख्यान देने का, मुख्य मुख्य स्थानों पर मुख्य मुख्य प्रकार की प्रदर्शिनी करने का तथा नवीन आविष्कारों के लिये प्रत्येक पुरुष को पारितोषिक देने का यथोचित प्रबन्ध करना।

किसी इच्छा को हृदय में उत्पन्न कर देने अथवा उसकी प्रबलता बढ़ाने को "व्याख्यान" कैसा अच्छा उपाय है सो कहना नहीं होगा। पढ़े अनपढ़े सभों ही पर इसका प्रभाव पड़ता है। अतएव औद्योगिक शिक्षा का प्रचार करने के लिये व्याख्यान देने का प्रबंध करना भी बहुत उपयोगी है। इस कार्य के लिये अच्छे वक्त नियत किए जांय और वे लोग घूम घूम कर देश भर में औद्योगिक कार्य और शिक्षा की उपयोगिता पर व्याख्यान देवें।

प्रदर्शनियां भी व्याख्यानों के समान उपयोगी हैं। नवीन नवीन पदार्थों को एक जगह इकट्ठा करके दिखलाना और उनके सम्बन्ध में कुछ व्याख्यान देना अत्यन्त फलदायी होगा। प्रत्यक्ष पदार्थों को देखने और उनके विषय में सुनने से मनुष्यों की रुचि इस कार्य की ओर बढ़ेगी। इसके अतिरिक्त ऐसी प्रदर्शिनियों में बहुत सी वस्तुओं की बिक्री भी होगी जिससे इस विभाग का कोश पुष्ट होगा। औद्योगिक व्यवसायी गण भी अपनी बनाई हुई नई वस्तुओं को इन प्रदर्शनियों में भेजें। वहां उनकी वस्तुओं के बिकने का भी सुबीता रहेगा और इस प्रकार उनको लाभ और उत्तेजना होगी। शिल्प व्यवसायीगण ऐसी प्रदर्शनियों में नवीन वस्तुओं को देखकर स्वयं भी उनके सदृश वस्तुओं के

तय्यार करने को उत्साहित होंगे। इसी प्रकार और भी अनेकानेक लाभ इन प्रदर्शनियों द्वारा होने सम्भव हैं। वैसे तो सर्वदा ही जिले की पाठशालाओं और विद्यालयों के सम्बन्ध में एक एक प्रदर्शिनी की स्थिति रहेगी परन्तु वर्ष भर में एक बार किसी अन्य स्थान पर भी, जो स्थिर कर लिया जाय, प्रदर्शनी होनी चाहिए। प्रति वर्ष किसी नियमित समय पर प्रत्येक प्रान्त में स्थान परिवर्तन करके एक प्रदर्शिनी अवश्य होवे। इसी प्रकार एक बड़ी प्रदर्शिनी प्रति वर्ष स्थान परिवर्तन कर समस्त देश के लिये किसी नियमित समय पर होनी चाहिए। ऐसी प्रान्तीय प्रदर्शिनी में प्रान्त भर के निर्मित नवीन पदार्थ और साथ ही इसके अनुभवशाला के नमूने और अन्य प्रान्तों की केवल नई वस्तुएं रक्खी जावें। और बड़ी प्रदर्शिनी में समस्त देश के निर्मित पदार्थ, अनुभवशालो के नमूने और विदेशी पदार्थ केवल नमूने की भांति रक्खे जावें। विदेशी पदार्थ औद्योगिक व्यवसायियों द्वारा शिल्पकारों आदि को केवल दिखलाए ही जावें किन्तु बेचे कदापि न जावें। इस प्रकार नवीन नवीन पदार्थों को देखने से उनके निर्माण की इच्छा का प्रबल होना और उससे नवीन ढंग की औद्योगिक शिक्षा का प्रचार होना निश्चित है।

नवीन आविष्कार करने वा उत्साह दिलाने के लिये पारितोषिक देने का प्रबन्ध करना अति आवश्यक है। और जो लोग नए नए आविष्कार करें उनको पारितोषिक देना औद्योगिक उन्नति अथवा शिक्षा के उपलक्ष में आवश्यकीय कर्तव्य है। अतएव औद्योगिक सभाएं ऐसी

व्यवस्था करें कि नवीन आविष्कारों के लिये कुछ तो धनवान लोग और कुछ सभाएं ऐसे पारितोषिक देने का निश्चय करें और सर्वसाधारण में इस बात की घोषणा करदें ।

(५) औद्योगिक शिक्षा और कार्य सम्बन्धी पत्र हिन्दी में निकालना, इस विषय की पुस्तकें भाषा में लिखना अथवा अनुवाद करना, और भारतवर्ष के सब व्यापारियों की, जो स्वदेशी वस्तुओं का व्यापार करते हों और स्वदेशी कारखानों और स्वदेशी वस्तुओं की एक "नाम धाम सूची पुस्तक" हिन्दी भाषा में तय्यार करना ।

औद्योगिक पत्र सर्व साधारण को, शिल्पव्यवसायियों को, उत्साही पुरुषों को कारखानों और पाठशालाओं को औद्योगिक शिक्षा, उन्नति आदि की कार्रवाई से सूचित रखने के लिये अत्यावश्यक है । इसके द्वारा इस उद्देश्य को बहुत कुछ उत्तेजना और सहायता मिलने की आशा है। ऐसा पत्र यदि मातृ भाषा में ही हो तो वह सर्वसाधारण में बहुत आदर पावेगा और उससे बहुत कुछ उपकार होगा। भारत के भिन्न भिन्न प्रान्त निवासियों के लिये यदि प्रान्तिक भाषाओं में उसका अनुवाद निकाला जाय तो कुछ हानि नहीं है ।

औद्योगिक शिक्षा और कार्य सम्बन्धी पुस्तकों का हिन्दी भाषा में होना बहुत जरूरी है । अतएव इस विषय की नवीन पुस्तकें लिखाई जावें तथा अंग्रेजी की उत्तम उत्तम पुस्तकों का अनुवाद कराया जावे । ऐसी पुस्तकें लिखने के लिये सभाएं कुछ पुरस्कार भी देवें और उन पुस्तकों को अपने व्यय से प्रकाशित कर सर्वसाधारण में

उनका प्रचार करें। इसके लिये छोटे छोटे पैम्फ्लेट् तथा ट्रैक्ट भी बहुत उपयोगी होंगे और इनमें खर्च कम पड़ेगा : बहुत से महानुभाव तो केवल इस कारण से, कि उन्हें कोई मार्ग नहीं बताता या इस विषय की पुस्तकें प्राप्त नहीं हैं, इच्छा होने पर भी. औद्योगिक कार्य नहीं कर सकते। अतएव ऐसे पत्र के प्रकाशित होने और ऐसी पुस्तकों द्वारा उनकी इच्छा पूर्ण होने की आशा है। पुस्तकें इस कार्य का बहुत कुछ ज्ञान स्वतन्त्रता से सर्वसाधारण में फैलावेंगी और नई बात, नया आविष्कार, विदेशीय दशा और समाचार आदि की खबर सब को पत्र द्वारा मिलती रहेगी। लोग उन्हीं के अनुसार कार्य करके बहुत कुछ उन्नति कर सकते हैं। अंग्रेजी से अथवा अन्य विदेशी भाषाओं से अनुवाद की हुई पुस्तकों के द्वारा औद्योगिक विद्या सम्बन्धी विदेशीय ज्ञान का देश में प्रचार होगा।

एक औद्योगिक नाम धाम सूचक पुस्तक का तय्यार होना भी उत्तेजना देने का एक उत्तम उपाय है। इसके द्वारा औद्योगिक कार्य के प्रेमियों को भारतवर्ष के औद्योगिक व्यवसायियों, व्यापारियों, कारखानों, वस्तुओं और अन्य इसी प्रकार की बातों की स्पष्ट सूचना मिलेगी और इस प्रकार बहुत सा माल क्रय विक्रय होने की बहुत कुछ सम्भावना है जिससे व्यवसायियों को लाभ होगा और इससे इस कार्य में उनका उत्साह बढ़ेगा।

इन उपरोक्त बातों का कार्य जातीय सभा के अधीन होगा क्योंकि वही इस सब का प्रबन्ध करने को यथेष्ट समर्थ होगी।

(६) शिल्पविद्या के शिष्यों और आभ्यासिक विद्यार्थियों को शिक्षा देने के लिये कारखानों और दुकानों को पारितोषिक अथवा ऋण देना।

ऐसे पारितोषिक अथवा ऋण देने से कारखाने और दुकानें शिल्पविद्या के शिष्यों और कृतकार्य विद्यार्थियों को आभ्यासिक शिक्षा देने को उत्सुक रहेंगे। ऐसे शिष्य अथवा विद्यार्थी उनमें अभ्यास करके कृतकार्य होकर निकलें तो इस शिक्षा के प्रदान के कार्य को स्वीकृत करने के लिये उन कारखानों और दूकानों के स्वामियों की तुष्टि के लिये ये पारतोषिक, जिनका कुछ नियम बांध दिया जाय, दिए जांय। इस प्रकार अल्पव्यय से ही बहुत कार्य होने की सम्भावना है। इसी प्रकार होनहार कारखानों अथवा दूकानों को ऋण देने से भी वे उत्साहपूर्वक शिष्यों अथवा विद्यार्थियों को आभ्यासिक शिक्षा देने के लिये तय्यार रहेंगे।

(७) शिल्प विद्या के शिष्यों अथवा आभ्यासिक विद्यार्थियों को भी कुछ पारितोषिक देना।

इन शिष्यों अथवा विद्यार्थियों को चित्त से कार्य करने के लिये उत्साहित करने की आवश्यकता है। इस लिये पारितोषिक अथवा छात्रवृत्तियां नियत की जांय और ये इस प्रकार के लगभग सभी शिष्यों अथवा विद्यार्थियों को देनी पड़ेंगी। इनमें से कुछ तो सभाएं अपने कोषों से देवें और कुछ धनवान पुरुषों को निज से अपने प्रान्त या ज़िले में अथवा देश भर में अपने उदार स्वभाव के अनुसार देना चाहिए।

(८) राजनैतिक आन्दोलन सम्बन्धी विचारों से पृथक रहकर स्वदेशी वस्तुओं का प्रचार करना।

यह औद्योगिक शिक्षा के प्रचार के सभी यत्नों से श्रेष्ठ है। क्योंकि जितनी स्वदेशी पदार्थों की खपत होगी उतनी ही अधिक शिल्पकारों औद्योगिक व्यवसायियों और सर्वसाधारण को उनके निर्माण की चिन्ता होगी और इसके लिये ज्ञान और अनुभव लाभ की जरूरत है। वे आधुनिक प्रणाली की औद्योगिक शिक्षा बिना हो नहीं सकते अतः ऐसी शिक्षा की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित होगा। इस प्रकार देश भर में औद्योगिक शिक्षा की प्रबल इच्छा उत्पन्न हो जायगी और उसके लिये अनेकानेक प्रयत्न होने लगेंगे। अतएव औद्योगिक शिक्षा को उत्तेजित करने के लिये स्वदेश वस्तु प्रचार का प्रयत्न करना भी एक बहुत उत्तम उपाय है और उससे सहज ही इस उद्देश्य में बहुत कुछ सफलता प्राप्त होने की आशा है।

(४)

आभ्यासिक व्यावहारिक और विशेष शिक्षा।

आभ्यासिक और व्यावहारिक शिक्षा साधारण शिक्षा से कम आवश्यक नहीं है क्योंकि इसके अभाव से साधारण औद्योगिक शिक्षा प्राप्त अच्छे विद्यार्थी भी भली भांति कार्य सम्पादन करने को समर्थ नहीं हो सकते। पाठशाला अथवा विद्यालय की शिक्षा के उपरान्त आभ्यासिक अथवा व्यावहारिक शिक्षा पा लेने से वे पूर्ण रूप से अपनी विद्या से लाभ उठाने के योग्य हो जावेंगे। अतएव इसका होना भी अत्यावश्यक है और वह इस प्रकार होना चाहिए—

(१) निज के बड़े बड़े कारखानों और शिल्पशालाओं में शिल्पविद्या के शिष्यों और पाठशालाओं के कृतकार्य विद्यार्थियों को रखकर शिक्षा देना ।

इससे वे भली भांति कार्य करने को अभ्यस्त हो जावेंगे और जो कुछ उन्होंने पढ़ा है उसको कार्य रूप में परिणत करने में हिचकेंगे नहीं ।

(२) मुख्य मुख्य ज़िले की औद्योगिक पाठशालाओं और सब विद्यालयों के सम्बन्ध में मार्गदर्शक शिल्पशालाएं और दूकानें खोलना ।

इनसे भी वही लाभ होगा जो निज के कारखानों और दूकानों के सम्बन्ध में ऊपर कहा गया है । इनमें अच्छे अच्छे कारीगर रक्खे जांयगे, सब प्रकार के पदार्थ इकट्ठे किए जांयगे और इन्हीं से वस्तु निर्माण द्वारा आभ्यासिक शिक्षा दी जायगी । पाठशालाओं और विद्यालयों के विद्यार्थी इनमें वस्तुओं को बना कर उनका अनुभव प्राप्त करेंगे । शिक्षक कारीगरों को कुछ वेतन अथवा पारितोषिक देने का, विद्यार्थियों को उत्तम कार्य के लिये पारितोषिक देने इत्यादि का प्रबन्ध ज़रूरी है । पाठशालाओं और विद्यालायों के समान इनमें भी फ़ीस लेने और मुफ़्त शिक्षा देने का नियम रक्खा जाय तो अनुचित नहीं होगा । दूकाने भी इनके सम्बन्ध में खोली जांय जिनमें उन शिल्पशालाओं का बना हुआ माल बेचने के लिये रक्खा जाय और उन्हीं बिद्यार्थियों के द्वारा, अनुभवी शिक्षकों की अनुमति के अनुसार, क्रय विक्रय कार्य किया जाय । इससे कुछ लाभ भी होता जायगा और विद्यार्थी औद्योगिक

आभ्यासिक और व्यावहारिक कार्य में सब प्रकार से पूर्ण योग्य होते जांयगे।

(३) निज की बड़ी बड़ी दूकानों में कुछ दिन के लिये बैठा कर भी विद्यार्थियों को, साधारण औद्योगिक व्यवसायियों के बालकों को जो किसी असुबीते के कारण पाठशालादि में नहीं पढ़ सकते, आभ्यासिक औद्योगिक और व्यावसायिक शिक्षा देना।

इनसे वही लाभ होगा जो शिल्पशालाओं और तत्सम्बन्धी दुकानों के विषय में ऊपर कहा गया है। विद्यार्थियों को पारितोषिक और छात्रवृत्तियां और शिक्षा देने को उत्साहित करने के लिये ऐसे कारखानों और दुकानों को कुछ ऋण, पारितोषिक आदि देने का प्रबन्ध भी सभाओं को और धनवानों को करना चाहिए।

(४) ग्रामीण लुहारों, बढ़इयों, जुलाहों और अन्य व्यावसायियों को मार्गदर्शक कारखानों में लाकर और वहां उन्हें शिक्षा देकर अथवा नवीन प्रणाली का गुण दिखा कर नवीन ढंग से कार्य करने को उनको उनके घर वापिस भेज देना।

इस विधि से ग्रामीणों में भी औद्योगिक शिक्षा की उन्नति और उसका प्रेम उत्पन्न होगा। इस प्रकार सरल स्वभाव के ग्रामीण व्यवसायी भी अपने सुयोग्य नागरिक भाइयों की चालों पर चलने के योग्य होते जावेंगे और इस उद्देश्य के प्रचार की सीमा बहुत विस्तृत तथा साथही [illegible]य सुगम हो जावे गी।

इस कार्य में सहायता देना ज़मीन्दारों और धनवानों का मुख्य कर्त्तव्य होना चाहिए तभी इसमें सफलता होगी। ज़मीन्दार लोग समझा बुझाकर अपने गांव के व्यवसायियों को शिल्पशालाओं में भेजने को बहुत समर्थ हैं अन्यथा वे लोग कदाचित् इसको स्वीकार न करें। जहां आवश्यक समझा जाय वहां ज़मीन्दार लोग अथवा सभा भी इन व्यवसायियों को कुछ आर्थिक सहायता देने को तय्यार रहें क्योंकि केवल इन्हीं दोनों उपायों के द्वारा उनमें औद्योगिक शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न की जा सकती है। नहीं तो वे निज का व्यय कर नवीन ढंगों को स्वीकार करना पसन्द नहीं करेंगे। जैसे होसके ग्रामीणों को भी शिक्षा देनी चाहिए क्योंकि वह बहुत जरूरी है। सब प्रकार के विद्यार्थी केवल नगरों ही से नहीं प्राप्त होते किन्तु अधिक संख्या ग्रामीण बालकों ही की रहती है और साधारणतः वे ही सब से अच्छे निकलते भी हैं अतः इस विशेष शिक्षा के सम्बन्ध में उन्हें अलग नहीं करना चाहिए।

(५) नमूने के यंत्र और पदार्थ जो ख़रीदें उनके बेचे जाने का और जिनको उचित समझा जाय उनको योंही देने का प्रबन्ध करना।

यह भी औद्योगिक शिक्षा प्रचार का अच्छा ढंग है क्योंकि ऐसे बहुत से व्यवसाय और उद्योग प्रेमी हैं जो यंत्रों के अभाव से आगे बढ़ने को असमर्थ हैं। ऐसे पदार्थों के नमूनों अथवा यंत्रों को पाकर वे उस प्रकार के पदार्थ बनाने और उन यंत्रों से कार्य करने को उत्सुक होंगे

ऐसे पदार्थ और यंत्र बेचे जाने के अतिरिक्त होनहार उत्साही कारखानों और पुरुषों को मंगनी भी दिए जांय और जहां उचित समझा जाय वहां किराए पर भी दिए जांय । इसके लिये जातीय सभा नियम भी बना दे ।

(६) अच्छे अच्छे शिल्पकारों और व्यवसायियों को निकटवर्ती अथवा उसी नगर से बुलाकर किसी नियत समय तक पाठशालाओं और कारखानों में उनसे आभ्यासिक शिक्षा दिलवाना अथवा उनसे काम करवाना अथवा उनको शिक्षक के सदृश नौकर रख लेना ।

यह अनुभवी शिक्षकों को प्राप्त करने का अच्छा और कम खर्च वाला नवीन उपाय है । जब तक सुयोग्य शिक्षक तय्यार होवें तब तक इन्हीं औद्योगिक व्यवसायियों और शिल्पकरों आदि से शिक्षकों का काम लिया जाय । उतने दिन तक उनको कुछ वेतन भी देना चाहिए । अथवा यदि वे स्वीकार करें और आवश्यक देखा जाय तो उनको नौकर रख लेना भी ठीक होगा । वे लोग शिल्पशालाओं दुकानों अथवा पाठशालाओं में भी शिक्षकों का काम करेंगे

(७) कुछ ऐसे सुविज्ञ अनुभवी पुरुषों का जो हरएक जगह, जहां कोई उन्हें मांगे, जाकर नवीन और उन्नति शील ढंग से कार्य करने की विधि बता सकें, रखना ।

ऐसे पुरुषों से निज के कारखानें और पाठशालाएं खोलनेवालों को बहुत सहायता मिलेगी । वे लोग औद्योगिक कार्य प्रेमियों के कार्य करने का ढंग, उस में सफलता [illegible]ा उपाय आदि और औद्योगिक कार्य सम्बन्धी अन्य विज्ञप्ति

देंगे। बुलाने वालों को उनका व्यय देना होगा, अथवा यदि सभाएं उचित समझेंगी तो उन्हें निज के व्यय से भी भेजेंगी।

(५)

कोश अर्थात् कार्य के लिये धन।

प्रत्येक कार्य के लिये धन सब से अधिक आवश्यक है और इसके बिना कुछ भी होना सम्भव नहीं। अतएव इस कार्य के लिये धन का प्रबन्ध निम्न विधियों द्वारा करना चाहिए—

(१) स्वदेश वासियों से इस कार्य के लिये चन्दा लेना भारतवर्ष ऐसे पश्चातपद देश में औद्योगिक शिक्षा का सफलता पूर्वक प्रचार करना एक आदमी का काम नहीं है। जिस प्रकार इसको समस्त देश में प्रचार करना अभीष्ट है उसी प्रकार इसके लिये समस्त देशवासियों के सम्मिलित प्रयत्न और सहायता की भी आवश्यकता है। अतएव इसमें देश के समस्त महानुभावों को उदारता पूर्वक अपनी शक्तिभर सहायता करनी चाहिए। यदि अपनी आय का थोड़ा ही भाग प्रत्येक पुरुष इसके वास्ते देने की हृदय में ठान ले तो उसका तो थोड़ा ही व्यय होगा किन्तु उसके इस सुकार्य से समस्त देश की दरिद्रता दूर हो जायगी। यदि प्रत्येक भारत सन्तान अपनी आय का कुछ हिस्सा भी इसके लिये दान करे तो भी इस कार्य को बहुत कुछ सहायता पहुंचे। इससे प्रत्येक भारतवासी का यह कर्तव्य है कि औद्योगिक शिक्षा का एक सुदृढ़ कोष स्थापित करने के लिये यथाशक्ति धन औद्योगिक सभा को अर्पण क[illegible]

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २५ जूलाई १९०८ सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान—सभाभवन ।

(१) ता० ३० मई और २७ जून के साधारण मासिक अधिवेशनों तथा ४ जूलाई के विशेष अधिवेशन के कार्य्य विवरण उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए ।

(२) ता० ८ जून की प्रबन्धकारिणी सभा और ता० १६ जूलाई १९०८ के वार्षिक अधिवेशन के कार्य्य विवरण सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

(३) निम्न लिखित महाशय नवीन सभासद चुने गए—

(१) बाबू बलदेवदास-भदैनी-काशी ३) (२) बाबू मदनमोहन सिंह-महाफ़िज खाना-कलक्टरी-बलिया १॥) (३) बाबू दुखभंजन सिंह-गिरदावर कानूनगो-तहसील बलिया ३) (४) बाबू दुर्गादास खत्री-टेलिग्राफ़ ट्रेनिङ्ग क्लास-दिल्ली ३) (५) पण्डित विजयानन्द तिवारी-भदैनी-बनारस ३) (६) गोस्वामी रामचरन पुरी-साक्षी विनायक-बनारस ३) (७) गोस्वामी रामपुरी-साक्षीविनायक-बनारस ३) (८) बाबू गोकुलानन्द प्रसाद वर्म्मा-सब इन्स्पेकृर आफ़ स्कूल्स-वेस्ट सीवान-पो० सीवान-जिला- सारन ३) । (९) बाबू शम्भूनाथ-हरतीरथ-काशी १॥) । (१०) बाबू रामचन्द्र वर्म्मा-भारत जीवन प्रेसकाशी १॥) ।

(४) सभासद होने के लिये निम्न लिखित महाशयों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए—

(१) बाबू ब्रजचन्द्र-चौखम्भा-काशी (२) बाबू रामप्रसाद-गायघाट-काशी (३) दीवान बादल जू-मुसाहिब श्रीमान राजा बहादुर भगवन्त सिंह-ओड़छा-टीकमगढ़ (४) पण्डित घनश्याम देव शर्म्मा-पुरानी-नजहाई बानपुर दर्वाजा-टीकमगढ़ (५) कुं० दरयाव [illegible]-ताल दरवाजा-नायकों का मंदिर-टीकमगढ़ (६) बाबू चन्दा [illegible] इन्स्पेकृर फ़ेमीन- ओड़छा राज्य-टीकमगढ़ (७) कुंवर दयाराम

सिंह-इन्स्पेक्टर-कहत-ओड़छा, राज्य टीकमगढ़ (८) डाकृर ललिकरन पाठक भुतही इमली काशी (६) बाबू सूर्य्यनारायण अग्रवाल पुराना शहर इटावा (१०) राय शिवनाथ-एक्ज़िक्यूटिव इञ्जीनियर-मुलतान (११) बाबू मुरलीधर-हास्पिटल असिस्टेण्ट-विजय राघव गढ़-कटनी जवलपुर (१२) स्वामी ओंकार जी, नेपाली खपरा-काशी।

(५) निम्न लिखित सभासदों के इसतीफे उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए—

(१) लाला लाजपतराय-लाहौर (२) बाबू मधो प्रसाद-गणेश गंज मिर्जापुर (३) बाबू सीताराम बी० ए०-काशी (४) पण्डित बैजनाथ भारद्वाजी-काशी (५) बाबू बद्री प्रसाद, ब्रह्मनाल-काशी।

(६) मंत्री ने सभा के सभासद रायबहादुर गुसांई भवानी पुरी की मृत्यु की सूचना दी जिसपर सभा ने शोक प्रगट किया।

(७) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्व्वक स्वीकृत हुईं-

(१) बाबू रामधन बुकसेलर-दीनापुर—किस्सा शेख चुहुली (चिल्ली) का, युद्ध शाम ग्रामा उर्फ शहादतनामा (२) श्री युत मेनेजर-अभ्युदय-प्रयाग—कांग्रेस चरितावली। (३) नागरीप्रचारिणी सभा, आरा, तर्क शास्त्र, श्री तारकेश्वर यशोगानम्, अर्थ शास्त्र, हिन्दी सिद्धान्तप्रकाश, बाबू राधा कृष्ण दास की जीवनी, अपराजिता, पण्डित बलदेव प्रसाद की जीवनी, रसायन शास्त्र, श्री पेलडर, सृष्टितत्व, खगोल विज्ञान (४) बाबू कन्हैया लाल-बुकसेलर-पटना, अपूर्व चलता जादू, करामाती जादू का पेटारा, (५) श्री यशोविजय जी, जैनपाठशाला-काशी—क्रियारत्न समुच्चय, (६) कन्या महाविद्यालय बुक डिपो-जालन्धर, सेमिरा मिस (७) पण्डित अम्बा शंकर-काशी, चतुर कुल चरित्र इतिहास पूर्वार्द्ध (८) बाबू रामचरित राय वर्म्मा—बांकीपुर, कर्मसङ्गीत (६) स्वामीप्रेस—मेरठ, श्री सूक्तम, भङ्गानिषेध, भङ्गानन्द निषेध, शिक्षादर्पण २ प्रति (१० बङ्गाल की गवर्मेन्ट, a Descriptive Catalogue of Sansk[rit] Manuscripts in the Library of the Calcutta Sanskrit Colle[ge] Nos. 24 and 25.

(९) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

—:-o-:—

वार्षिकोत्सव ।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा का पन्द्रहवां वार्षिकोत्सव वृहस्पति वार तारीख ३० जुलाई १९०८ को सन्ध्या के ६ बजे सभाभवन में हुआ था जिस में मिस्टर सी० एफ० डी ला फास साहब ने सभापति का आसन ग्रहण किया था । इस में सभा के सभासदों के अतिरिक्त नगर के विद्वानों और रईसों की अच्छी भीड़ थी ।

पहिले बाबू श्यामसुन्दर दास जी ने सभा का गत वर्ष का कार्य्य विवरण संक्षेप में कह सुनाया ।

सभा के सभापति महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी ने सभा की ओर से बाबू ठाकुर प्रसाद को "ध्रुवप्रदेश और ध्रुवदेश यात्रा" के लिये एक पदक देने के लिये उपस्थित किया और मिस्टर डी ला फास ने उन्हें पदक दिया ।

सभापति ने यह भी सूचना दी कि सभा ने आज कुंअर प्रतिपाल सिंह को औद्योयिक शिक्षा सम्बन्धी लेख के लिये एक स्वर्ण पदक और पण्डित गौरीशंकर हीराचंद ओझा को "भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास की सामग्री" शीर्षक लेख तथा उनकी सोलंकियों के इतिहास नामक पुस्तक के लिये दो पदक देना निश्चित किया था । परन्तु ये महाशय यहां उपस्थित नहीं हैं अतः उनके पदक उन्हें डांक द्वारा भेज दिए जांयगे ।

रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स ने हिन्दी साहित्य पर एक वक्तृता दी जिसमें उन्होंने वर्त्तमान हिन्दी साहित्य की त्रुटियां भी दिखलाईं और भविष्यत में इस की उन्नति कैसे हो सकती है इसका वर्णन किया।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी ने सरल हिन्दी [illegible]षा की जरूरत पर एक वक्तृता दी जिसमें उन्होंने यह दिख[illegible]या कि सरल भाषा के प्रयोग की कितनी आवश्यकता है और इसकी उन्नति में किस प्रकार सहायता पहुंच सकती है ।

अन्त में मिस्टर डी ला फास ने सभा ने जो कार्य्य किए हैं उन के सम्बन्ध में अपनी प्रसन्नता प्रगट करते हुए कहा कि इस सभा ने इस समय तक जो काम किए हैं वे अत्यन्त प्रशंसनीय हैं। इस सभा से देश का बहुत उपकार हुआ है और मैं इसकी उन्नति से बड़ा सन्तुष्ट हूं। इसके अनन्तर उन्होंने हिन्दी की आवश्यकताओं का वर्णन करके कहा कि सभा ने अनेक बड़े बड़े काम किए हैं जिन में सब से बड़ा काम अर्थात् हिन्दी कोश का काम इस समय उसके हाथ में है। इससे भाषा का बहुत उपकार होगा और वे इस बात से बड़े प्रसन्न हैं कि सभा ने इसे अपने हाथ में लिया है।

इसके अनन्तर मिस्टर ए० सी० मुकुर्जी और बाबू गौरीशंकर प्रसाद ने मिस्टर डी ला फास को सभा की ओर से धन्यवाद दिया और सभा विसर्जित हुई।

——:०:——

प्रबन्धकारिणी सभा।

सोमवार ता० ३ अगस्त १९०८ सन्ध्या के ६ बजे।

स्थान—सभाभवन।

उपस्थित।

रेवरेन्ड ई० ग्रीव्स—सभापति, बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०, बाबू जुगुल किशोर, बाबू गौरीशंकर प्रसाद पण्डित राम-नारायण मिश्र बी० ए०, पण्डित सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा, बाबू माधव प्रसाद बाबू कालिदास माणिक, बाबू गोपल दास।

(१) ता० ३० जून और ८ जूलाई के कार्य्य विवरण पढ़े गए और स्वीकृत हुए।

(२) हिन्दी कोश के सम्पादन के सम्बन्ध में बाबू श्यामसुन्दर दास का १४ जूलाई का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभा को विदित ही है कि उनको समय का अभाव रहता है और सभा ने जो सम्पादक के लिये ५०००) रु० का पुर[illegible]

नियत किया है उसे वे कभी किसी अवस्था में लेना स्वीकार नहीं कर सकते। अतः सभा इसके लिये कोई दूसरा सम्पादक नियत करे। सभा के उद्योग करने के उपरान्त यदि कोई सम्पादक न मिले तो अन्ततः वे इसका सम्पादन करना स्वीकार करेंगे परन्तु दो शर्तों पर अर्थात् (१) वे इस कार्य्य के लिये आर्थिक पुरस्कार स्वीकार नहीं करेंगे (२) उनके सहायकों की संख्या एक के स्थान पर तीन या चार रक्खी जाय। साथ ही इस पत्र पर तारीख १६ जूलाई १९०८ के वार्षिक अधिवेशन का निश्चय उपस्थित किया गया जिसमें सभा ने बाबू श्यामसुन्दर दास को कोश का सम्पादक चुनने के विषय में प्रबन्धकारिणी सभा का प्रस्ताव स्वीकार किया था और प्रबन्धकारिणी सभा को अधिकार दिया था कि वह बाबू श्यामसुन्दर दास के पत्र पर विचार कर इस कार्य्य का यथोचित प्रबन्ध करे।

निश्चय हुआ कि प्रबन्धकारिणी सभा की सम्मति में बाबू श्यामसुन्दर दास ही का कोश का सम्पादक होना उपयुक्त है अतएव उनसे प्रार्थना की जाय कि वे इसे स्वीकार करें और उन्होंने जो इस कार्य के लिये पुरस्कार लेना अस्वीकार किया है उसके लिये उन्हें अनेक धन्यवाद दिए जांय (२) सम्पादक के पुरस्कार के लिये जो रकम स्वीकृत है वह उनके सहायकों की संख्या बढ़ाने में व्यय की जाय।

(३) बाबू गौरीशंकर प्रसाद की सम्मति के सहित बाबू राम लाल का १५ जून का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सभा बेलफोर स्टुअर्ट की Physics Primer के भाषा अनुवाद का कापीराइट खरीद ले।

निश्चय हुआ कि सभा को दुःख है कि वह इसका कापीराइट खरीदने में असमर्थ है।

(४) पण्डित अजब लाल झा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रार्थना की थी कि वे सभा के सभासद चुने जांय और उनका चन्दा क्षमा किया जाय।

निश्चय हुआ कि सभा उनकी प्रार्थना स्वीकार नहीं कर सकती ।

(५) बाबू रामकृष्ण गुप्त का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि (१) जमाबन्दी आबपाशी के हिसाब के पर्चे आदि उर्दू में लिखे जाने के कारण सर्वसाधारण को बड़ा असुबीता होता है, सभा इनके हिन्दी में लिखे जाने के लिये यत्न करे (२) सभा की ओर से इटावे की कलेक्टरी और मुंसफी में नागरी का एक अर्जीनवीस नियत किया जाय ।

निश्चय हुआ कि (१) इस विषय में यदि वे अपने प्रान्त से बहुत से मनुष्यों के हस्ताक्षर कराकर भेजें तो सभा इसके लिये उद्योग कर सकती है (२) सभा को दुःख है कि धनाभाव से सभा अर्जीनवीसों को नियत नहीं कर सकती, पर यदि वे अपने यहां से इस कार्य्य के लिये आवश्यक चन्दा एकत्रित करदें तो सभा हर्ष पूर्वक इसका प्रबन्ध करदेगी ।

(६) ठाकुर जगन्नाथसिंह वर्म्मा का १७ जूलाई का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि हिन्दी भाषा में जो पत्र वर्तमान समय में प्रकाशित हो रहे हैं उनकी एक सूची संक्षिप्त आलोचना सहित सभा द्वारा प्रकाशित होनी चाहिए। इसके छपने में जो व्यय होगा उसे वे देंगे ।

निश्चय हुआ कि ठाकुर जगन्नाथसिंह वर्म्मा को लिखा जाय कि सभा की सम्मति में समाचार पत्रों की संक्षिप्त सूची छपवाने को अपेक्षा "हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों के इतिहास" को इस समय तक संशोधित करके छपवाना अधिक उत्तम होगा। इसमें १०० रु० के लग भग व्यय होगा और यदि ठाकुर साहब इसे कृपा कर देना स्वीकार करें तो इस पुस्तक का संशोधित संस्करण छपवाया जाय ।

(७) बाबू ठाकुरदास का २१ जूलाई का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि N. W. P. Govt. Agricultur[illegible] Paper एक बहुत ही लाभदायक पत्र है परन्तु उसके देवना[illegible]

में न छपने से अधिकांश लोग उससे लाभ नहीं उठा सकते। अतः सभा गवर्मेंट से प्रार्थना करे कि वह इस पत्र को नागरी अक्षरों में निकाले।

निश्चय हुआ कि बाबू ठाकुरदास से प्रार्थना की जाय कि वे कृपाकर इस पत्र की एक प्रति सभा के देखने के लिये भेजदें।

(८) पण्डित रामनारायण मिश्र का पत्र उपस्थित किया गया जिसके साथ उन्होंने श्रीमान् राजा साहब भिनगा का पत्र भेजा था कि यदि सभा हिन्दी में Nursing पर एक प्रारम्भिक पुस्तक प्रकाशित करे तो श्रीमान् राजा साहब इसके लिये १०० रु० से सभा की सहायता करेंगे। साथ ही पण्डित रामनारायण मिश्र ने लिखा था कि उन्होंने इस पुस्तक के लिखवाने का भी प्रबन्ध किया है।

निश्चय हुआ कि श्रीमान् राजा साहब का प्रस्ताव धन्यवाद पूर्वक स्वीकार किया जाय और पण्डित रामनारायण मिश्र ने इस पुस्तक के बनवाने का जो प्रबन्ध किया है वह स्वीकार किया जाय।

(९) सुघड़दर्जिन के लेखक बाबू ठाकुरप्रसाद का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सुघड़ दर्जिन की जो दस प्रतियां उन्हें सभा से मिली हैं वे काफी नहीं हैं। सभा इन्हें इसकी १५ प्रतियां और दे।

निश्चय हुआ कि बाबू ठाकुरप्रसाद को सुघड़ दर्जिन की १५ प्रतियां दी जांय।

(१०) पण्डित चन्द्रदत्त शर्म्मा का ३० जून का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि नागरीप्रचारिणी पत्रिका का आकार बढ़ाना और उसमें अच्छे अच्छे चित्र देना बड़ा आवश्यक है। इसके लिये सभा पत्रिका का वार्षिक मूल्य ६) वा ८) रु० नियत करदे।

निश्चय हुआ कि पण्डित चन्द्रदत्त शर्म्मा को लिखा जाय कि [illegible] की सम्मति में पत्रिका का वार्षिक मूल्य इतना अधिक बढ़ाना [illegible]त नहीं है सभा को पत्रिका की उन्नति करने का ध्यान बना

हुआ है । सभा में आवश्यक द्रव्य होते ही इसका प्रबन्ध किया जायगा ।

(११) इस वर्ष के लिये निम्न लिखित कार्यकर्त्ता नियत किए गए—

पुस्तकालय के निरीक्षक—पं० रामनारायण मिश्र । सुबोध व्याख्यानों के निरीक्षक—पण्डित सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा । नागरीप्रचार के निरीक्षक—बाबू गौरीशंकर प्रसाद । पत्रिका के सम्पादक—बाबू श्यामसुन्दर दास बी०ए० । ग्रन्थमाला के सम्पादक—महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी । हिन्दी पुस्तकों पर रिपोर्ट लिखने के लिये—रेवरेण्ड ई० ग्रीव्ज़ ।

(१२) कालिदास रजत पदक के लिये हल्दी घाटी के विषय की कविताएं उपस्थित की गईं ।

निश्चय हुआ कि इनकी परीक्षा के लिये निम्न लिखित महाशयों की सब-कमेटी बना दी जाय—

पण्डित श्यामविहारी मिश्र एम०ए०, पण्डित श्रीधर पाठक, महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, पण्डित चन्द्रधर शर्म्मा, उपाध्याय पण्डित बद्रीनारायण चौधरी ।

(१३) निश्चय हुआ कि सोरीसुधार पर आए हुए लेख सब-कमेटी की सम्मति सहित आगामी अधिवेशन में उपस्थित किए जांय ।

(१४) कोश कमेटी के मंत्री का पत्र उपस्थित किया गया जिसमे उन्होंने जिन पुस्तकों को शब्द चुनने के लिये अभी तक किसी महाशय ने नहीं लिया उनसे शब्द चुनने के लिये तीन वा चार मनुष्यों को नियत करने के लिये एक वर्ष तक के लिये ११०) रु० मासिक व्यय की स्वीकृति मांगी थी ।

निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय पर कोश फण्ड में काफी द्रव्य आजाने पर इस कार्य्य के लिये मनुष्य नियत किए जांय ।

(१५) गुर्जर वैश्य सभा का पत्र पण्डित रामनारायण मिश्र की रिपोर्ट के सहित उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लि[illegible]

था कि वीरविनोद का कितना अंश गुर्जर सभा में है इसे वे ठीक ठीक नहीं कह सकते।

निश्चय हुआ कि गुर्जर सभा को लिखा जाय कि जितना अंश इस ग्रन्थ का उनके यहां है उसे वे सभा के देखने के लिये भेज दें।

(१६) बाबू राम सहाय लाल का २६ जूलाई का पत्र उपस्थित किया गया जिसके साथ उन्होंने एक हिन्दी ग्रंथ प्रकाशक कार्य्यालय तथा हिन्दी ड्रामेटिक कम्पनी खोलने का विज्ञापन भेजा था और इसके लिये सभा से आर्थिक सहायता मांगी थी।

निश्चय हुआ कि धनाभाव से सभा इस कार्य्य में सहायता नहीं कर सकती।

(१७) बाबू ब्रजचन्द का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने लिखा था कि सभा की मासिक पत्रिका के लिये वे "भारतवर्ष की मुसल्मानी इमारतों में प्राचीन हिन्दू मन्दिरों के ध्वंसावशेष" पर एक लेख लिखा चाहते हैं और इसके लिये सभा के पुस्तकालय के अंग्रेजी विभाग से पुस्तकें लिया चाहते हैं।

निश्चय हुआ कि पुस्तकालय के अंग्रेजी विभाग से उन्हें एक एक बेर में एक एक पुस्तक दी जाय।

(१८) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

——:0:——

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय व्यय का हिसाब

[जुलाई १९०८]

आय	धन की संख्या			व्यय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	२५७	१०	१०½	आफिस के कार्यकर्ताओं का वेतन	७४	१३	१०[illegible]
सभासदों का चन्दा	४८	१२	०	पुस्तकालय	३५	०	०
पुस्तकों की बिक्री	१६८	०	०	पृथ्वीराज रासो	२०	०	०
रासो की बिक्री	८०	४	०	नागरी प्रचार	२१	९	०
हिन्दी कोष	१०१	०	०	फुटकर	३१	९	[illegible]
फुटकर आय	४	१०	०	पुस्तकों की खोज	६०	६	०
				डाक व्यय	२८	८	[illegible]
जमानत	५	०	०	हिन्दी कोष	११२	११	[illegible]
				छपाई	१९	२	०
पुस्तकालय	५३	०	०	स्थायी कोष	६०	०	[illegible]
जोड़	७१८	४	१०½	मरम्मत	०	७	[illegible]
				पुस्तकों की बिक्री	०	४	[illegible]
				पारितोषिक	७३	०	[illegible]
				जोड़	५३७	८	[illegible]
				बचत	१८१	१२	[illegible]
				जोड़	७१८	४	[illegible]
देना- ६०००)							

जुगलकिशोर, मंत्री

सभा के पारितोषिकों की सूची।

१ इस वर्ष के सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं। ये लेख ३१ दिसम्बर १९०८ तक सभा में आजाने चाहिएं।

वैज्ञानिक विषय।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव।

साधारण (विद्या) विषय।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था।

२ डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल—यह सोने का मेडल उस व्यक्ति को दिया जायगा जिसका लेख "छूत वाले रोग और उनसे बचने के उपाय" पर सबसे उत्तम होगा। लेख सरल हिन्दी में होना चाहिए और सभा के पास ता० ३१ दिसम्बर १९०८ तक आजाना चाहिए।

३ संयुक्त प्रदेश के न्यायालयों में जो अर्जीनवीस सब से अधिक अर्जियां लिखकर सन् १९०८ में दाखिल करेगा उसे २५) रु० का एक पुरस्कार दिया जायगा और जो उससे कम अर्जियां देगा उसे १५) रु० पुरस्कार दिया जायगा। ये पुरस्कार एकही ज़िले के दो अर्जीनवीसों को न मिलेंगे। न वे इसे पा सकेंगे जो सभा की ओर से इस कार्य के लिये वेतन पर नियत हैं। जो लोग इस पुरस्कार को पाया चाहें उन्हें उचित है कि दो प्रतिष्ठित वकीलों के हस्ताक्षर सहित ७ जनवरी १९०९ तक सभा को सूचना दें कि उन्होंने कितनी अर्जियां सन् १९०८ में दाखिल की हैं।

५००) का पुरस्कार—सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका के आधार पर जो हिन्दी का सब से उत्तम व्याकरण लिखेगा उसे यह पुरस्कार दिया जायगा। व्याकरण ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा के पास आजाना चाहिए। यदि कई व्याकरणों के भिन्न भिन्न अंश उत्तम समझे जांयगे तो यह पुरस्कार उन सब लोगों में बाँट दिया जायगा और उन ग्रन्थों को घटाने बढ़ाने आदि का इस सभा को पूरा अधिकार होगा। सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका दो पैसे का टिकट डाक व्यय के लिये भेजने पर सभा के मंत्री से मिल सकती है।

———:o:———

भाग १३] *Registered No. A 414* [संख्या ४

नागरीप्रचारिणी पत्रिका ।

सम्पादक—श्यामसुन्दर दास बी० ए०

प्रति मास की १५ ता० को

काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित ।

अक्तूबर १९०८ ।

Printed by Madho Prasad at the Bharat Press, Benares, for B. Jugul Kishore, Publisher.

संख्या का मूल्य ≈) वार्षिक मूल्य १)

विषय ।

पर शिकार नहीं करते इसी कारण उनमें दुर्घटनाएं कम होती हैं और बहु विवाह का प्रचार नहीं है। ध्रुव समीपियों में व्यभिचार इतना बुरा नहीं गिना जाता परन्तु यह बात पुरुष के मित्रों के साथही होती है, क्योंकि पुरुष को भी बदला मिल जाता है। कहां किस को चित्त प्रसन्न करने का अवसर मिलेगा ये वे पहिले से निश्चय कर रखते हैं। सबसे बड़ा दुष्कर्म यह गिना जाता है जब कि विवाहिता स्त्री किसी अविवाहित पुरुष से संबंध स्थिर कर ले।

बालहत्या इस संसार में सदा से चली आती है। पुराने क़िस्से कहानियां भी इस बात को बताते हैं कि कैसी कैसी दुर्गम जगहों में बच्चे पड़े मिले हैं, कहीं मंजूषे में बच्चे बहा देने की चर्चा है, कहीं बन में पड़े हुए बच्चे की गाथा है। किसी बच्चे को भेड़िए ने पाला है, किसी को पक्षियों ने सँभाला है। हमारे देश में साले ससुरे बनने के डर से अनेक राजपूत पिछले दिनों लड़कियों को खुले ख़ज़ाने मारते थे। सभ्य देशों में अनेक बच्चे सड़क किनारे, मोरी और बग़ीचों में पड़े मिलते हैं। बालघात का एक बड़ा कारण यह पापी पेट है। अनेक ग़रीब जब अपना ही पेट नहीं भर सकते तो बच्चों को कहां से पालें। इस पृथ्वी पर ऐसे लोग भी रहते हैं जो बच्चे को मिट्टी का लोंदा समझते हैं। घर में जब तक स्त्री का पति आकर बच्चे को धरती से नहीं उठाता मां उसको छाती से नहीं लगाती, पेट से निकाल कर [illegible]ाहिर डाल देती है। ध्रुव समीपी लोग भी नई जन्मी सन्तान [illegible] आवश्यकता से अधिक रखना ठीक नहीं समझते। इनको [illegible] की जितनी चिन्ता है उतनी और कहीं नहीं है। परन्तु

एक बात है कि बालहत्या चुप चाप करनी होती है। बच्चों का दम घोट कर अथवा और किसी तरह से उसका प्राणान्त करके बाहिर फेंकते हैं, यदि कोई जीता ही बाहिर फेंक आवे और उसके रोने के शब्द गांव के लोग सुन पावें तो बड़ा मनहूस शकुन समझा जाता है। बहुतसी माताएं बच्चों की जीभ निकाल कर तब बाहिर फेंकती हैं, जिसमें उनको यह डर न रहे कि दम घोंटा हुआ अधमरा बच्चा फिर जी पड़ा तो रोने लगेगा।

जिस प्रकार गर्भपात कराने की गुप्त प्रथा सभ्य देशों में है, यहां भी वह चेष्टा वर्तमान है इसके लिये अनेक उपाय हैं। बहुत सी स्त्रियों की इस चेष्टा में जान भी निकल जाती है, क्योंकि परमात्मा ने गर्भ रहने का जैसा स्वादिष्ट और सुगम उपाय बनाया है, गर्भस्राव कर काम उतना ही कष्टकर और कठिन किया है।

यद्यपि यहां गर्भपात और बालहत्या का कुकर्म होता रहता है, परन्तु शिशुपालन का काम करने में माता अन्य देश वासियों से किसी प्रकार कम नहीं है। गर्भ रहने से ही वे अपनी सन्तान की शुभ कामना करने में लग जाती हैं, गर्भिणी स्त्री परिश्रम और जोखों के काम करने से क्षमा की जाती है। वह सिवाय अपने पति के हाथ से मारे हुए शिकार के और किसी प्रकार का मांस नहीं खाती। एक बात यह भी ज़रूरी है कि शिकार के पेट में किसी प्रकार का घाव न हो क्योंकि ऐसा होने से बच्चे की आँतें वैसा ही घाव हो जाना सम्भव गिना जाता है। दूसरे

मारा हुआ शिकार खाने से सन्तान निकम्मी निकल जाने का विश्वास किया जाता है।

प्रसव काल के समय सिर पर कढ़ाई रख देने से बच्चा जनने में स्त्री को कष्ट कम हो जाता है। नाल को या तो दांत से काटते हैं या सीप के किनारे से। छुरी या कैंची का उपयोग कदापि नहीं करते। कटे हुए टुकड़े को सावधानी से रखते हैं। प्रसव काल के पीछे स्त्री को एक प्रकार का मांस खिलाया जाता है जिसमें किसी बलवान जीव का दिल जिगर आमाशय और आंतों का सम्मेलन होता है। इससे स्त्री का दूध पुष्टकर होता है और उसकी निर्बलता दूर हो जाती है। कई दिन घर में आग नहीं जलाई जाती और अंगीठी के ऊपर कढ़ाई नहीं चढ़ाई जाती। घर से बाहिर कोई हड्डी नहीं फेंकी जाती। जिस बर्तन में मां बाप पानी पीते हैं उसमें कोई दूसरा नहीं पी सकता। छः सप्ताह तक वे घरही में खाना खाते हैं और माता घर से बाहर नहीं निकलती। जब यह समय हो चुकता है तब नए कपड़े पहिन कर परोसियों से भेट करने जाती है और पुराने कपड़े को फिर नहीं पहिनती। वर्ष दिन तक कभी अकेली बैठ कर भोजन नहीं करती। बच्चे के लिये नर्म बालों के चमड़े सावधानी से एकत्रित किए जाते हैं। पिता उसके लिये अच्छा अच्छा शिकार लाता है। आंखों को सुन्दर चमकीली और निर्मल रखने के लिये सील मछली की आंखें [illegible]लाता है। जो मनुष्य उन दिनों में मरा होता है उसी के [illegible]म से यह बच्चा पुकारा जाता है।

[illegible] ध्रुव समीपी माता पिता अपने बच्चों को बड़ा प्यार

करते हैं। न उसे मारते हैं, और न झिड़कते हैं। बच्चे भी न रोते, न ठिनकते हैं, न हठ करते हैं। बड़े होने पर भी वे मा बाप के विरुद्ध नहीं खड़े होते, न सामना करते हैं। ग्रीनलैंड में जो ध्रुव समीपी सर्कार में काम करते हैं, वे अपने बूढ़े मां बाप का दर्शन करने के लिये अच्छे आमदनी के काम को छोड़ कर चले जाते हैं। कुटुम्ब का आपस का प्यार उदाहरणीय है। एक यात्री ने एक बुड्ढे ध्रुव समीपी को रोते देखा तो बड़ा आश्चर्य किया क्योंकि यदि इन लोगों के शरीर को टुकड़े टुकड़े कर डालो तो भी वे आह नहीं मारते फिर रोना तो दूर रहा। कारण केवल यह था कि उसका लड़का चाबुक से इतना तेज़ शब्द नहीं कर सकता था जितना उसका एक अन्य साथी। इतना प्रेम होने पर भी वे अपने बच्चों को निकम्मा नहीं होने देते।

माताओं को बच्चों में इतना मोह होता है कि वे उसे सात वर्ष की अवस्था तक दूध पिलाती हैं। इसी से उनके स्तन बहुत ही लंबे हो जाते हैं। पन्द्रह वर्ष के बच्चे जब शिकार से लौट कर आते हैं तो भोजन में देर होते देख कर अपनी मां के स्तन ही चूसने लगते हैं। भोजन के अभाव में माताएं स्तनपान करा कर अपनी सन्तान को सन्तोष देती हैं। स्तनपान कराना मां के अधिक स्नेह का भी कारण है। दूर देश जाते हुए एक युवक की मां स्तन खोल कर अपने लड़के से कहती है, "बेटा आओ! स्तनपान करो और कुशल पूर्वक घर को लौटो। मेरा यह दूध विदेश में तुम्हें अपनी मां की याद दिलावेगा"।

ऐसी भी माताएं हैं जो बिल्ली की तरह अपने बच्चे के शरीर को जीभ से चाट चाट कर साफ़ करती हैं।

ध्रुव समीपियों के परिवार की न्यूनाधिकता खान पान की न्यूनाधिकता पर निर्भर है। जब खाना मिलने का अभाव होता है तो फालतू मुंह बन्द करने पड़ते हैं और उस समय बूढ़े अथवा बच्चों पर विपत्ति आती है। यदि बूढ़ा निकम्मा है तो उसे छोड़ कर चले जाते हैं और यदि बच्चा फालतू है तो उसे बाहिर सर्दी में मरने को फेंक देते हैं। कभी कभी बूढ़ों की ख़ातिर बच्चे और स्त्रियों तक का बलिदान कर दिया जाता है। बच्चों की ख़ातिर बूढे अपना मरना अच्छा समझते हैं। हमारे पाठक इस बात को बहुत ही बुरा समझेंगे परन्तु यदि उन लोगों की दशा का विचार किया जाय तो सिवाय ऐसा करने के और कोई उपाय ही नहीं दीखता। उनमें मोह ममता सब कुछ है परन्तु क्या किया जाय उनका कुछ वश नहीं है।

जो सर्वदा बीमार रहते हैं और अपना भोजन अपने पुरुषार्थ से नहीं ला सकते उनको भी संसार त्यागना पड़ता है। यदि खाने पीने का अभाव नहीं है तो रोगियों की खूब शुश्रुषा की जाती है। रोगी के सिरहाने एक पत्थर तकिए के नीचे रख दिया जाता है। स्त्रियां उस पत्थर को जब तब तोलती रहती हैं। यदि वह भारी होता जाता है तो रोगी के जीवन से निराश हो जाती हैं।

मृत्यु आवाहन करने के लिये एक अलग बर्फ़ की कुटी [illegible]ाई जाती है। यहां वे चर्म वस्त्र का विस्तर बनाते हैं। [illegible]ी की सुराही रखते हैं और दीपक जोड़ते हैं। यहां पर

उस रोगी को लिटाते हैं जिसके आरोग्य होने की अब कुछ आशा नहीं रही है। जो बुढ्ढे निर्बलता के कारण अपना भोजन नहीं प्राप्त कर सकते हैं और कुटुंब के लिये भार स्वरूप हैं वे भी ऐसी ही कुटी में जा पड़ते हैं। यहां पर उसके स्त्री पुत्र भाई भतीजे सब आते हैं और सर्वदा के लिये विदाई लेते हैं। वे यहां बहुत देर नहीं ठहरते क्योंकि यह रोगी या बुढ्ढा उनके सामने मर जाय तो उनके सब वस्त्र अशुद्ध हो जाते हैं और वस्त्रों का त्याग करना उन लोगों के लिये बड़ा ही कठिन है। वे लोग रोते सिसकते नहीं सब शान्ति से वार्त्तालाप करते हैं । मरने वाला भी बड़े सन्तोष से अपनी अपनी अन्तिम इच्छाएं प्रकाशित कर देता है। जब सब बात हो चुकती है तो एक एक करके वहां से लौटते हैं। जो सब से पीछे रहता है वह वर्फ़ की शिला से कुटी का मुंह बन्द कर देता है और वह कुटी निवासी मरा हुआ समझ लिया जाता है।

यथार्थ में जीने का अर्थ यही है कि मनुष्य दुःख सुख पाने के कामों में लगा रहे, जब इस योग्य नहीं रहा तो मानों मर ही गया। पशुओं का ऐसा नियम है कि जब वे देखते हैं कि अब उदर पोषण की सामर्थ्य उनमें नहीं रही तो वे किसी गहरी खोह या घने जंगल में आंख मूंद कर लेट जाते हैं और फिर वहां से नहीं उठते। यही स्वभाव ध्रुव समीपियों में अबतक पोया जाता है।

यह कुटी यथार्थ में एक समाधि है जहां मनुष्य कु[illegible] देर या दिनों तक सांस लिया करता है। कुटी के बाहि[illegible] लोगों का आना जाना सुना करता है। इस समय उसे अ[illegible]

जीवन की सब बातों का एक एक कर के स्मरण होता है। इस जीवन में उसने क्या क्या देखा और क्या क्या किया, बचपन के खेल कूद, जवानी के दिन, मुहब्बत की बातें। शिकार की सैर ये सब आखों के सामने चित्रांकित से गुज़रते जाते हैं। अब कुछ आशा नहीं रही और न कुछ सोच है और सोच करने से होता भी क्या है। न अब क्रोध है न अभिमान। आज वह इस संसार में अकेला अपनी मूल दशा को समझने के योग्य होता है। "मैं इस संसार में असमर्थ आया था और आज असमर्थ होकर विदा होता हूं अब मुझे किसी प्रकार चिन्ता ईर्षा और लालसा का दुःख न रहेगा"। केवल एक चिन्ता उठती है कि अब दूसरे संसार में कैसे बीतेगी। इतने में दीपक अस्त होने लगता है और साथही उसकी भी आंखे मिंच जाती हैं। अब उसको प्रत्यक्ष मृत्यु आती हुई जान पड़ती है और जैसे उसने अनेक मछली और रीछों को भाले से मारा था उसी भांति मृत्यु अपना त्रिशूल उसके सिर पर जमाती है।

बहुत से यात्री इन जीवित समाधियों को देखने की इच्छा से दर्वाजे की बर्फ़ हटाकर भीतर का हाल देखना चाहते हैं। परन्तु जब वह अकड़ा हुआ शरीर और फटी फटी आखें देखते हैं अथवा सिसकता हुआ मुर्दा जब खुली समाधि देखकर क्रोधित होता और बुरबुराता है कि उसे शान्ति पूर्वक क्यों मरने नहीं दिया जाता तो घबड़ा उठते हैं।

ध्रुव समीपियों की बिरादरी में शौकच नाम के एक [illegible]ग हैं जो बीमार या बुढ्ढों को रोग और बुढ़ापे के कष्ट [illegible]शीघ्र मुक्त करना अपना बड़ा कर्तव्य समझते हैं। दर्द

से कराहते कराहते मरने की अपेक्षा अथवा बुढ़ापे में निकम्मे होकर मरने की अपेक्षा हाथ पैर चलते मरना वे अच्छा समझते हैं । इसके वे अनेक उपाय करते हैं और उसे बुरा नहीं समझते ।

यदि किसी को बिस्तरे में पड़े एक सप्ताह हो जाय तो उसको लोग बड़ी शर्म दिलाते हैं और गले में एक रस्सी बांध कर उसे चारों ओर खींचते हैं और पत्थरों पर झटके देकर खचेरते हैं । इस से वह आध घंटे में या तो काम काज करने के लिये उठही खड़ा होता है या मरही जाता है। यदि सिसकता हुआ रहा तो खींचकर क़बरिस्तान में ले जाते और वहां ढेले मार मार कर उसका प्राणांत कर देते हैं। अथवा कुत्तों से चिथवा कर उन कुत्तों को मार कर आप खा जाते हैं ।

इस दुर्दशा से बचने के लिये बहुत से समझदार जब अपने को दुर्बल देखते हैं अथवा रोग से अच्छा होने से निराश हो जाते हैं तो अपने भाई बन्धुओं को एक बड़ा भोज देते हैं और जो कुछ इच्छा होती है कह सुन लेते हैं । इसके पीछे अपने एक मित्र के हाथ से बरछा खाकर मरजाते हैं अथवा बहुत सा इनाम इकराम देकर इस काम के लिये किसी मनुष्य को राज़ी कर लेते हैं जो अचानक बरछा मार कर उनका काम तमाम कर देता है ।

बुड्ढे और निर्बल आदमियों से पूछा जाता है कि अभी अपनी ज़िन्दगी से तृप्त हुए हैं कि नहीं और वे अपनी लाचारी समझ कर जीने से उकताना ही प्रकाश करते रोगी का उत्तर पाते ही एक गढा खोदा जाता है और

में घास बिछाई जाती है इस घास के ऊपर एक बारहसिंघे का बलिदान देते हैं और उसके रुधिर से सब घास तर कर दी जाती है। इस घास पर रोगी को लिटा देते हैं और लिटाकर गर्दन की नस या हाथ की बड़ी रग काट देते हैं। अन्तिम अभिवादन करते करते वह मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। नस या रग खोलने का काम खास लोग करते हैं। यदि बड़ा आदमी हुआ तो बारहसिंघा उसके साथ जला दिया जाता है जिससे मृत्यु के पश्चात् बारहसिंघा उसके साथ बना रहता है और जो ग़रीब हुआ तो स्वर्गप्राप्ति कराने वाले सज्जन उसे खा डालते हैं।

जिस प्रकार लड़ाई में मरने से स्वर्ग की आशा रखकर मनुष्य अपने प्राण का मोह छोड़ देता है ये लोग भी उसी प्रकार मरने की इच्छा से झूटमूठ की तकरार उठाकर लड़ पड़ते हैं। उनमें कहावत है कि जवानी में मरने वाला देवताओं का प्यारा होता है।

मुर्दे की अन्तिम क्रिया करने का एक सा नियम नहीं है। बहुधा तो मुर्दे गाड़ ही देते हैं लेकिन ग्रीनलैंडर और लेब्रोडोरियन समुद्र में भी फेंक देते हैं। जलाने या अन्य जीवों को खिलाने की प्रथा भी कहीं कहीं है। सब अपने अपने दस्तूर को अच्छा समझते हैं। उनका विश्वास है कि मरने पीछे भी मनुष्य अन्य लोगों को सुख दुःख पहुंचाने योग्य बना रहता है। लोग क़बरों के पास जाने से बहुत डरते हैं और प्रसन्नता प्राप्ति करने के लिये भूत की समाधि पर भोजन रख आते हैं। बहुत से लोग भोजन वस्त्र लेकर पहुंचते हैं, आधा आप खाते हैं आधा मरे हुए के लिये रखते हैं। इसी भांति आधे कपड़े आप ओढ़ते हैं, आधे भूत के [illegible] पर डाल देते हैं। वे गोल चक्र बांध कर अपनी अपनी [illegible]ाइशें भूत को जनाते हैं।

विधवा शोक प्रकाश करने के लिये अपने वस्त्र बहुत साधारण कर लेती है, उससे भोजन बनाने का काम नहीं लिया जाता। वह किसी प्रकार का शृंगार और सफ़ाई नहीं करने पाती। भाई बन्धु रिश्तेदार अपनी नाक के एक नथने को घास से बन्द कर लेते हैं, मानों यह प्रकाश करते हैं कि शोक के मारे वे अधमरे होगए हैं, और केवल आधा सांस लेते हैं। जिनको सच्चा दुःख होता है वे किसी जोखिम काम में लग पड़ते हैं और इसके बिचार में वे दुःख को भूलना चाहते हैं।

मरे हुए के लिये श्राद्ध करना इनमें प्रचलित है। वर्ष के अन्त में भी खान पान किया जाता है। लोग खूब नाचते कूदते हैं। उनका सब ख़र्च मृत व्यक्ति का परिवार सहता है। सब मिहमानों को कुछ न कुछ देकर विदा किया जाता है, ग़रीब से ग़रीब होने पर भी ख़ाली हाथ नहीं फेरता। ऐसा विश्वास किया जाता है कि असभ्य जातियाँ चित्रकारी नहीं जानतीं परन्तु ध्रुव समीपियों में ऐसे लोग पाए जाते हैं जो शिकार और मछली पकड़ने के दृश्य, रीछ ह्वेल और सील मछली का चित्र बहुत ठीक बनाते हैं। एक यात्री ने इस देश के क़िस्से प्रकाश करते समय उसमें के चित्र यहीं के एक चित्रकार से खिंचवाए थे। उनके सादे परन्तु भाव भरे चित्र बहुत ही अनोखे जान पड़ते हैं।

चित्र बनाने में जो रूप और समानता का ध्यान रखना पड़ता है वह समझ इन चित्रकारों में है। अनेक स्थानों के नक़शे इन लोगों ने ठीक ठीक हिसाब से बनाए हैं। जहाज़ चलाने के लिये नक़शा दरकार होता है जिसमें समुद्र के टापू और पहाड़ बने होते हैं एक बार यह नक़शा एक ध्रुव समीपी को दिखाया गया तो वह थोड़े ही समझाने से समझ गया।

——:-o-:——

भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास की सामग्री।

[पंडित गौरीशंकर हीराचन्द ओझा लिखित।]

यह कहना अनुचित न होगा कि शृंखलाबद्ध लिखा हुआ भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास[१] नहीं मिलता, और ईसवी सन् की १८ वीं शताब्दी के मध्य तक उसके लिये सामग्री एकत्रित करने का उद्योग भी हुआ हो-ऐसा पाया नहीं जाता। ई० स० १७८४ में सर् विलिअम जोन्स के यत्न से एशिया खंड के इतिहास, साहित्य आदि विषयों की शोध के लिये 'एशिआटिक् सोसाइटी' नाम की सभा कलकत्ते में क़ायम हुई, तभी से हमारे यहां के प्राचीन इतिहास की सामग्री की खोज और उसके संग्रह का काम शुरू हुआ, और अब तक अनेक विद्वानों के श्रम तथा गवर्न्मेंट की उदार सहायता से बहुत कुछ सामग्री उपलब्ध हो गई है। वह किस प्रकार की है और यहां के प्राचीन इतिहास के लिये कहां तक उपयोगी हो सकती है यह बात बतलाने का प्रयत्न इस लेख में किया जाता है।

उक्त सामग्री को हम नीचे लिखे हुए चार मुख्य विभागों में बाँट सकते हैं—

(क)–हमारे यहां की प्राचीन पुस्तकें।

(ख)–युरोप, चीन, तिब्बत और सीलोन वालों की तथा मुसल्मानों की लिखी हुई प्राचीन पुस्तकें।

(ग)–प्राचीन शिलालेख और ताम्रपत्र।

---

१ 'प्राचीन इतिहास' से हमारा अभिप्राय बहुत प्राचीन काल [से] लगाकर मुसल्मानों के हाथ से हिन्दुराज्यों के अस्त होने अथवा [उन]की स्वतंत्रता नष्ट होने के समय तक के इतिहास से है।

(घ)-प्राचीन सिक्के, मुद्रा तथा शिल्प।

(क)—हमारे यहां की प्राचीन पुस्तकें।

(अ)-पुराण-जिन प्राचीन राजाओं के नाम आज तक के मिले हुए प्राचीन शिलालेख, ताम्रपत्र, सिक्के या विदेशियों के लिखे हुए प्राचीन ग्रंथों में नहीं मिलते उनकी शृंखलाबद्ध वंशावलियां कितने एक पुराणों में मिल जाती हैं, अतएव हमारे यहां के विशेष प्राचीन इतिहास के लिये ते केवल पुराणही सहायक हो सकते हैं। १८ पुराणों में से वायु, मत्स्य, विष्णु, ब्रह्मांड और श्रीमद्भागवत ये पांच इतिहास के लिये विशेष उपयोगी हैं, क्योंकि इनमें सूर्य, चंद्र, यादव, शिशुनाग, नंद, मौर्य, सुंग, कारव, आंध्रभृत्य आदि वंशों के राजाओं की शृंखलाबद्ध वंशावलियां तथा किसी किसी का कुछ चरित्र भी मिल जाता है; और शिशुनाग, नंद, मौर्य, सुंग, कारव तथा आंध्रभृत्य वंश के राजाओं में से बहुधा प्रत्येक का राजत्वकाल तथा ई० स० की चौथी शताब्दी में राज्य करने वाले प्रतापी गुप्त वंश[1] तक के राजवंशों का पता भी इनसे लगता है, परन्तु

[1] ई० स० १८८७ के बंबई (वेंकटेश्वर प्रेस) के छपे हुए भविष्य महापुराण के प्रतिसर्ग पर्व में कलकत्ते में अंग्रेजों का राज्य स्थापित होने और अष्टकौशल्या (पार्लमेंट) से राज्य प्रबन्ध होने का भी वर्णन दिया है, परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाय तो वह सारा पर्व थोड़े ही समय का बना हुआ प्रतीत होता है। उसके रचयिता ने उपर्युक्त पुराणों से जो वृत्तान्त उद्धृत किया उसको भी अपनी तरफ से बढ़ा घटा कर अविश्वसनीय बना दिया है अतएव प्राचीन इतिहास के लिये वह सर्ग निरुपयोगी है।

बड़ी त्रुटि यह है, कि कोई साल संवत् इनमें नहीं दिया और भिन्न भिन्न प्रदेशों पर राज्य करने वाले कई सम-कालीन राजवंशों का एक-दूसरे के बाद होना लिख दिया है, ऐसी स्थिति में पुराणों में दिए हुए समस्त राजाओं का राज्य समय ठीक ठीक निश्चय करना अशक्य है। ये सब पुराण कई बार छप चुके हैं, परन्तु उत्तमता के साथ छपे हुए थोड़े ही हैं, इसलिये 'हार्वर्ड ओरीएंटल् सीरीज़' में छपे हुए संस्कृत ग्रंथों की शैली पर इनका संपादन होना इतिहास के लिये बहुत आवश्यक है।

(आ)-रामायण और महाभारत—इनमें रघु और कुरु-वंशों का वृत्तान्त, जो उपर्युक्त पुराणों में संक्षेप से लिखा हुआ है, विस्तार से मिलता है, और इनके लिखे जाने के समय की इस देश की दशा, लोगों की सामान्य स्थिति, युद्ध प्रणाली आदि कई आवश्यकीय बातों का पता भी इनसे भली भांति लगता है। ये कई बार छप चुके हैं।

(इ)-राजतरंगिणी-ठीक ऐतिहासिक रीति से लिखा हुआ हमारे यहां केवल यही एक ग्रन्थ है, जिसमें कश्मीर का इतिहास है। इसका प्रथम खंड अमात्य चंपक के पुत्र कल्हण पंडित ने ई० स० ११४८ में लिखा था, जिसमें गोनंद (प्रथम) से लगा कर सुस्सल के पुत्र जयसिंह तक का वृत्तान्त है। यह पुस्तक इतिहास के लिये बड़ी ही उपयोगी [illegible] कल्हण ने वहां के प्रथम राजा गोनंद का भारत युद्ध के [illegible]य अर्थात् कलियुग संवत् ६५३ (ई० स० से २४४८ वर्ष पूर्व) [illegible] विद्यमान होना मान लिया है (जो वास्तव में उस समय [illegible] बहुत पीछे हुआ था), जिससे समय की पूर्ति के लिये

उस (कल्हण) को कितने ही राजाओं का राजसमय मन-
माना अधिक धरना पड़ा, यहां तक कि रणादित्य (तुंजीन
तीसरे) का तो उसने ३०० वर्ष राज्य करना लिख दिया है।
कल्हण के लेखानुसार प्रसिद्ध मौर्यवंशी राजा अशोक का
समय उसके वास्तविक समय से क़रीब १००० वर्ष पूर्व और
मिहिरकुल (हूण) का ११०० से अधिक वर्ष पूर्व मानना
पड़ता है। ऐसी दशा में कर्कोटिक वंश के पूर्व के राजाओं
का जो राजत्वकाल उसने माना है वह विश्वास योग्य
नहीं माना जा सकता ।

भारतवर्ष के दूसरे प्रदेश वालों की अपेक्षा कश्मीर
वालों में इतिहास का प्रेम विशेष रहा, जिससे उन्होंने
अपने देश का शृंखलाबद्ध इतिहास लिख रक्खा है। ई० स०
१४१२ में जोनराज नामक पंडित ने राजतरंगिणी का दूसरा खंड
लिखा, जिसमें जहां से कल्हण ने छोड़ा था वहां से प्रारंभ
कर अपने समय तक का उसने इतिहास दिया है। इस
(दूसरे खंड) में जयसिंह से लगा कर कोटाराणी तक के
(जिसके साथ कश्मीर के हिन्दू राज्य की समाप्ति हुई)
हिन्दू राजकर्त्ताओं का और उसके बाद मुसल्मानों का
वृत्तान्त है। जोनराज के बाद उसके शिष्य श्रीवर पंडित ने
ई० स० १४७७ में राजतरंगिणी का तीसरा खंड लिखा और
उसके पीछे प्राज्यभट्ट ने चौथा खंड लिख कर अकबर के
कश्मीर विजय के समय तक का वृत्तान्त पूर्ण कर
दिया। राजतरंगिणी के ये चारों खंड प्रथम कलकत्ते की
एशिआटिक् सोसाइटी ने छपवाए थे, जिसके बाद ई०
१८९२ में डाक्टर स्टीन (M. A. Stein PH.D.) ने क[illegible]

रचित प्रथम खंड को बड़ी शुद्धता के साथ बम्बई में छपवाया फिर पं० दुर्गाप्रसादजी (महामहोपाध्याय) जयपुरवाले ने तथा (उनके देहान्त के बाद). प्रोफेसर पीटर्सन ने ये चारों खंड बम्बई की संस्कृत सीरीज़ में प्रकाशित किए।

(ई)-ऐतिहासिक काव्य आदि—पुराणों में ई० स० की तीसरी शताब्दी के क़रीब तक राज्य करने वाले राजवंशों की वंशावलियां मिलती हैं, जिसके पीछे ई० स० की छटीं शताब्दी तक के राजाओं का हमारे यहां कुछ भी लिखित इतिहास नहीं मिलता, फिर ई० स० की सातवीं शताब्दी में तथा उसके बाद समय समय पर कितने एक ऐतिहासिक काव्य, नाटक, चरित आदि के ग्रंथ लिखे गए जिनसे भी कुछ कुछ ऐतिहासिक वृत्तान्त संग्रह किया जा सकता है, ऐसी पुस्तकों में से नीचे लिखे हुए ग्रंथ प्रसिद्ध हैं—

(१) हर्षचरित—यह एक गद्य काव्य है, जिसको प्रसिद्ध विद्वान बाणभट्ट ने, जो कन्नौज और थाणेश्वर के प्रसिद्ध वैश वंशी राजा हर्ष (हर्षवर्द्धन) आश्रित था, ई०स० की सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में रचा था। इसमें उक्त वंश के राजा प्रभाकरवर्द्धन, उसके पुत्र राज्यवर्द्धन तथा हर्ष और पुत्री राज्यश्री का वृत्तान्त है। यह पुस्तक मौखरी वंशियों के प्राचीन इतिहास में भी कुछ सहायता देती है, क्योंकि राज्यश्री के विवाह मौखरी राजा अवन्ति वर्मा के ज्येष्ठ पुत्र ग्रहवर्मा के साथ होने का तथा उस (ग्रह वर्मा) के मारे जाने [illegible] वृत्तान्त इसी पुस्तक से मिलता है। इस पुस्तक में बाण[illegible] ने सुनी हुई नहीं किन्तु अपने साम्हने की घटनाओं [illegible]वर्णन किया है। इसमें हर्ष के जन्म का मास, पक्ष,

तिथि, नक्षत्र और समय तक दिया है परन्तु संवत नहीं दिया। यह पुस्तक बम्बई (निर्णयसागर प्रेस) में छप चुकी है।

(२) गौडवहो—यह प्राकृत भाषा का काव्य है, जिसकी रचना ई० स० की आठवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में कवि वाक्पतिराज ने की थी, जो कन्नौज के (मौखरी) राजा यशोवर्मा का आश्रित था। इस पुस्तक में उपर्युक्त राजा यशोवर्मा के गौड देश पर चढ़ाई करने तथा वहां के राजा को मारने का वर्णन है, वाक्पतिराज ने ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख करने में यहां तक बेपरवाही की है कि यशो वर्मा के पिता के वंश तक का भी नाम नहीं दिया। ऐसी दशा में यह काव्य बड़ा होने पर भी इतिहास में बहुत कम सहायता देता है। यह पुस्तक बम्बई की संस्कृत सीरीज़ में छपी है।

(३) मुद्राराक्षस नाटक—इस नाटक में मौर्यवंशी राजा चन्द्र गुप्त के राज्य पाने का वृत्तान्त है। इसको ऐतिहासिक नाटक कहें तो अनुचित न होगा। कश्मीर के राजा अवंतिवर्मा के समय ई० स० ८६० के क़रीब विशाखदत्त पण्डित ने गुणाढ्य रचित वृहत्कथा के आधार पर इसे रचा था। यह बंबई की संस्कृत सीरीज़ में छपा है।

(४) नवसाहसांकचरित—इस काव्य में वाक्पतिराज (प्रथम) से सिंधुराज तक के मालवा के परमार राजाओं की नामावली और थोड़ा सा ऐतिहासिक वृत्तान्त है। सिन्धुराज (नवसाहसांक) के राज्य समय में पद्मगुप्तपरिमल कवि ने ई० स० १००० के क़रीब इस पुस्तक की रचना की थी। पुस्तक वृहत् होने पर भी इसमें ऐतिहासिक वृत्तान्त बहुत थोड़ा है। यह बम्बई की संस्कृत सीरीज़ में छप गई है।

सभा का कार्य्यविवरण ।

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २९ अगस्त १९०८ सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान—सभाभवन ।

[१] बाबू जुगुल किशोर और पंडित रामनारायण मिश्र के प्रस्ताव पर बाबू श्यामसुन्दरदास सभापति चुने गए ।

[२] गत अधिवेशन (ता० २५ जुलाई १९०८) का कार्य्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

[३] प्रबन्धकारिणी सभा के ता० ३० जून और ८ जूलाई के कार्य्यविवरण सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

[४] सभासद होने के लिये निम्न लिखित महाशयों के आवेदन पत्र उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए—

[१] बाबू ब्रजचन्द-चौखम्भा-काशी ३) [२] बाबू रामप्रसाद-गायघाट-बनारस सिटी १॥) [३] दीवान बादलजू-सुसाहिब श्रीमान् महाराजा बहादुर भगवानसिंह ओड़छा-टीकमगढ़ १॥) [४] पंडित घनश्यामदेव शर्म्मा, पुरानी बजहाई बानपुर दरवाजा-टीकमगढ़ १॥) [५] कुंवर दरयावसिंह-ताल दरवाजा-नायकों का मन्दिर टीकमगढ़ १॥) [६] बाबू चन्दासिंह-इन्स्पेक्टर फैमिन-ओड़छा राज्य-टीकमगढ़ १॥) [७] कुंअर दयारामसिंह-इन्स्पेक्टर क़हत ओड़छा राज्य टीकमगढ़ १॥) [८] डाक्टर बलिकरण पाठक, भुतही इमली-काशी १॥) [९] बाबू सूर्य्यनारायण अग्रवाल-पुराना शहर-इटावा ३) [१०] बाबू शिवनाथ-एक्ज़ेक्यूटिव इञ्जीनियर मुलतान ३) [११] बाबू मुरलीधर हास्पिटल अस्टेण्ट-विजयराघवगढ़ कटनी-जबलपुर २) [१२] स्वामी ओंकार नेपाली खपरा-काशी ३)

[५] सभासद होने के लिये निम्नलिखित नवीन महाशयों के [illegible] पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए—

[१] स्वामी सतगुरु प्रसाद शरणजी C/o बाबू श्यामलालजी गुप्त-हेडक्लर्क रेसीडेण्ट इञ्जिनीयर का दफ़्तर-गोंडा। [२] बाबू चन्द्रिकाप्रसाद सिंह तहसीलदार-बनारस। [३] बाबू जयशंकर प्रसाद,-सरांय गोवर्धन-काशी। [४] भाष्यं० रामाचार्य जी-अस्पताल रोड-वंगलौर। [५] पंडित अनन्ताचार्य्य आसूरि-परिशासन इलाका-माल्हेश्वर बंगलौर। [६] बाबू गोपीचन्द भा... C/o मुंशी बद्रीप्रसाद रोहतक। [७] पंडित विश्वनाथ मिश्र-लालघाट-काशी। [८] बाबू श्यामनारायण लाल, सेकंड मास्टर-शिवपुर टौन स्कूल जि० बनारस। (९) पं० रामनारयण शर्म्मा एल० एम० एस० असिस्टेण्ट सर्जन आन प्लेग ड्यूटी-करनाल। (१०) बा० कन्हैयालाल-फूलबाई की ब्रह्मपुरी-चौखम्भा काशी। (११) पंडित मन्नूलाल औदीच्य-कालभैरव काशी। (१२) पं० भगवती प्रसाद शु... चीफ़ क्लार्क आडिटर का दफ्तर B. N. W. RY गोरखपुर। (१... बाबू लक्ष्मीदास बी० ए० सुखाल साहु का फाटक-काशी।

(६) निम्न लिखित सभासदों के इस्तीफे उपस्थित किए और अधिक सम्मति से स्वीकृत हुए—

(१) पं० ताराचन्द दूबे-म्युनिस्पल कमिश्नर-बिलासपुर। (२) बा० गोपालचन्द्र गुह-माथा भांगा-कूचबिहार। (३) बा० हरीश चन्द्र नातू-पूना। (४) लाल रघुराजसिंह मेयो कलेज-अजमेर (५) बाबू बद्रीनाथ वर्म्मा-मनेजर राजराजेश्वरीप्रेस-चौक लखनऊ (६) बाबू सीतलाप्रसाद जैनी-चौपाटी-बम्बई। (७) पं० विश्वनाथ पाध्याय श्रीनगर काश्मीर। (८) राय बहादुर लाला बैजनाथ एडिशनल सेसन्स जज-बदायूं। (९) पंडित बनवारीलाल तिवारी मोतीमहल लश्कर-ग्वालियर।

(७) मंत्री ने निम्नलिखित सभासदों की मृत्यु की सूचना दी जिस पर सभा ने शोक प्रगट किया—

(१) बाबू बैजनाथप्रसाद-चौक-काशी। (२) पण्डित शिवनारायण तिवारी-अलीनगर-गोरखपुर। (३) बाबू दौलतराम त... दार-राजनगर-छत्रपुर।

(c) निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं—

कविराज श्रीहेमचन्द्रसेन कविरत्न-कलकत्ता, कलकत्ता धर्म मार्तण्ड पञ्चाग । मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ-जोधपुर, उर्दू जंत्री सन् १६०८ की १ प्रति, हिन्दी जंत्री सन् १६०८ की १ प्रति। पण्डित चुन्नीलाल शास्त्री-बरेली, भावनायोग प्रचारक पुस्तकम्, अहिंसा धर्म व्यवस्था । बाबू गजानन्द मोदी-नागरीप्रेस हीराबाग-बम्बई, विष्णुसहस्र नाम, शनिश्चर जी की कथा, गोपालसहस्र नाम, भारत वर्तमानदशा श्रीर उन्नति का साधन, सन्ध्या श्रीर तर्पण, गङ्गालहरी, चाणक्यनीति, श्रीमद्भगवतद्गीता, राग रत्निक । इण्डियन प्रेस इलाहाबाद, कादम्बरी २ प्रति । बाबू मुरलीधर वर्म्मा बिजयराघव गढ़, टीका प्रचारक। पं० मीठालाल व्यास व्यावर-राजपुताना, वृष्टि प्रबोध, । बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए० काशी। बालक विनोद । पंडित रामनारायण मिश्र बी० ए० काशी, निज उपदेश राधास्वामी। श्रीमति बङ्ग महिला, सुन्दरघाट-मिरजापुर, राई से पर्वत या तिल से पहाड़ । बाबू भगवानदास हालना- बुन्देलखण्डी-मिर्जापुर, विधवा बिवाह भ्रम निवारक ग्रंथ । बाबू रामलाल नेमाणी, तुलापट्टी, बड़ा-बाजार-कलकत्ता, खत बन्दी । कुमार सरजूप्रसाद नारायणसिंह जू देव, हमारी स्त्रियां श्रीर उनकी शीक्षा २ प्रति । श्रीमती दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा बम्बई, सप्तम वार्षिक विज्ञप्ति ।

खरीदीगई-क्या द्रोपदी के पांच पति थे, श्री हनुमानजी का जीवन चरित भाग १ श्रीर २, रागमाला, सुरसुन्दरी, कृष्णावली, सुलोचना, सतीनाटक, स्वामी रामदास जी की वाणी, संगीत बालप्रकाश अर्थात् हारमोनियम प्रकाश, भाग १, २, ३, ४, भजनामृत लहरी, संगीत बालबोध बालोदय संगीत, सितार की प्रथम पुस्तक, अंकित अलं[illegible]र तान प्रकाश भाग १, मृदंग श्रीर तबलावादन पद्धति भाग १, [illegible]ीत तत्व प्रदर्शक भाग १, संगीत भाग १, २ श्रीर ३, संगीत के [illegible] व्यायाम, भर्तृहरि शतक, अष्टाध्यायी, पतिव्रता माहात्म्य, [illegible]ी आलाराम का व्याख्यान, भजन बत्तीसी, भजन संग्रह, भजन

पचासा, मदमर्दन प्रकास मंजरी, भजन गो रक्षा, प्रकाश मंजरी, दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य की समीक्षा, दयानन्द मत सूची, दयानन्द के मूल सिद्धान्त, दयानन्द चरित्र, दयानन्द लीला, दयानन्द की बुद्धि, धर्म सन्ताप, दयानन्दमत दर्पण, दयानन्द हृदय, मुक्ति प्रकाश, सत्यार्थ प्रकाश समीक्षा, दयानन्द का कच्चा चिट्ठा, पञ्च महायज्ञ विधि, विधवा विवाह निराकरण, दयानन्द मत खण्डन, भजनावली, आपस्तम्बीय गृह्य सूत्रम, मानवगृह्य सुत्रम, इष्टि संग्रह, स्मार्त कर्म्म पद्धति, धातु पाठ, वार्तिक सूत्र पाठ, दर्श पौर्णमास पद्धति, आरोग्य पद्धति, दयानन्द परास्त नाटक, गणरत्न महोदधि, अष्टादश स्मृतयः, ब्राम्हण सर्वस्व पत्रिका, निराकार ध्यान खण्डन, वेदान्त सिद्धान्त मण्डन, जगदुत्पत्ति, मण्डन, सामवेद भाष्य, पूवार्द्ध और उत्तरार्द्ध, मनुस्मृति भाषानुवाद, दिवाकर प्रकाश, तुलसीराम स्वामी के ४ व्याख्यान, पिंड पितृ यज्ञ, काशिका संस्कृत, शास्त्रार्थ हैदराबाद, श्वेताश्वेतरोपनिषद, ईश केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, और मांड्यूक उपनिषद, अष्टाध्यायी, हितोपदेश, श्री मद्भागवत समीक्षा. नियोग निर्णय, वनिता बुद्धि प्रकाश, बिबाहवयो विचार, पौराणिक धर्म और थियोसोफी, एकादशी माहात्म्य, विदुरनीति सजिल्द, पंचकन्या चरित्र, पतिव्रता धर्म प्रकाश, सीता चरित्र भाग २,३ और ४, भारत की प्रसिद्ध तथा विदुषी स्त्रियों के संक्षिप्त वृत्तान्त भाग १–५, पुत्री हितोपदेश अबला सन्ताप, समीक्षाकार, महर्षि दयानन्द चरितामृत, आलहछन्द की मनुस्मृति, शास्त्रार्थ कलकत्ता, भजन पचासा, भजनेन्दु धर्म्म रत्नाकर, वेद मंत्रार्थ प्रकाश, अन्त्येष्टि कर्म आवश्यक, वैदिक धर्म प्रचार, आर्य्यमत, मार्तण्ड नाटक, आर्य्य समाज क्या है, प्रबन्ध मंजरी, मृत्यु परीक्षा, ऐतिहासिक निरीक्षण दूसरा भाग सन्तान सुधाकर, कवायद पटवारियान, वेदप्रकाश भाग २,८,१० और हनुमान्नाटक । Indian Antiquary for May 1908

(८) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

प्रबन्धकारिणीसभा ।

सोमवार ता० ७ सितम्बर १९०८ सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

बाबू गोविन्द दास–सभापति, रेवरेण्ड ई० ग्रीव्ज, बाबू श्यामसुन्दरदास बी०ए०, बाबू जुगुल किशोर, बाबू गौरीशंकर प्रसाद बी० ए०, एल० एल० बी०, बाबू वेणीप्रसाद, पंडित माधव प्रसाद पाठक, पंडित सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा, बाबू माधव प्रसाद, पंडित रामनारायण मिश्र बी० ए०, बाबू गोपालदास ।

(१) गत अधिवेशन (ता० ३ अगस्त १९०८) का कार्य्य विवरण उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) डाक्टर छन्नूलाल मिमोरियल मेडल के लिये "सौरीसुधार" के विषय में आए हुए लेख सब-कमेटी की सम्मति सहित उपस्थित किए गए, साथ ही पंडित रामनारायण मिश्र का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि पंडित मुरलीधर का लेख जिसे परीक्षक महाशयों ने सर्वोत्तम कहा है परन्तु फिर भी इन में से एक महाशय ने लिखा है कि यह सर्वोत्तम लेख भी मेडल देने योग्य नहीं है ।

बहुत विवाद के अनन्तर अधिक सम्मति से निश्चय हुआ कि पंडित मुरलीधर को मेडल दिया जाय और उनका लेख परीक्षकों की सम्मति के सहित उनके पास दोहरा कर ठीक करने के लिये भेज दिया जाय । साथ हो उन्हें यह भी लिखा जाय कि इसके दोहराने में वे इस बात पर ध्यान रक्खें कि इस की भाषा बहुत सरल हो । सभा इस ग्रन्थ को डाक्टरों के लिये नहीं करन् सर्व [साधारण] के लाभार्थ बनवाया चाहती है । लेख ठीक हो आने पर [पुनः] प्रबन्धकारिणीसभा में विचारार्थ उपस्थित किया जाय ।

(३) बेंगाल नेशनल कौंसिल आफ़ एजुकेशन की ६ अगस्त का [सूचना] [उ]पस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सभा द्वारा प्रकाशित

पुस्तकों की एक एक प्रति अपने पुस्तकालय के लिये बिना मूल्य मांगी थी।

निश्चय हुआ कि अब तक जो ग्रन्थ सभा द्वारा प्रकाशित हुए हैं उनकी एक एक प्रति उनको बिना मूल्य दी जाय।

(४) नागरी प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित होने के लिये निम्न लिखित लेख उपस्थित किए गए—

१-कुंअर कन्हैया जू रचित दोहे-निश्चय हुआ कि ये पत्रिका में प्रकाशित नहीं किए जा सकते।

२ बाबू हरिदास माणिक रचित हल्दी घाटी की लड़ाई-निश्चय हुआ कि यह पत्रिका में छापी जाय।

(५) संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग से आए हुए नागरी हस्त लिपि परीक्षा के पर्चे उपस्थित किए गए।

निश्चय हुआ कि इन की परीक्षा के लिये निम्न लिखित महाशयों की सब-कमेटी बना दी जाय और उसकी सम्मति के अनुसार बालकों को पारितोषिक और प्रशंसा पत्र दे दिए जांय।

बाबू श्यामसुन्दर दास बी०ए०, बाबू अमीरसिंह खत्री, पंडित रामनारायण मिश्र बी० ए०, बनारस के असिस्टेन्ट इन्सपेक्टर आफ़ स्कूल्स, सभा के मंत्री।

(६) मंत्री ने सूचना दी कि जिस कमरे में इस समय दफ़्तरी खाना है उसकी आवश्यकता कोश कमेटी के कार्य्य लिये है अतः यह आवश्यक है कि दफ़्तरी खाने के लिये एक जुदा मकान बनवाया जाय।

निश्चय हुआ कि धनाभाव से इस समय सभा दूसरा दफ़्तरी खाना बनवाने में असमर्थ है अतः कोश के कार्य्य के लिये सभा के मंत्री कोश कमेटी की सम्मति लेकर जो प्रबन्ध उचित समझें करें।

(७) श्रीमान राजा साहब भिनगा का २५ अगस्त का पत्र उपस्थित किया जिसमें उन्होंने लिखा था कि यदि सभा हिन्दी भाषा में The elements of metaphysics by Dr. Paul Deusseu का अ

(२) The Light of Asia by Dr Edwin Arnold का ब्रजभाषा में पद्यानुवाद और (३) पूर्वीय देशों के दर्शन शास्त्रों का एक इतिहास प्रकाशित करे तो वे इसके लिये १८००) रु० से सभा की सहायता करेंगे।

निश्चय हुआ कि (१) श्रीमान् राजा साहब से निवेदन किया जाय कि इन तीनों पुस्तकों के तय्यार कराने और प्रकाशित करने में १८००) रु० के व्यय का अनुमान किया जाता है अतः वे कृपाकर उनके लिये १५००) रु० से सभा की सहायता करें। शेष व्यय सभा अपने पास से कर लेगी (२) पहिली दोनों पुस्तकों के प्रकाशकों से हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने की आज्ञा सभा को श्रीमान् राजा साहिब दिलवा दें (३) मंत्री उपयुक्त पुरुषों से पत्र व्यवहार कर के इन तीनों पुस्तकों के लिये लेखक ठीक करें और अपनी सम्मति सभा में विचारार्थ उपस्थित करें।

(८) सन् १९०७-०८ के हिसाब जांचने वालों की रिपोर्ट उपस्थित की गई।

निश्चय हुआ कि यह मंत्री के नोट के सहित आगामी अधिवेशन में उपस्थित की जाय।

(९) निश्चय हुआ कि भविष्यत में सुबोध व्याख्यानों के विषय आदि को निर्णय करने का भार सभा के मंत्री और सुबोध व्याख्यान के निरीक्षक पर छोड़ दिया जाय। यदि इन दोनों महाशयों में किसी विषय में मतभेद हो तो उसका निर्णय सभा के सभापति करें, प्रबन्धकारिणी सभा में इस विषय को उपस्थित करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

(१०) बाबू माधवप्रसाद ने प्रस्ताव किया कि सभा भवन पर बिजली का कंडक्टर लगवाया जाय।

निश्चय हुआ कि यह विषय आगामी अधिवेशन विचारार्थ उपस्थित किया जाय और इस बीच में मंत्री किसी उपयुक्त पुरुष

से सम्मति लें कि क्या तार घर के सामने सभाभवन के रहते हुए भी कंडक्टर के लगवाने की आवश्यकता है ।

(११) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २६ सितम्बर १९०८ सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

(१) गत अधिवेशन (ता० २८ अगस्त) का कार्य्य विवरण पढ़ागया और स्वीकृत हुआ ।

(२) प्रबन्धकारिणी सभा का तारीख ३ अगस्त का कार्य्य विवरण सूचनार्थ उपस्थित किया गया ।

(३) निम्न लिखित महाशय सभासद चुने गए—

१ स्वामी सतगुरु प्रसाद शरण-C/o बाबू श्यामलाल गुप्त हेडक्लार्क रेजिडेण्ट इंजीनियर का दफ़्तर-गोंडा १॥) २ बाबू चन्द्रिकाप्रसाद सिंह तहसीलदार-बनारस ३) ३ बाबू जयशंकर प्रसाद सरांय गोबर्द्धन-काशी ३) ४ भाष्यं० रामाचार्य-४८ अस्पताल रोड़-बंगलौर ३) ५ आसूरि अनन्ताचार्य-पंडित शासन इलाका मल्हेश्वर बंगलौर ३) ६ बाबू गोपीचन्द भार्गव-C/o मुंशी बद्रीप्रसाद-रोहतक ३) ७ पण्डित विश्वनाथ मिश्र लालघाट काशी १॥) ८ बाबू श्यामनारायण लाल सेकेण्ड मास्टर टाउन स्कूल शिवपुर बनारस १॥) ९ पण्डित रामनारायण शर्म्मा एल० एम० एस० असिस्टेण्ट सर्जन आन प्लेग ड्यूटी करनाल ३) १० बाबू कन्हैयालाल-ब्रह्मपुरी फूलबाई, चौखम्भा काशी १॥) ११ पं० मन्नूलाल औदीच्य-कालभैरव काशी १॥) १२ पं० भगवतीप्रसाद शुक्ल क्लर्क चीफ आडिटर का दफ़्तर बी० एन डबल्यू ० रेलवे, गोरखपुर १॥) १३ बा० लक्ष्मीदास बी० ए० सुखला साहु का फाटक काशी १॥) १४ लाला बैजू मंडल-सरिश्तेदार मुंसि बरारी भागलपुर ।

(४) सभासद होने के लिये निम्न लिखित नवीन महाशयों के आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

१ करंजी श्री छन्नूलालजी-श्री गोकुल-मथुरा। २ बाबू सूर्यबली सिंह-हेड टीचर-तहसीली स्कूल हल्लौर पो० डुमरियागंज-जिला बस्ती। ३ पण्डित जगन्नाथ प्रसाद-प्रधान अध्यापक तहसीली स्कूल कुल पहाड़-हमीरपुर। ४ पण्डित बाबू राम शर्म्मा-ब्राह्मणपुर-बुलन्दशहर। ५ पण्डित ललिताप्रसाद अग्निहोत्री-मेनेजर कोआपरेटिव बंक काशी। ६ रेही घनश्यामलाल-श्री पार्वती बहू जी का मन्दिर गोकुल मथुरा। ७ बाबू वज्रबहादुर पंडिया अहलमद मुंसफी शाहाबाद जि० हरदोई। ८ पं० काशीनाथ शर्म्मा हेडकापिस्ट मुंसफी शाहाबाद जि० हरदोई। ९ पं० शिवराम द्विवेदी वकील शाहाबाद जि० हरदोई। १० बाबू छोटेलाल हेडक्लार्क दफ़्तर आबपाशी-रायपुर। ११ पं० स्वामिराम शास्त्री-असीसंगम-काशी। १२ बाबू पन्नालालसिंह, नियालिया एस्टेट-पो० जैगंज मुर्शिदाबाद।

(५) निम्न लिखित सभासदों के इस्तीफे उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए—

१ पं० देवीप्रसाद मिश्र-खरिक कालीनःथ-विहपुर-भागलपुर। २ लाला रामनारायणदास तहसीलदार-अजितगढ़।

(६) मंत्री ने सभा के सभासद बाबू राजाराम गुप्त शिवपुर काशी की मृत्यु की सूचना दी जिसपर सभा ने शोक प्रगट किया।

निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्व्वक स्वीकृत हुईं—

पण्डित तनसुखराम त्रिपाठी:चाइनाबाग-गिरगांव-बम्बई-प्रवीणसागर। बाबू मुरलीधर-विजयराघवगढ़-टीका प्रचारक। भारतबन्धु पुस्तकालय मनियार बलिया-शम्भु पचीसी। क्षत्रिय महासभा-आगरा क्षत्रिय महासभा के एकादश अधिवेशन का कार्य्य विवरण। पण्डित नारायण राव खिस्ते-काशी-क्रियाकोश। भारतमित्र आफ़िस-कलकत्ता ठूटे और खत, मार्कण्येय पुराण, स्वदेशी आन्दोलन, हिन्दी भाषा, ...स का जीवन चरित। बाबू हेमचन्द्र मित्र-वृहत आयुर्वेदीय

भाण्डार ६७।४ स्ट्राण्ड रोड कलकत्ता-शरीररक्षा । पण्डित मीठालाल व्यास-ब्यावर-सिद्धान्तसार । बाबू ब्रजचन्द काशी-अशौच निर्णय त्रिशं श्लोकी भाष्य सहित । बाबू अमीरसिंह खत्री-काशी-चमनिस्तान हमेशा बाहर भाग १, २ और ३, अनुराग लतिका भाग १ । बाबू विश्वेश्वर प्रसाद वर्म्मा काशी-रंडी का मुजरा । प्रोप्रायटर, अग्रवाल प्रेस गया-भारतपराजय नाटक । बाबू रामलाल नेमाणी-५८ तुलापट्टी-कलकत्ता-स्कूल में मारवाड़ी । बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा-काशी-आदर्श हिन्दूरमणी २ प्रति । बाबू हरबकस उदयपुर-हिण्टस ओन डिराइविङ्ग। बाबू श्याम सुन्दर दास बी० ए० काशी-The Gover nment of India बाबू कन्हैया लाल बी० ए० रायपुर—

1 Mohommedan Law of inheritance by Almarec Ramsey 2 Students' Hand book of Mohommedan law by Amir Ali 3 Jurisprudence by Holland. 4 Ancient Law by Maine. 5 A guide to the study of Hindu Law by K. S. Sambasiva Iyer Esq. 6 General Supplement to the students' Law companion by Mr. Cranenburgh. 7 Courts and Legislative authorities in India by Cowell. 8 A Manual of Equity by P. C. Sen. 9 A Summary of the Law of torts by Underhill. 10 Commentaries on Hindu Law by Jogendra Nath Bhattacharya. 11 Students' guide to Law Examinations by B. K. Mitra.

एशियाटिक सुसाइटी बंगाल कलकत्ता—Journal and Proceedings Vol. IV Nos 4 and 5 for April and May 1908. Journal and Proceedings New Series Vol. III. 1907. Index to the Society's Journal and Proceedings Vol. III. 1907. Memoirs of the Asiatic Society of Bengal Vol. II. No. 7 pp. 155–168. मिस्टर के० ए० दवे-जबलपुर-उत्तर राम चरित्र, शकुन्तलानाटक। Indian Antiquary for December 1907 खरीदीगई—संगीतामृत प्रवाह भाग ४ सं १८ । श्रेष्ठ आदर, पास्टर स्री, सुमतिप्रकाशिका-ज्यो[illegible] खण्ड ।

(८) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

प्रबन्धकारिणीसभा ।

सोमवार ता० १२ अक्तूबर १९०८ सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

रेवरेण्ड ई० ग्रीव्ज़ सभापति, बाबू जुगुल किशोर, बाबू बेणी प्रसाद, पण्डित सुरेन्द्रनारायण शर्म्मा, पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०, बाबू गोपालदास ।

(१) गत अधिवेशन (ता० ७ सितम्बर १९०८) का कार्य्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(२) सन् १९०७-८ के हिसाब के विषय में आडिटरों की रिपोर्ट मंत्री के नोट सहित उपस्थित की गई ।

निश्चय हुआ कि बाबू गौरीशंकर प्रसाद ने जिन विषयों पर ध्यान दिलाया है उन पर भविष्यत में ध्यान रक्खा जाय और बाबू लक्ष्मीदास की रिपोर्ट बाबू भगवानदास गुप्त के पास सम्मति के लिये भेजी जाय ।

(३) संयुक्त प्रदेश की हिन्दी हस्तलिपि परीक्षा का निम्न लिखित परिणाम सूचनार्थ उपस्थित किया गया—

मिडिलविभाग ।

तुलसीराम विद्यार्थी कक्षा ६-जिला बदाऊं ५) । २ मुकुटलाल कक्षा ६-जहांगीराबाद पाठशाला तहसील अनूपशहर जिला बुलन्दशहर ४) । ३ बद्रीशरणसिंह कक्षा ५ सहतवार पाठशाला जिला बलिया ३) । ४ सहदेव पाठक कक्षा ५ जफराबाद पाठशाला जि० जौनपुर । ५ ब्रह्मदेवसिंह-कक्षा ५-कमालपुर पाठशाला जि० गाजीपुर । ६ रामदत्त-कक्षा-६-टौनस्कूल-लखना जि० इटावा । ७ बलदेवप्रसाद [illegible]द्यार्थी-कक्षा-६,पाठशाला हसनपुर, जि० सुलतांपुर । ८ महेशप्रसाद [illegible]द्यार्थी-कक्षा ६, म्यूनिसपल मिडिलस्कूल, रायबरेली । ९ माधवानन्द [illegible]क्षा ६,पाठशाला तहसीलो त० देहरा जि० देहरा ।

अपरप्राइमरी विभाग ।

१ रामअवतार कक्षा ४ स्कूल तरौंहां जि० बांदा ५) । २ राम अवतार नं० २ कक्षा ४ स्कूल तरौंहां जि० बांदा ३) । ३ मैत्रानन्द कक्षा ४ डिम्मर कपीरीवधान पौड़ी गढ़वाल २) । ४ कपिलदेवसिंह-कक्षा ४ सहंतवार पाठशाला जि० बलिया । ५ बड़ेलाल कक्षा ४ स्कूल जलाला बाद तहसील कन्नौज जि० फर्रुखाबाद । ६ लाल बहादुर-कक्षा ४, पालीखुर्द पाठशाला पर्गना भरथना जि० इटावा । ७ बलदेवराय कक्षा, ४- लठ्ठूडीह पाठशाला त० मुहम्मदाबाद जि० गाजीपुर । ८ अमीरसिंह कक्षा ४, कल्लुवा पाठशाला जि० खीरी ।

लोअर प्राइमरी विभाग ।

१ कालीप्रसाद कक्षा १, पाठशाला रूरूगंज जि० इटावा ४) । २ मोतीलाल,कक्षा २ पाठशाला रूरूगंज जि० इटावा २) । ३ रामकृष्ण कक्षा १ तरौहा पाठशाला तहसील करबी जि० बांदा २) । ४ शंकर सिंह कक्षा २ पाठशाला रूरूगंज जि० इटावा । ५ भारतसिंह बिद्यार्थी कक्षा २ पाठशाला भैंसा त० मवाना जि० मेरट । ६ शंकरसिंह कक्षा २ पाठशाला रूरूगंज जि० इटावा । ७ मुकुन्दीसिंह कक्षा २ पाठशाला सर्कडा त० धामपुर जि० विजनौर ।

(४) सभा के क्लार्क बाबू महादेव प्रसाद का आवेदन पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सभा से तीन मास के लिये बिना वेतन की और छुट्टी मांगी थी ।

निश्चय हुआ जि बाबू महादेवप्रसाद से अधिक छुट्टी मांगने का कारण पूछा जाय ।

(५) पं० चन्द्रधर शर्म्मा का भेजा हुआ सर टी० माधवराव के मेजर एण्ड माइनर हिण्टस के अनुवाद का नमूना उपस्थित किजा गया ।

निश्चय हुआ कि पण्डित सूर्य्यनारायण दीक्षित से इस पुस्तक के अनुवाद का जो नमूना मँगवाया गया है उसके आजाने पर दोनों नमूने साथ ही उपस्थित किए जांय ।

(६) रसड़ा के बाबू ब्रह्मानन्द सिंह का १८ सितम्बर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि यदि सभा ८) रु० मासिक की सहायता करे तो वे अपने यहां से ८) रु० मासिक चन्दे का प्रबन्ध करके १६) रु० मासिक वेतन पर नागरी का एक योग्य अर्जीनवीस रसड़ा में नियत कर दें।

निश्चय हुआ कि बाबू गौरीशंकर प्रसाद वकील को जो इस समय रसड़ा में हैं लिखा जाय कि सभा के पास इस समय धन नहीं है अतः यदि वे सभा की सहायता के बिना वहां नागरी का मुहर्रिर नियत करने के लिये कोई प्रबन्ध कर सकें तो उत्तम हो।

(७) पण्डित श्रीराम ओझा लिखित शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में एक लेख जो सभा द्वारा प्रकाशित होने के लिये आया था उपस्थित किया गया। निश्चय हुआ कि सभा इसे प्रकाशित करने में असमर्थ है।

(८) मिसर्स वी० एम० एण्ड सन का २३ सितम्बर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सभा के पुस्तकों की एजेंसी लेने के लिये लिखा था। निश्चय हुआ कि सभा ने अपनी पुस्तकों की एजेंसी इस समय एक महाशय को दी हुई है अतः अभी वह इस के लिये कोई दूसरा एजेण्ट नियत नहीं कर सकती।

(९) संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर का २३ सितम्बर १९०८ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि हिन्दी कोश के लिये गवर्न्मेंट ६०००) रु० से सभा की सहायता इस शर्त पर कर सकती है कि सभा इस कोश की अधिक से अधिक १०० प्रतियां गवर्न्मेण्ट को अर्द्ध मूल्य पर दे।

निश्चय हुआ कि गवर्न्मेण्ट की यह सहायता धन्यवाद पूर्वक स्वीकार की जाय।

(१०) पण्डित रामनारायण मिश्र का ४ अक्तूबर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि श्रीमान् राजा साहब [illegible]आ ने जिन पुस्तकों के प्रकाशन के लिये १२००) रु० से सभा

की सहायता करना निश्चय किया है उनके विषय में उनकी इच्छा है कि सभा उन की सहायता का धन बढाने के लिये अनुरोध न करे वरन् यदि उतनी सहायता से सभा पुस्तकों की एक एक हजार प्रतियां न छपवा सके तो केवल पांच पांच सौ प्रतियां छपवा ले। पुस्तकों के हिन्दी अनुवाद करने का कापीराइट श्रीमान् राजा साहब सभा को दिलवा देंगे।

निश्चय हुआ कि श्रीमान् राजा साहब की सहायता धन्यवाद पूर्वक स्वीकार की जाय।

(११) पण्डित रामनारायण मिश्र का १० अक्तूबर का पत्र उपस्थित किया गया जिसके साथ उन्हों ने सभा के ३ अगस्त के निश्चय नं०८ के अनुसार Nursing पर एक पुस्तक हिन्दी भाषा में लिखवा कर भेजी थी।

निश्चय हुआ कि डाकृर श्रीपत सहाय और डाकृर ईशानचन्द्र राय से प्रार्थना की जाय कि वे कृपाकर इस पुस्तक के विषय में सभा को अपनी सम्मति दें।

(१२) The Elements of metaphysics by Dr Deussen के भाषा अनुवाद के विषय में लाला भगवानदीन का ३ अक्तूबर का पत्र उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि यह आगामी अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किया जाय।

(१३) पण्डित रामजीवन नागर का २६ सितम्बर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने फार्बस साहब की रासमाला तथा कई अन्य पुस्तकों के अनुवाद करने के लिये लिखा था।

निश्चय हुआ कि यह पत्र आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जाय।

(१४) संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग के डाइरेकृर का [illegible] अकतूबर का पत्र सूचनार्थ उपस्थित किया गया जिसमें उन्[illegible] लिखा था कि हिन्दी पुस्तकों की खोज के विषय में सभा [illegible]

वर्ष जो संक्षिप्त रिपोर्ट भेजती है उसके छापने की आवश्यकता नहीं है।

निश्चय हुआ कि यह पत्र फाइल किया जाय।

(१५) पण्डित रामनारायण मिश्र का ११ अक्तूबर १८०८ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने अपनी बदली शिमला में हो जाने के कारण प्रबन्धकारिणी सभा तथा पुस्तकालय के निरीक्षक के पद से इस्तीफ़ा दिया था।

निश्चय हुआ कि जिस तारीख से वे बनारस से जांय उस तारीख से उनका इस्तीफा स्वीकार किया जाय और उनके स्थान पर बाबू गौरीशंकर प्रसाद वकील पुस्तकालय के निरीक्षक नियत किए जांय।

(१६) निश्चय हुआ कि पण्डित माधव राव सप्रे जब तक जेल में है तब तक प्रबन्धकारिणी सभा की नोटिसें उन्हें न भेजी जाया करें।

(१७) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

———o———

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय व्यय का हिसाब ।

[अगस्त १९०८]

आय	धन की संख्या			व्यय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	१८१	१२	१०½	आफिस के कार्य कर्ताओं का वेतन	७०	७	९
सभासदों का चन्दा	१२०	१०	०	पुस्तकालय	१०२	८	०
पुस्तकों की बिक्री	१४४	४	३	पृथ्वीराज रासो	२०	०	०
रासो की बिक्री	७१	११	०	नागरी प्रचार	१८	५	०
पुस्तकालय	४६	८	०	फुटकर	८६	१	०
हिन्दी कोश	१	२	०	पुस्तकों की खोज	७९	८	०
				डाक व्यय	५६	१	३
नागरी प्रचार	२	४	०	हिन्दी कोश	६	५	३
स्थायी कोश	३	०	०	जोड़	४३९	४	३
जोड़	५७१	४	१½	बचत	१३१	१५	१०½
				जोड़	५७१	४	१½
देना ६००)				रोकड़ सभा में ९८।≡)=			
				बनारस बंक में ३३॥)॥			
				१३१॥।≡)॥।=			

जुगलकिशोर, मंत्री

यह पुस्तकें ।

पुस्तक कार्य्यालय व भारत प्रेस धर्मकूप बनारस से मिल सकती हैं ।

दुर्गेश नन्दिनी ! दुर्गेश नन्दिनी !!

एतिहासिक अति रोचक उपन्यास ।

यह बंगाल के मशहूर उपन्यास लेखक बाबू बङ्किमचन्द्र चट्टोपाध्याय लिखित ऐतिहासिक नावेल है [बाबू गदाधर सिंह द्वारा अनुवादित] अत्यन्त रोचक होने का ही कारण है कि तीसरी बार छपा है उम्दः अक्षर उम्दः काग़ज़ है । १ भाग ।≈) २ भाग ।≈)

——:-o-:——

महाराज छत्रसाल जी का जीवन चरित्र ।

चित्र सहित ।

विदित हो कि "बुन्देलखण्ड केशरी नामक पुस्तक छप गई है जिसमें बुन्देलखण्ड के महाराज छत्रसालजी के जीवन वृत्तान्त का लेख है, पद्य में लाल कवि कृत छत्र प्रकाश में भी महाराज की वीरता वर्णन है, किन्तु बुन्देलखण्ड केशरी में महाराज के जन्म से लेकर अन्त पर्यन्त उनकी समस्त वीरता धीरता, पुरुषार्थ, नीति [चा]तुर्य्य और देशहितैषिता का क्रम से गद्य में वर्णन है साथ ही इसके [बुन्दे]लखण्ड का संक्षिप्त इतिहास और प्राणनाथ जी का जीवन चरित्र संक्षेप में है और तसवीर भी छत्रशाल जी की इसके साथ है ।

मूल्य २ भाग का ॥।)

प्राचीन भारत वर्ष के सभ्यता का इतिहास।

(मि० रमेशचन्द्र दत्त के लिखे हुए पुस्तक का अनुवाद)

यह पुस्तक काशी "इतिहास प्रकाशक समिति" की ओर से छपी है। हिन्दी भाषा में अपने ढंग का नया इतिहास है और भाषा में इतिहास के अभाव को दूर कर रहा है। इस पुस्तक के अधिक बिकने से नये २ इतिहास "समिति" की ओर से निकल सकेंगे अवश्य मंगाइये। मूल्य भाग पहिला १) भाग दूसरा १) भाग तीसरा १)

—:0:0:—

मेज़िनी का जीवन चरित्र।

आप इस जीवनी के लाभ को पढ़ने के बाद ही जान सकेंगे पंजाब के मशहूर लीडर ला० लाजपतराय की लिखी पुस्तक का अनुवाद है (बाबू केशव प्रसाद सिंह द्वारा अनुवादित)। दाम।)

—:0:–:–:0:—

महर्षि शंकर स्वामी का जीवन चरित्र।

यह पुस्तक पढ़ने योग्य है इसमें शंकर स्वामी के जीवनी पर बड़ी विद्वता के साथ बहस की है किताब बड़ी शिक्षादायक है ग्रन्थ करता का नाम पं० राजाराम प्रौफ़ेसर है। मूल्य ॥)

—;0‡0:—

उपनिषद भाषा अनुवाद।

भारत वर्ष की प्राचीन फ़िलोसोफ़ी का अनुवाद।

पं० राजाराम प्रोफ़ेसर द्वारा अनुवादित।

तलबकारोपनिषद	≈)॥	वायसनेयसंहितोपनिषद
प्रश्न-उपनिषद	।)	कठ-उपनिषद
माण्डूक्य-उपनिषद	।-)	वृहदारण्यक-उपनिषद

पारसियों का इतिहास।

(पारसी जाति के इतिहास का वर्णन है) पं० रामनारायण मिश्र बी० ए० द्वारा लिखित।

मूल्य ≈)

—:o:—

बनिता विनोद।

स्त्री शिक्षा के प्रेमियों को शुभ सम्वाद।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने स्त्रियों के पढ़ने की उत्तम पुस्तकों का अभाव देख कर राजा साहब भिंगा के प्रस्ताव और सहायता से एक अति शिक्षादायक "वनिता विनोद" नाम की पुस्तक छपवाई है। १६ उपयोगी विषय हिन्दी के १२ चुने हुए लेखकों की लिखी हुई है।

मूल्य १)

—:o:o:—

लखनऊ की नवाबी चित्रों सहित।

यह ऐतिहासिक मनोहर पुस्तक सरल हिन्दी में उत्तम कागज़ पर छप गई है। इस पुस्तक में लखनऊ के बादशाह नसीरुद्दीन हैदर के समय का सच्चा वृत्तान्त है, जिसे एक अंग्रेज़ ने, जो बहुत दिनों तक उनके नौकर रह चुके थे, बड़े मनोहर रीति से लिखा है। इस में उनकी वे लहरबहर, जिनके लिए कि 'लखनऊ की नवाबी' विख्यात है, लिखी गई हैं। हाथियों, गेंड़ों, शेरों की लड़ाईयां, शिकार के दृश्य ऐसी उत्तम रीति से दिखाए गए हैं कि वाह वाह। बादशाही महलों और ताजियेदारी इत्यादि के वर्णन इस उत्तमता के साथ लिखे गए हैं, मानो हुबहु वे दृश्य आंखों के सामने हो रहे हैं। पहिला भाग मूल्य ॥) दूसरा भाग ॥)

——o——

फूल में कांटा।

इस उपन्यास में बड़ी खूबी से साहूकारों के लड़कों के लाड व में विगडने की अवस्था का ज़िक्र है यह पुस्तक एक अंग्रेज़ी ...क "पापर मिलिओनर" के आधार पर लिखी गई है। मूल्य ॥≈)

अष्टाध्यायी

पाणिनि सूत्र वृत्तिः

पं० जीवा राम शर्म्मा विरचित

(संस्कृत और भाषा व्याख्या सहित) मूल्य ३)

———o———

सरल व्यायाम ।

इस पुस्तक में लड़कियों के कसरत करने की रीति भली भांति बताई गई है इस में लग भग ५० तस्वीरें कसरत की हैं। मूल्य ।≈)

———o———

चीन दर्पण ।

यह "यात्रा" जिस समय बाक्सरों की लड़ाई हुई थी और हिन्दुस्तान के सिपाही भेजे गये थे उस समय डा० महेन्द्रलाल गर्ग ने अपने तजरुबे से लिखी है। दाम १।)

—;o:o:—

मेगास्थनीज़ ।

भारत वर्ष के लग भग २३०० वर्ष के पुराने वृत्तान्त के जानने का शौक है तो इस यात्री के लिखे वृत्तान्त को पढ़िये [काशी इतिहास प्रकाशक समिति ने छापा है] मूल्य ॥)

———o———

सोनारी ।

यह पुस्तक हिन्दी में सोनारों के फ़ायदे के लिए लिखी गई इस में कई बातें नई बताई गई हैं। सोनारों को बहुत फ़ायदा सकता है, जैसे सोना रंगना वग़ैरा, दाम ।)

देशी करघा ।

यह ग्रंथ तयार हो गया है, आजकल जो लोग हैंड लूम के कारख़ाने खोलना चाहते हैं और इस विद्या के न जानने के सबब से हिम्मत नहीं करसकते या ज्यादा फ़ायदा नहीं उठा सकते उनको बहुत बड़ी मदद और जानकारी इस किताब से हो जायगी। इस के बारे में मिस्टर ए० सी० चटरजी आई० सी० एस० लिखते हैं:— "I have been very pleased to read your book on Handloom weaving..................as the first book on the subject in the Vernaculer, I hope it will have a good sale and your laudable efforts will meet with a due recognition" अर्थात् आपकी लिखी देशी करघा नामक किताब को पढ़ कर मैं बहुत खुश हुआ, चूंकि देशी ज़बान में यह पहिली ही किताब लिखी गई हैं, मुझे उमेद है कि इसकी खूब बिक्री होगी और आपको तारीफ़ काबिल मेहनत और काम की लोग खूब कदर करेंगे"। यह किताब पढ़ने लायक है और इसमें बहुत सी तस्वीरें भी दी गई हैं, दाम ॥)

———o———

सुघड़ दर्ज़िन।

नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।

स्त्री शिक्षा के लिए बहुत ही अपूर्व और उपयोगी ग्रंथ है। इस में सीने परोने, कसीदे काढ़ने, कपड़ों की मरम्मत करने, कपड़ों के काटने छांटने, मोज़े इत्यादि बुनने की तरकीबें बहुत ही उत्तम रीति से बताई गई हैं और साथ ही उत्तम उत्तम चित्र दे कर उन्हें स्पष्ट कर दिया है मानो सोना और सुगन्धि हो गया है। यह किताब ऐसी है कि हर गृहस्थ के यहां अवश्य रहनी चाहिए। स्त्री शिक्षा के लिए ऐसा अनूठा ग्रंथ अब तक नहीं सूझा था।

दाम ॥।)

बाबू राधाकृष्णदास विरचित
प्रतापनाटक
का दूसरा संस्करण छप कर तय्यार है ।

मूल्य ।॥)

---o---

हैदरअली ।

टीपूसुलतान का बाप हैदरअली मैसूर का मशहूर नवाब होगया है । इसकी जीवनी बड़ी ही दिल चस्प है । यह वह शख़्स है जो एक अदना तिलंगे से नवाब होगया और दक्खिन में इसका इतना दबदबा होगया था कि बड़ी बड़ी रियास्तें इसके नाम से कांपती थी । अंगरेंजों को इससे बढ़ कर किसी दूसरी रियासत से हिन्दुस्तान में मुकाबला नहीं करना पड़ा—एक मरतबा तो इसने अंगरेजों को हिला तक दिया था-यह सब वृत्तान्त इसमें पढ़नेही योग्य है अवश्य मंगा कर पढ़िये ॥)

---o---

बरनियर की यात्रा ।

शाह जहां, दारा, शुजा, औरङ्गजेब, मुराद, जहानआरा और रौशन आरा बेगम तथा प्रधानतः अनेक युक्तियों से औरङ्गजेब की गद्दी का अधिकार प्राप्त करने का हाल हैं १, भाग ॥) २, भाग ॥) ३, भाग ॥) ।

भीष्मपितामा का जीवन चरित्र ।

जिसको पंडित आर्य्य मुनि प्रोफेसर संसकृत फिलासफी डी० ए० वी० कालिज लाहोर ने लिखा है पुस्तक बड़ी सिक्षा दायक है मूल्य ।)

इतिहास, इतिहास

जापान ! जापान !! जापान !!!

आपको जापान के इतिहास पढ़ने का शौक हो तो पं० रामनारायण बी० ए० का लिखा हुआ जापान का इतिहास जो नागरीप्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित है मंगाइये कीमत कुल ।≈)

स्वास्थ्यरक्षा।

"हिंदुस्तानी स्वास्थ्यरक्षा" यह पुस्तक स्वास्थ के प्रेमियों को अवश्य मंगाना चाहिये काशी के मशहूर डाकृर छन्नूलाल जी ने स्वयम लिखा है मूल्य।

एडवर्ड तिलक यात्रा।

महाराज धिराज एडवर्ड सप्तम के लंडन राजतिलक महात्सव का आंखों देखा वर्णन है जिसको ठाकुर गदाधरसिंह जी ने लिखा है किताब बड़ी रोचक है मूल्य ॥≈)

स्वदेशी आन्दोलन और वायकाट।

इस लखे को पं० माधवरावसप्रे बी० ए० ने सुप्रसिद्ध देशभक्त श्री युत वाल गंगाधर तिलक बी०ए०एल०एल बी द्वारा लिखित का अनुवाद किया है मूल्य ≈)॥

सुन्दर सरोजनी।

प्राकृतिक, मनोहरता, प्रेम मैत्री और लङ्काभ्रमण का अत्यन्त [illegible]चक संयोगांत उपन्यास है पं० देवीप्रसाद द्वारा विरचित मू[illegible] ।≈)

जीवनचरित्र ।

कविराज लच्छीराम का जीवन चरित्र =)

छत्रपति महाराज शिवाजी का जीवन चरित्र बाबूकार्तिक प्रसाद ।)

जेरी बाल्डी...पं० सिद्धेश्वर शर्म्मा -)॥

विशुद्ध चरित्रावली...पं माधवप्रसाद ॥=)

महाराज विक्रमादित्य का जीवनचरित्र...बा कार्तिकप्रसाद =)

मुहम्मद का जीवनचरित्र...पं जगन्नाथप्रसाद ॥)

मीराबाई का जीवन चरित्र...बा कार्तिकप्रसाद =)

बाबू हरिश्चन्द्र का जीवन चरित्र...बा राधाकृष्णदास ॥=)

अशोक का जीवन चरित्र...ठाकुर सूर्य्य कुमार वर्म्मा ।)

छत्र प्रकाश महाराज छत्रशाल की तथा छन्द बद्ध १।)

बाबू कार्तिकप्रसाद बाबू बालमुकन्द वर्म्मा =)

रामकृष्ण परमहंस का जीवनचरित्र =)

पुस्तक मिलने का पताः—

मनेजर

पुस्तक कार्य्यालय भारत प्रेस

धर्म्म कूप

बनारस

सभा के पारितोषिकों की सूची।

१ इस वर्ष के सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं। ये लेख ३१ दिसम्बर १९०८ तक सभा में आजाने चाहिएं।

वैज्ञानिक विषय।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव।

साधारण (विद्या) विषय।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था।

२ डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल—यह सोने का मेडल उस व्यक्ति को दिया जायगा जिसका लेख "छूत वाले रोग और उनसे बचने के उपाय" पर सबसे उत्तम होगा। लेख सरल हिन्दी में होना चाहिए और सभा के पास ता० ३१ दिसम्बर १९०८ तक आजाना चाहिए।

३ संयुक्त प्रदेश के न्यायालयों में जो अर्ज़ीनवीस सब से अधिक अर्जियां लिखकर सन् १९०८ में दाखिल करेगा उसे २५) रु० का एक पुरस्कार दिया जायगा और जो उससे कम अर्जियां देगा उसे १५) रु० पुरस्कार दिया जायगा। ये पुरस्कार एकही ज़िले के दो अर्ज़ीनवीसों को न मिलेंगे। न वे इसे पा सकेंगे जो सभा की ओर से इस कार्य के लिये वेतन पर नियत हैं। जो लोग इस पुरस्कार को पाया चाहें उन्हें उचित है कि दो प्रतिष्ठित वकीलों के हस्ताक्षर सहित ७ जनवरी १९०९ तक सभा को सूचना दें कि उन्होंने कितनी अर्जियां सन् १९०८ में दाखिल की हैं।

५००) का पुरस्कार-सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका के आधार पर जो हिन्दी का सब से उत्तम व्याकरण लिखेगा उसे यह पुरस्कार दिया जायगा। व्याकरण ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा के पास आजाना चाहिए। यदि कई व्याकरणों के भिन्न भिन्न अंश उत्तम समझे जांयगे तो यह पुरस्कार उन सब लोगों में बाँट दिया जायगा और उन ग्रन्थों को घटाने बढ़ाने आदि का इस सभा को पूरा अधिकार होगा। सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका दो पैसे का टिकट डाक व्यय के लिये भेजने पर सभा के मंत्री से मिल सकती है।

भाग १३] Registered No. A 414 [संख्या ५

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

सम्पादक—श्यामसुन्दर दास बी० ए०
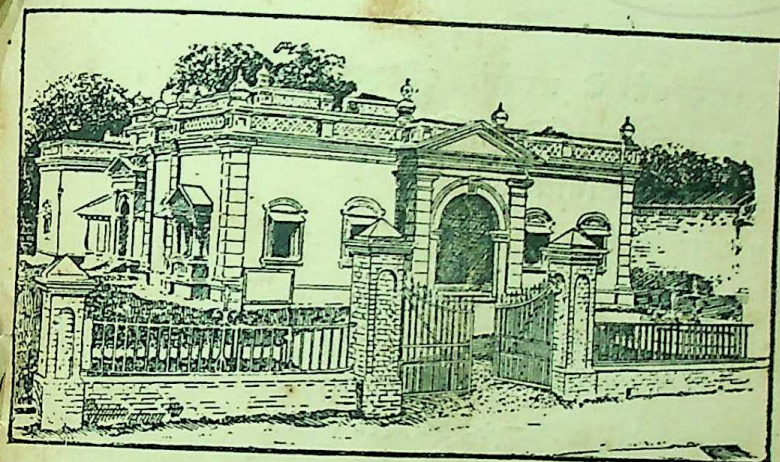
प्रति मास की १५ ता० को

काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।

नवम्बर १९०८।

Printed by Madho Prasad at the Bharat Press, Benares,
for B. Jugul Kishore, Publisher.

संख्या का मूल्य ≈) वार्षिक मूल्य १)

विषय ।

(५) विक्रमाङ्कदेवचरित—इस काव्य में तैलप से लगाकर विक्रमादित्य (छठें) तक का कल्याण (निज़ामराज्य में) के सोलंकियों का वृत्तान्त विस्तार के साथ मिलता है। ई० स० की ग्यारहवीं शताब्दी के अंत के आस पास प्रसिद्ध कश्मीरी पंडित बिल्हण ने इसे रचा था। यह बंबई की संस्कृत सीरीज़ में छपा है।

(६) रामचरित—इस काव्य में बंगाल के पालवंशी राजा रामपाल का वृत्तान्त है। ई० स० की बारहवीं शताब्दी के प्रारंभ के आस पास उक्त रामपाल के सांधिविग्रहिक प्रजापतिनंदी के पुत्र संध्याकरनंदी ने इसको बनाया था। यह काव्य द्व्यर्थी है, जिससे उसका आशय रामपाल एवं रघुकुलतिलक रामचंद्र इन दोनों के संबंध में घट सकता है। अब तक यह छपा नहीं है

(७) द्व्याश्रयकाव्य—प्रसिद्ध जैन आचार्य हेमचन्द्र (हेमाचार्य) ने ई० स० ११६० के आस पास यह काव्य रचा था जिसमें उक्त आचार्य के रचे हुए सिद्धहैम नामक संस्कृत व्याकरण के सूत्रों के क्रमशः उदाहरण और गुजरात के सोलंकी राजा मूलराज से लगाकर सिद्धराज (जयसिंह) तक का इतिहास ये दोनों आशय होने से ही इसका नाम द्व्याश्रय रक्खा गया है। यह भट्टीकाव्य की शैली की पुस्तक है और अब तक छपी नहीं है।

(८) कुमारपालचरित—यह प्राकृत भाषा का काव्य है, [illegible]सकी रचना उपर्युक्त हेमचन्द्र ने ई० स० ११६० के करीब [illegible]की। इसमें उसके रचे हुए प्राकृत व्याकरण के सूत्रों के

उदाहरण और गुजरात के सोलंकी राजा कुमारपाल का इतिहास है। यह बंबई की संस्कृत सीरीज़ में छप चुका है।

(९) पृथ्वीराज विजय–अजमेर और दिल्ली के प्रसिद्ध चौहान राजा पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन गोरी पर विजय प्राप्त की जिसके स्मरणार्थ यह काव्य उसके राजपंडीत[1] ने ई० स० ११९० में रचा था। चौहानों के प्राचीन इतिहास के लिये यह काव्य बहुत उपयोगी है । क्योंकि इसमे चाहमान से लगाकर पृथ्वीराज तक की शुद्ध बंशावली (जो चौहानों के भिन्न भिन्न शिलालेखों से मिलने वाली वंशावली के अनुसार ही है) तथा कुछ कुछ ऐतिहासिक वृत्तान्त भी है । राजतरंगिणी के द्वीतीय खंड के कर्त्ता जोनराज की इस पर टीका भी है. यह पुस्तक अभी छपी नहीं है ।

(१०) कीर्त्तिकौमुदी–इस काव्य को गुजरात के सोलंकियों के पुरोहित सोमेश्वर ने ई० स० १२२५ के क़रीब रचा था, जिसमें अणहिलवाड़े (अणहिलपुर-पाटण) में राज्य करने वाले सोलंकियों का मूलराज से लगा कर भीमदेव (दूसरे) तक का, तथा धोलका में राज्य करने वाले अर्णोराज से बीरधवल तक के बघेल शाखा के सोलंकियों का संक्षिप्त वृत्तांत और वीरधवला के प्रसिद्ध मंत्री वस्तुपाल का विस्तृत चरित है । यह काव्य बंबई की संस्कृत सीरिज़ में छपा है।

(११) सुकृतसंकीर्तन–इस काव्य को ई० स० १२२८ के क़रीब लवणसिंह के पुत्र अरिसिंह ने बनाया था, जिसमें अणहिलवाड़े को बसाने वाले राजा बनराज से भूभट (सामंतसिंह) तक के चावड़ों की वंशावली, एवं मूलराज से भीमदे[व]

(१) पुस्तक अपूर्ण स्थिति में मिलने से कर्ता का नाम मा[लूम] नहीं हो सका ।

(दूसरे) तक का अणहिलवाड़े के सोलंकियों का तथा अर्णोराज से बीरधवल तक का धोलका के बघेलों (सोलंकियों) का संक्षिप्त वृत्तांत और वस्तुपाल का विस्तृत चरित है, यह काव्य अब तक छपा नहीं है।

(१२) प्रबंधचिंतामणि—ई० स० १३०५ में जैन आचार्य मेरुतुंग ने इस पुस्तक की गद्य[1] में रचना की थी, जिसमें गुजरात पर राज्य करने वाले चावड़ों तथा सोलंकियों के इतिहास के अतिरिक्त विक्रम, कालिदास, सिद्धसेन दिवाकर, सालिवाहन, लाखाक (कच्छ राजा लाखा फूलाड़ी), मुंज, भोज, राजशेखर, माघ, धनपाल, सीता पंडिता, मानतुंगाचार्य, मंत्री सांतू, देवसूरि, आभड़, मांगू झाला, जयचंद्र, बाहड़ (वाग्भट), सोलाक, आंबड़, हेमचन्द्र, आम्रभट, उदयचन्द्र, बृहस्पतिगंड, वामराशि, रामचन्द्र, वस्तुपाल, तेजपाल, नन्द, शीलादित्य, रंक, मल्लवादी, गोवर्द्धन, लक्ष्मणसेन, उमापतिधर, जगद्देव (परमर्दि), पृथ्वीराज, वराहमिहिर, नागार्जुन, भर्तृहरि, वाग्भटवैद्य आदि के प्रबन्ध हैं। मेरुतुंग ने विशेष कर सुनी हुई बातें लिखी हैं, अतएव कई स्थलों में उसका लिखना स्वीकार करने योग्य नहीं है। गुजरात के चावड़ा राजाओं का जो राजत्व काल उसने इस पुस्तक में दिया था वह पीछे से उसको भी अशुद्ध प्रतीत हुआ, जिससे कुछ समय के पश्चात् जब उसने विचारश्रेणी नामक दूसरी छोटी सी पुस्तक रची उस समय

(१) प्रबंधचिन्तामणि पुस्तक अधिकतर गद्य ही में है, परन्तु सूत्र में प्रसंग वशात् कहीं कहीं पद्य भी आ गया है।

उसको शुद्ध किया। शुद्ध इतिहास के अभाव की दशा में यह पुस्तक कुछ उपयोगी हो सकती है, परन्तु इसमें कितने ही स्थलों पर आधुनिक शोध के अनुसार नवीन टिप्पण करने की बड़ी आवश्यकता है, यह पुस्तक बंबई में छपी है।

(१३) चतुर्विंशति प्रबंध (प्रबंधकोश)–ई० स० १३४० में राजशेखर सूरि ने इस गद्यग्रन्थ को देहली में रचा था, जिसमें भद्रबाहु, आर्यनंदिल, जीवदेवसूरि, खपुटाचार्य, पादलिप्ताचार्य, वृद्धवादी और सिद्धसेन, मल्लवादी, हरिभद्र, बप्पभट्टि, हेमसूरि (हेमचन्द्र), हर्ष कवि, हरिहरि कवि, अमर कवि, मदनकीर्ति, सातवाहन, वंकचूल, विक्रमादित्य, नागार्जुन, वत्सराज (उदयन), लक्ष्मणसेन, मदन वर्मा, रत्नश्रावक, आभड़ और वस्तुपाल–ये २४ प्रबन्ध हैं। राजशेखर ने भी मेरुतुंग की नांई विशेष कर सुनी हुई बातें ही लिखी हैं, जिनसे भी कुछ कुछ ऐतिहासिक वृत्तान्त मिल आता है। यह पुस्तक अब तक छपी नहीं है।

(१४) कुमारपालचरित—इस गद्यग्रंथ को ई० स० १४३५ में जिनमंडनोपाध्याय ने रचा था, जिसमें ३६ राजवंशों की नामावली (जैसी कि उसको मिल सकी), वनराज से सामन्तसिंह तक के गुजरात के चावड़ा राजाओं की वंशावली और मूलराज से कुमारपाल तक का गुजरात के सोलंकियों का इतिहास है। इसमें कुमारपाल का वृत्तान्त बहुत विस्तार के साथ लिखा है, जो अतिशयोक्ति तथा धर्म सं[illegible] विशेष आग्रह से खाली नहीं है। यह पुस्तक अब [illegible] छपी नहीं है।

(१५) कुमारपालचरित–जयसिंह सूरि ने ई० स० १३६५ में इस काव्य की रचना की थी, जिसमें मूलराज से कुमारपाल तक का वृत्तान्त है। यह काव्य छपा नहीं है।

(१६) कुमारपालचरित–इस काव्य का रचयिता रत्नसेन सूरि का शिष्य चारित्रसुंदरगणि है। इसमें मूलराज से लगा कर कुमारपाल तक का सोलंकियों का इतिहास है। इसकी रचना का समय ज्ञात नहीं हुआ, परन्तु ई० स० की १४ वीं शताब्दी के आस पास इसका बनना अनुमान किया जा सकता है। अब तक यह पुस्तक छपी नहीं है।

(१७) वस्तुपालचरित–इस काव्य को ई० स० १४४० में जिनहर्षगणि ने बनाया था, जिसमें मूलराज से भीमदेव (दूसरे) तक तथा अर्णोराज से वीरधवल तक का सोलंकियों का इतिहास, एवं मंत्री वस्तुपाल का विस्तृत वृत्तान्त है। यह काव्य अब तक छपा नहीं है।

(१८) हंमीरमहाकाव्य–इस काव्य में चाहमान से लगा कर प्रसिद्ध हंमीर (रणथंभोर के राजा) तक की चौहानों की वंशावली तथा कुछ ऐतिहासिक वृत्तान्त है। यह काव्य चौहानों के इतिहास के लिये पृथ्वीराज विजय जैसा तो उपयोगी नहीं है, तो भी इसमें बहुत से नाम शुद्ध हैं और कितना एक वृत्तान्त भी सही है, ग्वालियर के तंवर वंशी राजा वीरम के दरबार में रहने वाले जैन कवि नयचन्द्रसूरि ने ई० स० की १५ वीं शताब्दी के प्रारंभ के [illegible]स पास इसको रचा था, यह बम्बई में छप चुका है।

(१९) बल्लालचरित–इस काव्य में बंगाल के सेनवंशी [illegible]ओं की उत्पत्ति, हेमन्तसेन से बल्लालसेन तक की वंशा-

वली तथा बल्लालसेन का वृत्तान्त है । इस पुस्तक के बल्लालसेन के आश्रित अनंतभट्ट के वंशज आनन्दभट्ट ने नवद्वीप (नदिया) के राजा बुद्धिमंत खां के समय में ई० स० १५११ में रचा था । उसने सुनी हुई बातों के आधार पर नहीं किन्तु सिंहगिरि रचित व्यासपुराण,[1] शरणदत्तकृत बल्लालचरित तथा कालीदासनंदी की जयमंगल गाथा के आधार पर इस काव्य की रचना की थी । यह पुस्तक एशियाटिक सोसाइटी बंगाल की बिबलिआथिका इंडिका नामक सीरीज़ में छप चुकी है ।

(२०) मंडलीक काव्य—इसमें गिरनार (काठियावाड़ में) के चूड़ासमा (यादव) राजा मंडलीक का चरित तथा उसके पूर्व पुरुषों में से खंगार, जयसिंह, मोकलसिंह, मिलिग, महीपाल आदि का कुछ कुछ वृत्तान्त है । ई० स० की १५ वीं शताब्दी के अन्त के आस पास गंगाधर कवि ने इसे बनाया था । अब तक यह छपा नहीं है ।

(३) प्रासंगिक वृत्तान्त—भिन्न भिन्न विषयों के कितने ही प्राचीन पुस्तकों में कहीं प्रसंगवशात् और कहीं उदाहरण के निमित्त के कुछ कुछ ऐतिहासिक वृत्तान्त मिल जाते हैं, कितने ही नाटक किसी ऐतिहासिक घटना के आधार पर रचे हुए मिलते हैं, और कई काव्य, कथा आदि की पुस्तकों में ऐतिहासिक पुरुषों के नाम तथा उनका कुछ हाल भी मिल आता है । ऐसे साधनों में से प्राप्त होने वाली ऐतिहासिक घटनाओं का व्योरा इस छोटे से लेख में दे[illegible] अशक्य है, तो भी उनसे कैसी कैसी उपयोगी बातें [illegible]

(१) ये तीनों पुस्तकें बल्लालसेन के समय बनी थीं ।

पता लगता है यह बतलाने के लिये थोड़े से उदाहरण नीचे दिए जाते हैं—

पतंजलि के महाभाष्य से द्रव्य की लालसा के कारण मौर्यों द्वारा प्रतिमा बनने और साकेत (अयोध्या) तथा मध्यमिका[1] पर यवनों (यूनानियों) के आक्रमण करने का पता लगता है। वात्स्यायन कामसूत्र में कुंतलदेश के राजा शातकर्णि शातवाहन के हाथ से क्रीड़ा प्रसंग में उसकी रानी मलयवती की मृत्यु होना लिखा मिलता है। मृच्छकटिक नाटक का कर्ता, शूद्रक राजा का १०० वर्ष की अवस्था में आग में बैठकर जल मरना बतलाता है। अद्भुत सागर में बंगाल के सेन वंशी राजा बल्लालसेन का अपनी रानी सहित गंगायमुना के संगम में डूबकर (वृद्धावस्था में) शरीरान्त करना पाया जाता है। लेखपंचाशिका के कर्ता ने अपनी पुस्तक में उस संधिपत्र की पूरी नकल दी है जो वि० सं० १२८८ (ई० स० ११३२) में दक्षिण के यादव राजा सिंहण (सिंघण) और धोलका के बघेल (सोलंकी) राणा लावण्य-प्रसाद (लवणप्रसाद) के बीच (युद्ध के बाद) लिखा गया था। पिंगलसूत्रवृत्ति में हलायुध पंडित ने मालवा के परमार राजा मुंज की प्रशंसा लिखी है। परमार राजा अर्जुनवर्मा ने अमरूशतक की टीका में जगद्देव (जगदेव परमार)

(१) मध्यमिका नगरी मेवाड़ में प्रसिद्ध चित्तौड़ के क़िले से करीव ६ मील उत्तर में है। बाक्ट्रियन यूनानी राजाओं में से [illegible]डर का गुजरात, राजपुताना आदि देशों को विजय करना [illegible] मिलने वाले उसके अनेक सिक्कों से अनुमान किया जा सकता [illegible]एव मध्यमिका पर आक्रमण करने वाला यूनानी राजा [illegible]र ही होना सम्भव है।

को अपना पूर्वपुरुष कह कर उसकी प्रशंसा का पद्य उद्धृत किया है। जिनप्रभसूरि रचित तीर्थकल्प के सत्यपुर (साचौर, मारवाड़ में) कल्प से, वि०सं०१३५६ (ई०सं०१३००) में अलाउद्दीन (ख़िलजी) के छोटे भाई उलग़ख़ां की मेवाड़ पर चढाई होना तथा चित्तोड़ के स्वामी समरसिंह (रावल) का उक्त देश को बचाना, पाया जाता है। प्राकृत पिंगलसूत्र की टीका में लक्ष्मीनाथ भट्ट ने हंमीर (चौहान) कर्ण आदि राजाओं की प्रशंसा के श्लोक उदाहरणार्थ उद्धृत किए हैं। अशोक अवदान नाम की पुस्तक में शिशुनाग वंश के राजाओं की नामावली एवं हेमचन्द्र (हेमाचार्य) रचित त्रिषष्टिपुरुषशलाकाचरित के परिशिष्ट पर्व में शिशु-नाग तथा मौर्यवंश के राजाओं का कुछ वृत्तान्त दिया हुआ है। मेरुतुंग रचित बिचारश्रेणी में गुजरात के चावड़ों तथा सोलंकियों की पूरी वंशवली, प्रत्येक राजा का राजत्व काल तथा कई अन्य ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख है। धर्मसागर ने प्रवचनपरीक्षा में गुजरात के चावड़ों तथा सोलंकियों की पूरी वंशावली और राज्य समय दिया है। महाकवि कालिदास के मालविकाग्निमित्र नाटक में सुगवंश के संस्थापक राजा पुष्यमित्र के समय में उसके पुत्र अग्निमित्र का विदिशा (भेलसा) में शासन करना, विदर्भ (बरार) देश के राज्य के लिये यज्ञसेन और माधवसेन के बीच विरोध चलना, माधवसेन का विदिशा जाने निमित्त भागना तथा यज्ञसेन के सेनापति द्वारा कैद हो[illegible] माधवसेन को छुड़ाने के लिये अग्निमित्र का यज्ञसे[illegible] लड़ना तथा विदर्भ के दो बिभाग कर एक उसको और[illegible]

माधवसेन को देना, पुष्य मित्र के अश्वमेधयज्ञ के घोड़े का सिंध (सिंधु—राजपुताने में) नदी के दक्षिणी तट पर यवनों (यूनानियों) द्वारा पकड़ा जाना, वसुमित्र का यवनों से लड़ कर घोड़े को छुड़ा लाना, और पुष्यमित्र के अश्वमेधयज्ञ का पूर्ण होना आदि वृत्तान्त मिलता है। अजमेर के चौहान राजा विग्रहराज (वीसलदेव) के राजकवि सोमेश्वररचित ललितविग्रहराज नाटक में वीसलदेव और मुसल्मानों के बीच की लड़ाई का हाल है। मालवा के परमार राजा अर्जुनवर्मा के राजगुरु मदन की बनाई हुई पारिजातमंजरी नाटिका में अर्जुनवर्मा और गुजरात के सोलंकी राजा जयसिंह (जिसने भीमदेव दूसरे का राज्य छीन लिया था) के बीच पर्वपर्वत (पावागढ़—गुजरात में) के पास लड़ाई होने तथा उसमें हार कर जयसिंह के भागने का उल्लेख है। कृष्णमिश्र के प्रबोधचन्द्रोदय नाटक से पाया जाता है कि चेदी देश के हैहय (कलचुरि) वंशी राजा कर्ण ने कालिंजर के चंदेल राजा कीर्तिवर्मा का राज्य छीन लिया था, परन्तु उस (कीर्तिवर्मा) के ब्राह्मण सेनापति गोपाल ने कर्ण को परास्त कर उसको फिर राजसिंहासन पर बिठलाया था। गुणाढ्य की वृहत्कथा (पैशाची भाषा में) के संस्कृत अनुवाद कथासरितसागर में वररुचि, व्याड़ी पाणिनि, नंद, शकटाल, चाणक्य, सातवाहन, वत्सराज, [illegible]महासेन, विक्रमादित्य आदि की कथाएं हैं, और शिव[illegible]देव के आश्रित विद्यापति पंडित रचित पुरुष परीक्षा [illegible]थिला के कर्णाट वंशी राजा नान्यदेव के पुत्र मल्लदेव, [illegible] राजा लक्ष्मणसेन, धारानगरी के राजा भोज, और

काशी के राजा जयचंद आदि का कुछ वृत्तान्त मिल जाता है।

इस प्रकार की सामग्री से ऐतिहासिक घटनाओं के संग्रह करने का आधार इतिहास लेखक की बहुश्रुतता पर ही निर्भर है।

(उ) पुस्तकों के प्रारम्भ और अंत—विशेष कर ई०स० की पांचवीं शताब्दी के पीछे के ग्रन्थकारों में से किसी ने अपनी पुस्तक के प्रारंभ या अंत में अपना और अपने आश्रयदाता राजा का कुछ कुछ परिचय दिया है, किसी ने अपनी पुस्तक रचना का संवत तथा उस समय राज्य करने वाले राजा का नाम, और किसी ने अपने आश्रयदाता के वंश का विशेष वर्णन लिखा है। इसी तरह प्राचीन काल के कई विद्वान् नकल करने वालों ने कितनी ही पुस्तकों के अंत में नक़ल करने का संवत तथा उस समय के राजा का नाम भी दिया है। ऐसे साधनों से भी इतिहास में कुछ सहायता मिलती है जिसके थोड़े से उदाहरण यहां पर दिए जाते हैं।

जल्हण पंडित ने अपनी सूक्तिमुक्तावली के प्रारंभ में अपने पूर्वजों के वृत्तान्त में देवगिरि (दौलताबाद) के कितने एक यादव राजाओं का परिचय दिया है। प्रसिद्ध हेमाद्रि पंडित ने, जो देवगिरि के यादव राजा महादेव का प्रधान मंत्री था, अपनी चतुर्वर्गचिंतामणि के व्रतखंड के अंत की राजप्रशस्ति में पुराण प्रसिद्ध कितने ही यदुवंशी राजा की नामावली के अतिरिक्त दक्षिण में यादवों के [illegible] स्थापन करने वाले राजा दृढ़प्रहार से लगाकर महादेव

की पूरी वंशावली तथा कई राजाओं का कुछ कुछ हाल भी दिया है। गुजरात के सोलंकियों के पुरोहित सोमेश्वर ने अपने रचे हुए सुरथोत्सव काव्य के १५वें सर्ग में अपने पूर्वजों के वर्णन के प्रसंग में गुजरात के सोलंकियों का कुछ कुछ वृत्तान्त दिया है। धनपाल पंडित ने तिलकमंजरी के प्रारंभ में परमारों की उत्पत्ति तथा वैरिसिंह से भोज तक की वंशावली दी है। ब्रह्मगुप्त ने श०सं० ५५० (वि०सं० ६८५ = ई०स० ६२८) में (भीनमाल में जो जोधपुर राज्य में है) ब्रह्मस्फुटसिद्धांत रचा। उस समय वहां का राजा चाप (चावड़ा) वंशी व्याघ्रमुख था-ऐसा उसीके लेख से पाया जाता है। ई०स० की सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में प्रसिद्ध माघकवि ने (जो भीनमाल नगर का रहने वाला था) शिशुपालबध काव्य रचा जिसमें वह अपने दादा सुप्रभदेव को वहां के राजा वर्मलात का सर्वाधिकारी बतलाता है। जिनेश्वर ने शक संवत् ७०५ (वि०स० ८४० = ई०स० ७८३) में जैनहरिवंशपुराण लिखा। उस समय में उत्तर में इन्द्रायुध, दक्षिण में बल्लभ, पूरब में वत्सराज, और पश्चिम में वेहार (जयवराह) का राज्य करना उक्त पुस्तक से पाया जाता है। अमितगति ने वि०स० १०५० (ई०स० ९९३) में सुभाषित-रत्नसंदोह नामक पुस्तक बनाई। उस समय (मालवा का) राजा मुंज (परमार) था। वज्रट के पुत्र उवट ने उज्जैन में रहकर यजुर्वेद (शुक्ल) पर भाष्य लिखा। उस वक्त वहां [illegible] राजा भोज (परमार) था। प्राग्वाट (ओरवाड़) [illegible]राजन धवल की पुत्री ने वि०सं० १२६१ (ई०स० १२०५) [illegible]आश्विन मास में मुंजाल पंडित से जयंतीवृत्ति की नक़ल

करवा कर अजितदेवसूरि को भेट की। उस समय अणहिलवाड़े का राजा भीमदेव (सोलंकी) था तथा वि० सं० १२८४ (ई० स० १२२८) के फाल्गुन मास में सेठ हेमचंद्र ने उघनियुक्ति की नक़ल करवाई। उस समय आघाटदुर्ग (अहाड़ = मेवाड़ की पुरानी राजधानी) में जैत्रसिंह (रावल) का राज्य था और उसका महामात्य (मुख्यमंत्री) जगत्सिंह था-ऐसा उक्त दोनों पुस्तकों की नक़ल करनेवालों के लेख से पाया जाता है।

इस प्रकार की सामग्री से कई ऐतिहासिक बातों का पता लगता है, यदि उनका संग्रह किया जावे तो एक छोटी सी पुस्तक बनजावे। प्राचीन हस्तलिखित संस्कृत पुस्तकों की कई रिपोर्टें तथा कई पुस्तकालयों की सूचियां ऐसी बन चुकी हैं कि जिनमें अनेक पुस्तकों के प्रारंभ और अंत का कुछ कुछ आवश्यकीय अंश उद्धृत किया हुआ है। उनके द्वारा थोड़े से श्रम से कई ऐतिहासिक बातें मालूम हो सकती हैं। ऐसी पुस्तकों में डाकृर कीलहार्न, बुल्हर, भंडारकर, पीटर्सन, तथा शेषगिरि शास्त्री की रिपोर्टें, डाकृर राजेन्द्रलाल मित्र तथा हरप्रसाद शास्त्री संगृहीत 'नोटिसेज़ आफ संस्कृत मैनुस्क्रिप्टस' तथा बनारस संस्कृत कालेज, काश्मीर, अलवर, बीकानेर, नेपाल, कलकत्ता संस्कृत कालेज, इंडिया आफिस, ब्रिटिश म्युज़िअम, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी आदि के संस्कृत पुस्तकसंग्रहों की सूचियां मुख्य हैं। डाकृर आफरेच की केटेलोगस केटेलोगरम्[1] नामक पुस्तक (जि[illegible]

(१) ई० स० १९०३ के जुलाई तक संस्कृत (हस्तलिखित) पुस्[illegible] के शोध के विषय में जितनी रिपोर्टें तथा भिन्न भिन्न संस्कृत [illegible]

तीन भाग छपचुके हैं) इस विषय का अपूर्व ग्रंथ है।

(ऊ) वंशावलियों की पुस्तक–भारतवर्ष के भिन्न भिन्न विभागों से राजाओं तथा धर्माचार्यों की वंशपरंपरा की पुस्तकें मिल जाती हैं, जिनसे भी प्राचीन इतिहास में कुछ कुछ सहायता मिल सकती है। ऐसी पुस्तकों में से मुख्य मुख्य के नाम नीचे लिखे हैं–

(१) प्रसिद्ध काश्मीरी पंडित क्षेमेन्द्र रचित नृपावलि (राजावली)। इसमें काश्मीर के राजाओं की वंशावली है, जिसका समावेश कल्हण की राजतरंगिणी में हो गया।

(२–३) जैनपंडित विद्याधर संगृहीत राजतरंगिणी तथा रघुनाथ रचित राजावल–ये दोनों पुस्तकें जयपुर बसानेवाले राजा जयसिंह के समय मेंजयपुर में बनी थीं, जिन में भारतयुद्ध से लगाकर विक्रमादित्य तक के राजाओं की नामावली देने का यत्न किया गया है। हमने ये दोनों पुस्तकें देखी नहीं हैं, परन्तु कर्नल टाड् ने राजस्थान नामक पुस्तक में इनके विषय में जो कुछ लिखा है उसी के आधार पर इनका यहां पर उल्लेख किया है। कर्नल टाड ने राजावली के अनुसार परीक्षित से लगाकर राजपाल तक के चार वंशों की वंशावलियां दी हैं, जिनमें से पहिले वंश के २८ राजाओं के नामों का विष्णुपुराण तथा भागवत में दिए हुए (उसी वंश के) राजाओं के नामों से मिलान किया तो केवल चार राजाओं के नाम परस्पर मिले, अत

[illegible] हों की जितनी सूचियां छपीं उनका पूरा पता इस अमूल्य पुस्तक [illegible]ग सकता है। हमने उनमें से मुख्य मुख्य के ही नाम ऊपर [illegible] सूचित हैं।

एव उनके द्वारा प्राचीन इतिहास में बहुत ही कम सहायता मिलने की संभावना है।

(४) नेपाल की वंशावली—पार्वतीय वंशावली नामक एक पुस्तक नेपाल से मिली है, जिसमें कलियुग के प्रारंभ से लगाकर ई०स० की १८ वीं शताब्दी तक उक्त देश पर राज्य करने वाले भिन्न भिन्न वंशों के राजाओं की नामावली तथा प्रत्येक राजा का राजत्व काल दिया है, परन्तु वहीं से मिले हुए प्राचीन शिलालेखों तथा हस्तलिखित पुस्तकों में दिए हुए वहां के राजाओं के नाम तथा संवतों के साथ उक्त वंशावली का मिलान करने पर उसकी शुद्धता सिद्ध नहीं होती। उदाहरणार्थ देखिए कि ठाकुरी वंश के राजा अंशुवर्मा के शिलालेखों से उसका ई०स० की सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में होना पाया जाता है, चीनी यात्री हुएन्त्सांग ई०स० ६३७ के क़रीब नेपाल में पहुँचा। उससे थोड़े ही समय पूर्व वह (अंशुवर्मा) मर चुका था ऐसा उक्त यात्री के लेख से पाया जाता है, परन्तु उपर्युक्त वंशावली के अनुसार उसका ई०स० पूर्व की सातवीं शताब्दी में होना मानना पड़ता है। ऐसी दशा में वह वंशावली प्राचीन इतिहास के लिये विशेष उपयोगी नहीं हो सकती। प्राचीन समय के राजाओं के नामों में से कितने एक सही हैं, परन्तु सब के सब नहीं। यह वंशावली इंडिअन ऐंटिक्वेरी की जिल्द १३ वीं (पृ०४१०–४२८) में छपी है।

(५) उड़ीसा की वंशावली—नेपाल की नाईं उड़ीसा [illegible] राजाओं की वंशावली जगन्नाथ (पुरी) से ताड़पत्र [illegible] लिखी (खुदी) हुई मिली है, जिसमें युधिष्टिर से ल[illegible]

अब तक के उड़ीसा के राजाओं की नामावली तथा प्रत्येक का राज्य समय दिया हुआ है, परन्तु इसकी भी वही दशा है जो नेपाल की वंशावली की है। उदाहरण के लिये प्रसिद्ध जगन्नाथ के मन्दिर के बनने का हाल ही देखिए। प्राचीन ताम्र-लेखादि से पाया जाता है कि जगन्नाथ का मंदिर, जो इस समय विद्यमान है, गंगावंशी राजा अनन्त वर्म चोडगंग ने बनाया था, परन्तु उक्त वंशावली में उससे पांचवें राजा अनंगभीमदेव को उक्त मंदिर का बनाने वाला लिखा है। अनंतवर्म चोडगंग का राज्याभिषेक श० सं० ९९९ (वि० सं० ११३४ = ई० स० १०७८) में होना उसी के ताम्रपत्र से पाया जाता है परन्तु उक्त वंशावली में उसके राज्य का प्रारम्भ ई० स० ११३२ में होना लिखा है। ई० स० की १२ वीं शताब्दी के पूर्व के राजाओं की नामावली तो अधिक अशुद्ध हैं। यह वंशावली हंटर साहिब (W.W. Hunter) के ओरीस्सा (Orissa) नामक पुस्तक की दूसरी जिल्द (पृ० १८४-१९१) में छपी है।

(६) भाटों की वंशावलियां—भाट (बड़वा) लोग प्रत्येक राजवंश की वंशपरंपरा लिखते हैं, परन्तु उनकी पुस्तकों का, शिलालेख ताम्रपत्रादि से मिलने वाली भिन्न भिन्न राजवंशो की नामावलियों के साथ मिलान करने पर ई० स० की तेरहवीं शताब्दी तक के नामों में से बहुत कम का शुद्ध होना सिद्ध होता है, और एक ही वंश से संबंध [illegible]ने वाले भाटों की दो पुस्तकें भी परस्पर नहीं मिलतीं। [illegible]रोही के चौहान राजाओं के भाटों (बड़वों*) की पुस्तक [illegible] सूर्य[illegible]क वंश के प्रारम्भ से लगा कर प्रसिद्ध पृथ्वीराज तक

२२७ नाम हैं, और बूंदी के भाटों (बड़वों) की पुस्तक में (वंशभास्कार के अनुसार) १७७ हैं, जिनमें से केवल ७ नाम परस्पर मिलते हैं । भाटों की वंशावलियां ई० स० की तेरहवीं शताब्दी तक के इतिहास के लिये विशेष उपयोगी नहीं है, क्योंकि उक्त समय के पूर्व के नामों से अधिकतर कृत्रिम ही उनमें धरे हुए हैं ।

(७) पट्टावलियां—जैनों के प्रत्येक गच्छ के आचार्यों की क्रमपरंपरा की पुस्तकें मिलती हैं जिनको पट्टावलियां कहते हैं । उनमें महावीरस्वामी से लगा कर उनके लिखे जाने के समय तक की (किसी में अब तक की) प्रत्येक गच्छ के आचार्यों की नामावली, उनका जन्म संवत्, जन्मस्थान, दीक्षा का संवत्, आचार्यपद पाने का संवत् तथा धर्म प्रचार आदि का वृत्तान्त होता है । इनसे भी कई ऐतिहासिक घटनाओं का पता लगता है । ये पट्टा-वलियां ई० स० की १० वीं शताब्दी के बाद लिखी जाने लगीं हों ऐसा अनुमान होता है ।

(ए) भाषा की ऐतिहासिक पुस्तकें—संस्कृत तथा प्राकृत के अतिरिक्त हिन्दी तथा तामिल आदी भाषाओं में लिखे हुए कितने एक ऐतिहासिक ग्रंथ भी मिलते हैं, जिनसे भी कुछ ऐतिहासिक वृत्तान्त मिल जाता है । ऐसी पुस्तकों में से नीचे लिखी हुई मुख्य हैं—

(१) रत्नमाला—हिन्दी भाषा भी ऐतिहासिक पुस्तकों में सब से उत्तम रत्नमाला है, जिसकी रचना ई० स० की १४ वीं शताब्दी के आस पास कृष्ण कवि ने की थी । इसमें १[illegible] रत्न (अध्याय) थे, जिनमें से ११ अब तक उपलब्ध हुए [illegible] उसमें गुजरात के चावड़ा वंशी राजाओं की नामावली [illegible]

मूलराज से भीमदेव (दूसरे) तक के सोलंकी राजाओं का कुछ कुछ वृत्तान्त है, इसके ८ रत्न अहमदाबाद में गुजराती भाषान्तर सहित छप चुके हैं।

(२) पृथ्वीराज रासा—इसमें चौहानवंश के प्रतापी राजा पृथ्वीराज का इतिहास मुख्य है। ऐसा प्रसिद्ध है कि इस हिन्दी (राजस्थानी) भाषा के काव्य की रचना उक्त पृथ्वीराज के समय में अर्थात् ई० स० की १२ वीं शताब्दी के अन्त में चंद बरदाई नामक भाट ने की थी। यदि यह पुस्तक उक्त समय की बनी हुई होती तो उपर्युक्त पृथ्वीराज विजय के समान इतिहास के लिये अमूल्य होती, परन्तु चौहानों के प्राचीन शिलालेख, ताम्रपात्र, तथा पृथ्वीराज विजय आदि ऐतिहासिक पुस्तकों के साथ इसका मिलान करने से इसमें दी हुई चौहानों की वंशावली, ऐतिहासिक वृत्तान्त, और साल संवतों का बहुधा कृत्रिम होना प्रतीत होता है, अतएव हम उसका ई० स० की १५ वीं शताब्दी के आस पास बनना अनुमान कर सकते हैं। प्राचीन इतिहास के लिये यह पुस्तक विशेष उपयोगी नहीं है। नागरीप्रचारिणी सभा (बनारस) इसको छपवा रही है।

(३) खुम्माणरासा—यह हिंदी काव्य ई० स० की १७ वीं शताब्दी में उदयपुर के एक जैन साधु ने बनाया था, जिसमें मेवाड़ के प्रसिद्ध राजा खुम्माण का इतिहास है, [illegible] बहुधा कल्पित है। प्राचीन इतिहास के लिये यह [illegible]तक बहुत ही कम उपयोगी है। यह अबतक छपी [illegible] है।

उपर्युक्त हिन्दी पुस्तकों के अतिरिक्त वीसलदेवरासा, हंमीररासा, राणारासा, रायमलरासा, राजविलास आदि पुस्तकें भी मिलती हैं, परन्तु प्राचीन इतिहास के लिये उनसे विशेष सहायता नहीं मिल सकती ।

(४) कलवलिनाडपटु—यह तामिल भाषा का छोटा सा काव्य है, जिसको पोइकयार नामक कवि ने ई० स० की सातवीं शताब्दी के क़रीब रचा था। इसमें चोल देश के राजा चेंकण और चेर (गंगवाड़ी—माइसोर राज्य में) के राजा कणेकाइरुपोड़े के बीच के युद्ध का (जिसमें चेर का राजा क़ैद हुआ था) वर्णन है । यह काव्य अंग्रेजी अनुवाद सहित इंडिअन् ऐंटिक्वेरी की १८ वीं जिल्द (पृ० २५८-२६५) में छपा है ।

(५) कलिंगत्तुपरणी—ई० स० की ११ वीं शताब्दी के अन्त के आस पास जयकोंडान् नामक कवि ने इस तामिल काव्य की रचना की थी, जिसमें चोलदेश के सोलंकी राजा कुलोत्तुंगचोडदेव (प्रथम) के कलिंगदेश विजय करने का वृत्तान्त है । इसका सारांश अंग्रेज़ी अनुवाद सहित इंडिअन् ऐंटिक्वेरी की १९ वीं जिल्द (पृ० ३२९-३४५) में छपा है।

[६] विक्रमशोलनुला—ई० स० की बारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में बने हुए इस तामिल काव्य में चोल देश पर राज्य करने वाले राजा शेंगत (चेंकण) चोल से विक्रम चोल तक के राजाओं की नामावली तथा विक्रमचोल की सवारी का हूबहू वर्णन है । इसका सारांश अंग्रेज़ी अनुवाद सहित इंडिअन् ऐंटिक्वेरी की जिल्द २२ वीं (पृ०१४१—[illegible]) में छपा है ।

[७] राजराजनुला—यह भी उपर्युक्त विक्रमशोलनुला की शैली का तामिल काव्य है, जिसमें चोलदेश के सोलंकी राजा राजराज (दूसरे) का वृतान्त है। यह काव्य ई० स० की १२ वीं शताब्दी में बना था। अब तक यह छपा नहीं है। उपर्युक्त चारों (न ४=७) तामिल काव्य प्राचीन इतिहास के लिये उपयोगी हैं।

[८] कोंगु देश राजाक्कल—यह भी तामिल भाषा की पुस्तक है, जिसमें कोंगुदेश (गंगवाड़ी—माइसोर राज्य में) के गंगावंशी राजाओं की वंशावली तथा उनका राजत्व काल दिया है, जो बहुधा कल्पित है। अलबत्तह राजाओं के नामों में से कितने एक शुद्ध हैं। प्राचीन इतिहास के लिये यह विशेष उपयोगी नहीं है।

उपर्युक्त सामग्री अर्थात् हमारे यहां की प्राचीन पुस्तकों से ई० स० की तीसरी शताब्दी से लगा कर मुसल्मानों के हाथ से भिन्न भिन्न हिन्दू राज्यों के अस्त होने तक इस देश के भिन्न भिन्न विभागों पर राज्य करने वाले अनेक राजवंशों में से केवल अणहिलवाड़े के चावड़ों तथा सोलंकियों के अतिरिक्त किसी दूसरे वंश की पूरी वंशावली तय्यार नहीं हो सकती, और न ईरानी, यूनानी, शक, कुषन (तुर्क), हूण आदि विदेशी विजेताओं की वंशावलियां अथवा उनका विशेष वृत्तान्त मिलता है। तो भी कितने ही राजवंशों के प्राचीन इतिहास में बहुत कुछ [सहा]यता मिलती है, एवम् लोगों की धार्मिक तथा सामा[जि]क स्थिति, उनके रीति रिवाज, व्यापार, साहित्य आदि [बहुमू]ल्य उपयोगी बातों का पता लगता है।

(ख) यूरोप, चीन, तिब्बत और सीलोन वालों की तथा मुसल्मानों की लिखी हुई प्राचीन पुस्तकें ।

[अ] यूरोप वालों की प्राचीन पुस्तकें–यूनान के प्रसिद्ध बादशाह सिकंदर [अलेक्ज़ैंडर दी ग्रेट] ने ई० स० पूर्व ३२७ में भारतवर्ष पर चढ़ाई की, जिसका कुछ भी वृत्तान्त हमारे यहां लिखा हुआ नहीं है, परन्तु उसका सविस्तर वृत्तान्त यूरोपिअन् लेखकों की पुस्तकों में मिल जाता है, एवं हमारे इतिहास से संबंध रखने वाली दूसरी भी कई बातें उनकी पुस्तकों में मिल जाती हैं । उनमें मुख्य नीचे लिखे हुए विद्वानों की पुस्तकें हैं–

[१] हिरोडोटस्-प्रसिद्ध यूनानी इतिहास लेखक हिरोडोस ने ई० स० पूर्व की पांचवीं शताब्दी में इतिहास की वृहत् पुस्तक लिखी, जिसमें ईरान के बादशाह दारा [प्रथम] ने ई० स० पूर्व ५०० के क़रीब हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कर पंजाब का पश्चिमी हिस्सा जो अपने अधीन किया, उसका वृत्तान्त मिलता है, एवम् हमारे इतिहास से संबंध रखने वाली दूसरी भी कई घटनाओं का उल्लेख उक्त पुस्तक में पाया जाता है । उसके लेख से यह भी पाया जाता है, कि उस समय यह देश बड़ा ही धनाढ्य था और दारा के साम्राज्य के २० सूबों में से केवल पश्चिमी पंजाब का ख़िराज सुवर्ण में पहुंचता था [बाक़ी के सब सूबों का चांदी में] । हिरोडोटस की पुस्तक का अंग्रेज़ी अनुवाद छप चुका है ।

[२] केसिअस (Ktesias)–यह ईरान के बादशाह अर्तक्ज़र्सीस (Artaxerxes Memon) का वैद्य था । इसने ई[illegible]

पूर्व ४०० के क़रीब भारतवर्ष के विषय में 'इंडिका' नामक पुस्तक लिखी थी, जो इस समय उपलब्ध नहीं है, परन्तु ई० स० की नवीं शताब्दी के मध्य फोटिअस नामक विद्वान् ने उसका जो संक्षेप किया था वह, तथा अन्य प्रचीन लेखकों ने उस [इंडिका] का जो अंश अपनी पुस्तकों में उद्धृत किया वह मिलता है, जिसका अंग्रेज़ी अनुवाद मैक्क्रिंडल् (Mc Crindle) साहब ने इंडिअन् ऐंटिक्वेरी की जिल्द १० वीं [पृ० २९६-३१४] में छपवाया है । उक्त लेखक ने बहुधा सुनी हुई बातें लिखी हैं जिससे उसकी पुस्तक विशेष उपयोगी नहीं है ।

[३] मैगेस्थिनीज़—सीरिआ के यूनानी बादशाह सेल्युकस ने मैगेस्थिनीज़ नामक विद्वान् को मौर्यवंशी राजा चन्द्रगुप्त के दरबार में अपना राजदूत नियत किया था, जिसने पाटलीपुत्र [पटना] में रह कर भारतवर्ष के विषय में 'इंडिका' नामक पुस्तक ई० स० पूर्व चौथी शताब्दी के अंत में आस पास लिखी, जो इस देश की उस समय की हालत जानने के लिये अपूर्व पुस्तक थी, परन्तु इस समय का उसका थोड़ा सा अंश ही [जो अन्य लेखकों ने अपनी पुस्तकों में उद्धृत किया था] उपलब्ध है । वह भी हमारे यहां के प्राचीन इतिहास के लये बहुत उपयोगी है । उसका हिन्दी अनुवाद 'इतिहास' छप चुका है ।

[४-८] ऐरिअन,[१] कर्टिअस्, रूफस्[२] प्लूटार्क,[३] डायो-[डोर]स[४] और फ्रोंटिनस[२]—सिकंदर बादशाह का वृत्तान्त भिन्न

[१] ई० स० की दूसरी शताब्दी के मध्य । [२] समय अनि-[श्चि]त [३] ई० स० की पहिली शताब्दी में [४] ई० स० पूर्व की [पहि]ली शताब्दी में ।

भिन्न १९ विद्वानों ने लिखा था, जिनकी पुस्तकों के आधार पर इन पांच इतिहास लेखकों ने उसकी भारतवर्ष पर की चढ़ाई का विस्तृत हाल लिखा था वह उपलब्ध है और हमारे इतिहास के लिये बड़ा ही उपयोगी है। इन पांचों विद्वानों की पुस्तकों में भी ऐरिअन की पुस्तक सर्वोत्तम मानी जाती है। ऐरिअन ने 'इंडिका' नामक भारतवर्ष के संबंध में एक छोटी सी पुस्तक और भी लिखी है वह भी उपयोगी है। मैक् क्रिंडल साहब ने उक्त पांचों विद्वानों के लिखे हुए सिकंदर की भारत पर की चढ़ाई के वृत्तान्त का अंग्रेज़ी अनुवाद 'दी इन्वेज़न आफ् इंडिआ बाइ अलेक्ज़ैंडर दी ग्रेट' नामक पुस्तक में छपा है।

(९) पेरिप्लस् आफ दी इरीथ्रिअन् सी[1]–एक यूनानी व्यापारी ने (जिसके नाम का पता नहीं लगा) ई० स० की पहिली शताब्दी में यह पुस्तक लिखाई, जिससे भारतवर्ष का व्यापार संबंधी कुछ कुछ हाल मालूम होता है। उक्त ग्रन्थ के कर्ता ने भारतवर्ष के सारे समुद्र तट की यात्रा की हो ऐसा पाया जाता है। इसका अंग्रेज़ी अनुवाद मैक् क्रिंडल साहब ने इंडिअन् ऐंटिक्वेरी की जिल्द ८ वीं (पृ० १०७-१५१) में छपवाया है।

(१०) टालमी–ई० स० की दूसरी शताब्दी के मध्य मिसर देश के अलेक्ज़ैंड्रिआ नगर के रहने वाले यूनानी विद्वान् टालमी ने भूगोल की बड़ी पुस्तक लिखी, जिसमें हिन्दुस्तान के कई नगर, नदी आदि के नाम तथा उ[illegible]

(१) उस समय अफ्रिका के किनारे से पूर्व का सारा [illegible] 'इरीथ्रिअन सी' (Erythræan sea) के नाम से प्रसिद्ध था।

अक्षांश आदि दिए हैं, एवम् क्षत्रपवंश के राजा चष्टन, सातवाहन (आंध्रभृत्य) वंशी पुलुमाई आदि उस समय के राजाओं के नामों का उल्लेख किया है, परन्तु उसने अलेक्‌ज़ैंड्रिआ में बैठे ही बैठे हिन्दुस्तान का भूगोल यात्रियों तथा नाविकों द्वारा सुनी हुई बातों तथा पहिले की पुस्तकों के आधार पर लिखा था, जिससे उसके नियत किए स्थानों में बहुत ही अन्तर पड़ता है। यदि उसके लेखानुसार नक्शा तय्यार किया जाय तो महानदी को स्याम में, हिमालय को तिब्बत के उत्तर में तथा गंगा को चीन तक लेजाना होगा। इस पर भी उसकी पुस्तक से हमारे प्राचीन इतिहास में कुछ सहायता मिल ही जाती है। उक्त पुस्तक का अंग्रेज़ी अनुवाद मैक्‌क्रिंडल् साहब ने इंडिअन् ऐंटिक्वेरी की जिल्द १३ वीं (पृ० ३१३-४११) में छपवाया है।

(११) मार्कोपोलो—वेनिस नगर का प्रसिद्ध यात्री मार्कोपोलो ई० स० १२९४ के क़रीब दक्षिण में आया था। उसकी यात्रा की पुस्तक (जि० २ री) में वहां का जो वृत्तान्त मिलता है वह भी उपयोगी है, क्योंकि उसने अपनी देखी हुई उक्त देश की दशा का वर्णन किया है। उसकी यात्रा की पुस्तक का अंग्रेज़ी अनुवाद कर्नल हेनूी यूल ने छपवाया है।

(१२) निकोलो डी काउंटी—इटली देश का निवासी निकोलो ई० स० १४२० के क़रीब विजयनगर में रहा था [उ]सने उक्त नगर का तथा वहां के राजा देवराज (दूसरे) [का] जो वृत्तान्त लिखा है वह विजयनगर के यादवों के इति[हास] के लिये उपयोगी है। उसका अंग्रेज़ी अनुवाद राबर्ट सूयल साहब की 'ए फर्गाटन एम्पायर' नामक पुस्तक में छपा है:

(१३) फर्नाओ नूनीज़–इस पोर्चुगीज़ इतिहास लेखक ने ई० स० की १६ वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में विजयनगर के यादव राज्य का इतिहास लिखा था, जो वहां के प्रथम राजवंश के इतिहास में बहुत कुछ सहायता देता है। उसका अंग्रेज़ी अनुवाद उपर्युक्त 'ए फर्गाटन ऐम्पायर' नामक पुस्तक के अन्त में छपा है।

(१४) भिन्न भिन्न लेखक–समय समय पर अनेक यूरोपिअन् लेखकों ने अपनी पुस्तकों में इस देश के संबंध में जो कुछ लिखा था उसका संग्रह मैक्क्रिंडल साहब ने 'एन्श्यंट इंडिआ ऐज़ डिस्क्राइब्ड बाई अदर क्लासिकल् राइटर्स' नामक अंग्रेज़ी पुस्तक में किया है, जो बड़ा ही उपयोगी है।

ऊपर लिखे हुए युरोपिअन विद्वानों की पुस्तकों में एक बड़ी ख़ामी यह है, कि उनमें लिखे हुए स्थान तथा पुरुषों के नामों में से कितनों ही का ठीक ठीक पता लगाना बड़ा ही कठिन काम हो पड़ा है।

(आ) चीन वालों की पुस्तकें–चीन में प्राचीन काल से ही इतिहास लिखने की प्रथा होने के कारण उनके यहां इतिहास की अनेक पुस्तकें मिल जाती हैं, उनसे तथा यात्रार्थ भारतवर्ष में आए हुए चीनी यात्रियों के सफ़र नामों से एवं वहां की धर्म (बौद्ध) पुस्तकों से हमारे यहां की इतिहास संबंधी कई बातें मिल जाती हैं।

(१) ऐतिहासिक पुस्तकें–चीन की ऐतिहासिक पुस्त[illegible] से मध्य एशिआ में राज्य करने वाली शक, कुषन (तु[illegible] हूण आदि जातियों का, जिन्हों ने भारतवर्ष पर अ[illegible] अधिकार जमाया था, विस्तृत वृत्तान्त मिल जाता [illegible]

सभा का कार्य्यविवरण ।

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० ३१ अक्तूबर १९०८ सन्ध्या के साढ़े ५ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

१ बाबू जुगुलकिशोर के प्रस्ताव और पंडित रामनारायण मिश्र के अनुमोदन पर बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए० सभापति चुने गए ।

२ गत अधिवेशन (ता० २६ सितम्बर १९०८) का कार्य्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

३ प्रबन्धकारिणी सभा का ७ सितम्बर का कार्य्यविवरण सूचनार्थ उपस्थित किया गया ।

४ निम्न लिखित महाशय सभासद चुने गए-

(१) करंजी श्री छन्नूलाल जी-श्री गोकुल मथुरा ३) [२] बाबू सूर्य्यबली सिंह, हेड टीचर तहसीली स्कूल-हल्लौर पो० डुमरिया गंज जिला बस्ती १॥) [३] पं० जगन्नाथ प्रसाद-प्र० अध्यापक-तहसीली स्कूल कुल पहाड़ हमीरपुर १॥) [४] पंडित बाबूराम शर्म्मा-ब्राह्मणपुरी-बुलन्दशहर ३) (५) पंडित ललिताप्रसाद अग्निहोत्री-मेनेजर को-आपरेटिव बैंक-काशी ३) (६) रेही घनश्यामलाल जी-श्री पारबती बहूजी का मन्दिर-गोकुल-मथुरा ३) (७) पं० बख़्त बहादुर पांडिया, अहलमद मुंसफी-शाहाबाद जि० हरदोई ३) (८) पं० काशीनाथ-शर्म्मा-हेड कापीस्ट मुंसफी शाहाबाद जि० हरदोई ३) (९) पं० शिवराम द्विवेदी वकील-शाहाबाद जि० हरदोई (१०) बाबू छोटेलाल हेड क्लर्क-दफ़्तर आबपाशी-रायपुरC-P-३) (११) पं० स्वामिराम शास्त्री, [illegible]सीसंगम-काशी १॥) (१२) बाबू पन्नालाल सिंह, निहालिया इस्टेट-[illegible] जैगंज-मुर्शिदाबाद ३) ।

५ सभासद होने के लिये निम्न लिखित नवीन महाशयों के [illegible]न पत्र उपस्थित किए गए-

(१) मिस्टर त्रिम्बक विष्णु गोडसे, हमहम स्ट्रीट, बम्बई (२) पं० गोपीनाथ चौबे, हेडमास्टर मिडिल स्कूल सहतवार-बलिया (३) पंडित प्रेम शंकर-फर्श बालूजी काशी (४) बाबू देवीप्रसाद C/o बाबू कालीचरण, रजीडण्ट का दफ़र-गोंडा (५) पंडित गुमारनाथ शर्म्मा बड़गांव गोंडा (६) पण्डित केशवदेव शास्त्री-काशी ।

(६) निम्न लिखित सभासदों के इस्तीफे उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए—

(१) बाबू सोभालाल-हाकिम सीगा माल-खेतड़ी (२) पण्डित बलदेवदत्त शर्म्मा, काशी ।

७ निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्व्वक स्वीकृत हुईं—

(१) राज्य चरखारी-विनय पत्रिका (२) लाला भगवानदीन लाहौरीटोला काशी-वीरप्रताप (३) पण्डित दामोदर प्रसाद शर्म्मा दानत्यागी मथुरा-दान दर्पण, ब्राह्मण अर्पण (४) पण्डित महादेव भट्ट आहियापुर प्रयाग-अरविन्द महिमा (५) खड्ग विलास प्रेस बांकीपुर-टाड राजस्थान संख्या १० (६) संयुक्त प्रदेश की गवर्नमेंट Annual Progress Report of the archeological Survey of Northern circle for the year ending 31st March 1908 (७) बाबू देवकीनन्दन खत्री काशी-चन्द्रकान्ता उपन्यास भाग १-४, चन्द्रकान्ता सन्तति भाग१-२४ (८) पण्डित श्यामविहारी मिश्र एम० ए० जौनपुर—जर्मनी का इतिहास (९) बाबू गंगा राम बम्बा वाला-प्रेमगंगा २ प्रति (१०)स्वामी सदगुरू प्रसाद शरन गोंडा-ब्रह्मोक्त श्री राम दिव्य स्तवस्-नाममाला (११) बाबू ब्रजचन्द काशी-स्मार्त धर्म (१२) बाबू कालीदास माणिक काशी-फुटवाल का खेल (१३) पंडित केदारनाथ काशी-सुरसारावाली (१४) खरीदीगई (१) रहनुमाय सेहत व सफाई (२) तांतिया की बहादुरी (३) जासूसी आखेट भाग १ और २ (४) चन्द्रिका (५) पद्मकुमारी प्रथम भाग (६) नवीन भा[illegible] (७) आनन्दीबाई (८) व्यक्त गणित पहिला और दूसरा भाग बीज गणित (१०) राजपूत कीर्ति (११) चन्द्रभूषण चरितामृत

जापान वृत्तान्त (१३) सिक्खों का साहस (१४) मृगाङ्क लेखा (१५) बर्नियर की भारत यात्रा तीसरा भाग (१६) अनङ्गरङ्ग पहला भाग (१७) हैदरअली (१८) शिशुपालन (१९) मानवी कमीशन (२०) Imperial Gazetteer of India Vols II & V-XIV (२१) नागरीप्रचारिणी सभा आरा (परिवर्तन में) नागरी हितैषिणी पत्रिका भाग ४ सं० १-३।

८ बाबू श्यामसुन्दरदास के प्रस्ताव पर सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि सभा को पण्डित रामनारायण मिश्र के जो इस सभा के सब से पुराने सभासदों और संस्थापकों में से हैं, काशी से बाहर जाने और इस प्रकार सभा को अपनी सहायता से वंचित करने का बहुत दुःख है। उन्होंने इस सभा की जितनी अमूल्य सेवा की है और सभा के स्थापित होने के समय से आज तक उसके कार्यों में जो उद्योग किया है तथा वे उसकी उन्नति में जो तत्पर रहे हैं उन सब के लिये सभा उनकी अत्यन्त अनुगृहीत है और उनकी सेवाओं के लिये हृदय से उनका आदर करती है तथा आशा करती है कि वे इसी प्रकार सभा पर स्नेह बनाए रहेंगे और दूर रहने पर भी इसे न भूलेंगे।

(९) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

---o---

प्रबन्धकारिणी सभा।

सोमवार ता० ९ नवम्बर १९०८ सन्ध्या के ५॥ बजे।

स्थान-सभाभवन।

उपस्थित।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी सभापति, पण्डित सूर्य्यदेव प्रसाद पाठक, बाबू गौरी शंकर प्रसाद, पण्डित सुरेन्द्रनाथ-

यण शर्म्मा, बाबू जुगुलकिशोर, बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०, बाबू गोपालदास ।

१ गत अधिवेशन (ता० १२ अकतूबर १९०८) का कार्य्यविवरण उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ ।

२ बाबू हरबक्श का २० सितम्बर १९०८ का पत्र उपस्थित किया गया जिसके साथ उन्होंने अपने "हिंट्स आन डिराइविंग" नामक पुस्तक के हिन्दी अनुवाद की एक प्रति भेजी थी और उसके विषय में सभा से एक प्रशंसा पत्र मांगा था ।

निश्चय हुआ कि सभा से पुस्तकों के लिये प्रशंसापत्र दिए जाने का नियम नहीं है पर इस पुस्तक के विषय में सभा की सम्मति वार्षिक रिपोर्ट में प्रकाशित की जायगी ।

३ बाबू नन्दकिशोर दयालसिंह का १८ अकतूबर १९०८ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने अपनी "सतशिक्षा दोहावली और छप्पै इतिहास महाराज श्री हरिश्चन्द्र वो महाराज श्री रघु के" नामक पुस्तक का कापी-राइट मोल ले लेने के लिये सभा से प्रार्थना की थी, और लिखा था कि सभा जिन शर्तों पर कहे उन्हीं शर्तों पर वे उसका कापी-राइट बेंच सकते हैं ।

निश्चय हुआ कि सभा को दुःख है कि वह धनाभाव से इस पुस्तक का कापी-राइट नहीं खरीद सकती ।

४ पण्डित रामजीवन नागर का २६ सितम्बर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि यदि सभा फार्बस साहब की रासमाला तथा पण्डित मनसुखराम सूर्यराम त्रिपाठी की "अस्तोदय" नामक पुसतक का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करे तो वे इन पुस्तकों का अनुवाद कर सकते हैं ।

निश्चय हुआ कि उनसे पूछा जाय कि वे किन शर्तों पर पुस्तकों का अनुवाद कर सकते हैं और कितने दिनों में [illegible]

समाप्त कर देंगे। उनका उत्तर आने पर यह विषय सभा में विचारार्थ उपस्थित किया जाय।

५ पण्डित रामचन्द्र शुक्ल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सभा के पुस्तकालय के अंग्रेजी विभाग से पुस्तकें लेने के लिये आज्ञा मांगी थी।

निश्चय हुआ कि इनको पुस्तकालय के अंग्रेजी विभाग से एक समय में एक पुस्तक दी जाया करे।

६ पण्डित श्यामविहारी मिश्र के निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थित किए गए। (क) कार्य्यकर्ताओं एवं प्रबन्धकारिणी सभा के सभासदों के चुनाव के लिये जो सूची सभा वितरित करती है उसमें प्रत्येक व्यक्ति का संक्षिप्त हाल भी लिखा जाया करे, (ख) राय बहादुर लाला बैजनाथ से प्रार्थना की जाय कि वे कृपा कर सभा से अपना इस्तीफा लौटा लें, [ग] सभाभवन में बिजली का कंडक्टर लगवाने के विषय में सभा लखनऊ के बाबू भगवती प्रसाद से सम्मति ले [घ] बाबू कन्हैयालाल बी० ए० रायपुर ने सभा को जो बहुमूल्य पुस्तकें दी हैं उनके लिये उन्हें विशेष धन्यवाद दिया जाय। [ङ] हिन्दी पुस्तकों की खोज विषयक संक्षिप्त वार्षिक रिपोर्ट जो गवर्न्मेंट द्वारा प्रकाशित नहीं होती सभा की पत्रिका अथवा ग्रन्थमाला द्वारा प्रकाशित की जाया करे।

निश्चय हुआ कि [क] यह प्रस्ताव आगामी अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किया जाय, [ख] पण्डित श्यामविहारी मिश्र को सूचना दी जाय कि रायबहादुर लाला बैजनाथ से अपना इस्तीफा लौटाने के लिये पहिले ही प्रार्थना की गई थी परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। [ग] इस विषय में बाबू भगवती प्रसाद से सम्मति ली जाय, [घ] बाबू कन्हैयालाल बी० ए० को इसके लिये विशेष धन्यवाद दिया जाय, [ङ] यह प्रस्ताव अगले अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किया जाय।

७ निश्चय हुआ कि आगमी अधिवेशन में इस विषय पर विचार किया जाय कि पण्डित रामनारायण के सम्मानार्थ, जिन्हों ने विशेष रूप से इस सभा की सेवा की है, सभा को क्या करना चाहिए।

८ सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

—o—

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय व्यय का हिसाब

[सितम्बर १९०८]

आय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	१३१	१५	१०½
सभासदों का चन्दा	८५०	७	०
पुस्तकों की बिक्री	१५७	११	३
रासो की बिक्री	१०८	१५	०
पुस्तकालय	४७	२	०
हिन्दी कोश	१००	०	०
फुटकर आय	८	४	०
अमानत	१०	१४	३
हिन्दी पुस्तक की खोज के लिये गवर्न्मेंट की सहायता	२५०	०	०
जोड़	१६६५	५	४½
देना ६००)			

व्यय	धन की संख्या		
आफिस के कार्यकर्ताओं का वेतन	१३८	५	७½
पुस्तकालय	६३	१०	३
पृथ्वीराज रासो	८८	०	०
नागरी प्रचार	३१	८	०
स्थायी कोश	६०	०	०
फुटकर	३१	०	१½
पुस्तकों की खोज	६३	८	०
डाक व्यय	५५	८	३
हिन्दी कोश	२७१	७	६
अमानत	५	०	६
छपाई	५७८	१४	३
पुस्तकों की बिक्री	६	८	३
	१४०५	८	३
बचत	२५८	१२	१½
जोड़	१६६५	५	४½

रोकड़ सभा में ८०≡)।=
बनारस बंक में १६८॥)॥।
२५८॥।)=

जुगुलकिशोर, मंत्री।

काशी नागरीप्रचारिणीसभा के आय व्यय का हिसाब

[अक्तूबर १९०[illegible]]

आय	धन की संख्या			व्यय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	२५८	१२	१½	आफ़िस के कार्यकर्ताओं का वेतन	१	१०	०
पुस्तकालय	४२	०	०	डाक व्यय	८	१५	६
पुस्तकों की बिक्री	१०२	०	०	पारितोषिक	३०	०	[illegible]
रासो की बिक्री	२७५	१	०	पुस्तकालय	११	१०	[illegible]
फुटकर आय	५	०	०	पुस्तकों की खोज	४०	७	[illegible]
सभासदों का चन्दा	८३	६	०	पुस्तकों की बिक्री	८	१२	[illegible]
जोड़	७६७	३	१½	पृथ्वीराज रासो	२८८	८	[illegible]
				हिन्दी कोश	५२	५	०
				फुटकर व्यय	८१	१०	[illegible]
					५३४	१३	[illegible]
				बचत	२३२	५	[illegible]
देना ६०००)				जोड़	७६७	२	[illegible]
				रोकड़ सभा में ६४॥-)॥ बनारस बंक १६७।≡)॥ २३२।-)॥			

जुगलकिशोर मंत्री

धर्म्म और विज्ञान

यह पुस्तक अंग्रेजी की पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है जिसको विलायत के मशहूर लेखक मि० ड्रेपर ने लिखा था अङ्गरेजी में इस पुस्तक का नाम—

"CONFLICT between RELIGION and SCIENCE"

है। यह पुस्तक एक हिन्दी के प्रेमी नरेश की अनुमति और सहायता से प्रकाशित हुई है। इसको "लक्ष्मी" के सम्पादक लाला भगवानदीन ने भावानुवाद किया है। रायल आठपेजी ३८७ पन्ने की जिल्द बंधी हुई पुस्तक है। पुस्तक नीचे लिखे पते पर मिल सकती है। मूल्य २)

पुस्तक का आशय

इस पुस्तक में "धर्म्म और विज्ञान" का परस्पर विरोध बतलाया गयाहै। अधिकांश मुकाबला ईसाई धर्म्म का दिखाया गया है इसमें इतने विषय हैं।

(१) विज्ञान का मूल कारण (२) क्रिश्चियन धर्म्म का मूल। राज्यबल पाकर उसका रूपान्तर विज्ञान से उसका संबंध (३) ईश्वर की एकता के सिद्धांत के विषय का झगड़ा (४) दक्षिण में फिर से विज्ञान का प्रचार (५) आत्मा के तत्व के विषय में झगड़ा उत्पत्ति और लय का सिद्धांत (६) इस विषय का झगड़ा कि जगत की आकृति कैसी है (७) पृथ्वी की आयु के विषय का वाद-विवाद। (८) सत्य के विषय का झगड़ा (९) विश्व के शासन के विषय का वाद-विवाद (१०) वर्त्तमान सभ्यता के साथ रोमन, ईसाई धर्म का संबंध (११) वर्त्तमान सभ्यता के साथ विज्ञान का सम्बंध (१२) समीपस्थ संकट

फुटबाल का खेल

हिन्दी द्वारा यदि आप अपने लड़कों को फुटबाल का खेल सिखलाना चाहते हैं या उनको इस खेल के नियमों को परिचय कराना चाहें तो बाबू कालीदास मानिक (सुपरिण्टेण्डेण्ट खेल कूद, हिन्दू-कालेज बनारस तथा सरल व्यायाम के रचियता) की रची पुस्तक को नीचे लिखे पते से मँगाइये।

माधो प्रसाद, पुस्तक कार्य्यालय
धर्म्मकूप बनारस।

यह पुस्तकें ।

पुस्तक कार्य्यालय व भारत प्रेस घसकूप बनारस से मिल सकती हैं ।

दुर्गेश नन्दिनी ! दुर्गेश नन्दिनी !!

ऐतिहासिक अति रोचक उपन्यास ।

यह बंगाल के मशहूर उपन्यास लेखक बाबू बङ्किमचन्द्र चट्टोपाध्याय लिखित ऐतिहासिक नावेल है [बाबू गदाधर सिंह द्वारा अनुवादित] अत्यन्त रोचक होने का ही कारण है कि तीसरी बार छपा है उम्दः अक्षर उम्दः काग़ज़ है । १ भाग ।≈) २ भाग ।≈)

——:-0-:——

महाराज छत्रसाल जी का जीवन चरित्र ।

चित्र सहित ।

विदित हो कि "बुन्देलखण्ड केशरी नामक पुस्तक छप गई है जिसमें बुन्देलखण्ड के महाराज छत्रसालजी के जीवन वृत्तान्त का लेख है, पद्य में लाल कवि कृत छत्र प्रकाश में भी महाराज की वीरता वर्णन है, किन्तु बुन्देलखण्ड केशरी में महाराज के जन्म से लेकर अन्त पर्यन्त उनकी समस्त वीरता धीरता, पुरुषार्थ, नीति [illegible]तुर्य्य और देशहितैषिता का क्रम से गद्य में वर्णन है साथ ही इसके [illegible]लखण्ड का संक्षिप्त इतिहास और प्राणनाथ जी का जीवन चरि[illegible] संक्षेप में है और तसवीर भी छत्रसाल जी की इसके साथ है ।

मूल्य २ भाग का ॥)

प्राचीन भारत वर्ष के सभ्यता का इतिहास।

(मि० रमेशचन्द्र दत्त के लिखे हुए पुस्तक का अनुवाद)

यह पुस्तक काशी "इतिहास प्रकाशक समिति" की ओर से छपी है। हिन्दी भाषा में अपने ढंग का नया इतिहास है और भाषा में इतिहास के अभाव को दूर कर रहा है। इस पुस्तक के अधिक विकने से नये २ इतिहास "समिति" की ओर से निकल सकेंगे अवश्य मंगाइये। मूल्य भाग पहिला १) भाग दूसरा १) भाग तीसरा १)

—:0:0:—

मेज़िनी का जीवन चरित्र।

आप इस जीवनी के लाभ को पढ़ने के बाद ही जान सकेंगे पंजाब के मशहूर लीडर ला० लाजपतराय की लिखी पुस्तक का अनुवाद है (बाबू केशव प्रसाद सिंह द्वारा अनुवादित)। दाम।)

—:0:-:-:0:—

महर्षि शंकर स्वामी का जीवन चरित्र।

यह पुस्तक पढ़ने योग्य है इसमें शंकर स्वामी के जीवनी पर बड़ी विद्वता के साथ बहस की है किताब बड़ी शिक्षादायक है ग्रन्थ करता का नाम पं० राजाराम प्रौफ़ेसर है। मूल्य ॥)

—;0|0:—

उपनिषद् भाषा अनुवाद।

भारत वर्ष की प्राचीन फ़िलोसोफ़ी का अनुवाद।

पं० राजाराम प्रोफ़ेसर द्वारा अनुवादित।

तलवकारोपनिषद	≈)॥	वायसनेयसंहितोपनिषद
प्रश्न-उपनिषद	।)	कठ-उपनिषद
माण्डूक्य-उपनिषद	।-)	वृहदारण्यक-उपनिषद

पारसियों का इतिहास।

(पारसी जाति के इतिहास का वर्णन है) पं० रामनारायण मिश्र बी० ए० द्वारालिखित। मूल्य ≈)

—:o:—

बनिता विनोद।

स्त्री शिक्षा के प्रेमियों को शुभ सम्वाद।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने स्त्रियों के पढ़ने की उत्तम पुस्तकों का अभाव देख कर राजा साहब भिंगा के प्रस्ताव और सहायता से एक अति शिक्षादायक "बनिता विनोद" नाम की पुस्तक छपवाई है। १९ उपयोगी विषय हिन्दी के १२ चुने हुए लेखकों की लिखी हुई है। मूल्य १)

—:o:o:—

लखनऊ की नवाबी चित्रों सहित।

यह ऐतिहासिक मनोहर पुस्तक सरल हिन्दी में उत्तम कागज़ पर छप गई है। इस पुस्तक में लखनऊ के बादशाह नसीरुद्दीन हैदर के समय का सच्चा वृत्तान्त है, जिसे एक अंग्रेज़ ने, जो बहुत दिनों तक उनके नौकर रह चुके थे, बड़े मनोहर रीति से लिखा है। इस में उनकी वे लहरबहर, जिनके लिए कि 'लखनऊ की नवाबी' विख्यात है, लिखी गई है। हाथियों, गेड़ों, शेरों की लड़ाईयां, शिकार के दृश्य ऐसी उत्तम रीति से दिखाए गए हैं कि वाह वाह। बादशाही महलों और ताजियेदारी इत्यादि के वर्णन इस उत्तमता के साथ लिखे गए हैं, मानो हुबहु वे दृश्य आंखों के सामने हो रहे हैं। पहिला भाग मूल्य ॥।) दूसरा भाग ॥।)

—o—

फूल में कांटा।

इस उपन्यास में बड़ी खूबी से साहूकारों के लड़कों के लाड ...व में बिगड़ने की अवस्था का ज़िक्र है यह पुस्तक एक अंग्रेज़ी ...यक "पापर मिलओनर" के आधार पर लिखी गई है। मूल्य ॥≈)

अष्टाध्यायी

पाणिनि सूत्र वृत्तिः

पं० जीवा राम शर्म्मा विरचित

(संस्कृत और भाषा व्याख्या सहित) मूल्य ३)

———o———

सरल व्यायाम ।

इस पुस्तक में लड़कियों के कसरत करने की रीति भली भांति बताई गई है इस में लग भग ५० तस्वीरें कसरत की हैं। मूल्य ।≈)

———o———

चीन दर्पण ।

यह "यात्रा" जिस समय बाक्सरों की लड़ाई हुई थी और हिन्दुस्तान के सिपाही भेजे गये थे उस समय डा० महेन्द्रलाल गर्ग ने अपने तजरुबे से लिखी है। दाम १।)

—:o:o:—

मेगास्थनीज़ ।

भारत वर्ष के लग भग २३०० वर्ष के पुराने वृत्तान्त के जानने का शौक है तो इस यात्री के लिखे वृत्तान्त को पढ़िये [काशी इतिहास प्रकाशक समिति ने छापा है] मूल्य ॥)

———o———

सोनारी ।

यह पुस्तक हिन्दी में सोनारों के फ़ायदे के लिए लिखी गई इस में कई बातें नई बताई गई हैं। सोनारों को बहुत फ़ायदा सकता है, जैसे सोना रंगना वग़ैरा, दाम ।)

देशी करघा।

यह ग्रंथ तयार हो गया है, आजकल जो लोग हैंड लूम के कारख़ाने खोलना चाहते हैं और इस विद्या के न जानने के सबब से हिम्मत नहीं करसकते या ज्यादा फ़ायदा नहीं उठा सकते उनको बहुत बड़ी मदद और जानकारी इस किताब से हो जायगी। इस के बारे में मिस्टर ए० सी० चटरजी आई० सी० एस० लिखते हैं:— "I have been very pleased to read your book on Handloom weaving..................as the first book on the subject in the Vernaculer, I hope it will have a good sale and your laudable efforts will meet with a due recognition" अर्थात् आपकी लिखी देशी करघा नामक किताब को पढ़ कर मैं बहुत खुश हुआ, चूंकि देशी ज़बान में यह पहिली ही किताब लिखी गई हैं, मुझे उमेद है कि इसकी खूब बिक्री होगी और आपको तारीफ़ काबिल मेहनत और काम की लोग खूब कदर करेंगे"। यह किताब पढ़ने लायक है और इसमें बहुत सी तस्वीरें भी दी गई हैं, दाम ॥)

---o---

सुघड़ दर्ज़िन।

नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।

स्त्री शिक्षा के लिए बहुत ही अपूर्व और उपयोगी ग्रंथ है। इस में सीने परोने, कसीदे काढ़ने, कपड़ों की मरम्मत करने, कपड़ों के काटने छांटने, मोज़े इत्यादि बुनने की तरकीबें बहुत ही उत्तम रीति से बताई गई हैं और साथ ही उत्तम उत्तम चित्र [illegible]कर उन्हें स्पष्ट कर दिया है मानो सोना और सुगन्धि हो गया [illegible] यह किताब ऐसी है कि हर गृहस्थ के यहां अवश्य रहनी [illegible]हिए। स्त्री शिक्षा के लिए ऐसा अनूठा ग्रंथ अब तक नहीं [illegible]था। दाम ॥।)

बाबू राधाकृष्णदास विरचित
प्रतापनाटक
का दूसरा संस्करण छप कर तय्यार है ।

मूल्य ।॥)

—o—

हैदरअली ।

टीपूसुलतान का बाप हैदरअली मैसूर का मशहूर नवाब हो गया है । इसकी जीवनी बड़ी ही दिल चस्प है । यह वह शख़्स है जो एक अदना तिलंगे से नवाब होगया और दक्खिन में इसका इतना दबदबा होगया था कि बड़ी बड़ी रियास्तें इसके नाम से कांपती थी । अंगरेजों को इससे बढ़ कर किसी दूसरी रियासत से हिन्दुस्तान में मुकाबला नहीं करना पड़ा—एक मरतबा तो इसने अंग्रेजों को हिला तक दिया था-यह सब वृत्तान्त इसमें पढ़नेही योग्य है अवश्य मंगा कर पढ़िये ॥)

—o—

बरनियर की यात्रा ।

शाह जहां, दारा, शुजा, औरङ्गजेब, मुराद, जहानआरा और रौशन आरा बेगम तथा प्रधानतः अनेक युक्तियों से औरङ्गजेब की गद्दी का अधिकार प्राप्त करने का हाल हैं १, भाग ॥) २, भाग ॥) ३, भाग ॥) ।

—

भीष्मपितामा का जीवन चरित्र ।

जिसको पंडित आर्य्य मुनि प्रोफेसर संस्कृत फिलासफी ए० वी० कालिज लाहोर ने लिखा है पुस्तक बड़ी शिक्षा द[illegible] है मूल्य ।)

इतिहास, इतिहास

जापान ! जापान !! जापान !!!

आपको जापान के इतिहास पढ़ने का शौक हो तो पं० रामनारायण बी० ए० का लिखा हुआ जापान का इतिहास जो नागरीप्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित है मंगाइये कीमत कुल ।≠)

स्वास्थ्यरक्षा।

"हिंदुस्तानी स्वास्थ्यरक्षा" यह पुस्तक स्वास्थ के प्रेमियों को अवश्य मंगाना चाहिये काशी के मशहूर डाकृर छन्नूलाल जी ने स्वयम लिखा है मूल्य ।

एडवर्ड तिलक यात्रा ।

महाराज धिराज एडवर्ड सप्तम के लंडन राजतिलक महात्सव का आंखों देखा वर्णन है जिसको ठाकुर गदाधरसिंह जी ने लिखा है किताव वड़ी रोचक है मूल्य ॥≠)

स्वदेशी आन्दोलन और वायकाट ।

इस लखे को पं० माधवरावसप्रे बी० ए० ने सुप्रसिद्ध देशभक्त श्री युत वाल गंगाधर तिलक बी०ए०एल०एल बी द्वारा लिखित का अनुवाद किया है मूल्य ≠)॥

सुन्दर सरोजनी ।

[illegible]प्राकृतिक, मनोहरता, प्रेम मैत्री. और लङ्काभ्रमण का अत्यन्त [illegible]क संयोगांत उपन्यास है पं० देवीप्रसाद द्वारा विरचित [illegible]य ।≠)

जीवनचरित्र।

कबिराज लच्छीराम का जीवन चरित्र	≡)
छत्रपति महाराज शिवाजी का जीवन चरित्र बाबूकार्तिक प्रसाद	।)
जेरी बाल्डी...पं० सिद्धेश्वर शर्म्मा	-)॥
विशुद्ध चरित्रावली...पं माधवप्रसाद	॥≡)
महाराज विक्रमादित्य का जीवनचरित्र...बा कार्तिकप्रसाद	≡)
मुहम्मद का जीवनचरित्र...पं जगन्नाथप्रसाद	॥)
मीराबाई का जीवन चरित्र...बा कार्तिकप्रसाद	≡)
बाबू हरिश्चन्द्र का जीवन चरित्र...बा राधाकृष्णदास	॥≡)
अशोक का जीवन चरित्र...ठाकुर सूर्य्य कुमार वर्म्मा	।)
छत्र प्रकाश महाराज छत्रसाल की तथा छन्द बद्ध	१।)
बाबू कार्तिकप्रसाद बाबू बालमुकन्द वर्म्मा	≡)
रामकृष्ण परमहंस का जीवनचरित्र	≋)

पुस्तक मिलने का पता:—

मनेजर

पुस्तक कार्य्यालय भारत प्रेस

धर्म्म कूप

बनारस

सभा के पारितोषिकों की सूची।

१ इस वर्ष के सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं। ये लेख ३१ दिसम्बर १९०८ तक सभा में आजाने चाहिएं।

वैज्ञानिक विषय।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव।

साधारण (विद्या) विषय।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था।

२ डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल—यह सोने का मेडल उस व्यक्ति को दिया जायगा जिसका लेख "छूत वाले रोग और उनसे बचने के उपाय" पर सबसे उत्तम होगा। लेख सरल हिन्दी में होना चाहिए और सभा के पास ता० ३१ दिसम्बर १९०८ तक आजाना चाहिए।

३ संयुक्त प्रदेश के न्यायालयों में जो अर्जीनवीस सब से अधिक अर्जियां लिखकर सन् १९०८ में दाखिल करेगा उसे २५) रु० का एक पुरस्कार दिया जायगा और जो उससे कम अर्जियां देगा उसे १५) रु० पुरस्कार दिया जायगा। ये पुरस्कार एकही ज़िले के दो अर्जीनवीसों को न मिलेंगे। न वे इसे पा सकेंगे जो सभा की ओर से इस कार्य के लिये वेतन पर नियत हैं। जो लोग इस पुरस्कार को पाया चाहें उन्हें उचित है कि दो प्रतिष्ठित वकीलों के हस्ताक्षर सहित ७ जनवरी १९०९ तक सभा को सूचना दें कि उन्होंने कितनी अर्जियां सन् १९०८ में दाखिल की हैं।

५००) का पुरस्कार—सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका के आधार पर जो हिन्दी का सब से उत्तम व्याकरण लिखेगा उसे यह पुरस्कार दिया जायगा। व्याकरण ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा के पास आजाना चाहिए। यदि कई व्याकरणों के भिन्न भिन्न अंश उत्तम समझे जांयगे तो यह पुरस्कार उन सब लोगों में बाँट दिया जायगा और उन ग्रन्थों को घटाने बढ़ाने आदि का इस सभा को पूरा अधिकार होगा। सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका दो पैसे का टिकट डाक व्यय के लिये भेजने पर सभा के मंत्री से मिल सकती है।

भाग १३] *Registered No. A 414* [संख्या ६

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

सम्पादक--श्यामसुन्दर दास बी० ए०

प्रति मास की १५ ता० को
काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।
दिसम्बर १९०८।

Printed by Madho Prasad at the Bharat Press, Benares,
for B. Jugul Kishore, Publisher.

प्रति संख्या का मूल्य =) वार्षिक मूल्य १)

विषय ।

प्रार्थना ।

जिन सभासदों ने अभी तक सभा का वार्षिक चन्दा भेजने की कृपा नहीं की उनसे प्रार्थना है कि उसे शीघ्र ही भेज कर अनुगृहीत करें ।

जुगलकिशोर
मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा

दूसरी भी कई एक ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख मिलता है। चीन का इतिहास लिखने वालों में पहिला पुरुष सुमाचिन था, जिसने अपनी पुस्तक ई० स० पूर्व १०० के आस पास लिखी थी, जिसका फ्रेंच अनुवाद एम चैवन्निस (M. Chavannes) नामक फ्रेंच विद्वान ने किया है। उसी विद्वान ने "मैमोयर" नामक फ्रेंच पुस्तक में चीन की और भी ऐतिहासिक पुस्तकों का सारांश दिया है। एशिआटिक् जर्नल नामक फ्रेंच पत्रिका में भी चीन की ऐतिहासिक पुस्तकों के आधार पर हिन्दुस्तान के प्राचीन इतिहास से संबंध रखने वाले विषयों पर कई एक लेख छपे हैं, परन्तु उनमें से बहुत कम के अंग्रेजी अनुवाद हुए हैं।

(२) फाहियान—प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान ई०स० ३९९ में चीन से यात्रार्थ निकला और गंगा के निकटवर्ती प्रदेशों तथा सीलोन में ठहरता हुआ ई० स० ४१४ में चीन को लौटा। उस समय उत्तरी हिन्दुस्तान [नर्मदा से उत्तर के समस्त देश] का राजा गुप्तवंशी चंद्रगुप्त (दूसरा) था, जिसका प्रसिद्ध ख़िताब विक्रमादित्य था। फाहियान उसके राज्य में ६ वर्ष के करीब रहा था। उसने अपनी यात्रा की 'फो-को-की' नामक पुस्तक में चंद्रगुप्त की मुख्य राजधानी पाटलीपुत्र (पटना) का, वहां के औषधालय आदि का तथा उसके विस्तृत राज्य के अधीन के अनेक स्थानों का जो वृत्तान्त लिखा है उससे उक्त राजा के राज्य की वास्तविक दशा प्रगट होती है। उक्त पुस्तक के दो अंग्रेजी अनुवाद छपे हैं जिनमें प्रोफेसर जेम्स लग्गे (James Lugge) का अनुवाद विशेष उपयोगी है।

(३) संगयुंनू और हूीसंग—ये दोनों यात्री ई० स० ५१८ के क़रीब इस देश में आए थे । इनकी यात्रा की पुस्तक से भी कई उपयोगी बातें मिल जाती हैं । उसका अंग्रेजी अनुवाद सेम्युल बील साहिब ने हुएन्त्सांग की यात्रा की पुस्तक के उपोद्घात में छपवाया है ।

(४) हुएन्त्सांग—प्रसिद्ध चीनी यात्री हुएन्त्सांग ई० स० ६२९ और ६४५ के बीच क़रीब क़रीब सारे भारतवर्ष में फिरा था और जहां जहां वह गया वहां का हाल उसने अपनी पुस्तक में लिखा है, जो 'सी यु-की' नाम से प्रसिद्ध है । उस समय सारे भारतवर्ष में दो ही प्रबल राजा थे-नर्मदा से उत्तर में कन्नौज का वैशवंशी राजा हर्ष (हर्षवर्द्धन) और दक्षिण में सोलंकी पुलुकेशी (दूसरा), जिनमें से हर्ष के साथ तो वह कई मास तक रहा था । उक्त पुस्तक से उस समय की इस देश की दशा, लोगों के रीति रिवाज़, धर्माचरण आदि अनेक उपयोगी विषयों के अतिरिक्त अशोक, कनिष्क, मिहिरकुल, हर्ष (हर्षवर्द्धन) पुलकेशी आदि कई राजाओं का, अनेक विद्वानों तथा उनकी पुस्तकों का एवं अनेक राज्यों का वृत्तान्त मिलता है । भारतवर्ष के प्राचीन भूगोल के लिये इससे बढ़कर कोई पुस्तक नहीं है । उक्त अमूल्य पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद सेम्युअल बील साहिब ने 'बुद्धिस्ट रैकर्ड आफ दी वेस्टर्न वर्ल्ड' नामक पुस्तक (दो जिल्दों] में किया है , और वाटर्स [टी०] नाम विद्वान ने उक्त विषय में दो जिल्दें और प्रकाशित की जो बहुत उत्तम हैं (Watter's On Yuan Chuang's Travels)

[५] हुएन्त्संग का जीवनचरित्र—हूली तथा येन्त्संग नामक दो श्रमणों [बौद्ध साधुओं] ने मिलकर उपर्युक्त हुएन्त्संग का जीवनचरित्र लिखा है। उनमें से हूली तो उस [हुएन्त्संग] का शिष्य था। यह पुस्तक भी हमारे यहां के इतिहास के लिये बहुत उपयोगी है। इसका अंग्रेजी अनुवाद उपर्युक्त सेम्युअल बील साहिब ने प्रकाशित किया है।

[६] इत्सिंग—यह चीनी यात्री ई० स० ६७१ से ६९५ तक हिन्दुस्तान के कुछ हिस्सों तथा मालय प्रायद्वीप में ठहरा था। इसकी 'नन-है-चि-कुइ-ने-फाचुअन्' नामक पुस्तक उस समय के हमारे यहां के बौद्धों के धर्माचरण का ज्ञान सम्पादन करने के लिये अपूर्व है, एवं उससे कई ऐतिहासिक घटनाओं का भी पता लगता है। उक्त पुस्तक का ३४ वां प्रकरण, जिसमें यहां की पठन पाठन की शैली का वर्णन है देखने योग्य है। इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद जापानी विद्वान् टाकाकुसु ने छपवाया है।

उपर्युक्त यात्रियों के अतिरिक्त अनेक दूसरे चीनी यात्री भी इस देश में आए थे, जिनके नाम आदि का उल्लेख मिलता है परन्तु उनकी यात्रा संबंधी पुस्तकों के होने न होने का हाल मालूम नहीं हुआ।

चीनियों की धर्मसंबंधी पुस्तकों से हमारे यहां की अनेक प्राचीन पुस्तकों का जो अब यहां पर नहीं मिलतीं [illegible]ता लगता है और अनेक ग्रन्थकर्ताओं तथा धर्माचार्यों [illegible] हाल मिलता है, एवं उन विद्वानों के नाम तथा समय मालूम होते हैं जिन्होंने चीन में जाकर अनेक संस्कृत

पुस्तकों का वहां की भाषा में अनुवाद किया अथवा उस काम में सहायता दी थी। इस विषय में बन्युनंजिओ (Bunyin Nanjio) की कैटेलाग आफ़ दी बुद्धिस्ट त्रिपिटक नामक पुस्तक बहुत उपयोगी है।

[इ] तिब्बत वालों की पुस्तकें–तिब्बत की पुस्तकों की अब तक विशेष खोज नहीं हुई, तथापि जिन पुस्तकों का पता लगा है उनसे हमारे यहां की कितनी ही प्राचीन पुस्तकों (जो अब यहां पर नहीं मिलतीं) तथा उनके कर्ताओं के नाम आदि मालूम होते हैं कुन्संजिंग (Kunsnjing = तरानाथ) नामक तिब्बत के श्रमण [बौद्धसाधु] ने भारतवर्ष का बौद्धधर्म नामक पुस्तक ई० स० १६०८ में लिखी जिसमें हमारे यहां के इतिहास विषय की, कई जानने योग्य घटनाओं का उल्लेख मिलता है। उक्त पुस्तक का जर्मन अनुवाद शिफनर (Schiefner) नामक जर्मन विद्वान् ने किया है।

[ई] सीलोनवालों की पुस्तकें–सीलोन के साथ भारतवर्ष का निकट का संबंध होने के कारण वहां की ऐतिहासिक तथा धर्म संबंधी पुस्तकों से हमारे यहां के इतिहास में कुछ सहायता मिलती है 'ऐसी पुस्तकों में मुख्य निम्न लिखित हैं।

[१] दीपवंश–सीलोन के इतिहास की यह पुस्तक ई० स० ३०० के क़रीब पाली भाषा में बनी थी, जिसमें भारतवर्ष के मौर्यवंशी राजाओं का तथा कुछ कुछ दूसरा वृत्तान्त भी मिलता है। इसका अंग्रेजी अनुवाद ओल्डनबर्ग (Oldenberg) साहब ने प्रकाशित किया है।

[२] महावंश—पालीभाषा की इस पुस्तक में ई० स० पूर्व की छठी शताब्दी से ई० स० की १८ वीं शताब्दी के मध्य तक का सीलोन का इतिहास है। यह पुस्तक भी राजतरंगिणी की नाईं समय समय पर लिखी गई थी। इसका प्रथम खंड ई० स० ४५९ और ४७७ के बीच महानामन् नामक विद्वान् ने लिखा था। भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास के लिये यह पुस्तक उपर्युक्त दीपवंश की अपेक्षा अधिक उपयोगी है क्योंकि इसमें शिशुनाग तथा मौर्यवंशी राजाओं के समय की ऐतिहासिक घटनाओं के अतिरिक्त पिछले समय का भी कुछ कुछ हाल मिल जाता है। इसके प्रथम खंड का अंग्रेजी अनुवाद जार्ज टर्नर (George Turnour) ने तथा बाकी का विजयसिंह मुडलिअर ने किया है।

(३) मलिंदपन्हो (मलिंदप्रश्न)—पाली भाषा की इस पुस्तक में प्रतापी यूनानी बादशाह मलिंद अर्थात् (मिनैंडर) और बौद्ध स्थविर नागसेन के प्रश्नोत्तर हैं। इससे मलिंद (मिनैंडर) के जन्मस्थान, राजधानी, प्रताप, विद्वत्ता तथा बौद्धधर्म ग्रहण करने आदि का बोध होता है। हिन्दुस्तान के यूनानी राजकर्त्ताओं का इतिहास लिखने में इस पुस्तक से कुछ कुछ सहायता मिल सकती है। इसका अंग्रेज़ी अनुवाद 'सेक्रेड बुक्स आफ दी ईस्ट' नामक सीरीज़ की ३५वीं जिल्द में छपा है।

(उ) मुसल्मानों की पुस्तकें—भारतवर्ष के समस्त हिन्दू [राज]्यों की स्वतंत्रता क्रम क्रम से मुसल्मानों ने नष्ट की, [उ]नके यहां इतिहास लिखने की प्रथा थी, जिससे उनके लिखी हुई अरबी तथा फ़ारसी भाषा की पुस्तकों में विशेष

कर हमारे यहां के भिन्न भिन्न हिन्दू राज्यों का पिछला वृत्तान्त मिल जाता है। उनकी पुस्तकें इतनी हैं कि उन सब का ब्योरा इस छोटे से लेख में देना अशक्य है अतएव हम यहां पर थोड़े से मुख्य मुख्य और प्राचीन ग्रन्थों का ही उल्लेख करते हैं—

(१) सिलिसलातुत्तवारीख़—यह पुस्तक सुलेमान नामक व्यापारी ने ई० स० ८५१ में अरबी भाषा में लिखी थी, जिसमें उसने हिन्दुस्तान आदि की अपनी यात्रा का वृत्तान्त दिया है। उसके समय में दक्षिण के मान्यखेट (मानकेर-निज़ाम के राज्य में) नगर में राठौड़ वंश का राजा अमोघवर्ष (प्रथम) और कन्नौज में पड़िहार वंश का राजा भोजदेव (प्रथम) राज्य करता था। सुलेमान ने उक्त दोनों के राज्यों का वृत्तान्त लिखा है, जिसमें राठौड़ों के लिये उसने बलहरा शब्द का प्रयोग किया है, जो उनके प्रसिद्ध ख़िताब 'वल्लभराज' का प्राकृत रूप (बलहराय) है।

(२) मुरूजुलज़हब—अल्मसूदी ने ई० स० की दसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में इस पुस्तक को बनाया था, जिसमें मान्यखेट, कन्नौज आदि के राज्यों का कुछ कुछ वृत्तान्त है।

उपर्युक्त दोनों पुस्तकों का अंग्रेज़ी सारांश सर् एच० एम० इलियट की 'हिस्टरी आफ इंडिआ' (The History of India as told by its own Historians) की पहिली जिल्द में छपा है।

[३] तहक़ीक़े हिन्द—प्रसिद्ध मुसल्मान ज्योतिषी अबुरिहाँ अल्बेरुनी ने, जो सुल्तान महमूद ग़ज़नवी के समय हिन्दुस्तान में आया और जिसने कई बरसों तक यहां रह कर

संस्कृत पढ़ी थी, ई० स० १०३१ के क़रीब यह किताब अरबी में लिखी थी, जिसमें हिन्दुओं के धर्मसंबंधी विचार तथा भिन्न भिन्न शास्त्रों के वर्णन के अतिरिक्त कई प्राचीन संवतों का हाल तथा कुछ कुछ ऐतिहासिक वृत्तान्त भी मिल जाता है। डाक्टर ऐडवर्ड साचू (Dr. Edward Sachau) ने इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित किया है।

[४] चचनामा—यह पुस्तक ई० स० की ८ वीं शताब्दी के मध्य के क़रीब अरबी में बनी थी, जिसका फ़ारसी अनुवाद मुहम्मद अली बिन् हमीद ने ई० स० की तेरहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में किया था। इसमें मुसल्मानों के पहिले सिंध पर राज्य करने वाले हिन्दू राजाओं का वृत्तान्त है [जो अन्य किसी प्रकार की सामग्री से नहीं मिल सकता] सिंध पर से हिन्दू राज्य मिट जाने तथा मुसल्मानों का आधिपत्य जमने का हाल अलिबलादुरी की बनाई हुई 'फ़ुतूहल् बुल्दान,' मीर मासूम की 'तारीखुस्सिंध,' मीर ताहिर मुहम्मद की 'तारीख़ ताहिरी,' 'बेगलर्नामा' जो अमीर सय्यद कासिम के बेटे शाह क़ासिम खां ने बनवाया था [ग्रंथकर्ता ने अपना नाम नहीं दिया], सय्यद जमाल का तरख़ांनामा [जिसको 'अरगूंनामा' भी कहते हैं], अली शेरख़ानी की 'तुहफ़ेतुल्किराम' तथा 'मजमुआउत्तवारीख़' आदि किताबों से भी मिलता है, परन्तु इन सब में चचनामा पुरानी पुस्तक है। नागरीप्रचारिणी पत्रिका के १२ वें भाग में मुंशी [illegible]ी प्रसादजी का लिखा हुआ 'हिन्दुस्तान का इतिहास' [illegible]मक लेख जो छप रहा है उसका दूसरा प्रकरण [सिंध में हिन्दू राज्य] इन्हीं पुस्तकों के आधार पर लिखा गया है।

इन पुस्तकों का ऐतिहासिक सारांश उपर्युक्त इलियट साहिब की 'हिस्टरी आफ इंडिआ' की पहिली जिल्द में छप चुका है।

[५] तारीख़ यमीनी–यह अरबी पुस्तक अल् उत्बी ने ई० स० १०२० में रची थी, जिसमें सुल्तान महमूद ग़ज़नवी की उस समय तक की हिन्दुस्तान पर की चढ़ाइयों का वृत्तान्त है। उत्बी उक्त सुल्तान का समकालीन लेखक होने से उसकी पुस्तक विशेष उपयोगी है।

[६] तारीखुस्सुबुक्तगीन–इस किताब को ख्वाजह अबुल्फ़ज़ल ने ई० स० १०५९ में बनाया था, जिसमें ग़ज़नी के सुल्तान महमूद ग़ज़वनी के पुत्र सुल्तान नासिरुद्दीन मसूद के समय बनारस, हांसी आदि पर मुसल्मानों की जो चढ़ाइयां हुईं उनका हाल है।

[७] जामेउल्हिकायत–यह पुस्तक मुहम्मद ऊफ़ी ने ई० स० की तेरहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में लिखी थी, जिसमें जयसिंह [सिद्धराज], कुमारपाल आदि का वृत्तान्त मिलता है।

[८] ताजुलमआसिर–ई० स० १२३० के आसपास हसन निज़ामी ने इसकी रचना की थी। इसमें शहाबुद्दीन ग़ोरी और कुतबुद्दीन ऐबक के समय देहली, अजमेर, मीरट, कोल, अस्नी, बनारस, ग्वालिअर, नेहरवाला [अणहिलवाड़ा] कलिंजर, जालौर आदि के हिन्दू राजाओं पर मुसल्मानों ने जो चढ़ाइयां कीं उनका हाल है।

[९] कामिलुत्तवारीख–इब्न असीर ने ई० स० १२३० क़रीब इसको बनाया था। इसमें अबदुल्मलिक की अधीनता में [ई० स० ८७५ में] समुद्र मार्ग से हिन्दुस्तान

[काठिआवाड़ पर] मुसल्मानों की चढ़ाई होने, बलब [शायद प्रसिद्ध वल्लभीपुर हो] को विजय करने, तथा बनारस के राजा जयचन्द के मारे जाने का वृत्तान्त है।

उपर्युक्त किताबों [नं० ५ से ९ तक] का अंग्रेज़ी सारांश इलियट साहिब की, 'हिस्टरी आफ् इंडिआ' की जिल्द दूसरी में छपा है।

[१०] तबक़ाते नासिरी—मिन्हाजुस्सिराज ने ई० स० १२५९ में इस पुस्तक की रचना की थी। इसमें उक्त समय तक भिन्न भिन्न हिन्दू राज्यों पर मुसल्मानों की जो जो चढ़ाइयां हुईं उनका विस्तृत वृत्तान्त है। यह पुस्तक इतिहास के लिये बहुत उपयोगी है। रावरटी (Raverty) साहिब का किया हुआ इसका अंग्रेज़ी अनुवाद बंगाल एशिआटिक् सोसाइटी की बिब्लिओथिका इंडिका नामक सीरीज़ में छपा है।

[११] तारीख अलाई—प्रसिद्ध हिन्दी कवि अमीर खुस्रो ने (जिसका देहान्त ई० स० १३३५ में हुआ था) देहली के बादशाह अलाउद्दीन ख़िलजी के समय यह किताब बनाई थी, जिसमें उक्त बादशाह की रणथंभोर, मालवा, चित्तौड़, देवगिरि, सिवाना, मलबार, मदुरा आदि पर की चढ़ाइयों का हाल है। अमीर खुस्रो ने इस पुस्तक में अपने समय की घटनाओं का उल्लेख किया है अतएव यह पुस्तक उस समय के इतिहास के लिये विशेष उपयोगी है। इसका अंग्रेजी सारांश इलियट साहिब की हिस्टरी आफ इंडिया [की] तीसरी जिल्द में छपा है।

[१२] तारीख फ़रिश्ता—मुहम्मद कासिम (फ़रिश्ता) ने अकबर बादशाह के समय में यह किताब बनाई थी, जिसमें

देहली, कुलवर्गा, बीजापुर, अहमदनगर, गोलकोंडा, बराड़, बीदर, गुजरात (अहमदाबाद), मालवा (मांडू), खानदेश, बंगाल और बिहार, जौनपुर, मुलतान, सिंध और ठट्टा, तथा कश्मीर के मुसल्मान राज्यों का (उस समय तक का) वृत्तान्त अनेक पुस्तकों के आधार पर लिखा है। मुसल्मानों के समय के इस देश के इतिहास की यह अपूर्व पुस्तक है, और इस एक ही पुस्तक से भिन्न भिन्न हिन्दू राज्यों के अस्त होने का बहुत कुछ वृत्तान्त मिल जाता है। इसके दो अंग्रेजी अनुवाद छप चुके हैं।

जिनसे हमारे यहां के इतिहास में कुछ सहायता मिल सके, ऐसी अरबी तथा फ़ारसी भाषा के और भी कितनी ही पुस्तकें हैं, जिनका स्थानाभाव के कारण हम यहां पर उल्लेख नहीं कर सके। उनमें से बहुतों का अंग्रेज़ी सारांश इलियट साहिब की 'हिस्टरी आफ इंडिआ' (जिल्दें ८) तथा बेले साहिब (Sir E.C. Baylay) की 'हिस्टरी आफ गुजरात' में छपा है।

(ग) प्राचीन शिलालेख और ताम्रपत्र।

भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास के लिये सब से अधिक सहायता देने वाले शिलालेख और ताम्रपत्र (दानपत्र) हैं। शिलालेख बहुधा चट्टानों; स्तंभों; मंदिर, मठ, स्तूप, तालाब, बावड़ी आदि में लगी हुई अथवा गांवों और खेतों के बीच गड़ी हुई पत्थर की शिलाओं, मूर्तियों के आसनों तथा स्तूपों के अन्दर रक्खे हुए पाषाण के पात्रों पर (जिनमें बहुधा किसी धर्माचार्य की हड्डी आदि रक्खी

जाती थी) खुदे हुए होते हैं, और संस्कृत, प्राकृत, तामिल, कनाड़ी आदि भारतवर्ष की भिन्न भिन्न भाषाओं में (गद्य तथा पद्य दोनों में) मिलते हैं। जिनमें राजा आदि की प्रशंसा होती है उनको 'प्रशस्ति' भी कहते हैं। शिलालेख पिशावर से कन्याकुमारी तक और द्वारिका से आसाम तक सर्वत्र मिलते हैं, कहीं कम कहीं अधिक। नर्मदा से उत्तर के प्रदेश की अपेक्षा दक्षिण में ये बहुत अधिक मिलते हैं, जिसका कारण यह है कि उधर मुसल्मानों का अत्याचार उत्तर की अपेक्षा बहुत कम हुआ। अब तक कई हज़ार शिलालेख मिल चुके हैं, जिनमें सब से पुराना ई० स० पूर्व ४५० के आस पास का, शाक्य जाति के क्षत्रियों के बनाए हुए पिप्रावा (नेपाल की तराई में) के स्तूप से निकले हुए पत्थर के पात्र पर (जिसमें बुद्ध देव की हड्डियां रक्खी गई थीं) खुदा हुआ है, और सब से पिछले ई० स० की १९ वीं शताब्दी के कई एक मिले हैं। शिलालेखों में से अधिकतर धर्मसंबंधी कामों अर्थात् मंदिर, मठ, स्तूप, गुफा, तालाव आदि के बनवाने या उनका जीर्णोद्धार कराने, मूर्तियों के स्थापन करने या किसी प्रकार का दान देने के सूचक होते हैं, जिनमें से कितने ही में उक्त धर्मकार्य से संबंध रखने वाले व्यक्ति के अतिरिक्त उक्त समय के वहां के राजा या उस (राजा) के वंश का भी वृत्तान्त होता है। राजवंशियों तथा रानियों के बनवाए हुए मंदिरादि के लेखों में [कभी] कभी विशेष रूप से उनके वंश का वृत्तान्त मिल[ता] है। दूसरे प्रकार के शिला लेखों (अर्थात् जिनका धर्मकार्य से संबंध नहीं है) में से किसी में राजाज्ञा, किसी

किसी में विजय आदि किसी प्रसिद्ध घटना का उल्लेख, किसी में एक या अनेक राजाओं की प्रशंसा या उनका कुछ कुछ ऐतिहासिक वृत्तान्त और किसी में उनकी वंश परंपरा मिलती है। कई शिला लेख ऐसे भी मिले हैं, कि जिनमें वीर पुरुषों के युद्ध में मारे जाने, स्त्रियों के अपने पति के साथ सती होने, शेर आदि हिंसक जानवरों द्वारा किसी की मृत्यु होने, पंचायत से फैसला होने, धर्म विरुद्ध किसी कार्य को न करने की प्रतिज्ञा करने, अपनी इच्छा से अग्नि में बैठ कर (पुरुषों के) शरीरान्त करने या भिन्न भिन्न धर्मावलंबियों के बीच के बखेड़े की समाधानी होने का उल्लेख मिलता है। शिला पर लेख खुदवाने का मुख्य अभिप्राय यही है, कि उक्त धर्मकार्य या घटना की एवं उससे संबंध रखने वाले व्यक्ति की यादगार चिरस्थायी रहे। इसी अभिप्राय से राजाओं तथा धनाढ्य पुरुषों ने कितनी पुस्तकों[1] को भी शिलाओं पर खुदवा डाला था।

(१) अजमेर के चौहान राजा विग्रहराज (बीसलदेव) ने अपने रचे हुए "हरकेलि नाटक" को तथा अपने राजकवि सोमेश्वर पंडित के रचे हुए "ललित विग्रहराज नाटक" को शिलाओं पर खुदवा कर अपनी बनवाई हुई अजमेर की पाठशाला में (जिसको अब ढाई दिन का झोपड़ा कहते हैं) रखवाया था। परमार राजा भोजदेव की बनवाई हुई धारानगरी की "सरस्वतिकंठाभरण" नामक पाठशाला से (जो अब कमलमौला नाम से प्रसिद्ध है) "कूमार शतक, काव्य," "पारिजातमंजरी नाटिका" आदि पुस्तकें शिलाओं पर खुदी हुई मिली हैं। सेठ लोलाक ने "उन्नतशिखर पुराण" नामक जैन (दिगंबर) पुस्तक को बीजोल्यां (मेवाड़ में) के पास की एक चट्टान पर वि० सं० १२२६ (ई० स० ११७०) में खुदवाया था, जो अब तक सुरक्षित है, और मेवाड़ के माहराणा राजसिंह ने "राज प्रशस्ति" नामक २५ सर्ग का काव्य बड़ी बड़ी २५ शिलाओं पर खुदवा कर अपने बनवाए हुए राजसमुद्र नामक बड़े ताल की पाल पर लगवाया था जो अब तक वहां पर विद्यमान है।

राजाओं तथा सर्दारों की तरफ़ से ब्राह्मणों, साधुओं, धर्माचार्यों, देवमंदिरों, मठों वगैरह को दी हुई भूमि (गांव, क्षेत्र आदि) की सनद अथवा दूसरी किसी प्रकार की सनद अथवा दूसरी किसी प्रकार की सनद जो तांबे के पत्रों पर खुदवा कर दी जाती है उसको ताम्रपत्र कहते हैं और जिसमें दान का उल्लेख होता है उसको दानपत्र भी कहते हैं। ताम्रपत्र अक्सर खेतों में गड़े हुए अथवा मकानों की दीवारों या नीवों में धरे हुए मिलते हैं और कभी कभी कुंओं में से भी निकल आते हैं। कितने एक ताम्रपत्र एक ही पत्रे पर खुदे होते है परन्तु प्राचीन ताम्रपत्र बहुधा अधिक पत्रों पर खुदे हुए मिलते हैं, जिनमें से पहिला तथा अन्तिम पत्र एक ही (भीतर की) ओर खुदा रहता है, और सब पत्रे कड़ियों से जुड़े रहते हैं, ताम्रपत्र अधिकतर दान के ही सूचक होते हैं, जिनमें दान देनेवाले और लेनेवाले के नाम आदि के अतिरिक्त दान देनेवाले (राजा, सामंत आदि) के वंश का वृत्तान्त भी होता है। अब तक सैंकड़ों ताम्रपात्र मिल चुके हैं।

प्राचीन शिलालेख और ताम्रपत्र हमारे प्राचीन इतिहास के लिये बहुत ही उपयोगी हैं, क्योंकि इनसे मौर्य, शातकर्णी (आंध्रभृत्य), शक, क्षत्रप, कुषन (तुर्क), अभीर, गुप्त, पल्लव, हूण, यौद्धेय, बैश, लिच्छवि, मौखरी, मैत्रक, गुहिल, सोलंकी, पड़िहार, परमार, चौहान, राठौड़, कछ-[illegible]हा, तंवर, कलचुरि (हैहयवंशी), चंदेल, यादव, गुर्जर, [illegible]ल, सेन, कदंब, शिलारा, सेंद्रक, काकतीय, नाग, निकुंभ, गंगा, बाण, चोल आदि कितने ही राजवंशों का बहुत कुछ

वृत्तान्त, उनकी वंशावलियां तथा अनेक राजाओं के राज्याभिषेक तथा देहांत के निश्चित संवत् मिलते हैं। इतना ही नहीं, किन्तु अनेक विद्वान्, धर्माचार्य, धनाढ्य, दानी, वीर आदि प्रसिद्ध पुरुषों के नाम तथा उनके निश्चित समय आदि का भी पता चलता है, एवम् अनेक प्राचीन संवतों के नाम तथा उनके प्रारंभ का निर्णय होता है और कई दूसरी आवश्यकीय बातें जानी जाती हैं।

पत्थर और तांबे के पत्रों के अतिरिक्त लोह के स्तंभों पर भी कुछ लेख खुदे हुए मिले हैं, जिनमें मुख्य देहली के प्रसिद्ध कुतुब मीनार के पास खड़े हुए लोह के स्तंभ (कीली) पर खुदा हुआ गुप्तवंश के प्रतापी राजा चन्द्र (चन्द्रगुप्त दूसरे) का लेख है, जिसमें उक्त राजा की विजय (बंगाल से बलूचिस्तान तक) का उल्लेख है।

शिलालेख और ताम्रपत्र अनेक पुस्तकों में छपे हैं, जिनमें से मुख्य नीचे लिखी हुई हैं—

एपिग्राफिआ इंडिका (जिल्दें ९), साउथ इंडिअन् इनस्क्रिपशन्स (जिल्द ३), एपिग्राफिआ कर्णाटिका (जि० १२), इंडिअन् ऐंटिक्वेरी, तामिल ऐंड संस्कृत इन्स्क्रिपशन्स (डा० बर्जेस और नटेश शास्त्री संपादित), गुप्त इन्स्क्रिपशन्स (डा० फ्लीट संपादित), अशोक इन्स्क्रिप्शन्स (जनरल कनिंगहाम संपादित), एशिआटिक सोसाइटी बंगाल, रायल एशियाटिक सोसाइटी और बंबई की एशिआटिक सोसाइटी के जर्नल, वियाना ओरिएंटल् जर्नल, जर्नल एशियाटीक, अमेरिकन् ओरिएंटल सोसाइटी के जर्नल, एशिआटिक रिसर्चेज़, भावनगर इन्स्क्रिप्शन्स, भावनगर प्राचीनशोध

संग्रह (प्रथम भाग विजयशंकर गौरीशंकर ओझा संपादित), आर्किआलोजिकल सर्वे की रिपोर्टें (जनरल कनिंगहाम संपादित, जिल्दें २३), आर्किआलोजिकल सर्वे की रिपोर्टें (डाक्टर बर्जेस संपादित जिल्दें ५), आर्किआलोजिकल सर्वे की एन्युअल रिपोर्टें (जिल्दें २—सन् १९०२-३ और १९०३-४ की), पाली संस्कृत एंड ओल्ड् कनड़ी इन्स्क्रिपशन्स (डा० बर्जेस और फ्लीट संपादित), ट्रान्सलेशन्स आफ इन्स्क्रिपशन्स फ्राम बेलगांव एंड कलाड़गी डिस्ट्रिक्टस (डा० फ्लीट और हरिवामन लिमया संपादित, इन्स्क्रिपशन्स फ्राम दी केव-टेंपल्स आफ वेस्टर्न इंडिआ (डा० भगवानलाल इंद्रजी और डा० बर्जेस संपादित) और आर्किआलाजिकल सर्वे की प्रोग्रेस रिपोर्टें आदि।

(घ) प्राचीन सिक्के, मुद्रा और शिल्प।

(अ) प्राचीन सिक्के—भारतवर्ष में चलने वाले सोने, चांदी और तांबे के हज़ारहां प्राचीन सिक्के मिल चुके हैं और समय समय पर मिलते ही रहते हैं। ये सिक्के भी हमारे इतिहास में बड़ा काम देते हैं। ई० स० पूर्व की चौथी शताब्दी के पहिले समस्त भारतवर्ष में चलने वाले सिक्कों पर (जो चतुरस्र और गोल दोनों प्रकार के होते थे) राजाओं के नाम नहीं, किन्तु सूर्य, चन्द्र, धनुष, पशु, पक्षी, वृक्ष, स्तूप, तारे आदि अनेक भिन्न भिन्न चिन्हों के ठप्पे ही लगाए जाते थे। ऐसे सिक्के प्राचीन इतिहास में कुछ सहायक नहीं हो सकते। सिकन्दर की चढ़ाई के पीछे [और] ख़ास कर बाक्ट्रिया के यूनानियों का राज्य काबुल, पंजाब आदि पर होने के समय से हमारे सिक्कों में बहुत

कुछ सुधार हुआ, और यूनानियों के सिक्कों का अनुकरण किया जाकर उन पर राजाओं के नाम आदि अंकित होने लगे। इस देश में सुंदरता के साथ बने हुए सिक्के प्रथम बाक्ट्रिया के यूनानी राजाओं ने चलाए, जिनकी एक तरफ़ प्राचीन यूनानी लिपि में यूनानी भाषा का लेख (जिसमें राजा का नाम तथा ख़िताब होता था) और दूसरी ओर खरोष्ठी (गांधार) लिपि में (जो फ़ारसी की नाईं उलटी पढ़ी जाती है) बहुधा उसी आशय का (संस्कृत मिश्रित) प्राकृत भाषा का लेख[1] मिलता है। यूनानियों के पीछे शकों ने भी इस देश पर अपना अधिपत्य जमाया, जिनके सिक्के[2] भी यूनानियों के सिक्कों की शैलि के बनते रहे। इसी तरह के कुशन वंशियों के सिक्के भी बने परन्तु उनके पिछले सिक्कों में दोनों तरफ ग्रीकलिपि के ही लेख हैं। पश्चिमी क्षत्रियों के सिक्कों[3] पर एक तरफ़ प्राचीन देव-

---

१ इन सिक्कों पर लेख दोनों तरफ बहुधा किनारों के पास हैं। बीच में एक तरफ़ राजा का चेहरा पूरी तस्वीर या और कोई चिन्ह, एवं दूसरी ओर किसी देवी देवता या जानवर आदि की तस्वीर होती है।

२ शकों के सिक्के यूनानियों के सिक्कों जैसे सुन्दर नहीं हैं। उनमें क्रम क्रम से भद्दापन आता गया।

३ पश्चिमी क्षत्रियों के सिक्कों पर एक तरफ़ राजा का सिर तथा संवत् का अङ्क, और दूसरी तरफ़ बीच में चैत्य का चिन्ह तथा किनारे के निकट प्राचीन नागरी लिपि का लेख है, जिसमें राजा का तथा उसके पिता का नाम और उनके ख़िताबों का उल्लेख मिलता है अतएव सिक्कों के आधार पर क्षत्रपों का समय तथा राजक्रम निश्चित होता है।

नागरी लिपि के और दूसरी ओर यूनानी लिपि के लेख मिलते हैं परन्तु चष्टन के बाद के राजाओं के समय यहां-वालों को यूनानी भाषा का ज्ञान रहा हो ऐसा अनुमान नहीं होता क्योंकि उन सिक्कों पर के यूनानी लेखों से यही पाया जाता है कि उन पर 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' की नाईं लोग यूनानी अक्षरों की नक़ल बना देते थे, जिनसे कुछ भी आशय नहीं निकलता। ई० स० की चौथी शताब्दी के प्रारंभ में गुप्तों के प्रतापी राज्य का उदय हुआ, जिन्हों ने कुशनवंशियों की शैली का अपने सिक्कों में अनुकरण किया परन्तु यूनानी लेख को मिटा कर दोनों ओर प्राचीन देव-नागरी लिपि का लेख रक्खा एवम् यूनानी, ईरानी आदि देवी देवताओं की तस्वीरों के स्थान पर हिन्दुओं के देवी देवताओं की तस्वीरें (उन पर) बनवाईं। गुप्तों के समय से हिन्दू शैली के सुन्दर सिक्के बनने लगे, परन्तु उन (गुप्तों) के बाद समय के साथ सिक्कों की कारीगरी में फिर भद्दापन आने लगा। यह सब परिवर्तन बहुधा नर्मदा के उत्तर में चलने वाले सिक्कों में हुआ। दक्षिण के सिक्कों पर विदेशियों के सिक्कों का प्रभाव बहुत ही कम पड़ा, जिससे बहुत अरसे तक वहां पर प्राचीन शैली के अर्थात् बिना लेख के सिक्के ही चलते रहे। (शातवाहन वंशी राजाओं के सिक्कों में नवीन शैली का अनुकरण पाया जाता है) पीछे से वहां के सिक्कों पर भी राजाओं के नाम आदि अंकित [होने] लगे परन्तु उनमें सुन्दरता कम पाई जाती है।

अब तक यूनानी, शक, क्षत्रप, कुषन (तुर्क), आंध्र, गुप्त, मौखरी, मैत्रक (वल्लभी के राजकर्त्ता), परिव्राजक

(डाहल देश के जोगिया राजा), हूण, चौहान, पड़िहार, परमार, सोलंकी, तंवर, राठौड़, पाल, कलचुरी (हैहयवंशी), चंदेल, गहिलोत, नाग, यादव, काकतीय आदि कई राजवंशों के तथा कश्मीर, नेपाल, अफ़ग़ानिस्तान आदि पर राज्य करनेवाले राजवंशों के सिक्के मिल चुके हैं। कितने एक प्राचीन सिक्के ऐसे भी मिले हैं, जिन पर राजा का नाम नहीं किन्तु किसी जाति, देश या शहर का नाम मिलता है। जिन राजाओं के नाम प्राचीन पुस्तक, शिलालेख और ताम्रपत्रों में नहीं मिलते उनमें से कई एक के नाम आदि का पता सिक्कों से लग जाता है। डिमिट्रिअस आदि २५ से अधिक यूनानी राजाओं ने अफ़ग़ानिस्तान, पंजाब आदि देशों पर राज्य किया जिनके नाम बहुधा उनके सिक्कों से ही मालूम होते हैं, इसी तरह शक, क्षत्रप आदि राजवंशों के कितने ही राजाओं के नाम केवल सिक्कों से जाने जाते हैं।

प्राचीन सिक्के इतने बहुत और भिन्न भिन्न प्रकार के मिले हैं, जिससे पाठकों को उनका कुछ परिचय कराने के लिये भी एक पुस्तक लिखने की आवश्यकता रहती है, इस लिये इस छोटे से लेख में केवल उनकी उपयोगिता प्रगट करने के अतिरिक्त उनके विषय में कुछ भी लिखना अशक्य है। हमारे यहां के प्राचीन सिक्कों का वृत्तान्त और उनके चित्र कितनी ही पुस्तकों में छपे हैं, जिनमें मुख्य निम्न लिखित हैं—

'आरिआना ऐंटिका' (एच० एच० विल्सन संगृहीत), जेम्स प्रिंसेप साहिब के 'ऐसेज ऑन ऐंटिक्विटीज' (२ जिल्द, एडवर्ड थोमस संपादित), 'कैटेलाग आफ़ दी काइंस आफ़

दी इंडिअन म्यूज़िअम' जिल्द पहिली (वी० ए० स्मिथ संपादित), कैटेलाग आफ़ दी काइन्स कलेक्टेड बाइ सी० जे० राजर्स ऐंड परचेज्ड़ बाइ दी गवर्नमेंट आफ दी पंजाब-हिस्सा तीसरा (सी० जे० राजर्स संपादित), जनरल कनिंगहाम के 'क्वाइंस आफ़ एश्यंट इंडिआ'—'काइन्स आफ मिडिएवल इंडिआ'—'काइन्स आफ़ दी इन्डोसीथिअन्स' और 'लेटर इंडोसीथिअन्स,' सर वाल्टर इलिअट का 'काइन्स आफ़ सदर्न इंडिआ,' कैटेलाग आफ़ इंडिअन् काइन्स इन दी ब्रिटिश म्यूज़िअम–ग्रीक ऐंड सीदिक् किंग्ज़ आफ़ बाक्ट्रिआ ऐंड इंडिआ' (पर्सी गार्डनर संगृहीत और आर० स्टुअर्ट पूल संपादित), 'न्युमिस्मैटिक क्रानिकल्, ''इंटरनैशनल न्युमिस्माटा ओरिएँटेलिआ,' जनरल कनिंगहाम की 'आर्किआलाजिकल् सर्वे रिपोर्टस्,' ''इंडिअन् ऐंटिक्वेरी,'' रायल, बंगाल और बम्बई की एशिआटिक सोसाइटियों के जर्नल आदि।

(आ) प्राचीन मुद्रा–भारतवर्ष में मुद्रा अर्थात् मुहर लगाने की प्रथा बहुत प्राचीन काल से चली आती है। कई ताम्रपत्रों पर और कितने ही ताम्रपत्रों की कड़ियों की संधि पर राजमुद्राएं लगी हुई मिलती हैं। कितने ही मिट्टी के गोले ऐसे मिले हैं, जिन पर भिन्न भिन्न पुरुषों की मुद्राएं लगी हुई हैं। अंगूठियों तथा क़ीमती पत्थरों पर भी खुदी हुई कई मुद्राएं मिली हैं। इन मुद्राओं से भी हमारे यहां के प्राचीन इतिहास में कुछ कुछ सहायता मिल सकती है। कन्नौज के पड़िहार राजा भोजदेव के ताम्रपत्र की मुद्रा में देवशक्ति से भोजदेव तक की पूरी वंशावली तथा चार रानियों के नाम हैं। वहीं के राजा विनायकपाल

के ताम्रपत्र की मुद्रा में देवशक्ति से विनायकपाल तक की वंशावली और ६ रानियों के नाम हैं। गुप्तवंश के राजा कुमारगुप्त (दूसरे) की मुद्रा में (जो लखनऊ के म्यूज़िअम में रक्खी हुई है) महाराजगुप्त से लगाकर कुमारगुप्त (दूसरे) तक की वंशावली एवं ६ राजमाताओं के नाम हैं। मौखरी सर्ववर्मा की मुद्रा में हरिवर्मा से सर्ववर्मा तक की वंशावली तथा चार रानियों के नाम मिलते हैं। गुप्तवंशी राजा चंद्रगुप्त (दूसरे) के पुत्र गोविंदगुप्त के नाम का पता एक मिट्टी के गोले पर लगी हुई उस (गोविंदगुप्त) की माता ध्रुवस्वामिनी की मुद्रा से ही लगता है। ऐसे ही कई राजाओं, धर्माचार्यों, धनाढ्यों आदि के नाम उनकी मुद्राओं से मिल जाते हैं, अब तक २०० से अधिक मुद्राएं मिल चुकी हैं। उनका वृत्तान्त एपिग्राफ़िआ इंडिका, रायल, बंगाल और बंबई की एशिआटिक् सोसाइटिओं के जर्नल, जनरल कनिंगहाम की आर्किआलाजिकल सर्वे की रिपोर्ट, इंडिअन् ऐंटिक्वेरी तथा आर्किआलाजिकल सर्वे की एन्युअल रिपोर्ट (सन् १९०३-४ ई० की) आदि पुस्तकों में छपा है।

(इ) शिल्प—प्राचीन चित्र, मंदिर, गुफा आदि स्थान तथा प्राचीन मूर्तियां भी इतिहास में कुछ सहायता देती हैं। चित्रों से पोशाक, ज़ेवर आदि का हाल मालूम होने के अतिरिक्त उनके बनाने के समय की चित्रविद्या की दशा का ज्ञान भी होता है। प्रसिद्ध अजंटा की गुफ़ा की दीवार पर के सोलंकी राजा पुलकेशी (दूसरे) के दरबार के रंगीन चित्र से उसके दरबार के ढंग के अतिरिक्त उस समय की वहां की पोशाक आदि का हाल मालूम होता है। प्राचीन मंदिर,

गुफ़ा आदि से भी उनके बनाने वालों के नाम आदि का लेखों से पता लगाने पर इतिहास लेखक को कुछ कुछ सहायता मिल जाती है, और उनमें खुदी हुई मूर्तियां वही काम देती हैं जो प्राचीन चित्र देते हैं, परन्तु यह लिखना अनुचित न होगा कि हमारे यहां की प्राचीन मूर्तियों में वास्तविकता लाने का यत्न किया गया हो ऐसा पाया नहीं जाता, क्योंकि कई पुरुषों की प्राचीन मूर्तियां अब तक विद्यमान हैं, जिन सब के चेहरे एकसे हैं । प्राचीन चित्र, तथा मंदिरादि के फोटो कई पुस्तकों में छपे हैं, जिनमें मुख्य 'दी पैंटिंग्ज़ आफ अजंटा' (दो जिल्दें—जान ग्रिफिथ साहिब की बनाई), आर्किआलाजिकल सर्वे की भिन्न भिन्न पुस्तकें आदि हैं ।

उपर्युक्त समस्त सामग्री (क, ख, ग और घ) द्वारा भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास बनाने का यत्न कहां तक सफल हो सकता है यह जानने की आकांक्षा रखने वाले पाठकों को हम 'भारतीय ऐतिहासिक ग्रन्थमाला' की पहिली जिल्द (जिसमें सोलंकियों का प्राचीन इतिहास छपा है) देखने का आग्रह करते हैं, क्योंकि वह केवल उपर्युक्त सामग्री के आधार पर तय्यार की गई है ।

——::——

ध्रुव देश और ध्रुव देश यात्रा।

[बाबू ठाकुर प्रसाद लिखित।]
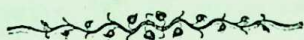
नागरीप्रचारिणी सभा काशी ने 'ध्रुव प्रदेश' के विषय पर एक उत्तम लेख लिखनेवाले को पदक देने की सूचना सन् १९०७ में दी थी। मेरा विचार, अब की बेर अन्य कई ग्रन्थ लिखने के कारण और अवकाश न मिलने के कारण, इस विषय पर कुछ लिखने का न था। १० जनवरी १९०८ को मुझे ज्ञात हुआ कि गत वर्ष उक्त लेख किसी ने नहीं भेजा, इस लिये दो महीने की मोहलत सभा ने और भी बढ़ा दी है कदाचित् इस बीच में लेख आजाय। अस्तु मेरे कई मित्रों ने बड़ी आग्रह पूर्वक उक्त विषय पर एक लेख लिखने को मुझ से कहा, यद्यपि मेरी इच्छा न थी और न इतनी फुरसत ही थी फिर भी आज बैठे बैठे जी में आगया कि मित्रों की आज्ञा पालन करनी चाहिए और उन्हें निराश न कर देना चाहिए। इसमें सन्देह नहीं कि यह बड़ा विषय है और समय थोड़ा, परन्तु अब तो संकल्प उठ चुका, अतः संक्षेप में जहां तक हो सकता है लिखने का उत्साह करता हूं।

बहुत से लोगों ने ध्रुव देश का नाम सुना होगा और उनको लालसा होगी कि उस विचित्र प्रदेश का वृत्तान्त जानें। कुछ लोग ऐसे भी हैं कि जिन्हें यह भी न मालूम होगा कि ध्रुव प्रदेश कहां है और वहां ऐसी क्या विचित्रता है कि लोगों की ऐसी उत्कंठा है। इसलिये उचित तो

यही था कि विस्तारपूर्वक प्रत्येक बातों को समझाते हुए लेख लिखी जाय, परन्तु समय की संकीर्णता के कारण इतना विस्तार नहीं हो सकता। लिखने के पूर्व यह समझ लिया जाता है कि सामान्य पाठक भी कम से कम भूगोल विद्या और तत्सम्बन्धी शब्दों के अर्थ जानते होंगे। जहां तक हो सकेगा प्रत्येक कठिन कठिन बात समझा देने की कोशिश की जायगी और वैज्ञानिक शब्दों के अर्थ की यथा सम्भव टिप्पणी भी दे दी जायगी, फिर भी मुझे भय है कि इस बात का पूरी तरह से ध्यान रखना कठिन है, यदि कहीं यह प्रतिज्ञा पूरी न हो सके तो पाठकगण क्षमा करेंगे।

सबसे पहिले यह बता देना है कि 'ध्रुव प्रदेश' पृथ्वी के किस भाग का नाम है, वह कितना बड़ा है, वहां की ऋतु कैसी है, वहां की भूमि कैसी है, वहां बस्ती है वा नहीं, यदि नहीं है तो क्यों नहीं है और यदि बस्ती नहीं है तो वहां लोग क्यों नहीं बस सकते और वहां की विचित्रता क्या है।

पृथ्वी पर जो दिन रात होता है वह पृथ्वी की दैनिक गति के कारण से होता है। एक दिन रात में पृथ्वी अपने ही चारों ओर घूम जाती है, जैसे लट्टू फिरता है। जैसे लट्टू अपनी कीली पर घूमता है उसी प्रकार से पृथ्वी भी एक मान ली हुई कीली पर घूमती है। इस कीली का नाम अक्ष रख लिया गया है। यदि पृथ्वी की कीली को [दो]नों ओर बढ़ा सकें वा बढ़ा दें और जिन स्थानों पर [उ]नकी नोकें भूपृष्ट के बाहर निकलें उन्ही दोनों स्थानों का नाम भूगोल ध्रुव प्रदेश बिन्दु है और यदि यही कीली

और भी बढ़ाई जाय और वह जहां पर आकाश में जा लगे, उनका नाम खगोल ध्रुव है। उत्तर दिशा में एक स्थिर तारा भी इसी नाम का है वह लगभग भूगोल के ध्रुव प्रदेश के ठीक सिर पर है अर्थात् वह खगोल ध्रुव के निकट है। आकाश के समस्त नक्षत्र पृथ्वी के चारों ओर घूमते हुए नित्य दिखाई देते हैं, पर हमारे ध्रुव महाराज वहां अटल रूप से एक ही स्थान पर जमे हुए हैं, हज़रत वहां से कभी टलते ही नहीं, इसीलिये उनको ध्रुव की उपाधि मिली है। इस तारे को पहिचानने की रीति यह है कि उत्तरी आकाश में एक विख्यात नक्षत्र पुंज है जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति देखते ही पहिचान ले सकता है, उनका नाम सप्तर्षि है। आकाश में उनका पुंज ठीक नीचे दिए चित्र के सदृश है, उनमें भी जो चौखूट वाले तारे हैं उनके आखरी दो तारों की सीध में

```
          ×
            ×
              ×
              ×     ×
             .× . . × . . . . . . *
```

सप्तर्षि ध्रुवतारा

उत्तर की ओर एक सब से अधिक चमकता जो तारा है वही हमारे ध्रुव महाराज हैं। हमारे देश से तो यह तारा तिरछा उत्तर को कुछ झुका दिखाई पड़ता है, परन्तु ध्रुव प्रदेश में जाने पर यह ठीक सिर पर दिखाई देता है। उनके नीचे का भू-भाग उत्तर ध्रुव कहाता है। इसी प्रकार पृथ्वी अक्ष की दूसरी नोक के प्रदेश को दक्खिन ध्रुव कहते हैं। यहां के खगोल ध्रुव विन्दु के निकट भी एक ध्रुव तारा

सभा का कार्य्यविवरण ।

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २८ नवम्बर १९०८ सन्ध्या के ५ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

(१) गत अधिवेशन (ता० ३१ अक्तूबर १९०८) का कार्य्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(२) प्रबन्धकारिणी सभा का ता० १२ अक्तूबर १९०८ का कार्य्य विवरण सूचनार्थ उपस्थित किया गया।

(३) निम्न लिखित महाशय सभासद चुने गए—

(१) पंडित त्रिंबक विष्णु गोडसे—Co/ टी० बी० एण्ड गोडसे ब्रदर्स, हमहम स्ट्रीट-बम्बई ३) (२) पण्डित गोपीनाथ चौबे-हेडमास्टर-मिडिल स्कूल-सहतवार-बलिया १॥) (३) पंडित प्रेमशङ्कर, बालूजी की फर्श काशी १॥) (४) बाबू देवी प्रसाद Co/ बाबू कालीचरन रजिडेन्ट इंजिनीयर का दफ़र गोंडा १॥) (५) पण्डित गुमारनाथ शर्म्मा मु० बड़गांव गोंडा स्टेशन १॥) (६) कविराज केशवदेव शास्त्री काशी ३)

(४) सभासद होने के लिये निम्न लिखित नवीन महाशयों के आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए—

(१) बाबू यशोदानन्द अखौरी, बड़ा बाजार लाइब्रेरी बड़ा बाजार कलकत्ता (२) पण्डित चतुर्भुज औदीच्य ६० काटन स्ट्रीट कलकत्ता (३) पण्डित जीवानन्द शर्म्मा काव्यतीर्थ हिन्दू स्कूल मेसीडेन्सी कालेज कलकत्ता (४) पण्डित प्रयाग प्रसाद तिवारी हिन्दू होस्टल मिशन कालेज कानपुर (५) बाबू सूर्य्य प्रसाद अर्दली बाजार बनारस (६) बाबू कृष्णलाल, रामाश्रम न० ६⁄२ भदैनी काशी [७] बाबू नन्दकिशोर लाल बड़ा ग्राम जिला बनारस [८] लाला [प]रीक्षत लाल अजयगढ़ बुन्देलखण्ड [९] राय कृष्ण दास गुप्त हेस्टिंग्स हाउस बनारस [१०] पण्डित धोंड़ोपन्त क्लर्क गणेश दीक्षित की

५

गली काशी [११] पण्डित जानकी प्रसाद शुक्ल पाठशाला नेतवर पो० लोटन बस्ती ।

[५] विहपुर, जिला भागलपुर के पण्डित वैद्यनाथ शुक्ल का इस्तीफा उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ ।

[६] मंत्री ने नवलगढ़ के पण्डित कृष्णदत्त चौखानी, सभासद की मृत्यु की सूचना दी जिस पर सभा ने शोक प्रगट किया।

[७] निश्चय हुआ कि पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० के बाहर चले जाने से प्रबन्धकारिणी सभा के नगरस्थ सभासदों में जो स्थान खाली हुआ है उस पर पण्डित केशवदेव शास्त्री चुने जांय।

[८] निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्व्वक स्वीकृत हुई—

[१] बाबू सीतलप्रसाद सिंह गहरवार पो० इमामगंज जिला गया–श्री सीताराम चरितायण [२] महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी काशी–रामकहानी का बालकाण्ड [३] अजयगढ़ दर्बार–शिक्षामणि, वर्णबोधिनी, त्रिभाषा शिक्षक, अश्व चिकित्सा, महिषी चिकित्सा, गोधन वर्द्धिनी, विनय चन्द्रिका, रनजोर विलास, [४] गोस्वामी पुरुषोत्तम लालजी वृन्दावन–गरुड़पुराण भाषा टीका समेत, पुरुषोत्तममास माहात्म्य [५] श्रीमान राजा रामसिंहजी सीतामऊ मालवा–वायुविज्ञान [६] खरीदी गई–चारुपाठ दूसरा भाग, सरस्वती भाग ८ सं० ३, ८, ९ और ११ तथा भाग ९ संख्या १ और २, Imperial Gazetteer of India Vols 15 to 18, रंग में भंग, गुप्त गोदना भाग १, जया, किले की रानी, पद्मावती तीसरा भाग, दलित कुसुम, कमल कुमारी चौथा भाग, मायर विलास भाग ५, देवीसिंह भाग १, महेन्द्र कुमार भाग २ और ५, आनन्द सुन्दरी भाग २, ३ और ५ [७] पण्डित माधव प्रसाद पाठक काशी–मुद्राराक्षस नाटक की भावार्थ दीपिका [८] Indian Antiquary for July and August 1908.

[९] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

——:o:——

प्रबन्धकारिणी सभा ।

सोमवार ता० ७ दिसम्बर १९०८ सन्ध्या के ५ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० सभापति, बाबू जुगल किशोर, बाबू बेणीप्रसाद, बाबू माधव प्रसाद, बाबू गौरी शंकर प्रसाद बी० ए०, एल० एल० बी०, पंडित केशवदेव शास्त्री, बाबू गोपाल दास ।

(१) बाबू बेणीप्रसाद के प्रस्ताव तथा बाबू जुगुलकिशोर के अनुमोदन पर बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० सभापति चुने गए ।

(२) गत अधिवेशन (ता० ८ नवम्बर ०८) का कार्य्य-विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

(३) स्वामी सतगुरु प्रसाद शरण का ११ नवम्बर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि वे श्रीगुरुराम जी के नाम से एक चांदी का पदक इस सभा द्वारा उस पुरुष को दिया चाहते हैं जो गुरुभक्ति पर एक बड़ी मनोहर उत्तम कविता लिखे ।

निश्चय हुआ कि स्वामी सतगुरु प्रसाद शरण को लिखा जाय कि वे इसके लिये अपनी ओर से विज्ञापन छपवावें और इस विषय पर जो लेख उनके पास आवेंगे उनकी योग्यता पर यह सभा विचार कर देगी ।

(४) लाला भगवान दीन तथा बाबू गंगोत्तरी प्रसाद सिंह के Deusseu's Metaphysics के हिन्दी अनुवाद के नमूने उनकी शर्त्तों के सहित उपस्थित किए गए ।

निश्चय हुआ कि बाबू गंगोत्तरी प्रसाद सिंह को लिखा जाय कि सभा नीचे लिखी शर्त्तों पर इस पुस्तक का अनुवाद उनसे करवा सकती है (१) उनका अनुवाद पसन्द आने पर सभा उन्हें इ-

सके लिये १५०) रु० देगी (२) अनुवाद की भाषा और सरल होनी चाहिए (३) यह पुस्तक श्रीमान् राजा साहब बहादुर भिनगा की आर्थिक सहायता से छप रही है अतः इसमें अनुवादक का चित्र नहीं छप सकता और न वह अनुवादक की ओर से किसी दूसरे को समर्पण की जा सकती है।

(५) पण्डित श्यामबिहारी मिश्र के निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थित किए गए (१) कार्य्यकर्त्ताओं और प्रबन्धकारिणी सभा के सभासदों के चुनाव के लिये जो सूची सभा वितरित करती है उसमें प्रत्येक व्यक्ति का संक्षिप्त हाल भी लिखा जाया करे और (२) हिन्दी पुस्तकों की खोज विषयक संक्षिप्त वार्षिक रिपोर्ट जो गवर्न्मेंट द्वारा प्रकाशित नहीं होती सभा की पत्रिका अथवा ग्रन्थ-माला द्वारा प्रकाशित की जाया करे।

निश्चय हुआ कि (१) जो महाशय वार्षिक अधिवेशन में चुनाव के समय उपस्थित रहते हैं केवल वेही चुनाव के सम्बन्ध में अपनी सम्मति दे सकते हैं। बाहर से प्रतिनिधि पत्र भेजनेवालों को इससे कोई लाभ नहीं है क्योंकि सम्मतिदाता विचार कर स-म्मति देता है अतः सभा की सम्मति में उक्त सूची में प्रत्येक व्यक्ति के संक्षिप्त हाल छपवाने से कोई लाभ न होगा। (२) सभा की स-म्मति में इस संक्षिप्त रिपोर्ट का छपवाना परम आवश्यक है पर प-त्रिका वा ग्रन्थमाला में इसके लिये स्थान नहीं है और गवर्न्मेंट से हिन्दी पुस्तकों की खोज के लिये जितनी सहायता मिलती है वह खोज के काम के लिये भी काफी नहीं है अतः उस द्रव्य से भी यह नहीं छपवाई जा सकती।

(६) निश्चय हुआ कि पण्डित रामनारायण मिश्र के सम्मा-नार्थ सभा को क्या करना चाहिए, यह विषय आगामी अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किया जाय।

(७) पण्डित रामचन्द्र शुक्ल के "दी लाइट आफ एशिया" नामक पुस्तक के हिन्दी पद्यानुवाद का नमूना उनके २४ नवम्बर के पत्र के सहित उपस्थित किया गया।

निश्चय हुआ कि पण्डित रामचन्द्र शुक्ल को लिखा जाय कि सभा इसके पद्यानुवाद के लिये उन्हें २००) रु० दे सकती है। रुपया अनुवाद पसन्द होजाने पर दिया जायगा।

(८) नीचे लिखे हुए लेख, जो सभा द्वारा प्रकाशित होने के लिये आए थे, उपस्थित किए गए।

(१) ठाकुर सूर्य्यकुमार वर्म्मा लिखित "भाषा" शीर्षक लेख, (२) पण्डित गणपत जानकी रामदुबे लिखित "महाराष्ट्र साहित्य में गत वर्ष में ग्रंथ निष्पत्ति" शीर्षक लेख, (३) पण्डित व्रजरत्न भट्टाचार्य्य का भेजा हुआ एक पत्र जिसमें पवर्ग का कोई अक्षर नहीं आया है।

निश्चय हुआ कि ये नागरी प्रचारिणी पत्रिका द्वारा प्रकाशित किए जांय।

(४) ठाकुर हितकारिणी सभा के एक अधिवेशन की चार वक्तृताएं—निश्चय हुआ कि ये इस समय प्रकाशित नहीं किए जा सकतीं, (५) पण्डित द्वारिका प्रसाद मिश्र का हिन्दी भूगोल—निश्चय हुआ कि यह प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

(९) लखनऊ के बाबू भगवती प्रसाद का पत्र सूचनार्थ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि बहुत दिन हुए उन्होंने सभाभवन देखा था और उनकी सम्मति में उसमें बिजली का कंडक्टर लगवाने की आवश्यकता नहीं है तथापि वे जब आगामी मई मास में काशी आवेंगे तो सभाभवन फिर से देख कर इस विषय में अपनी अन्तिम सम्मति देंगे।

(१०) निश्चय हुआ कि परिचर्य्या प्रणाली नामक पुस्तक के छपवाने के विषय में आगामी अधिवेशन में विचार किया जाय और इस पुस्तक के विषय में पण्डित केशवदेव शास्त्री की भी [illegible]ति ली जाय।

(११) मन्त्री ने सूचना दी कि निम्न लिखित [illegible]सदों के यहां दो वर्ष से अधिक का चन्दा बाकी पड़ गया है—

१ बाबू जमुना दास, राजा का दर्वाजा, काशी। २ पं-डित जानकी वल्लभ, रिखई तमोली की गली, काशी। ३ पंडित देवीदत्त मिश्र, नावापुरा, काशी। ४ पण्डित भोलानाथ पाठक, गायघाट, काशी। ५ बाबू मुरलीधर, लाहोरीटोला, काशी। ६ पण्डित रघुनाथ शर्म्मा २१, गोलागली, काशी। ८ बाबू अवधविहारी लाल वकील-सहारनपुर। ९ बाबू कृष्णदेवनाराय सिंह-जिमींदार-सरैयागंज मुजफ्फ़रपुर। १० पण्डित गणेशदत्त सिद्धान्ती-बेनियापुर-पो० महोली जिला सीतापुर। ११ पण्डित गुलजारीलाल मिश्र-खजानची-तहसील सन्दीला जिला हर्दोई। १२ पण्डित जुगलकिशोर तिवारी-क्लार्क-कोआपरेटिक सोसाइटी-होशंगाबाद। १३ बाबू पूरनलाल-स्टेशन मास्टर-माझीघाट-B. N. W. Ry. जिला सारन, १४ बाबू बालकराम वकील-फ़ैजाबाद। १५ बाबू विन्धेश्वरी शरण सिंह-आजापुर-पो० मेडाटा जिला इलाहाबाद। १६ पण्डित मातादीन शुक्ल-महल्ला अल्ला-पुर-शाहाबाद-हरदोई। १७ कुंअर मोहनलाल-अपीलेट कोर्टजज-जैपुर। १८ बाबू यादव कृष्ण बी० ए०, बी० एल०-C/o बाबू बाबूराव वकील बिलासपुर। १९ महाराज कुमार लाल रघुनाथप्रसाद सिंह-तअल्लुकदार इस्टेट बेलाघाट-जिला गोरखपुर। २० पण्डित रामशरण शर्म्मा त्रिवेदी बड़ी होली-शाहाबाद-हरदोई। २१ पण्डित श्यामनारायण शर्म्मा नार्मल स्कूल-हिन्दी जूनियर-लखनऊ। २२ बाबू श्यामसिंह-गुरुकुल-कांगड़ी-हरद्वार। २३ पण्डित श्यामलाल तिवारी-बसकी दारागंज-इलाहाबाद।

निश्चय हुआ कि इन सभासदों को सूचना दी जाय कि यदि वे दिसम्बर के अन्त तक अपना चन्दा न देदेंगे तो उनका नाम सूची "ख" में लिखा जायागा।

(१२) निश्चय हुआ कि माइनर हिन्ट्स नामक पुस्तक के अनु-वाद के नमूने आगामी अधिवेशन में विचारार्थ उपस्थित किए जांय।

(१३) खसताज फ्री लाइब्रेरी के मनेजर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्हों ने अपने पुस्तकालय के लिये सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकें बिना मूल्य मांगी थीं।

निश्चय हुआ कि यदि उनके पुस्तकालय की रजिस्टरी हुई हो तो उन्हें सभा की प्रकाशित पुस्तके बिना मूल्य दी जा सकती हैं अन्यथा वे उन्हें अर्द्ध मूल्य पर दी जा सकेंगी ।

(१४) पण्डित जीवनराम नागर का २४ नवम्बर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने फार्बस साहब की रासमाला के अनुवाद के लिए २॥) रु० फार्म के हिसाब से पुरस्कार मांगा था तथा उसे वी० पी० द्वारा वसूल करने को लिखा था और अनुवाद में एक शब्द भी घटाने बढ़ाने का अधिकार सभा को नहीं दिया था।

निश्चय हुआ कि सभा इन शर्तों को नहीं स्वीकार कर सकती ।

(१५) मंत्री के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि इस समय एक वर्ष से अधिक समय से जो चपरासी सभा में काम करते हों उन्हें जाड़े की वर्दी बनवा दी जाय पर वह वर्दी सभा की सम्पत्ति समझी जायगी।

(१६) मंत्री ने सूचना दी कि दिसम्बर तथा जनवरी मास में उन्हें किसी कार्य्य से बाहर भ्रमण करना पड़ेगा ।

निश्चय हुआ कि दो मास तक उनकी अनुपस्थिति में कार्य करने के लिये बाबू गौरीशंकर प्रसाद इस सभा के स्थानापन्न मंत्री चुने जांय ।

(१७) बाबू श्यामसुन्दर दास ने सूचना दी कि श्रीमान् महाराज साहब बहादुर छत्रपुर जिन्हों ने इस सभा की बहुत कुछ सहायता की है, काशी में पदार्पण करने वाले हैं ।

निश्चय हुआ कि यदि वे सभा में आवें तो उन्हें सभा की ओर से अभिनन्दन पत्र दिया जाय और इसका सब आवश्यक प्रबन्ध बाबू श्यामसुन्दर दास जी करें ।

(१८) निश्चय हुआ कि लाला छोटेलाल के स्थान पर पण्डित केशव देव शास्त्री कोश प्रबन्धकर्तृ कमेटी के सभासद चुने जांय ।

(१९) सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

———:o:———

काशी नागरीप्रचारिणीसभा के आय व्यय का हिसाब

(नवम्बर १९०८)

आय	धन की संख्या			व्यय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	२३२	५	६	आफ़िस के कार्य कर्ताओं का वेतन	६३	८	८
पुस्तकालय	४७	१२	०	अमानत चुकाया	५	०	०
पुस्तकों की बिक्री	१३१	११	८	डाक व्यय	३७	६	०
पृथ्वीराज रासा की बिक्री	२४	१२	०	नागरी प्रचार	१३	४	०
सभासदों का चन्दा	७६	४	०	पुस्तकालय	५३	४	६
हिन्दी कोश	१५८०	०	०	पुस्तकों की खोज	५०	८	०
स्थायी कोश	८६	६	८	फुटकर व्यय	[illegible]१०	४	६
जोड़	२१०८	४	०	हिन्दी कोश	१६३	१	३
				स्थायी कोश	६०	०	०
					५५६	७	०
				बचत	१५५२	१३	०
				जोड़	२१०८	४	०
देना ६०००)				रोकड़ सभा में ८०॥-)।			
				बनारस बंक १४७२≡)।।।			
				१५५२॥-)			

जुगुलकिशोर, मंत्री ।

यह पुस्तकें

पुस्तक कार्य्यालय व भारत प्रेस धर्मकूप बनारस से मिल सकती हैं ।

☞ धर्म्म और विज्ञान ☜

यह पुस्तक अंग्रेजी की पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है जिसको विलायत के मशहूर लेखक मि० ड्रेपर ने लिखा था अंग्रेजी में इस पुस्तक का नाम—

" CONFLICT between RELIGION and SCIENCE "

है । यह पुस्तक एक हिन्दी के प्रेमीनरेश की अनुमति और सहायता से प्रकाशित हुई है । इसको "लक्ष्मी" के सम्पादक लाला भगवानदीन ने भावानुवाद किया है । रायल आठपेजी ३८७ पन्ने की जिल्द बंधी हुई पुस्तक है । मूल्य २)

पुस्तक का आशय ।

इस पुस्तक में "धर्म्म और विज्ञान" का परस्पर विरोध बतलाया गया है । अधिकांश मुकाबला ईसाई धर्म्म का दिखाया गया है इसमें इतने विषय हैं ।

[१] विज्ञान का मूल कारण [२] कृश्चियन धर्म्म का मूल । राज्यबल पाकर उसका रूपान्तर विज्ञान से उसका संबंध [३] ईश्वर की एकता के सिद्धान्त के विषय का झगड़ा [४] दक्षिण में फिर से विज्ञान का प्रचार [५] आत्मा के तत्व के विषय में झगड़ा उत्पत्ति और लय का सिद्धांत [६] इस विषय का झगड़ा कि जगत की आकृति कैसी है [७] पृथ्वी की आयू के विषय का वाद-विवाद । [८] सत्य के विषय का झगड़ा [९] विश्व के शासन के विषय का वाद-

विवाद [१०] वर्त्तमानसभ्यता के साथ रोमन, ईसाई धर्म का संमंध [११] वर्त्तमान सभ्यता के साथ विज्ञान का सम्बंध [१२] समीरस्थ संकट।

फुटबाल का खेल।

हिन्दी द्वारा यदि आप अपने लड़कों को फुटबाल का खेल सिखलाना चाहते हैं या उनको इस खेल के निममों को परिचय कराना चाहें तो बाबू कालीदास माणिक [सुपरिण्टेण्डेण्ट खेल कूद, हिन्दूकालेज बनारस तथा सरल व्यायाम के रचियता] की रची पुस्तक को नीचे हमारे कार्य्यालय से मंगाइये। दाम ~)॥

दुर्गेश नन्दिनी ! दुर्गेश नन्दिनी !!

एतिहासिक अति रोचक उपन्यास।

यह बंगाल के मशहूर उपन्यास लेखक बाबू बङ्किमचन्द्र चट्टोपाध्याय लिखित ऐतिहासिक नावेल है [बाबू गदाधर सिंह द्वारा अनुवादित] अत्यन्त रोचक होने का ही कारण है कि तीसरी बार छपा है उम्दः काग़ज़ है। १ भाग ।≤) २ भाग ।≤)

———:o:———

महाराज छत्रसालजी का जीवन चरित्र।

चित्र सहित।

"बुन्देलखण्ड केशरी नामक पुस्तक छप गई है जिसमें बुन्देलखण्ड के महाराज छत्रसालजी के जीवन वृत्तान्त का लेख है, पद्य में लाल कवि कृत छत्र प्रकाश में भी महाराज की वीरता वर्णन है, किन्तु बुन्देलखण्ड केशरी में महाराज के जन्म से लेकर अन्त पर्य्यन्त उनकी समस्त वीरता धीरता, पुरुषार्थ, नीति चातुर्य्य और देशहितौषिता का क्रम से गद्य में वर्णन है साथ ही इसके बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास और प्राणनाथजी का जीवन चरित्र भी संक्षेप में है औ तसवीर श्री छत्रसाल जी की इसके साथ है। मूल्य २ भाग का ।)

———:o:———

प्राचीन भारत वर्ष के सभ्यता का इतिहास ।

(मि० रोमेशचन्द्र दत्त के लिखे हुए पुस्तक का अनुवाद)

यह पुस्तक काशी "इतिहास प्रकाशक समिति" की ओर से छपी है। हिन्दी भाषा में अपने ढंग का नया इतिहास है और भाषा में इतिहास के अभाव को दूर कर रहा है। इस पुस्तक के अधिक विकने से नये २ इतिहास "समिति" की ओर से निकल सकेंगे अवश्य मंगाइये। मूल्य ३ भाग का ३)

मेज़नी का जीवन चरित्र ।

आप इस जीवनी के लाभ को पढ़ने के बाद ही जान सकेंगे पंजाब के मशहूर लीडर ला० लाजपतराय की लिखी पुस्तक का अनुवाद है [बाबू केशव प्रसाद सिंह द्वारा अनुवादित]। दाम ।)

महर्षि शंकर स्वामी का जीवन चरित्र ।

यह पुस्तक पढ़ने योग्य है इसमें शंकर स्वामी के जीवनी पर बड़ी विद्वता के साथ बहस की है किताब बड़ी शिक्षादायक है, ग्रन्थ करता का नाम पं० राजाराम प्रौफ़ेसर है। मूल्य ॥)

उपनिषद भाषा अनुवाद ।

भारत वर्ष की प्राचीन फ़िलोसोफ़ी का अनुवाद ।

पं० राजाराम प्रोफ़ेसर द्वारा अनुवादित ।

तलवकारोपनिषद	≡)॥	वाजसनेयसंहितोपनिषद	≡)॥
प्रश्न-उपनिषद	।)	कठ-उपनिषद	।≡)
माण्डूक्य-उपनिषद	-।)	वृहदारण्यक-उपनिषद	२≡)

पारसियों का इतिहास ।

[पारसी जाति के इतिहास का वर्णन है] पं० रामनारायण मिश्र बी० ए० द्वारा लिखित। मूल्य ≡)

बनिता बिनाेद।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने स्त्रियों के पढ़ने की उत्तम पुस्तकों का अभाव देख कर राजा साहब भिंगा के प्रस्ताव और सहायता से एक अति शिक्षादयक "बनिता विनाेद" नाम की पुस्तक छपवाई है। १९ उपयोगी विषय हिन्दी के १२ चुने हुए लेखकों की लिखी हुई है।

मूल्य १)

लखनऊ की नवाबी चित्रों सहित।

यह ऐतिहासिक मनोहर पुस्तक सरल हिन्दी में उत्तम काग़ज़ पर छप गई है। इस पुस्तक में लखनऊ के बादशाह नसीरुद्दीन हैदर के समय का सच्चा वृत्तान्त है, जिसे एक अंग्रेज़ ने, जो बहुत दिनों तक उनके नौकर रह चुके थे, बड़े मनोहर रीति से लिखा है। इसमें उनकी वे लहरबहर, जिनके लिए कि 'लखनऊ की नवाबी' विख्यात है, लिखी गई है। हाथियों, गेड़ों, शेरों की लड़ाइयां, शिकार के दृश्य ऐसी उत्तम रीति से दिखाए गए हैं कि वाह वाह। बादशाही महलों और ताजियेदारी इत्यादि के वर्णन इस उत्तमता के साथ लिखे गए हैं, मानो हुबहु वे दृश्य आंखों के सामने हो रहे हैं।

पहिला भाग मूल्य ॥।) दूसरा भाग ॥।)

फूल में कांठा।

इस उपन्यास में बड़ी खूबी से साहूकारों के लड़कों के लाड चाव में बिगड़ने की अवस्था का जिक्र है यह पुस्तक एक अंग्रेज़ी पुस्तक "पापर मिलओनर" के आधार पर लिखी गई है। मूल्य ॥=)

—;o‡o:—

प्रतापनाटक

बाबू राधाकृष्णदास विरचित

का दूसरा संस्करण छप कर तय्यार है।

मूल्य ॥।)

अष्टाध्यायी

पाणिनो सूत्र वृत्तिः

पँ० जीवा राम शर्म्मा विरचित

[संस्कृत और भाषा व्याख्या सहित] मूल्य ३)

—:-0-:—

सरल व्यायाम ।

इस पुस्तक में लड़कियों के कसरत करने की रीति भली भांति बताई गई है इनमें लग भग ५० तस्वीरें कसरत की हैं । मूल्य ।≤)

—— :0: ——

चीन दर्पण ।

यह "यात्रा" जिस समय बाक्सरों की लड़ाई हुई थी और हिन्दुस्तान के सिपाही भेजे गये थे उस समय डा० महेन्द्रलाल गर्ग ने अपने तजरुबे से लिखी है । दाम १।)

—— :0: ——

मेगास्थनीज़ ।

भारत वर्ष के लग भग २३०० वर्ष के पुराने वृत्तान्त के जानने का शौक है तो इस यात्री के लिखे वृत्तान्त को पढ़िये [काशी इतिहास प्रकाशक समिति ने छापा है] मूल्य ॥)

—...—

सोनारी ।

यह पुस्तक हिन्दी में सोनारी के फ़ायदे के लिए लिखी गई है इस में कई बाते नई बताई गई हैं । सोनारों को बहुत फ़ायदा हो सकता है, जैसे सोना रंगना वगैरा, दाम ।)

देशी करघा ।

यह ग्रंथ तयार हो गया है, आजकल जो लोग हैंड लूम के कारख़ाने खोलना चाहते हैं और इस विद्या के न जानने के सबब

से हिम्मत नहीं कर सकते या ज्यादा फ़ायदा नहीं उठा सकते उनको बहुत बड़ी मदद और जानकारी इस किताब से हो जायगी। इस के बारे में मिस्टर ए० सी० चटरजी आई० सी० एस० लिखते हैं:- " I have been very pleased to read your book on Handloom weaving..................as the first book on the subject in the Vernaculer, I hope it will have a good sale and your laudable efforts will meet with a due recognitiion "अर्थात् आपकी लिखी देशी करघा नामक किताब को पढ़ कर मैं बहुत खुश हुआ, चूंकि देशी ज़बान में यह पहली ही किताब लिखी गई हैं, मुझे उमेद है कि इसकी खूब बिक्री होगी और आपकी तारीफ़ काबिल मेहनत और काम की लोग खूब कदर करेंगे"। यह किताब पढ़ने लायक है और इसमें बहुत सी तस्वीरें भी दी गई हैं, दाम ॥)

——:o:——

सुघड़ दर्ज़िन।

नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।

स्त्री शिक्षा के लिए बहुत ही अपूर्व और उपयोगी ग्रंथ है। इस में सीने परोने, कसीदे काढ़ने, कपड़ों की मरम्मत करने कपड़ों के काटने छाटने, मोज़े इत्यादि बुनने की तरकीबें बहुत ही उत्तम रीति से बताई गई हैं और साथ ही उत्तम उत्तम चित्र दे कर उन्हें स्पष्ट कर दिया है मानो सोना और सुगन्धि हो गया है। यह किताब ऐसी है कि हर गृहस्थ के यहां अवश्य रहनी चाहिए। स्त्री शिक्षा के लिए ऐसा अनूठा ग्रंथ अब तक नहीं छपा था। दाम ।||)

इतिहास, इतिहास।

जापान ! जपान !! जापान !!!

आपको जापान के इतिहास पढ़ने का शौक हो तो पं० रामनारायण मिश्र बी० ए० का लिखा हुआ जापान का इतिहास जो नागरीप्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित है मंगाइये कीमत कुल ।≶)

हैदरअली ।

टीपूसुलतान का बाप हैदरअली मैसूर का मशहूर नवाब हो गया है । इसकी जीवनी बड़ी ही दिल चस्प है । यह वह शख्स है जो एक अदना तिलंगे से नवाब होगया और दक्खिन में इसका इतना दबदबा होगया था कि बड़ी बड़ी रियासतें इसके नाम से कांपती थी । अंगरेजों को इससे बढ़ कर किसी दूसरी रियासत से हिन्दुस्तान में मुकाबला नहीं करना पड़ा—एक मरतबा तो इसने अंगरेजों को हिला तक दिया था-यह सब वृत्तान्त इसमें पढ़ने ही योग्य हैं अवश्य मंगा कर पढ़िये ॥)

——o-:——

बरनियर की यात्रा ।

शाह जहां, दारा, शुजा, औरङ्गजेब, मुराद, जहानआरा और रौशन आरा बेगम तथा प्रधानतः अनेक युक्तियों से औरङ्गजेब की गद्दी का अधिकार प्राप्त करने का हाल हैं १, भाग ॥) २ भाग ॥) ३, भाग ॥)

——:○:——

भीष्मपितामा का जीवन चरित्र ।

जिसको पंडित आर्य्य मुनि प्रोफेसर संसकृत फिलासफी डी० ए० वी० कालिज लाहोर ने लिखा है पुस्तक बड़ी सिक्षा दायक है मूल्य ।)

—∞—

स्वास्थ्यरक्षा ।

हिन्दुस्तानी स्वास्थ्यरक्षा यह पुस्तक स्वास्थ के प्रेमियों को अवश्य मंगाना चाहिए काशी के मशहूर डाकृर छन्नूलाल जी ने स्वयम लिखा है मूल्य ।)

———

एडवर्ड तिलक यात्रा ।

महाराज धिराज एडवर्ड सप्तम के लंडन राजतिलक महोत्सव का आंखों देखा वर्णन है जिसको ठाकुर गदाधरसिंह जी ने लिखा है किताब बड़ी रोचक है मूल्य ॥≤)

स्वदेशी आन्दोलन और वायकाट।

इस लेख को पं० माधवरावसप्रे बी० ए० ने सुप्रसिद्ध देशभक्त श्रीयुत बालगंगाधर तिलक बी०ए०एल०एल बी द्वारा लिखित का अनुवाद किया है मूल्य ≈)॥

सुन्दर सरोजनी।

प्राकृतिक, मनोहरता, प्रेम, मैत्री, और लङ्काभ्रमण का अत्यन्त रोचक संयोगांत उपन्यास है पं० देवीप्रसाद द्वारा विरचित मूल्य ।≈)

जीवनचरित्र।

कबिराज लछीराम का जीवन चरित्र ≈)
महाराज शिवाजी का जीवन चरित्र बाबूकार्तिकप्रसाद लिखित ।)
जेरी बालडी...पं० सिद्धेश्वर शर्म्मा ... ... " -)॥
बिशुद्ध चरित्रावली...पं० माधवप्रसाद ... ... " ॥≈)
महाराज विक्रमादित्य का जीवनचरित्र...बा कार्तिकप्रसाद " ≈)
मुहम्मद का जीवनचरित्र...पं जगन्नाथप्रसाद ... " ॥)
मीराबाई का जीवनचरित्र...बा कार्तिकप्रसाद ... " ≈)
बाबू हरिश्चन्द्र का जीवनचरित्र...बा राधाकृष्णदास " ॥≈)
अशोक का जीवनचरित्र...ठाकुर सूर्य्य कुमार वर्म्मा " ।)
छत्र प्रकाश महाराज छत्रसाल की तथा छन्द बद्ध जीवनी " १)
बाबू कार्तिकप्रसाद की जीवनी बाबू बालमुकुन्द वर्म्मा " ≈)
रामकृष्ण परमहंस का जीवनचरित्र " ≈)

मनेजर

पुस्तक कार्य्यालय, भारत प्रेस

धर्म्मकूप

बनारस।

सभा के पारितोषिकों की सूची।

१ इस वर्ष के सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं। ये लेख ३१ दिसम्बर १९०८ तक सभा में आजाने चाहिएं।

वैज्ञानिक विषय।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव।

साधारण (विद्या) विषय।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था।

२ डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल—यह सोने का मेडल उस व्यक्ति को दिया जायगा जिसका लेख "छूत वाले रोग और उनसे बचने के उपाय" पर सबसे उत्तम होगा। लेख सरल हिन्दी में होना चाहिए और सभा के पास ता० ३१ दिसम्बर १९०८ तक आजाना चाहिए।

३ संयुक्त प्रदेश के न्यायालयों में जो अर्जीनवीस सब से अधिक अर्जियां लिखकर सन् १९०८ में दाखिल करेगा उसे २५) रु० का एक पुरस्कार दिया जायगा और जो उससे कम अर्जियां देगा उसे १५) रु० पुरस्कार दिया जायगा। ये पुरस्कार एकही ज़िले के दो अर्जीनवीसों को न मिलेंगे। न वे इसे पा सकेंगे जो सभा की ओर से इस कार्य के लिये वेतन पर नियत हैं। जो लोग इस पुरस्कार को पाया चाहें उन्हें उचित है कि दो प्रतिष्ठित वकीलों के हस्ताक्षर सहित ७ जनवरी १९०९ तक सभा को सूचना दें कि उन्होंने कितनी अर्जियां सन् १९०८ में दाखिल की हैं।

५००) का पुरस्कार—सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका के आधार पर जो हिन्दी का सब से उत्तम व्याकरण लिखेगा उसे यह पुरस्कार दिया जायगा। व्याकरण ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा के पास आजाना चाहिए। यदि कई व्याकरणों के भिन्न भिन्न अंश उत्तम समझे जांयगे तो यह पुरस्कार उन सब लोगों में बाँट दिया जायगा और उन ग्रन्थों को घटाने बढ़ाने आदि का इस सभा को पूरा अधिकार होगा। सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका दो पैसे का टिकट डाक व्यय के लिये भेजने पर सभा के मंत्री से मिल सकती है।

—:o:—

भाग १२]　　*Registered No. A 414*　　[संख्या ७

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

सम्पादक—श्यामसुन्दर दास बी० ए०

प्रति मास की १५ ता० को
काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।
जनवरी १९०८।

Printed at the Bharat Press, Benares.

प्रति संख्या का मूल्य ≈)　　वार्षिक मूल्य १)

विषय ।

निवेदन ।

जिन सभासदों ने अब तक अपना वार्षिक चन्दा भेजने की कृपा नहीं की है उनसे प्रार्थना है कि वे उसे शीघ्र भेज कर सभा को अनुगृहीत करें ।

जुगुलकिशोर,
मंत्री ।

सूचना ।

दिसम्बर की ग्रन्थमाला अब तक छपकर प्रकाशित नहीं हुई । वह छप रही है । छपते ही प्रकाशित की जायगी ।

जुगुलकिशोर,
मंत्री ।

सोलहवां चित्र।

सू

च

ए
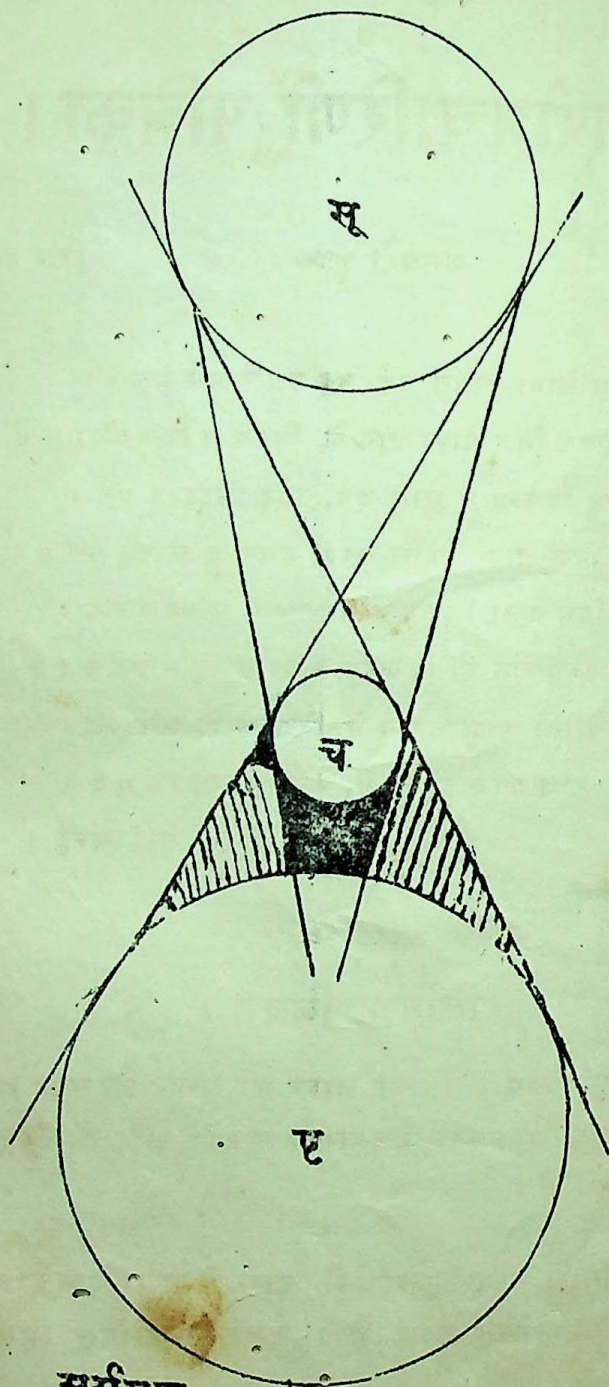
सूर्यग्रण

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

भाग १२] जनवरी १९०८। [संख्या ७

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥ १ ॥
करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल ॥ २ ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥ ३ ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न।
राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ ४ ॥

हरिश्चन्द्र।

विविध विषय।

कोटा राज्य में हिन्दी भाषा का प्रचार हो गया। अब वहां के सब राजकाज देवनागरी अक्षरों और हिन्दी भाषा में होने लगे हैं।

***

प्रयाग में नागरी प्रवर्धिनी सभा के स्थापित होने का सूचनापत्र प्रकाशित हुआ है। इसके सभापति हिन्दी के

पुराने लेखक पण्डित बालकृष्ण भट्ट हुए हैं। इस सभा का उद्देश्य हिन्दी भाषा की उन्नति और नागरी अक्षरों का प्रचार रक्खा गया है। प्रयाग में ऐसी सभा के स्थापित होने से हमको विशेष आनन्द हुआ है। यदि यह सभा और कार्यों के अतिरिक्त अच्छे अच्छे ग्रन्थों का हिन्दी में प्रकाशित करना अपना मुख्य उद्देश्य और कर्तव्य रखती है वह हिन्दी भाषा की विशेष सहायता कर सकती। गुजरात की वर्नाक्यूलर सोसायटी के ढंग पर एक अच्छे समाज के स्थापित होने की हिन्दी पढ़े लिखे लोगों में बड़ी आवश्यकता है। हम इस नई सभा का ध्यान इस ओर दिलाते हैं और आशा करते कि वह इस निवेदन पर ध्यान देगी।

***

हमारी काशी की सभा अपने पुस्तकालय की विशेष उन्नति की ओर इस समय दत्तचित्त है। बनारस के म्युनिसिपल बोर्ड ने ३६०) रु० से वार्षिक सहायता करना निश्चय किया है और वह ३०) रु० मासिक गत अक्तूबर मास से बराबर दे रही है तथा बनारस के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ने भी ५०) रु० वार्षिक सहायता देना स्वीकार किया है। इसके अतिरिक्त इस वर्ष के बजेट में सभा ५७०) रु० पुस्तकालय के लिये खर्च करना स्वीकार कर चुकी है। अब सब मिलाकर पुस्तकालय की उन्नति के लिये १०००) रु० के लगभग प्रति वर्ष व्यय हो सकेगा। इससे आशा है कि इस कार्य में विशेष सफलता प्राप्त हो। पुस्तकालय का एक नया सूचीपत्र तय्यार हो रहा है। यह उसी ढंग पर बनाया जा रहा है जैसा कि योरप के बड़े बड़े पुस्तकालयों का सूचीपत्र होता है। इसके

तय्यार होने पर ग्रन्थ, ग्रन्थकर्ता और विषय के क्रम से सब पुस्तकों का अलग अलग पता लग सकेगा। परन्तु सब से आवश्यक काम नई पुस्तकों का संग्रह करना है और यह काम हिन्दी लेखकों और पुस्तकप्रकाशकों की सहायता बिना नहीं हो सकता। इसलिये सभा की प्रार्थना है कि जो नई पुस्तक हिन्दी में प्रकाशित हो उसकी सूचना सभा को अवश्य मिल जाय जिसमें वह उसके प्राप्त करने का उद्योग कर सके। हमें आशा है कि लेखकगण सभा की इस प्रार्थना पर ध्यान देंगे जिसमें सभा का पुस्तकालय कम से कम हिन्दी में छपी पुस्तकों का बड़ा भारी भंडार हो जाय।

***

इस पत्रिका के पिछले कई अंकों में "प्रणव की पुरानी कहानी" नाम का एक लेख छप चुका है, उसके सम्बन्ध में जिन नेत्रहीन पंडित जी का उल्लेख है उनके विषय में अनेक लोगों ने प्रश्न किए हैं। अतएव सब महाशयों की सूचना के लिये प्रकाशित किया जाता है कि उनका नाम पण्डित धनराज मिश्र है। वे पण्डित नैपाल मिश्र के पुत्र और पण्डित हरगोविन्द मिश्र के पौत्र हैं। उनका स्थान बस्ती ज़िले के इहावल ग्राम, डांकघर बेलहर-कलां है। वे प्राय: देशाटन किया करते हैं। जब वे दो ही वर्ष के थे तभी वे नेत्रहीन हो गए। छोटी ही अवस्था में अनेक प्रसिद्ध स्थानों में जा जा कर उन्होंने संस्कृत का अभ्यास प्रारम्भ किया। पहिले उन्होंने संस्कृत व्याकरण को कंठस्थ किया और उसके पीछे अनेक प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध ग्रन्थों को कंठाग्र किया। पठन पाठन में ये अब तक दत्तचित्त हैं। इस सूचना के लिये हम

सफदरगंज के पण्डित प्रयाग नारायण त्रिवेदी के अनुगृहीत हैं।

***

हिन्दी के वृहद् कोश के विषय में यह सभा जो उद्योग कर रही है उसकी सूचना इस पत्रिका के पिछले अंक में दी जा चुकी है और उसी अंक में सभा का जो कार्यविवरण छपा है उससे यह भी विदित होता है कि सभा ने इस कार्य के करने का क्या प्रबन्ध सोचा है। इस सम्बन्ध में जो पत्र अब तक सभा के पास आए हैं वे अत्यन्त उत्साहवर्द्धक हैं। अनेक लोगों ने सभा के इस उद्योग की प्रशंसा की है और जिस प्रणाली से वह इस कार्य को चलाया चाहती है उसे स्वीकार किया है। परन्तु यह काम बिना आर्थिक सहायता के नहीं चल सकता, यहां तक कि बिना १०००) रु० मिले इस कार्य का आरम्भ भी नहीं हो सकता। सभा बुलन्दशहर के बाबू बंशीधर वैश्य मारवाड़ी की अत्यन्त अनुगृहीत है कि उन्होंने इस कार्य के लिये ५) रु० बिना मांगे ही भेज कर सभा के उत्साह को बढ़ाया है। यदि इसी प्रकार से और हिन्दी प्रेमी भी इस कार्य में सहायता करें तो शीघ्र ही १०००) रु० एकत्रित होकर इस कार्य का आरम्भ हो सकता है, हां, यह अवश्य है कि इस कार्य के लिये हमें ३००००) रु० की आवश्यकता है परन्तु कार्य आरम्भ होने की देर है, फिर तो हमें अनेक ओर से सहायता मिल सकती है। इसलिये हम आशा करते हैं कि हमारे हिन्दी प्रेमी इसी बड़े काम के आरम्भ कराने में यश के भागी अवश्य होंगे।

सत्रहवां चित्र

सू

च

पृ
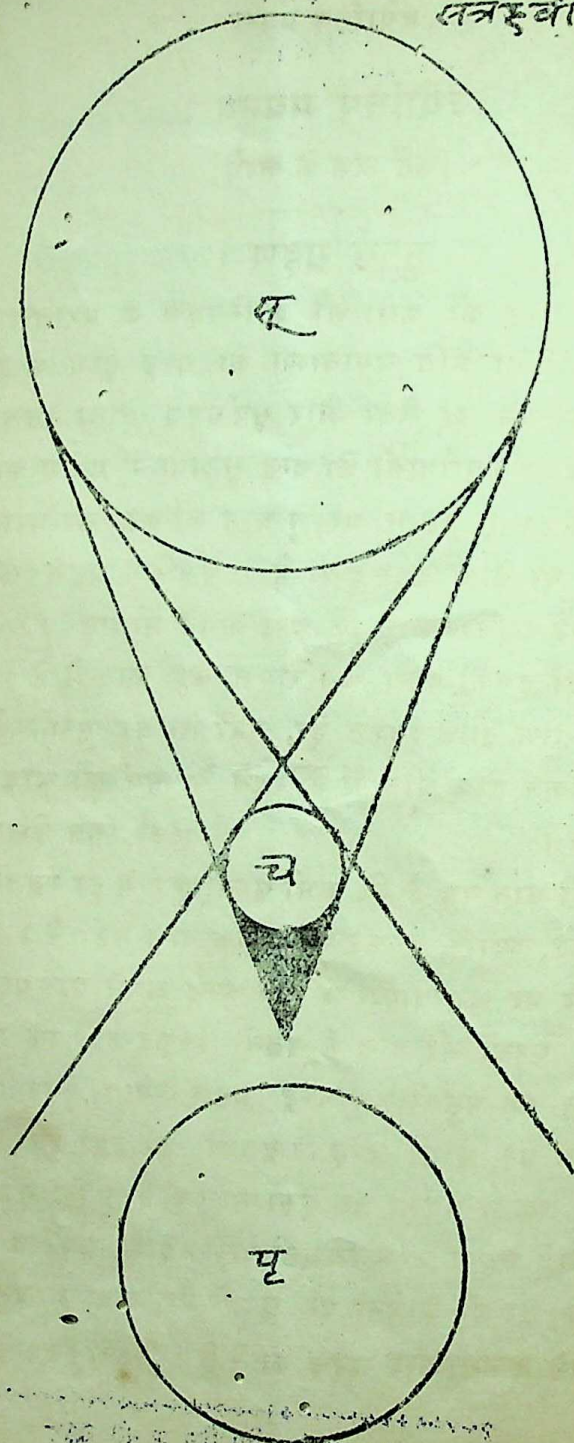
ज्योतिष प्रबन्ध ।

[छठें अंक के आगे]

——:o:——

सूर्य्य ग्रहण ।

यदि चन्द्र की कक्षा भी क्रान्तिवृत्त के धरातल पर समान होती तो प्रति अमावास्या को चन्द्र सूर्य्य के ठीक आगे आकर उसे छा लेता और सूर्यग्रहण होता रहता। इसी प्रकार प्रति पूर्णमासी को चन्द्र भूछाया में प्रवेश करता और ग्रहण होता रहता, परन्तु चन्द्र की कक्षा का धरातल क्रान्तिवृत्त पर से ५° उठा हुआ है। इसलिये ग्रहण लगने के लिये यह आवश्यक है कि चन्द्र अपने सम्पात (Nodes-अर्थात् जहां उसकी कक्षा क्रान्तिवृत्त को काटती है) पर हो वा ५° तक उसके निकट हो, नहीं तो वह पृथ्वी और सूर्य के ठीकम ठीक बीच में न रहने से सूर्य की आड़ न कर सकेगा। [१६वां चित्र देखो]

दूसरी बात यह है कि कभी पृथ्वी सूर्य से दूर रहती है कभी निकट, क्योंकि इसकी कक्षा ठीक गोल नहीं है। यदि ऐसे अवसर पर अमावास्या के दिन चन्द्र अपने पातपर आ गया और पृथ्वी भी चन्द्र से इतनी निकट रही कि चन्द्र छाया भूमि तक पहुंची तब चन्द्र ग्रहण लगेगा, और यदि उक्त अवसर पर पृथ्वी चन्द्र से इतनी दूर रही कि चन्द्र छाया उस तक न पहुंची तब ऐसा मालूम देगा कि सूर्य के बीच से कोई काली चीज निकली चली गई है, सूर्यतेज कुछ धुंधला सा तो हो जायगा पर पृथ्वी पर प्रकाश बनाही-रहेगा। इसे **वलयाकार** ग्रहण कहते हैं। [१७वां चित्र देखो]

यह सिद्ध होचुका है कि चन्द्र छाया २३६००० मील तक रहती है। इसलिये आवश्यक है कि अमावास्या के दिन चन्द्र अपने पात पर वा उसके निकट हो और उसकी दूरी भी २३६००० मील से कम की हो तब जाकर ग्रहण लग सकता है (विदित रहे कि चन्द्र की पृथ्वी से न्यूनतम दूरी २२५७१९ मील तक हो जाती है)। ऐसी अवस्था में जब चन्द्र अपने सम्पात पर रहे तो पूर्णग्रहण होगा, वह भी थोड़ी ही देर तक के लिये पूर्ण ग्रास रहता है, क्योंकि चन्द्र छाया की लम्बाई और चन्द्र की न्यूनत्तम दूरी में इतना अधिक अन्तर नहीं है कि चन्द्र की शुंडाकार छाया का कुछ चौड़ा भाग भूमि पर पड़े। पूर्ण ग्रास १६७ मील तक भूमि पर ज्यादा से ज्यादा दिखाई दे सकता है, इसके ऊपर खण्ड ग्रास दिखाई देगा।

बड़े से बड़े चन्द्र बिम्ब का व्यास १००६"×२ और छोटे से छोटे सूर्य बिम्ब का व्यास ९४६"×२ है, इन दोनों का अन्तर हुआ २×६०" अर्थात् इस अवस्था में चन्द्र का व्यास १२०" बड़ा हुआ। अब जितनी देर में चन्द्र १२०" न हट जाय पूर्ण ग्रास लगा रहेगा। चन्द्र की गति प्रति मिनिट ३०" है इस हिसाब से ज्यादा से ज्यादा ४ मिनिट तक पूर्ण ग्रास रह सकता है, तदुपरान्त खण्ड ग्रास हो जायगा।

वलयाकार ग्रहण में सूर्य का बड़े से बड़ा व्यास १९५६" और चन्द्र का छोटे से छोटा व्यास १७६८" हैं। इनका अन्तर हुआ १८८"। इसलिये $\frac{१८८}{३०}$ = ६·२६ मिनिट तक पूर्ण चन्द्र सूर्य के अन्दर दिखाई देगा। इस अवस्था में यद्यपि दोनों

अठारहवां चित्र
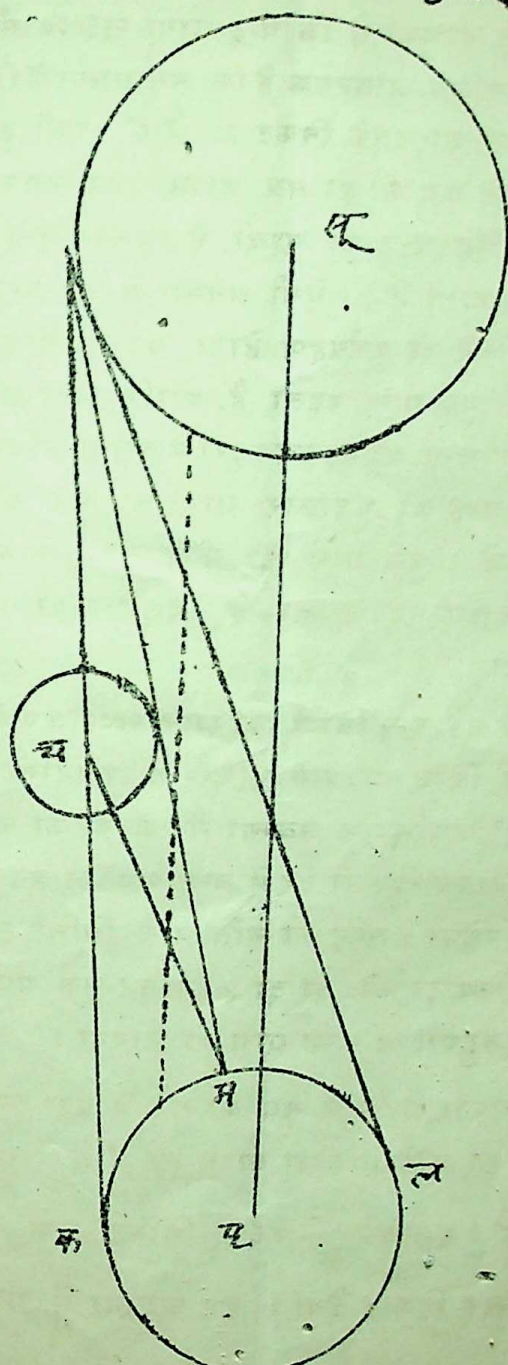
के कन्द्र एक स्थान पर न भी हों तौ भी चन्द्र बिम्ब सूर्य बिम्ब से छोटा होने के कारण उसमें आजाता है।

प्राय: ऐसा होता है कि ग्रहण पृथ्वी के एक भाग में लगता है और उसी ओर दूसरे भाग में नहीं दिखाई देता है। इसका कारण १८वें चित्र से प्रगट होजायगा । मान लो सू = सूर्य, च = चन्द्र, पृ = पृथ्वी है। यह स्पष्टही है कि म ल स्थानों के बीच में सूर्य की आड़ करने वाला कुछ नहीं है परन्तु म क के बीच में ग्रहण लगा देखाई देगा । म स्थान पर मोक्ष का समय है और म से क तक खण्ड ग्रास दिखाई देगा।

चन्द्र ग्रहण ।

चन्द्र पृथ्वी के चारों ओर घूमता है और जब वह सूर्य से षड्भान्तर (opposition) अर्थात् १८०° पर आता है तब पूर्णिमा होती है। इस समय यदि चांद अपने पात पर हो अथवा उसके निकट ५° तक रहे तब भूछाया में उसका प्रवेश होता है। क्योंकि भूछाया क्रान्तिवृत्त पर ठीक सूर्य से १८०° पर ही पड़ती है। चन्द्र कक्षा भी दीर्घवृत्ताकार है। इसलिये भूछाया के वृत्त का व्यास जो चन्द्रकक्षा के पात पर पड़ता है ज्यादा से ज्यादा २७४२" और कम से कम २२६९" का होता है। इसी लिये सूर्य ग्रहण की अपेक्षा चन्द्र ग्रहण अधिक होता है। चन्द्र बिम्ब का सब से बड़ा व्यास २०१२" है, इसलिये पूर्ण चन्द्र ग्रहण का समय भी देर तक का है।

पृथ्वी चन्द्र से बड़ी है इसलिये इसकी छाया चन्द्र कक्षा के पार तक चली गई है और चन्द्र छोटा है, इसलिये इसकी छाया भूमि तक कभी पहुंचती है, कभी नहीं। क्योंकि

यह प्राकृतिक नियम है कि छोटे पदार्थों की छाया छोटी होती है अर्थात् उसका फैलाव दूर तक नहीं होता और बड़े पदार्थ की छाया दूर तक जाती है। (देखो चित्र १७) यही कारण है कि चन्द्र ग्रहण बहुत होता है और सूर्य ग्रहण कम। [क्रमशः]

--:0:0:--

हिन्दुस्तान का इतिहास ।

[छठें अंक के आगे]

--:0:--

दूसरा अध्याय ।

सिंध में हिन्दूराज्य ।

मुसलमानों ने सिंध के इतिहास की कई किताबें लिखी हैं जिनमें सब से पिछली तहुफतुलक्रास है जो सन् ११९५ (संवत १८३८) में बनी है। इसमें ऐसा लिखा है कि हिजरी सन ६१३ (संवत १२७३) तक सिंध की कोई तवारीख अरबी फारसी में नहीं थी, पीछे इतनी किताबें लिखी गई हैं।

१ काजी इसमाइल के पास, जो अली का बेटा, मूसा का पोता और नाई का पड़पोता था, उसके पुरखाओं का लिखा हुआ १ मसौदा था जिसमें सिंध के फतह होने का वृत्तान्त अरबी भाषा में लिखा था। उसका उलथा सन ६१३ संवत् १२७३) में उच्च के रहने वाले अबीबक्र के पोते, हामिद के बेटे, अली ने फरसी* में किया।

* इसका नाम तारीख हिंद वा सिंध है। इसकी १ नकल लंदन में इंडिया आफिस के पुस्तकालय में है। अरबी मसौदा अबुल कासिम के कुछ पीछे का ही लिखा हुआ है क्योंकि जिंदा लोगों के नाम और बातों से भी मोहम्मद कासिम की फतह के कुछ हाल और उसमें पहिले के हिंदु राजाओं के वृत्तान्त भी लिखे हैं। (एलफिंस्टन)।

२ अकबर बादशाह के राज्य में सक्कर के मीर मासूम ने एक तवारीख सिंध की बनाई।

३ जहांगीर बादशाह के समय में मीर मोहम्मद ताहिर ने भी एक तवारीख लिखी।

४ अरगूंनामा।

५ तरखांनामा।

बेलगरनामा*।

इसके पीछे फिर कोई किताब नहीं बनी।

इन किताबों में सिंध के पुराने हिंदू राज्य का जितना कुछ हाल मिलता है वह तुहफ़तुलक्राम से यहां लिखा जाता है।

सिंध नाम—एक आदमी के नाम पर यह मुल्क सिंध कहलाया है। इसके बेटों पोतों ने यहां राज्य किया। उनसे बहुत सी जातें निकलीं परन्तु उनके वृतान्त किताबों में लिखे नहीं गए।

उनके पीछे बनिया, टांक, और लोमेद जाति के लोगों का राज्य हुआ परन्तु उनके हालात का भी कुछ पता नहीं लगा इसलिये पिछले राजाओं का वर्णन किया जाता है जो राय कहलाते थे। रायों का राजस्थान शहर अलोर× (अरोड़) में था। उनका राज्य पूर्व में कश्मीर और

* इनके सिवाय जचनामे का नाम भी सुना जाता है पर वह देखने में न आया।

× अलोर अब उजड़ा पड़ा है उसके खंडहर अक्कर के पास बताए जाते हैं। अक्कर का किला अलोर की ईंटों से बनाया गया है। और ठट्ठा अलोर के रहने वालों से बसा है। अरोड़ के निकसे हुए हज़ारों अरोड़े खत्री मारवाड़ में बसते हैं।

कन्नौज तक, पश्चिम में मकरान और समुंदर के देवल बंदर तक, दक्षिण में सूरत बंदर तक, और उत्तर में कंधार, सीस्तान सुलेमान, फरदान, और केकानान के पहाड़ों तक था।

इन राजाओं की परम्परा का तो पता नहीं मिला। पिछली कई पीढ़ियों के नाम मालूम हुए सो ही लिखे जाते हैं।

१ राय देवायज-बड़ा बादशाह था, हिंदुस्तान के सब बादशाहों से उसकी दोस्ती और रिश्तेदारी थी।

२ राय सहरसन (महरसन)-राय देवायज का बेटा।

३ राय साहसी।

४ राय सहरसन (वा महरसन) दूसरा, इस पर नीम-रोज (फ़ारस वा ईरान) के बादशाह ने चढ़ाई की, यह केच में जाकर उससे लड़ा, तड़के से दो पहर तक लड़ता रहा, फिर गले में एक तीर लगा जिससे मर गया, बादशाह उसके लश्कर को लूट कर लौट गया, फिर फ़ौजवालों ने मिलकर उसके बेटे साहसी को तख़्त पर बैठाया।

५ राय साहसी दूसरा-इसने पहिले तो अपने राज्य की सीमाओं का प्रबंध किया, फिर प्रजा को हुक्म दिया कि राज कर के बदले में मायेला*, सिवराय†, मऊअलोर‡ और सेवस्तान के छओं किलों की जमीन को मट्टी से पाटकर ऊंची कर देवें, प्रजा ने ऐसा ही किया।

साहसी के प्रतिहारी (ड्योढीदार) का नाम राम था, और मंत्री का नाम भी राम ही था। एक दिन शीलायज§ नाम

* मायेला सिंध में अब भी बसता है।

† इसका पता नहीं लगता, शायद सिवस्तान वा सूस्थान हो।

‡ मऊ भी सिंध नदी के परे उजड़ा पड़ा है।

§ शीलायच वा शीलाक्ष ?

के एक प्रसिद्ध ब्राम्हण का बेटा जच्च* आकर राम प्रतिहारी से मिला। प्रतिहारी ने उसकी बातों से प्रसन्न होकर उसे मंत्री से मिलाया, वह थोड़े ही दिनों में मंत्री का मित्र बन गया।

एक समय राजा बीमार था, दरबार में नहीं आता था, उसने देश देशांतर के पत्रों को पढ़ने के लिये मंत्री को अंदर बुलाया। मंत्री ने जच्च को जो बड़ा मुंशी (बहुत पढ़ा लिखा) था भेज दिया। राजा उस वक्त ज़नानख़ाने (अन्तःपुर) में था, जच्च को वहीं बुला लिया, रानी सोहंदी परदा करने लगी तो कहा कि ब्राम्हणों से क्या परदा!

जच्च अंदर गया, राजा उसकी बाणी का चमत्कार देखकर चकित रह गया और मंत्री को कहला भेजा कि प्रतिहारी का काम इसको दिया जाय और यह अंदर आकर बात चीत करता रहे। जच्च इस तरह भीतर आने जाने का अवसर पाकर रानी के चित भी चढ़ गया, उसने चाहा कि जच्च उससे भी मिला करे।

परन्तु वह इस काम से नहीं नहीं करता रहा और अपने अच्छे बरताव और कामों से सब छोटे बड़े आदमियों का कृपापात्र बन गया। उसके भाग्यबल से जब राजा बहुत बीमार

* चच्च भी पढ़ा जाता है और जक्ष भी हो सकता है। मारवाड़ के पुराने शहर भीनम्हाल में जाकोब नाम का एक तलाव है। उस पर पत्थर की बैठी हुई एक मूर्ति बनी है जिनका नाम वहां के ब्राह्मण जक्ष बताते हैं और कहते हैं कि यह जक्षराज कश्मीर से आया था और जाकोब तलाव इसी का बनवाया हुआ है। ऐसी ही एक मूर्ति मुलतान में भी बताई जाती है। कौन जानें वह जक्ष यही जच्च हो।

होकर मरने लगा तो रानी ने जच्च को बुलाकर कहा कि राजा का तो यह हाल है, बेटा कोई नहीं है, कुटुंबी राज के मालिक बनकर न तुझे जीता छोड़ेंगे न मुझे—इसलिये मैं एक प्रपंच रचती हूं जिससे यह राज तुझ को मिलजाय।

जच्च ने जब रानी की बात मान ली तो रानी ने सब अमीरों और वज़ीरों से कहलाया कि अब राजा को कुछ आराम हो गया है पर अभी नाताक़ती है और राज के काम बहुत दिनों से बंद हैं इसलिये राय ने जच्च को अपनी अंगूठी देकर यह हुक्म दिया है कि वह तख़्त पर बैठकर नायब (प्रतिनिधि) के तौर सेका म किया करे, तुम सब हाज़िर हो कर उसका हुक्म मानो।

अमीरों ने आकर जच्च को सलाम किया और वह राय की जगह बैठकर राज का काम करने लगा।

थोड़े दिन पीछे ही राय साहसी मर गया मगर रानी ने ऐसा बंदोबस्त कर रक्खा था कि किसी को खबर न हुई और जो नज़दीकी भाई भतीजे राज के दावेदार थे उनको राय की वसीयत (अन्तिम आज्ञा) सुनने के बहाने से एक एक करके बुलाया और सबको कैद कर दिया, फिर ग़रीब कुटुंबियों को बुलाकर कहा कि मैंने तुम्हारी ख़ातिर सब दावेदारों को पकड़ कर कैद कर दिया है अब तुम में से जो जिसको अपनी बराबरी का समझे बंदीखाने में जाकर मार डाले और उसके घरबार और माल असबाब का मालिक हो जाय, फिर आकर जच्च की सेवा करे जिससे उसका सब काम ठीक हो जायगा। उन गरीबों ने इस बात को मुफ़्त की लूट समझ कर तुरंत वैसा ही किया। रानी ने मेहरबानी से एक

को बुला कर जच्च के पास भेजा और पति की लोथ जला दी।

इन पांचों राय वंशी राजाओं ने १३७ वर्ष राज्य किया, पीछे ब्राम्हणों का राज्य हो गया।

ब्राह्मण राज्य।

(१) शीलायच का बेटा जच्च* जब इस तरह तख़्त का मालिक हुआ तो उसने रानी के कहने से ख़जाने का ताला खोला और सब लोगों को बहुत सा दे दिलाकर अपना गुलाम बना लिया। तब रानी ने उसका काम मन चाहा बना हुआ देखकर बड़े बड़े ब्राह्मणों और उन नए अमीरों को बुलाकर कहा कि अब मुझे जच्च के वास्ते हलाल (लीन) करदो। उन्होंने उसका नाता जच्च से कर दिया मगर राना महरत चित्तौरी जो राय साहसी का जमाई था इस बात के सुनते ही बहुत सा लश्कर ले कर लड़ने को आया और रास्ते में से जच्च को खत लिखा कि ब्राह्मणों को राज से क्या काम है। जो तू अपने प्राण बचाया चाहता है तो राज छोड़ दे, तुझे तेरा अगला काम दे दिया जायगा।

जच्च घबराया हुआ रानी के पास गया और बोला कि एक बड़ा प्रबल बैरी चढ आया है, इसका क्या उपाय करूं। रानी ने कहा कि लड़ाई का उपाय तो मर्द ही जानते हैं जो तू मेरी जगह बैठे और अपना बाना मुझे दे तो मैं रण में जाऊं और दुश्मन को मारूं।

जच्च यह सुन कर खिसयाना होगया। रानी ने तसल्ली

---

* जच्च के नाम से जच्चनामा भी बना हुआ सुना जाता है।

देकर कहा कि खजाना तो तेरे पास है लश्कर का मन मना ले, तेरी जीत रहेगी।

जच्च ने तुरंत दल बांध कर सिपाहियों को बहुत सा रूपया दिया और लड़ने की तैयारी की। जब राना महरत अलोर के पास पहुंचा और दोनों लश्करों की मुठभेड़ हुई तो राना ने जच्च के पास आकर कहा, कि इस झगड़े की जड़ तो हम तुम हैं फिर और लोग क्यों खपाए जांय, दोनों लड़कर निपट लें, जच्च ने कहा कि मैं ब्राह्मण हूं घोड़े पर चढ कर नहीं लड़ सकता, हां जो तू भी घोड़े से उतर पड़े तो मैं तुझसे लड़ूं।

राना महरत भी घोड़े से उतर पाड़ा, जच्च ने अपने सईस से कह रक्खा था सो वह धीरे धीरे घोड़े को उसके पास ले आया, महरत उसके इस कपट से गाफिल था, जब राना अपने घोड़े से कुछ दूर आ गया तो जच्च लपक कर अपने घोड़े पर चढ बैठा और महरत को एकही बार में मार कर लड़ाई जीत गया। राना की फौज भाग निकली, जच्च फतह के बाजे बजाता हुआ अलोर में आया। यह वारदात सन १ हिजरी संवत् ६८९ के लगभग हुई।

फिर जच्च हरीमन (वा भरीमन) वज़ीर से सलाह करके अपने राज्य की सीमाओं का बंदोबस्त करने को निकला और अलोर में अपने भाई को छोड़ गया। उस समय सिवस्तान का राजा मत्ता नामका था। वह जच्च का अधीन हो गया। ऐसेही अगम लोहाने ने भी उसकी ड्योढ़ी पर सिर घिसा, सोयस के किले में जिसे अब रेवी कहते हैं चन्ना जाति के राजा कठ्वा का बेटा काका था, वह भी जच्च की

बंदगी में हाजिर हो गया और उसके साथही इस जाति के लोग भी जिनके राजस्थान का नाम काकाराज था, जच्च के पैरों पर आ गिरे।

जच्च के ऊपर तीन बार अरबों ने चढ़ाई की परन्तु उसकी फ़ौज ने उनको हरा कर भगा दिया और इस तरह वह सफलता पूर्वक ६२* वर्ष राज करके सन् ६३ संवत् ७४० (?) में मर गया॥

(२) राजा चन्द्र।

(२) जच्च के पीछे उसका भाई चंद्रराज सिंहासन पर बैठा। सेवस्थान के राना मता ने कन्नौज के महाराज के पास जाकर कहा कि जच्च तो मर गया है उसका भाई प्रतिनिधि हुआ है, जो आप कुछ सहायता करो तो सिंध का राज्य सहज ही में हाथ आता है। उसने अपने भाई वसाईस को मता के साथ कर दिया। चंद्र ने भी लड़ने की तयारी की। वसाईस और मता कुछ समय तक सिंध में लूट मार करते रहे। अलोर से भी आकर चिपटे, जहां बहुत से छलबल किए पर कुछ काम नहीं सरा, सुलह करके लौट गए जिससे चंद्र का नाम और काम बहुत बढ़ गया। वह ७ वर्ष राज करके (संवत् ६७० में) काल प्राप्त हुआ उसके पीछे दाहर (धीर) गद्दी पर बैठा जो उसका भतीजा था।

---

* ४० वर्ष राज करना भी किसी किसी किताब में लिखा है।

† यह शहर अब उजड़ा पड़ा है। सुना है कि गवर्न्मेंट प्राचीन शोध के वास्ते उसके खँडहरों को खुदाया चाहती है। इसका नाम भांभराभीया और वामना भी था।

(३) दाहर, जच्च का बेटा ।

३ दाहर ने सिंहासन पर बैठकर अपने भाई धरसैन (धीरसैन) के। ब्राह्मणाबाद† में भेजा जो वहां जाकर उस प्रान्त का हाकिम होगया ।

एक दिन दाहर ने ज्योतिषियों से अपने जन्मपत्र का फल पूछा तो उन्होंने कहा कि तेरे भाग में और ते कोई अशुभ बात नहीं है परन्तु तेरी बहिन का विवाह जिसके साथ होगा वही तेरे पीछे राज भोगेगा। दाहर ने अपने घराने से राज नहीं जाने का बहाना करके अपनी बहिन से आपही लग्न कर लिया परन्तु वह उसके पास जाता नहीं था। धरसैन यह कुसमाचार सुनकर बहुत चिढ़ा और दल बांध कर अलार पर चढ़ आया, परन्तु चेचक निकल आने से मर गया। दाहर उसकी दाह क्रिया करके ब्राह्मणाबाद में पहुंचा और उसकी स्त्री को जो अगम लोहाने की बेटी थी अपने घर में डालकर एक वर्ष तक रहा फिर धरसेन के बेटे जच्च के वहां छोड़ कर अलोर में आगया ।

अलोर के किले को जिसे जच्च अधूरा छोड़ मरा था दाहर ने पूरा किया। वह जाड़े के ४ महीने ते ब्राह्मणाबाद में रहता था और गर्मी के ४ महीनों में अलोर में रहता। जब इस तौर पर ८ वर्ष बीते और राज्य का प्रबंध होते होते उसका मन चाहा होगया तो वह अपनी पूर्वसीमा को देखने गया और कश्मीर की सरहद पर सर्व के दो पेड़ चिन्ह के वास्ते रोप कर लौट आया ।

अरबों का सिंध में फिर आना ।

जैच के समय में अरबों का कई बार सिंध पर आना और हार हार कर भाग जाना हम पहिले अध्याय में लिख

आए हैं। उसके पीछे दाहर के राज्य में फिर अरबों ने इधर मुंह किया। उस समय मुसल्मानों का खलीफा अब्दुल मलिक दमिश्क के राज सिंहासन पर था।

खलीफों का कुर्सीनामा मुआविया तक पहिले अध्याय में आ चुका है। उसके पीछे यज़ीद सन ५९ (संवत् ७३५) में खलीफा हुआ। उसने राजद्वेष से अली के बेटे और महम्मद पैगम्बर के दोहते एमाम हुसेन को बेटों पोतों सहित १० मोहर्रम सन ६० (कातिक सुदि १२ संवत् ७३६) को मरवा डाला। ये कुल ७३ हो आदमी थे तो भी यजीद के २०००० सवारों से भूखे प्यासे ३ दिन तक बड़ी वीरता से लड़े थे। मुसल्मान लोग अब तक इन्हीं के ताबूत बना कर रोते पीटते हुए हर साल मोहर्रम के महीने में उन्हें निकालते हैं।

सन ६४ (संवत् ७४०) में यजीद के मरने पर पहिले उसका बेटा मुआविया दूसरा ४० दिन तक खलीफा रहा। फिर मरवानुलहकम खलीफा हुआ, मगर दूसरे ही वर्ष उसकी औरत ने उसे जहर खिला दिया जिससे वह मर गया और उसका बेटा अब्दुलमलिक खिलाफत पर बैठा। उसने यूसुफ के बेटे हज़्ज़ाज को ईरान की हकूमत दी। हज्ज़ाज ने हिंद और सिंध की फतह के लालच से सईद को मकरान में भेजा। सईद ने वहां पहुंच कर सफ़हवी नाम के एक अरब को मार डाला जिसके बैर में अबदुल रहीम के बेटे अबदुल्लाह वग़ैरः कई अरबों ने जो बनी अलाफी जाति के थे और हज्ज़ाज से बागी थे सईद को मारकर मकराने में कबजा कर लिया, परन्तु फिर डर कर खुरासान में चले गए। तब हज्ज़ाज ने मुजाआ नाम के एक अमीर को अलाफियों को सजा देने के लिये खुरासान को रवाने

किया। उसने वहां पहुंच कर "अशअब" के बेटे अबदुल रहमान को अलाफियों पर भेजा। वे उसको मार कर सिंध में राजा दाहर के पास चले आए और राजा ने भी मुल्की मसलहत (राजनीति) के लिये उनका आना ठीक समझ कर उनको अपने पास रख लिया।

फिर एक वर्ष पीछे सुजाआ भी किरमान में मर गया और उन्हीं दिनों में खलीफा अबदुल मलिक भी फौत हुआ। वलीद जो उसका बेटा था गद्दी पर बैठा। तब हज्जाज ने महम्मद हारूब को हिंद सिंध और अलाफियों का काम पूरा करने के लिये भेजा। उसने ५ महीने में वलायत मकरान और बाजे इलाकों का काम ठीक किया।

कन्नौज के राजा का दाहर पर चढ़ आना और दाहर का अरबों के छल से फतह पाना।

जब हिंदुस्तान के राजाओं ने राय दाहर के ज़ोर पकड़ने का हाल सुना तो आपुस में सलाह करके कहा कि दाहर के आने से पहिले हमको उसपर जाना चाहिए। तब कन्नौज का राजा रणमल्ल उन सब राजाओं को साथ लेकर अलोर पर चढ़ आया। दाहर ने घबरा कर भरेमन वजीर से सलाह पूछी। उसने कहा कि लड़ाई का काम अरब लोग खूब जानते हैं, उनको साथ लेना चाहिए। दाहर सवार होकर मोहम्मद अलाफी के पास मदद मांगने को गया, मोहम्मद ने कहा कि तू लश्कर बाहर निकाल और एक बड़ा गढ़ा खुदा कर उसको घास से ढकवा दे, फिर जो उपाय सोचूंगा उससे काम बन जायगा। दाहर ने ऐसाही किया। मोहम्मद ने ५०० अरब और सिंधी सिपाही चुन कर रात को रणमल्ल के लश्कर पर छापा

मारा। वहां तो सब लोग गाफिल सोए हुए थे। जब गड़बड़ सुनकर जागे तो आपुस में ही लड़ने मरने लगे, फिर तड़केही महम्मद अलाफी लड़ने आया और कुछ योंही सा लड़कर भागा। वे लोग थोड़े से आदमी देखकर पीछे दौड़े और उस घास से ढके गढ़े में गिर पड़े। दाहर ने सवार होकर ८००० आदमी और ५० हाथी जीते पकड़े और जो मर गए वे अलग थे। फिर उसने भरेमन वजीर के कहने से उन सबको छोड़ दिया और इसके सिवाय उनपर बहुत महरबानी भी की क्योंकि यह जीत उसीके उपाय से हुई थी और उसके पलटे में उसकी तर्फ से हुक्म दे दिया कि उसका नाम भी सिक्के में एक तर्फ खोदा जाय।

इस फतह से दाहर ने और भी ज़ोर पकड़ा और आस पास के सब राजाओं को दबाकर २५ वर्ष तक बड़े गरूर और घमंड से हकूमत की। निदान उस घमंड से ही उसका राज गया।

सिंहलद्वीप की लौंडियों का पकड़ा जाना और खलीफा का दाहर से जवाब पूछना।

कहते हैं कि सिंहलद्वीप के राजा ने यवाकीत नाम के टापू से कई लौंडियां कुछ हबशी गुलामों और बहुत से अमोलक रत्नों तथा कपड़ों समेत हज्जाज और खलीफा के वास्ते ८ नावों में भेजी थीं जो समुंदर में तूफान आजाने से सिंध के बंदर देवल* में बह आईं। उन्हें देवल के चोरों ने जो तगामरा जाति के थे लूट लिया। उनके साथ अरब की भी एज स्त्री

* देवल भी उजड़ा पड़ा है उसके खंडहरों के पास ठट्ठा बसता है जिसे जामनंदा ने सन् ८९० हि० (संवत् १५५२) में बसाया था।

थी। उसने अरबी भाषा में तीन बार हज्ज़ाज को पुकार कर कहा था कि हज्ज़ाज हमारी फ़रियाद सुन।

हज्ज़ाज ने यह सुनकर बदला लेने के वास्ते ख़लीफ़ा को अर्ज़ी लिखी। ख़लीफ़ा दाहर के धमकाने को एक वज़ील भेजकर चुप हो गया। दाहर ने भी कह दिया कि मुझे ख़वर नहीं है चोर मेरे हुक्म से बाहर, हैं चुरा ले गए होंगे तुम जानो वे जाने।

हज्ज़ाज ने दाहर का यह जवाब ख़लीफ़ा को लिख कर फिर अर्ज़ की और हुक्म मंगवा कर अबदुल्लाह सलमी को मकरान में भेजा और वज़ील को हुक्म दिया कि ३००० आदमी लेकर सिंध को जाय। वज़ील मकरान से चल कर नेरून के किले में पहुंचा और देवल बंदर को रवाने हुआ।

अरबों की चढ़ाई और हार।

दाहर ने जब यह ख़वर सुनी तो अपने बेटे हसेसिया† को बहुत सा लश्कर देकर अरबों से लड़ने को भेजा, सवेरे से पिछले दिन तक खूब लड़ाई हुई, वज़ील मारा गया और बहुत से मुसल्मान कैदी हुए।

हसेसिया बड़ा बहादुर था, उसका जन्म भी एक बहादुरी के मौके पर ही हुआ था जिसके बाबत ऐसा कहते हैं कि एक दिन राय दाहर शिकार को गया था। जंगल में एक शेर निकला, लोग मारने को दौड़े, लेकिन राय सब को रोक कर अकेला उससे लड़ने को गया। हसेसिया की मा पूरे दिनों

† किसी किसी किताब में इसका नाम जैसिंह भी लिखा है, यही सही मालूम होता है।

पेट से थी। उसको राय से बड़ा प्यार था इसलिये राय को शेर के सामने जाता देखकर वह घबरा गई और एक हांक मार गिर पड़ी। राय जब शेर को मार कर लौटा तो देखा कि रानी तो मर गई है और बच्चा पेट में फिर रहा है। राय ने पेट चिरवा कर उसको निकलवाया और हसेसिया नाम रक्खा जिसके मायने शेर के शिकार के हैं। हसेसिया जब बड़ा हुआ तो बहुत बहादुर निकला।

वज़ील के मारे जाने से नेरून* का राना सम्मति डर गया क्योंकि अरबों के रास्ते की आड़ में वही था और उसने मुफ्त में मारे जाने के डर से अपने भले आदमियों को हज्ज़ाज के पास भेज कर अमाननामा (अभयपत्र) मंगवा लिया। अबदुल्लाह के बेटे आमिर ने हज्ज़ाज से कहा कि जो तू यह काम मुझे सौंपे तो मैं हिंद और सिंध को जाऊं। हज्ज़ाज बोला कि यह काम तेरी क़िसमत में नहीं लिखा है मैंने ज्योतिषियों से निश्चय कर लिया है कि सिंध और हिंद मोहम्मद कासिम के हाथ से फ़तह होंगे।

फिर हज्ज़ाज ने ख़लीफ़ा को अर्ज़ी भेजी कि सिंध में लुटेरों ने ऐसी हरकत की है, हुक्म हो तो उन्हें सज़ा देकर मुसलमानों को क़ैद से छुड़ाया जाय। खलीफ़ा ने लिखा कि वह मुल्क बहुत दूर और कम पैदा का है। लश्कर का बहुत खर्च पड़ेगा और नुकसान भी होगा। तब हज्ज़ाज ने फिर लिखा कि मुल्क फतह हो जायगा लश्कर में जितना खर्च पड़ेगा उससे दूना फायदा होगा इसका मैं जिम्मा करता हूं।

---

* नेरून के पास अब हैदराबाद सिंध बसता है।

ख़लीफ़ा ने इजाज़त दे दी। हज्जाज ने कासिम के बेटे और अकील के पोते मोहम्मद को जो उसका चचेरा भाई और जमाई भी था इस काम पर नियत किया।

[क्रमशः]

——:o:——

सिकन्दर शाह।

[छठें अंक के आगे।]

यहां पर हेलीकारनेसस और मैमन ने उसका अच्छा मुकाबला किया किन्तु अन्त में वे गढ़ में दबक कर रह गए। सिकन्दर उनको बाहर न होने देने के लिये वहां पर १००० सिपाहियों का घेरा डलवा कर आप आगे बढ़ा। सिकन्द ने शेष शीत काल के समय में लसिया, पामफेलिया, पिसिडिया आदि स्थानों पर अपना अधिकार जमाते हुए सांगरस नदी के किनारे पर स्थित शहर गारडियम में आकर अपनी सफर का प्रथम वर्ष पूरा किया।

सिकन्दर का यद्यपि मुख्य मन्तव्य पारस की स्वाधीनता को नष्ट करने का था किन्तु यह बात उसे बहुत ही ज़रूरी जान पड़ी कि सब से पहिले समुद्र के किनारे पर ही वह अपना आतंक और आधिपत्य जमा लेवे। इधर समुद्र के किनारे किनारे अधिकतर उन यूनानी थीबियन और एथीनियन लोगों की बस्ती थी जो कि असभ्य पारसी लोगों के गुलाम की भांति जीवन व्यतीत कर रहे थे। यद्यपि यूनान देशान्तर्गत थीबियन और एथिनियन चाहे सिकन्दर के प्रभुत्व से सच्ची प्रीति न रखते हों, परन्तु ऐसे पराधीन लोग सिकन्दर को अपना सच्चा हितैषी करके मानने थे

और वे उसके सहायक होते जाते थे। इसलिये सिकन्दर ने इन प्रदेशों के लेवे में अधिक कठिनता न जान कर जाड़े के शुरू में अपने बहुत से साथियों को यूनान को वापिस भेज दिया। इन वापिस जाने वालों में प्रायः वे ही लोग थे जो कि सिकन्दर की यात्रा के कुछ दिन पहिले ही विवाह करके अपनी नव दुलहिनों को विरहाग्नि से तपता छोड़ कर उस के साथ चले आए थे। उसका इससे यह भी अभिप्राय था कि वे लोग अपनी जन्मभूमि में जाकर उसकी विजय की खबर दें जिसमें कि वहां के लोगों का भी उत्साह बढ़े और वे राज्य कार्य्य सम्बन्धी काम अच्छी तरह करते रहें।

जिस समय सिकन्दर कारिया में आया वहां की विधवा रानी इदा स्वयं उसके पास आई। उसने सिकन्दर के सम्मुख हो कर कहा कि हे पुत्र मेरा बहनोई मुझे निकाल कर आप राज्य का स्वामी बना बैठा है। यह सुनते ही सिकन्दर ने उसका राज्य उसे दिलवाया और आप बहुत दिन तक उसका मेहमान बना रहा। इदा सदा सिकन्दर को पुत्र की तरह मानती रही और सिकन्दर भी उसपर माता की भांति प्रेम करता था। वह सिकन्दर के लिये नित भोजन बना कर भेजती थी। जिस समय सिकन्दर उससे विदा हो कर चलने को था इदा ने पाक विद्या में दक्ष कुछ उत्तमोतम रसोइएँ उसके साथ भेज देने चाहे परन्तु सिकन्दर ने उस की इस कृपा के लिये कृतज्ञता स्वीकार करते हुए यह उत्तर दिया कि मेरे गुरू अरस्तू के ये वाक्य ही मेरे जीवन भर के लिये उत्तम से उत्तम भोज्य पदार्थ हैं कि प्रातःकाल शौच से निश्चिन्त हो कुछ भोजन करके बाहर जाऊं, रात्रि को

हलका और कम भोजन करूं, मेरे साथ में कैसेही गुलगुले विस्तर क्यों न हो परन्तु सफर में सदा अपनी गठरी पुटरी पर ही आराम करूं ।

सिकन्दर की दारा से पहिली लड़ाई ।

(ई० पू०) ३३३ में वसंत ऋतु के आरम्भ होते ही सिकन्दर को फिर से मुड़कर कूच करना पड़ा क्योंकि इस समय वह एक ऐसे स्थान में था जो कि एशिया माईनर और सीरिया दोनों प्रदेशों का कोना है जहां पर कि तारस पहाड़ के शिखर और उनसे निकले हुए अड़गढ झरनों के कारण वहां की भूमि ऐसी विकट है कि कुछ थोड़े से सैनिक भी वहां रह कर एक बड़ी भारी शिक्षित सेना को सहज ही परास्त कर सकते हैं और इस बात की भी सम्भावना थी कि शायद पारसी सेनापति मीमो से कुछ रोक टोक करनी पड़े । इसलिये सिकन्दर ने इस पहाड़ी रास्ते से ही इस तरह निकल जाना बिचारा कि जब तक पारसी फ़ौज उसके मुकाबिले को तय्यार हो तब जब वह स्वयं उसके सर पर जा जमे । सिकन्दर ने सुना कि पारसी सेना शहर तारसस को जलाने के लिये जा रही है और तारसस के जलजाने पर सिकन्दर के वहां से समुद्री सफर का मार्ग बंद हो जाना संभव था, इसलिये वह तारसस को बचाने के लिये बड़ी तेज़ी से पहाड़ी मार्ग तै कर मैदान में आन पहुंचा । इसी प्रकार सफर करता हुआ जिस समय सिकन्दर किडंस नदी पर पहुंचा वह रास्ते के गर्द गुवार से भरा हुआ और थका मांदा तो था ही, नदी के स्वच्छ जल को देख कर वैसे ही पसीना भरा जल में पैठ पड़ा । नदी का पानी बरफ के गलाव का था इसलिये सिकन्दर को उसी समय से इस ज़ोर

से बुखार आने लगा कि उसके मरने जीने की पड़ गई। इसका बड़ा भारी कारण यह था कि मैसीडोनियों का यह नियम था कि यदि किसी हकीम की दवा से बादशाह की तबियत मामूल से और भी अधिक बिगड़े तो वह तुरंत ही कत्ल कर दिया जाता था। इससे डर कर इस बेबसी की अवस्था में भी कोई सिकन्दर को दवा पिलाने की हिम्मत न करता था। अन्त में उसके एक मुँहलगे दोस्त फिलिप ने उसके लिये दवा तय्यार की। इसी अवसर में सेनापति परमिनो ने सिकन्दर को लिख भेजा कि उक्त फिलिप को पारस के बादशाह दारा ने निज कन्या विवाह देने का पण करके आपको विष देने पर राजी किया है अतएव आप को सावधान हो जाना उचित है परन्तु सिकन्दर को फिलिप का अधिक विश्वास था इसलिये जब वह दवा पिलाने आया तब सिकन्दर ने स्वयं उसे वह लेख बतलाया और आप दवा पी गया। दवा पीने बाद कुछ देर के लिये तो सिकन्दर की तबियत और भी बेचैन हो गई परन्तु थोड़ी ही देर में उसे पूर्ण रूप से चेत आगया और वह बहुत जल्द ही आराम हो कर चलने फिरने योग्य हो गया। तब उसने परमिनो के आगे जाकर इसब के दर्रे में जम कर सीरिया का रास्ता रोकने की आज्ञा दी और आप धीरे धीरे समुद्र के किनारे किनारे पश्चिम की तरफ बढ़ने लगा।

[क्रमशः]

——:o:——

सभा का कार्यविवरण ।

[६]

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २८ दिसम्बर १९०७—सन्ध्या के ५½ बजे ।

स्थान—सभाभवन ।

[१] गत अधिवेशन (ता० ३० नवम्बर ०७) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

[२] प्रबन्धकारिणी सभा के ता० ४ नवम्बर और १० नवम्बर के कार्यविवरण सूचनार्थ उपस्थित किए गए ।

[३] निम्नलिखित महाशय सभासद चुने गए ।

(१) बाबू ओंकार मल, दक्खिन फाटक मिर्जापुर ३) (२) पं० प्यारेलाल शर्म्मा, कोषाध्यक्ष, आर्यसमाज, शाहाबाद जि० हरदोई १॥) (३) ठाकुर कानसिंह, खवो, पो० दौसा, राज्य जयपुर१॥) (४) बाबू देवनारायण भक्त, डिपटी इनस्पेक्टर आफ स्कूल्स, उत्तरीय विभाग, वस्तर, जगदलपुर, रायपुर ३) (५) बाबू महादेव प्रसाद सेठ, गऊघाट, मिर्जापुर ३) (६) बाबू बालगोविन्द राम, रेलवे स्टेशन, गोचा १॥) ।

[४] पं० रामनगीना पांडे का पत्र बिना चन्दे के सभासद चुने जाने के लिये उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि यह प्रबन्धकारिणी सभा में विचार के लिये भेजा जाय ।

[५] सभासद होने के लिये निम्नलिखित महाशयों के नवीन आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए—

(१) बाबू कुंजलाल, मंडी राम दास, मथुरा (२) पं० जीवन राम शर्म्मा, केवलजीवनानन्दौषधालय, बीकानेर (३) बाबू मदन गोपाल, नन्दहसाहू की गली, काशी (४) बाबू नौरंग सिंह, पाठशाला बसरकापुर पो० मेलसड़, बलिया (५) बाबू शारदा प्रसाद

एम० ए० एलएल० बी० काशी (६) पं० छोटे लाल त्रिपाठी, पुरनियां बदोसरांय, जि० बाराबंकी ॥

[६] मंत्री ने सभा के सभासद आजमगढ़ निवासी बाबू बलदेव नारायण सिंह की मृत्यु की सूचना दी जिस पर सभा ने शोक प्रगट किया।

[७] निम्न लिखित सभासदों का स्तीफा उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ—

(१) पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र, खेतड़ी, राजपुताना (२) बाबू डंगर सिंह पटवारी, बुलन्दशहर (३) बाबू अमरचन्द जिमिदार, पटना (४) पं० नारायण लक्ष्मण पड़के, सोलापुर (५) राय देवी प्रसाद वकील कानपुर।

[८] मंत्री ने सूचना दी कि बिजनौर के पण्डित ऊधोराम शर्म्मा विशारद के नाम जो पैकेट आदि भेजे जाते हैं वे लौट आते हैं और उनका कोई पता नहीं लगता।

निश्चय हुआ कि पण्डित ऊधोराम शर्म्मा का नाम चन्दा क्षमा किए हुए सभासदों की नामावली से अलग कर दिया जाय।

[९] निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं—

(१) इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद—बाल भागवत पहिला भाग, बाल मनुस्मृति, बाल नीतिमाला, अर्थशास्त्र प्रवेशिका और लड़कों का खेल (२) बाबू गिरिधर दास, काशी—गो सेवा से लाभ, रत्न सागर (३) लाला छोटेलाल, काशी—ज्योतिष वेदाङ्ग (४) पं० शंकर राव, काशी—सती उपन्यास (५) पं० मकसूदन लाल, काशी—गुलेनार (६) बाबू जंग बहादुर सिंह जिमिदार, नोखा, जि० शाहाबाद, पंचरुजनाशन, प्लेग निवारण, विसूचिका भयहरण, सुतानन्द प्रकाश २ प्रति (६) एशियाटिक सोसायटी बंगाल, कलकत्ता—Journal and Proceedings For July and August 1907 (७) भारत की गवर्न्मेंट—Linguistic Survey of India Vol IX part III (८) बाबू नन्दलाल वर्म्मा, मथुरा—सन् १९०८ की डायरी २ प्रति (८) पं० रामकृष्णानन्द, कुंअर धाम, गुजरात—राजनीति शतक २४ प्रति

(८) खरीदी गई–List of the more inportant Libraries in India, ऋग्वेद संहिता भाग ३, ४, और ५, पद्मावती, परिणाम, वीरेन्द्र वाजी राव का जीवनचरित्र, भारत का अधःपतन, आनन्द सुन्दरी भाग ४ और ५ ।

[१०] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई ।

जुगुलकिशोर, मंत्री ।

इसी दिन ६ बजे संध्या समय लाला छोटे लाल का एक व्याख्यान "ज्योतिष" पर सभाभवन में हुआ । सभाभवन श्रोताओं से भरा हुआ था । बनारस के कलेक्टर मिष्टर ई० एच० रडीचे सभापति के आसन पर सुशोभित थे । लाला छोटे लाल ने अपने व्याख्यान को मैजिक लालटैन के चित्रों और दूरदर्शक यन्त्र द्वारा समझाया । व्याख्यान बहुतही सरल और मनोरंजक तथा शिक्षाप्रद था ।

[१०]

प्रबन्धकारिणी सभा ।

सोमवार ता० ६ जनवरी सन् १९०८ सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान—सभाभवन ।

उपस्थित ।

बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० सभापति, रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स, पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०, बाबू जुगुलकिशोर, बाबू गैारीशङ्कर प्रसाद बी० ए० एलएल० बी०, बाबू गोपालदास ।

[१] गत अधिवेशन (ता० ८ दिसम्बर १९०७) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

[२] मंत्री ने सूचना दी कि सभा के नियमित मेडलों के लिये ३१ दिसम्बर १९०७ तक कोई लेख नहीं आया परन्तु कुछ लोग इसके लिये लेख लिख रहे हैं । अतः यदि सभा इसकी अवधि कुछ और बढ़ा दे तो उत्तम हो ।

निश्चय हुआ कि फरवरी १९०८ के अन्त तक जो लेख आजांय वे ले लिए जांय और उनकी परीक्षा के लिये निम्नलिखित महाशयों

की सब-कमेटी बना दी जाय-बाबू गोविन्ददास, लाला छोटेलाल, बाबू दुर्गा प्रसाद बी० ए०, पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए० और बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० ।

[३] निश्चय हुआ कि सन् १९०८ के लिये सभा के नियमित मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत किए जांय ।

साधारण (विद्या) विषय ।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था ।

वैज्ञानिक विषय ।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव । (The effects of physical conditions on the social life of Northern India)

[४] बुलन्दशहर के बाबू वंशीधर वैश्य का ४ जनवरी १९०८ का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि सन् १९०८ में न्यायालयों में हिन्दी की सबसे अधिक अर्जियां लिखने वाले को वे २५) रु० और उससे कम अर्जियां लिखने वाले को १५) रु० का पुरस्कार सभा द्वारा दिया चाहते हैं, पर यह पुरस्कार एकही ज़िले के दो अर्जीनवीसों को न मिलेगा और न वे मोहर्रिर इसे पा सकेंगे जो वेतन पर सभा की ओर से यह काम करते हैं ।

निश्चय हुआ कि बाबू वंशीधर का प्रस्ताव धन्यवादपूर्वक स्वीकार किया जाय ।

[५] औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षा के प्रचार के विषय पर कुंअर प्रतिपाल सिंह का लेख उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि इसकी परीक्षा के लिये निम्नलिखित महाशयों से प्रार्थना की जाय-बाबू श्यामसुन्दर दास काशी, पण्डित माधव राव सप्रे नागपुर, बाबू हनुमान सिंह नागपुर, बाबू हीरालाल नागपुर, बाबू ठाकुर प्रसाद काशी ।

[६] मंत्री ने सूचना दी कि ३१ दिसम्बर १९०७ तक किसी महाशय ने बाबू राधाकृष्ण दास की जीवनी सभा में नहीं भेजी

परन्तु यदि सभा इसकी अवधि कुछ और बढ़ा दे तो उन्हें आशा है कि कुछ लोग उनकी जीवनी अवश्य भेजेंगे।

निश्चय हुआ कि इसके लिये तीन मास का समय और बढ़ा दिया जाय और ३१ मार्च १९०८ तक जो जीवनियां आजांय उन पर विचार करने के लिये निम्नलिखित महाशयों की सब-कमेटी बना दी जाय—महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, बाबू श्यामसुन्दर दास, पण्डित रामनारायण मिश्र।

[७] निश्चय हुआ कि सन् १९०७ के लिये कालिशङ्कर व्यास मेडल किसको दिया जाय इस विषय पर विचार करने के लिये निम्नलिखित महाशयों की सब-कमेटी बना दी जाय—बाबू श्यामसुन्दर दास, पण्डित रामनारायण मिश्र, लाला छोटेलाल।

[८] बनारस डिस्ट्रिक्ट बोर्ड का २ दिसम्बर १९०७ का रिजोल्यूशन नं० ३८ सूचनार्थ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सभा के पुस्तकालय के लिये ५०)रु० की वार्षिक सहायता देना निश्चय किया था।

निश्चय हुआ कि बनारस डिस्ट्रिक्ट बोर्ड को इसके लिये धन्यवाद दिया जाय।

[९] पण्डित माधव प्रसाद पाठक का ३० नवम्बर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने ग्रन्थमाला के सम्पादन से इस्तीफा दिया था।

निश्चय हुआ कि उनका इस्तीफा स्वीकार किया जाय और उनके स्थान पर बाबू श्यामसुन्दर दास ग्रंथमाला के सम्पादक चुने जांय।

[१०] बाबू शिवप्रसाद गुप्त का २३ दिसम्बर का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि हिन्दी कोश कमेटी में दो सज्जनों के नाम और बढ़ा दिए जांय।

निश्चय हुआ कि यह पत्र कोश कमेटी के पास विचार कर सम्मति देने के लिये भेज दिया जाय।

[११] बाबू श्यामलाल का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि हिन्दी ग्रंथों को प्रकाशित करने के लिये सभा एक ग्रंथप्रकाशक मण्डली स्थापित करे।

निश्चय हुआ कि हिन्दी ग्रन्थ प्रकाशित करने का काम यह सभा तथा अन्य कई सभाएं कर रही हैं। अतः सभा की सम्मति में ऐसी मंडली स्थापित करने की कोई विशेष आवश्यकता अभी नहीं है।

[१२] पण्डित सुमित्रा प्रसाद शर्म्मा के निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थित किए गए (क) सभा के पैकेट पत्रादि पर नागरी अक्षरों में पता लिखा जाया करे। (ख) नागरी के प्रचार के लिये और अर्जीनवीस नियत किए जांय और वे जितनी अर्जियां लिखें उसके अनुसार उन्हें वेतन दिया जाय। (ग) जगह जगह सभा की ओर से उपदेशक और डेप्युटेशन भेजे जाय। (घ) हिन्दूकालेज तथा अन्य स्कूलों में दूसरी भाषा संस्कृत अवश्य रक्खी जाय।

निश्चय हुआ कि (क) यथासम्भव इसका पालन किया जाय (ख) धनाभाव से सभा इस समय इसे नहीं कर सकती (ग) इसके लिये न तो सभा में द्रव्य ही है और न उपयुक्त मनुष्य ही मिलते हैं (घ) इस विषय में वे कृपाकर हिन्दूकालेज से पत्र व्यवहार करें

[१३] काशी स्वोन्ति सभा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रार्थना की थी कि सभा द्वारा प्रकाशित सब पुस्तकें उनके पुस्तकालय के लिये बिना मूल्य दी जांय।

निश्चय हुआ कि यदि वे सभा द्वारा प्रकाशित सब पुस्तकें एक साथ खरीद लें तो उन्हें वे अर्द्ध मूल्य पर दी जांय।

[१४] बाबू श्यामसुन्दर दास के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि कुंअर कन्हैया जू ने पृथ्वीराज रासो का जो कई मास का कार्य केवल एक मास में रात दिन परिश्रम करके समाप्त किया है उसके लिये उन्हें मासिक वेतन के अतिरिक्त ४०) रु० पुरस्कार की भांति दिया जाय।

[१५] निश्चय हुआ कि हिन्दी पुस्तकों की खोज के सुपरेंटेण्डेण्ट को अधिकार दिया जाय कि यदि वे आवश्यक समझें तो तीन मास तक के लिये एक मनुष्य बाबू अमीरसिंह की सहायता के लिये उपयुक्त मासिक वेतन पर नियत करलें।

[१६] निश्चय हुआ कि पुस्तकालय के निरीक्षक और सभा के मंत्री को अधिकार दिया जाय कि वे लोग पुस्तकालय के बजेट के अनुसार जिन हिन्दी पुस्तकों को उचित समझें पुस्तकालय के लिये खरीद लें।

[१७] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

जुगुलकिशोर, मंत्री।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय व्यय का हिसाब।

दिसम्बर १९०७।

आय	धन की संख्या			व्यय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	१९२	५	६	आफिस के कार्य कर्ताओं का वेतन	७२	५	११
सभासदों का चन्दा	६५	२	०	पुस्तकालय	५४	६	४½
पुस्तकों की बिक्री	७९	७	९	पृथ्वीराज रासो	२०	३	०
रासो की बिक्री	४५	४	०	नागरी प्रचार	२३	०	०
हिन्दी भाषा का कोश	५	०	०	पुस्तकों की खोज	२५	०	०
पुस्तकालय	५७	८	०	फुटकर	१३	३	०
फुटकर	७	१०	६	डांक व्यय	५४	३	६
स्थायी कोश	१९	०	[illegible]				
जोड़	४७१	५	९	जोड़	२६२	५	९½
				बचत	२०८	१५	११½
				जोड़	४७१	५	९
देना ६०००)							

जुगुलकिशोर,
मंत्री

सभा के पारितोषिकों की सूची।

१ इस वर्ष के सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं। ये लेख ३१ दिसम्बर १९०८ तक सभा में आजाने चाहिएं।

वैज्ञानिक विषय।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव।

साधारण (विद्या) विषय।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था।

२ डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल—यह सोने का मेडल उस व्यक्ति को दिया जायगा जिसका लेख "सौरी सुधार" (Care and treatment in the lying-in room) पर सबसे उत्तम होगा। लेख सरल हिन्दी में होना चाहिए और सभा के पास ता० ३१ जनवरी १९०८ तक आजाना चाहिए

३ कालिदास रजत पदक-हल्दी घाट के युद्ध पर खड़ी बोली में जो सबसे अच्छी कविता लिखेगा उसे यह चाँदी का मेडल दिया जायगा। कविता ३० जून १९०८ तक पहुंच जानी चाहिए।

४ संयुक्त प्रदेश के न्यायालयों में जो अर्जीनवीस सब से अधिक अर्जियां लिखकर सन् १९०८ में दाखिल करेगा उसे २५) रु० का एक पुरस्कार दिया जायगा और जो उससे कम अर्जियां देगा उसे १५) रु० पुरस्कार दिया जायगा।, ये पुरस्कार एकही ज़िले के दो अर्जीनवीसों को न मिलेंगे न

वे इसे पा सकेंगे जो सभा की ओर से इस कार्य के लिये वेतन पर नियत हैं। जो लोग इस पुरस्कार को पाया चाहें उन्हें उचित है कि दो प्रतिष्ठित वकीलों के हस्ताक्षर सहित ७ जनवरी १९०९ तक सभा को सूचना दें कि उन्होंने कितनी अर्जियां सन् १९०८ में दाखिल की हैं।

भाग १२]   Registered No. A 414   [संख्या ८

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

सम्पादक—श्यामसुन्दर दास बी० ए०

19-4-08

प्रति मास की १५ ता० को
काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।
मार्च १९०८।

Printed at the Bharat Press, Benares.

प्रति संख्या का मूल्य =)   वार्षिक मूल्य १)

विषय ।

पृष्ठ

निवेदन ।

—जिन सभासदों ने अब तक अपना वार्षिक चन्दा भेजने की कृपा नहीं की है उनसे प्रार्थना है कि वे उसे शीघ्र भेज कर सभा को अनुगृहीत करें ।

जुगुलकिशोर,

मंत्री ।

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

भाग १२] मार्च १९०८। [संख्या ९

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥ १ ॥

करहु विलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल ॥ २ ॥

विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥ ३ ॥

प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न।
राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ ४ ॥

हरिश्चन्द्र।
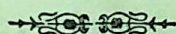
विविध विषय।

महाराज झालरापाटन में नागरी अक्षरों के प्रचार की आज्ञा दे दी है। उन्होंने अपने कारबारियों को नागरी अक्षर सीख लेने का समय दिया है। महाराजा साहब का यह कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय है। हिन्दी प्रेमी मात्र इसके लिये उनके अनुगृहीत हैं।

* * *

कोश के सम्बन्ध में यह समाचार प्रकाशित करते विशेष आनन्द होता है कि सभा ने इस कार्य को आरम्भ कर दिया है। आनरेबुल रायबहादुर पण्डित सुन्दरलाल ने इस कार्य के लिये सभा को १०००) रु० का दान दिया है। उक्त पण्डित महोदय के हम हृदय से अनुगृहीत हैं कि इस प्रकार इस कार्य में सहायता करके यश के वे भागी हुए हैं। परन्तु अभी उन्तीस हजार की और आवश्यता है। आशा है कि हिन्दी के अन्य प्रेमीगण इसमें सभा की सहायता कर यश के भागी होंगे। कोश के लिये शब्दों के संग्रह करने के कार्य का प्रबन्ध हो रहा है। जो महानुभाव द्रव्य से सहायता नहीं कर सकते हैं आशा है कि वे इस संग्रह के कार्य में सहायता देंगे। जिन प्रकार के शब्दों का पुस्तकों में मिलना कठिन है उनके इकट्ठा करने का अलग प्रबन्ध किया गया है।

***

विलायत में एक विचित्र मुकदमा चल रहा है। प्रायः सब लोगों ने सुना होगा कि हीरे खानों से निकलते हैं। हिन्दुस्तान में भी हीरों की खानें निकली हैं। बुंदेलखण्ड में पन्ने की खान प्रसिद्ध है। दक्षिण अफ्रिका में तो इसकी बड़ी भारी खानें निकली हैं। कुछ दिन हुए कि योरप में एक विद्वान ने नकली हीरे बनाने की रीति निकाली थी और वे हिन्दुस्तान में बिकने आए थे। अब एक विद्वान ने रासायनिक क्रिया से हीरे बनाए हैं जो बहुत बड़े होते हैं और जो सुन्दरता आदि में असली हीरों से किसी तरह कम नहीं हैं। इस बात की चर्चा फैलते ही कई बड़े बड़े धनाढ्यों ने इन महाशय से ठीका कर लिया कि वे उन्हीं के लिये हीरे बनावें। यह भी ते हुआ कि कई लाख रुपया

लेकर वे इसकी रीति बता दें। ऐसा कहा जाता है कि एक कागज पर इस रीति को लिख कर और लिफाफे में बन्द करके उन्होंने बंक में रख दिया है और कहा है कि जब तक मैं जीता रहूं यह लिफाफा न खोला जाय। मेरे मरने पर वह खोला जाय और तब रासायनिक क्रिया से ऐसे हीरे बनाने की रीति जो उस कागज पर लिखी है विदित हो जायगी। अब इसका मुकदमा चल रहा है। एक पक्ष वाले कहते हैं कि उस लिफाफे में सादा कागज है और नकली हीरा इतना बड़ा और ऐसा सुन्दर नहीं बन सकता। दूसरे पक्ष वाले कहते हैं कि यह बात निर्मूल है, यह काम रासायनिक क्रिया से किया गया है और जो चाहे उसके साम्हने यह क्रिया दिखाई जा सकती है। इस बात के पक्ष और विपक्ष दोनों में बड़े बड़े विद्वान और तत्ववेत्ता अपना अपना मत प्रकाशित कर रहे हैं। देखा चाहिए परिणाम क्या निकलता है।

* * *

कलकत्ता युनिवर्सिटी की जुबली का उत्सव इस मास में होने वाला है। इस अवसर पर कई एक आनरेरी उपाधियां युनिवर्सिटी की ओर से दी जांयगी। जिन्हें ये उपाधियां दी जांयगी उनके नाम भी प्रकाशित किए गए हैं। इन में बंगाल, मद्रास, बम्बई तथा पंजाब के चुने चुने लोग हैं। विचारा संयुक्त प्रान्त ही इस सम्मान के योग्य नहीं समझा गया यह दुःख की बात है। यह कहा जा सकता है कि डाक्टर थीबो तो इसी प्रान्त के हैं, पर अब उनका सम्बन्ध इस प्रान्त से नहीं रहा। इस समय वे कलकत्ता युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार हैं। इसलिये उनके आदर से संयुक्त प्रान्त का आदर नहीं हुआ। सबसे दुःख की यह बात यह है कि

इन उपाधि पाने वालों में एक भी ऐसा नहीं है जो देश भाषा की विद्वत्ता के लिये प्रसिद्ध हो। और कहीं नहीं तो बंगाल में देशभाषा के एक से एक विद्वान पड़े हुए हैं। उनकी ओर उपेक्षा ऐसी क्यों की गई और वह भी डाक्टर आशुतोष मुकर्जी के वाइस-चैंसलर रहते हुए यह समझ में नहीं आता।

***

सिकन्दरशाह ।

[आठवें अंक के आगे।]

सिकन्दर केवल स्त्री सम्बन्धी व्यवहार में रुक्ष नहीं था उसके सब कार्य्य बड़े नियमवद्ध थे—वह जैसा शराबी कहा जाता है वास्तव में नहीं था। सिकन्दर शराब बहुत कम पीता था परन्तु उसका अधिक समय वार्तालाप में जाता था। यद्यपि वह बादशाह था और उसके मुसाहिब लोग उसके नौकर थे परन्तु खानपान के समय वह उनका अपनी ही भांति सम्मान करता था, यदि कुछ उत्तम भोज्य पदार्थ या और कोई नवीन वस्तु सिकन्दर के साम्हने लाई जाती तो वह अपने सब दर्बारी मुसाहिबों और यार दोस्तों को यथा भाग बांट देता, चाहे स्वयं उसके स्वाद से वंचित रहे और यही कारण था कि वे लोग भी उसके हुक्म पर अपना तनमन न्यौछावर करते थे। सिकन्दर का अवकाश समय कभी आमोद प्रमोद और व्यर्थ के वार्तालाप में नहीं जाता था। वह अवकाश के समय या तो अच्छे अच्छे राजनैतिक या आध्यात्मिक विद्या सम्बन्धी

ग्रन्थ पढ़ता या बराबर जंगलों में शिकार खेला करता था, और उसको उसी नियमबद्धता और निरालस्य ने कभी भी किसी शत्रु के सम्मुख नीचा देखने का समय नहीं दिया।

जिस प्रकार ग्रेनिकस की लड़ाई से समस्त एशिया माइनर सहजही सिकन्दर के हस्तगत हो गया था उसी भांति इसस की लड़ाई से साइबेरिया प्रान्त सिकन्दर का हो गया, अब उसे साइबेरिया पर केवल अपना अधिपत्य जमाना बाकी था। इसी अवसर में दारा ने एक राजदूत के हाथ एक पत्र भेजा जिसमें दारा ने सिकन्दर का अपने प्रति अपव्यवहार दिखला कर उसे अपने परिवार के लोगों को मुक्त करने के लिये लिखा था, दारा के इस पत्र का उत्तर सिकन्दर ने इस प्रकार से लिखा जैसे कोई अफ़सर अपने मातहत को लिखे, जिसमें सिकन्दर ने दारा के कारण अपने पिता फिलिप की तकलीफों का इजहार करते हुए लिखा कि यदि तुमने अब से आगे कभी मुझे एशिया का बादशाह करके न लिखा तो मैं तुम्हारे पत्र का उत्तर न दूंगा और यदि तुम्हें अब भी इस बात का घमंड है कि एशिया प्रान्त फारिस का है तो आओ मेरा साम्हना करो भागो मत, मैं तुम पर फिर भी पहिले की भांति आक्रमण करूंगा चाहे तुम कैसेही बलवान और सुरक्षित क्यों न हो।

दारा इससे बहुत दूर न था, और यदि सिकन्दर चाहता तो पश्चिमी सिलसिले पर अधिकार करता हुआ दारा के पीछे पड़ कर उससे फिर भी लड़ाई छेड़ता, परन्तु उसने ऐसा न करके समुद्र किनारे के उन पहाड़ी सिलसिलों पर ही अधिकार जमाना चाहा जिन्हें नौशेरवां ने फतह

करके पारिस के अधीन किया था। इस लिये उसने पहिला वार फिनीशियन लोगों पर किया। ये लोग समुद्र किनारे के उत्तरी भाग पर थे परन्तु इनकी राजधानी टाइर में थी। ये लोग यद्यपि राजसी बल में कुछ भी न थे परन्तु अपने सामुद्रिक व्यापार के कारण धन सम्पति में एकही थे और इसी से उनके धर्म्म सम्बन्धी विचार एवं मनुष्य सम्बन्धी जीवन आचार विचार अत्यन्त नीच और अश्लील होने पर भी सब लोग उनसे सम्बन्ध रखते थे। इस समय उनका ईरान से केवल इतना सम्बन्ध था कि वे कुछ खिराज देते थे और ईरानी सेना उनको बाहरी शत्रु के आक्रमण से रक्षा करने को थी परन्तु उन्हों ने ईसस की लड़ाई में दारा को बहुत मदद दी थी इसी से वे सिकन्दर की नज़र में गड़ गए थे। फिनीशियन लोगों ने सिकन्दर का संदेसा पातेही आपही उसकी अधीनता स्वीकार करली। उन्होंने दूत द्वारा कहला भेजा कि वे सिकन्दर को उसी प्रकार से विजेता मानेंगे जैसा कि वे अब तक दारा को मानते थे, परन्तु सिकन्दर की इच्छा थी कि वह अपनी सब सेना को समारोह के साथ फिनीशियन लोगों की राजधानी में भेज कर अपनी कुलदेवो के दर्शन करै और नियमानुसार बलिप्रदान करे। परन्तु उन्होंने समझा कि जो सिकन्दर यहां आवेगा तो किसी न किसी बहाने से यहां पर अपना दखल करके कुछ सिपाही यदि छोड़ जायगा तो हम सदैव के लिये उसके गुलाम बन जांयगे; इसलिये उन्होंने सिकन्दर-का उक्त प्रस्ताव स्वीकार करने से एक दम इंकार कर दिया और कहला भेजा कि वहीं पर जो पुराना मन्दिर है

उसी में आप अपना पूजन और वलिप्रदान कर लें ; यहां पर किसी अन्य जाति के लोगों को आना जाना हमारे नियम के सर्वथा विरुद्ध है । न हमने ईरानियों को आने दिया न आपको आने देंगे ।

परन्तु सिकन्दर कब मानने वाला था उसने उसी समय आज्ञा दी कि भूभाग से टापू तक बराबर काठ और पत्थर पाट कर मुहाना कर दिया जाय और तब फौज चले । उसकी आज्ञा मानी गई और आधी दूर तक बराबर लकड़ी पत्थर से समुद्र का मुहाना पाटा गया, किन्तु बाद उसके पानी की गहराई अधिक होने से एक तो सिपाहियों को स्वयं अधिक परिश्रम करना पड़ा उधर से वे लोग भी जलते अंगारे फेंक फेंक कर इनकी जान लेने लगे । इस पर सिकन्दर ने दिवार खड़ी करवा कर काम लगवाया । परन्तु कठिन मार के मारे ऐसी हिक्मतें एक भी न चल सकीं ।

इधर साइप्रस तक पहुंचने का प्रयत्न सोचते विचारते जाड़े का मध्य आगया । सिकन्दर को सुस्त बैठना तो बला से भी भारी जान पड़ता था, उसने सब फौज तो इसी मौक़े पर छोड़ी केवल आप कुछ अश्वारोही सैना लेकर उत्तरी पहाड़ों के सिलसिले में पैठ पड़ा । कुछ दूर तक बराबर चला गया परन्तु ज्यों ज्यों सिकन्दर आगे बढ़ता था डाकू लोग इसका साम्हना करते हुए पहाड़ी कन्दराओं के ऐसे स्थानों में पैठते जाते थे कि जहां पर मनुष्यों का जाना कठिन था। अस्तु सिकन्दर ने कुछ सिपाहियों के साथ घोड़े तो यहीं छोड़ दिए और वह आप कुछ चुनिन्दा सिपाही लेकर पहाड़ों में धस पड़ा और रातो रात बराबर मार काट करते हुए ११ दिन में

सब डाकुओं को उसने अपने अधीन कर लिया। इन डाकुओं के मुक़ाबले में सिकन्दर को अधिक कठिनता इस बात में हुई कि इस यसर में सिकन्दर का शिक्षक सलीमक्ष भी उसके साथ था; वह एक तो स्वयं अत्यन्त बूढ़ा था तिस पर भी पहाड़ों में पैदल चलना और वह शरीर रक्त जमा देने वाली बर्फ़ीले पहाड़े की वायु-इससे सलीमक्ष मृतप्राय हो रहा था किन्तु सिकन्दर ने किसी तरह उसे बचा लिया और डाकुओं को जीत कर फिर वह शहर टायर के मुकाबिले में आ डटा।

सिकन्दर ने रात्रि को स्वप्न में देखा कि उसकी कुल देवी शहर टायर के शहर पनाह पर से हाथ उठा कर उसे अपने पास बुला रही है। प्रातःकाल होते ही सिकन्दर की कुछ सेना जो साइप्रस में थी आन पहुंची इसलिये सिकन्दर ने और भी उत्साहित हो कर ढाई सौ जहाजों का बेड़ा तय्यार करवाया और इस तरह से जल युद्ध द्वारा ही शहर टायर को फतह करना विचारा। सिकन्दर के बहादुर सिपाहियों ने तुरन्त ही उसकी आज्ञा का अनुकरण किया और वे बड़ी दिलेरी से अपने जहाज शहर पनाह की दीवार के पास तक ले गए परन्तु एक तो शहर पनाह ही मुहाने की तरफ़ १२० फिट ऊंची थी तिस पर भी फिनीशियन लोग ऊपर से बड़ी बड़ी चट्टान डाल डाल कर सिकन्दर के सिपाहियों को चूर कर रहे थे। वे ऊपर से आग के बड़े जलते हुए कोयले और गरम गरम बालू की भी वर्षा करते थे जिसके कारण सिकन्दर की बड़ी भारी क्षति हुई अन्त में यूनानी सेना दीवार पर चढ़ ही गई। वे लोग तो मरने मारने पर मुस्तैद थे ही बस दोनों दलों में परस्पर हाथा बांही की मार होने लगी और इस प्रकार कई एक घंटे के

बाद दोनों ओर के हजारों सैनिक मारे जाने पर यूनानी सेनाने शहर टायर पर अधिकार जमा लिया अतएव सिकंदर ने विजन होने की आज्ञा दी और शहर टायर निवासी लोग जन बच्चे से भेड़ों की तरह काटे जाने लगे सिर्फ जिन लोगों ने देव मंदिरों में छिप कर प्राण बचाने चाहे वे बच सके। शहर टायर का कत्ल आम पांच महीने तक जारी रहा; सिकंदर स्वयं लिखता है कि अब तक मैंने जितनी बड़ी लड़ाइयों में विजय पाई उन सब से मुझे टायर पर विजय पाने का बड़ा गर्व है। यह बात (ई० पू०) ३३२ के वसंत ऋतु की है।

[क्रमशः]

रामकहानी की भूमिका।

हिंदी।

जाति पाँति को भेद तजि प्रेमिहि मिलत जो धाय।
ताहि राम सों मन रवै द्रवै तासु गुन गाय ॥ १ ॥
अनुचित है या उचित यह यह समझत नहिँ कोय।
घर घर जो बोलत फिरैँ भाषा कहिए सोय ॥ २ ॥

हिंदी—हिंदुस्तान में यह शब्द मुसल्मानों के समय से फैला है। यह एक विशेषण शब्द है। जिसे हिंदुस्तान कहते हैं वही हिंद है। हिंदुस्तान या हिंद में जो पैदा हो उसे हिंदुस्तानी या हिंदी कहना चाहिए। 'हिंदुस्तानी कपडे' की जगह जौं 'हिंदी कपडे कहें तो कुछ अनुचित नहीं। इसलिये हिंदी के आगे जब तक कोई नाम न रहेगा तब तक खाली हिंदी से कुछ भी न समझ पडेगा। पर अब ऐसी

बात नहीं है। लोग घर घर हिंदी बोली या हिंदी भाषा या हिंदी अक्षर की जगह बोली, भाषा और अक्षर को उड़ा कर खाली हिंदी बोलते हैं।

आज कल मुँह से 'हिंदी' निकलते ही चली हुई बातों की लड़ से लोग झट समझ लेते हैं कि 'हिंदी' से 'हिंदी भाषा' या 'हिंदी अक्षर' से मतलब है।

मुसल्मानी अमल्दारी में पहिले पहल मुसल्मान लोग हिंदवी कहते थे। जायस के मलिक महम्मद ने भी अपनी पद्मावत में एक जगह 'हिंदवी' लिखा है पर पीछे से जल्दी जल्दी बोलने से 'वी' का 'व' उड़ गया और उसकी मात्रा 'ई' 'द' में मिल गई इसलिये अब 'हिंदवी' का 'हिंदी' शब्द हो गया। हिंदी 'स' की जगह 'ह' लिखना यह बात अक्सर पुरानी फारसी में पाई जाती है जैसे मास का माह, सप्त का हफ़्ता। इसी तरह संस्कृत सिंधु का भाषा में सिंध हुआ फिर पीछे से फारसी में सिंध का हिंद और हिंद से हिंदी शब्द निकला।

जैसे हमारे लोगों के कान में कभी अँगरेजों के मुँह से निकले हुए शब्दों के अक्षर कुछ और ही समझ पड़ते हैं उसी तरह अँगरेजों के कान में भी हमारे लोगों के मुँह से निकले हुए शब्दों के अक्षर कभी कभी और ही समझ पड़ते हैं इसलिये अँगरेजी में मथुरा का मट्रा 'Muttra' हो गया। इसी तरह उस समय मुसल्मानों के कान में 'सिंध' से हिंद समझ पड़ा जिस से हिंद और फिर हिंदी बना। इसी तरह मुसल्मान लोग हिंद में रहनेवालों को हिंदू कहते हैं।

पहिले हिंदी के कवि इस हिंदी और हिंदुस्तान शब्द से घृणा करते थे। तुलसीदास ने अपने किसी ग्रन्थ में इसे नहीं लिखा। हिंदी भाषा की जगह बालकाण्ड में एक जगह 'भाषाबद्ध करब मैं सोई' यह लिखा है कहीं कहीं पच्छाहँ के कवियों ने अपनी कविता में हिंद और हिंदुआन लिखा है।

हिंदुस्तान के जुदे जुदे देशों में जुदी जुदी भाषाएँ हैं इसलिये हिंदू देश के साथ उन भाषाओं के नाम कहते हैं। जैसे ब्रजभाषा, मारवारी, द्राविडी, तैलंगी वैलंगी........।

अक्षरों की सूरत चाहे जैसी हो पर जहाँ तक क, ख, ग... वर्णमाला का प्रचार है वहाँ तक मेरी समझ में हिंदुस्तान है। ऐसे हिंदुस्तान में तरह तरह की बोलियाँ बोली जाती हैं उन सब को एक शब्द हिंदी से पुकारना मेरी समझ में भूल है। भूल से मुसल्मानों ने जो शब्द बना दिया उसी को जानकार हिंदू कैसे मान सकता है।

बडे अचरज की बात है कि पढे लिखे लोग भी पंजाबी, बंगाली, तैलंगी वैलंगी बोली को सुन कर झट कह देते हैं कि यह हिंदी नहीं है। वे लोग शायद हिंदी से आगरा, दिल्ली, कान्हपुर, मथुरा, बनारस से लेकर विहार तक जो बोलियाँ हैं उन्हीं को लेते हों पर तब तो उतने ही देश हिंद नहीं हैं। मेरी समझ में हिंदी से हिंद की सभी भाषाओं को ले सकते हैं। पर अब आज कल बनारस के चारो ओर सौ सौ कोस की दूरी पर जो बोल चाल है उसी को हिंदी भाषा समझना चाहिए या मनु जिसे आर्यावर्त्त कहते हैं उसकी भाषा को हिंदी कहिए। इसी तरह हिंदी

अक्षर से हिंद के सब देशों के अक्षरों को ले सकते हो पर आज कल हिंदी अक्षर से संस्कृत अक्षर या देवनागरी ही लेते हैं :

कभी कभी ऐसा भी देखने में आया है कि कोई आदमी हँसी या निंदा करने की ग़रज़ से किसी का एक नया नाम रख देता है फिर पीछे से ज़माने के फेर फार से असली बात को भूल कर लोग उस को इज़्जत के साथ उसी नाम से पुकारने लगते हैं । यह मेरे सामने की बात है कि लाहोर के जल्ला पण्डित के वंश के पण्डित रघुनाथ जंबू के महाराज श्रीरणवीर सिंह की नाराज़ी से जंबू छोड कर बनारस चले आए थे। उन से और बाबू हरिश्चन्द्र से बहुत मेल था। बनारस के बडे प्रसिद्ध पण्डित बालशास्त्री ने जब अपनी व्यवस्था से कायथों को क्षत्री बनाया उस समय बाबूसाहब ने अपनी मेगज़ीन में 'सभी जात गोपाल की' इस शिरनामे से काशी के पण्डितों की बडी धूर उडाई। इस पर पण्डित रघुनाथ जी बहुत नाराज़ होकर बाबूसाहब से बोले कि आप को कुछ ध्यान नहीं रहता कि कौन आदमी कैसा है सभी का अपमान किया करते हो। जैसे आप अपने सुयश से जाहिर हो उसी तरह भोग विलास और बड़ों के अपमान करने से आप कलङ्की भी हो इसलिये आज से मैं आप को भारतेन्दु नाम से पुकारा करूँगा। उस समय मैं और भरतपुर के राव श्रीकृष्णदेवशरण सिंह मौजूद थे। हम लोग भी हँसी से कहने लगे कि बस बाबूसाहब सचमुच भारतेन्दु हैं। बाबूसाहब ने भी हँस कर कहा कि मैं नाराज़ नहीं हूँ आप लोग खुशी से मुझे भारतेन्दु कहिए। मैं ने

कहा कि पूरे चाँद में कलङ्क देख पड़ता है आप दुइज के चाँद हैं जिस के दर्शन से लोग पुण्य समझते हैं। यह मेरी बात सब के मन मे खुशी के साथ समा गई। धीरे धीरे इनकी पोथिओं पर दुइज के चाँद की सूरत छपने लगी। इस तरह अब आज इज़्ज़त के साथ बाबूसाहब भारतेन्दु कहे जाते हैं। आप लोग बिचारेंगे तो यह बात तुरंत मन में आ-जायगी 'हिंद के सूरज' 'हिंद के सितारे' ये ख़िताब तो मशहूर हैं पर किसी विलायत में आदमी के लिये चाँद का ख़िताब नहीं।

मैं समझता हूँ कि इसी तरह पहिले मुसल्मानों ने हम लोगों का अपमान करने के लिये हिंदू नाम रक्खा पर आज कल अपने लोगों की बोल चाल में यह शब्द ऐसा मिल गया है कि इस नाम से हम लोग अब कुछ भी बेइज़्ज़ती नहीं समझते। बहुत से लोग हिंदू की जगह आर्य कहने लगे हैं पर करोड़ों हिंदुओं में शायद दश पाँच आर्य से हिंदू समझते हों।

यूरप के लोग कहते हैं कि हमारे ही देश से एक गोल हिंदुस्तान की ओर आई और यहाँ के दस्यु लोगों को जीत कर अपना दास बनाया इसी से वे दास या शूद्र कहलाने लगे। इस बात को पक्का करने के लिये यूरप के लोग तरह तरह के सबूत देते हैं पर मेरे मन में इस की बहुत ही शंका है। अगर यह बात ऐसी ही है तो हिंदुस्तान में आर्य और शूद्र यही दो जात होतीं पर यहाँ तो चार बड़ी जात और हज़ारों छोटी ज़ात मनु ही के ज़माने से चली आती हैं। दूसरी बात यह कि ऋषिओं ने अपने देश में जाने के लिये

फिर क्यों मना किया। ऋषिलोग कहते हैं कि सिंधु नदी के पार न जाना चाहिए। यहाँ पर इस बात के बढ़ाने का कुछ काम नहीं बात आजाने पर कुछ चर्चा कर दी है।

आज कल बहुत से लोग पुराने फ़ारसी शब्दों को निकाल निकाल कर हिंदी में नए शब्दों की भरती कर रहे हैं। वे लोग हिंदी ही से चिढ़ कर, हिंदी के स्थान पर 'आर्यभाषा' हिंदू के बदले आर्य बोलने लगे हैं। हिंदी-प्रचारिणी सभा को नागरीप्रचारिणी कहते हैं। मैं इन बातों को बहुत ही नापसंद करता हूँ। जो शब्द आप से आप प्रचलित हो गए हैं उन्हें न बदलना चाहिए। उन के बदलने से कुछ भी फ़ायदा नहीं उलटा लोगों के न समझने से नुक़सान ही है। विलायत से जिस समय हिंदुस्तान में दियासलाई (Match) आई उस समय पण्डितों की कौन कमेटी बैठी थी कि म्याच का तर्जुमा "दियासलाई" ठीक किया गया और अब ऐसी कौन ज़रूरत है कि पण्डितों की कमेटी बैठा कर म्याच का तर्जुमा दीपशलाका, स्फुलिङ्गदण्ड, स्फुलिङ्गोत्पादक, स्फुलिङ्गजनक किया जाय। एक दिन मैं ने एक संस्कृत के विद्यार्थी से कहा कि 'लालटेन लेआओ" इस का संस्कृत बनाओ। थोडी देर में उसने कहा कि इस का संस्कृत "दीपमन्दिरमानय" है। लालटेन का अनुवाद दीपमन्दिर सुन कर मुझे हँसी आई और मैंने कहा कि मन्दिर तो किसी के ले आने से आ नहीं सकता, ऐसी जगहों में उपसर्ग प्र से काम चल जाता है "प्रदीपमानय" कहो। इसी तरह मेरी समझ में रेल, कमेटी, स्कूल, स्लेट, पेन्सिल टिकट.....की जगह धूम्रयान, सभा, पाठशाला, शिलापट्टी, सीसकलेखनी, मूल्यप्रमाण-सूचक-पत्र......लिखने की कुछ

ज़रूरत नहीँ। जो शब्द अपनी भाषा मेँ आ गए उन्हेँ रहने देना चाहिए उन के तर्जुमे से खुदाबख्श ईश्वरदत्त और बलदेवबख्श बलदेवदत्त हो जायँगे जिस से सुननेवाले न समझ कर घबड़ा जायँगे कि ये क्या कहते हैँ।

बडे अचरज की बात है कि हाथ से कलम पकड़ते ही ऐसी नशा चढ जाती है कि अपनी रात दिन की बोली भूल जाती हैँ और उसकी जगह नए नए शब्दोँ के गढने की सनक बढ जाती है। मैँ भी इस नशे से बचा नहीँ हूँ पर सदा बचने की तदबीर मेँ लगा रहता हूँ। कालेज मेँ जिन की दूसरी भाषा संस्कृत थी वे कलम पकडने की नशे से संस्कृत की ओर और जिनकी दूसरी भाषा फ़ारसी थी वे फ़ारसी की ओर झुक जाते हैँ।

एक दिन एक मेरे मित्र मुझ से मिलने के लिये मेरे घर पर आए, मैँ बाहर चला गया था; वे लौट गए। दूसरे दिन मैँ शहर जाता था राह मेँ उनके नौकर ने मुझे उनकी चिट्ठी दी। चिट्ठी मेँ लिखा था कि "आप के समागनार्थ मैँ गतदिवस आप के धाम पर पधारा, गृह का कपाट मुद्रित था; आप से भेँट न हुई, हताश होकर परावर्त्तित हुआ"। गाड़ी मेँ मैँ उनकी चिट्ठी पढ रहा था, थोडी दूर पर राह मेँ वही मित्र मिले, मैँ गाडी रोक कर उतरा, उतरतेही उन्हेँ ने कहा कि कल मैँ आप से मिलने के लिये आप के घर पर गया था, घर का दरवाजा बंद था, आप से भेँट नहीँ हुई, लाचार होकर लौट आया। मैँ ने उन के हाथ मेँ उन की चिट्ठी दी और हँस कर कहा कि इस समय जैसी सीधी बात आप के मुँह से निकलती है वैसी कलम पकडने की नशे से चिट्ठी मेँ न लिखी गई।

आज कल की हिंदी को बँगले की लड़की कहें तो अनुचित नहीं । लोग बंगाली भाषा के नाटक और किस्से कहानी की पोथिओं का उल्था करते जाते हैं। उल्थे में अक्सर संस्कृत शब्दों को तो जैसे के तैसे रहने देते हैं ख़ाली हिंदी की विभक्ति और क्रिया जोड़ देते हैं।

जैसे कोई बंगाली पछाहिआँ हिंदू का पहनावा पहन ले तो उसके देखने से लोग पछाहिंआँ समझेंगे उसी तरह आज कल हिंदी की विभक्ति औा क्रिया के मेल से बंगला हिंदी कहलाती है ।

बंगाले की बोलचाल में बहुत संस्कृत शब्द भरे हैं, इसलिये उनकी पोथिओं के संस्कृत शब्द बोलचाल ही के शब्द समझ पड़ते हैं पर इधर पच्छाहँ में यह बात नहीं है इधर की बोली से हिंदी पोथी की भाषा बिल्कुल ही जुदी होती जाती है। लोगों को चाहिए कि इस तरफ़ ध्यान दें ऐसा न हो कि धीरे धीरे देशभाषा और संस्कृत के बीच में एक नई भाषा पैदा हो जाय ।

जैसे हम लोग बंगालिओं की हिंदी 'पटरि से चलौ' "ह्याँ पेशाब ने करना" को हँसते हैं उसी तरह घर में हम लोगों के मुँह से 'मन चलता है कि साफ पानी पीएँ" और बाहर पढे लिखे लोगों के बीच 'मन की अभिलाषा है कि निर्मल जल पान करें" यह सुन कर घर के लोग मनही मन हँसते हों तो क्या अचरज । एक बैद ने अपने मजूरे से कहा कि एक पैसा का "इन्द्रयव" ले आओ । उस बेचारे ने इधर उधर पूछ पाछ कर बहुत देर में लौट कर कहा कि पसारी लोग कहते हैं कि हम नहीं जानते कि "इन्द्रयव" क्या चीज है । वैद ने कहा कि अबे कोरैया का फल है जा जल्द

ले आ; इस पर मजूरे ने हँस कर कहा कि वाह साहब "हमारे पिछवाड़े कोरैया तेकरे फर क नांव इंदरजवा;" यह दशा "साफ पानी" की जगह "निर्मल जल" करने से है।

[क्रमशः]

——:o:——

महाकवि मिलटन और उनके काव्य।

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र के पूज्यपाद पिता बाबू गिरधर दास ने अपने विदुरनीति नामक ग्रन्थ में लिखा है कि

सत् कविता सत्पुत्र अरु, कूपादिक निर्मान।
इनते नर को रहत है, जाहिर नाम जहान॥

यदि रामायण, शकुन्तला, गुलिस्तां, प्याराडाइज लास्ट (Paradise Lost) इत्यादि ग्रन्थ न होते तो इनके रचयिता वाल्मीकि, कालिदास, शेखसादी, मिलटन प्रभृति को आज कौन जानता? ऊपर के दोहे में महात्मा विदुरजी ने महाराज धृतराष्ट्र के प्रति नाम अर्थात् यश को जीवित रखने के लिये तीन साधन गिनाए हैं। किन्तु सत्पुत्र और कूपादि निर्म्माण से कहीं बढ़कर सत्कविता को कहना चाहिए क्योंकि इन अमरपदवीप्राप्त कवियों की ऐसी संसार व्यापिनी और अचला ख्याति का कारण केवल उनके ग्रन्थ ही हैं जो सत्पुत्र और कूपनिर्म्माण से कभी भी प्राप्त नहीं हो सकती थी। यह स्पष्ट है क्योंकि सत्पुत्र और कूपनिर्म्माण सत्कविता की अपेक्षा बहुत कम टिकाऊ हैं।

अंगरेज कवि मिलटन का नाम तो अंगरेजी साहित्य में प्रसिद्ध ही है पर हिन्दी के अनेक पाठकों से भी अपरिचित नहीं है। अंगरेजी साहित्य में ये बहुत ऊंचे दरजे के कवि थे, यहां तक कि प्रसिद्ध नाटक-कार शेक्सपियर के बाद महाकाव्यकार में आपही की गिनती है। प्याराडाइज लास्ट* (च्युत-स्वर्ग) आपका परम प्रसिद्ध महाकाव्य है। यूनानी दार्शनिक और समालोचक अरिस्टाटल के मत से महाकाव्य (जिसे एपिक–Epic–कहते हैं) के चार लक्षण हैं जो सबके सब एडिसन साहब के मतानुसार इस काव्य में घटित होते हैं। वे ये हैं––

(१) वर्णनीय विषय ऊंचे दरजे का, विषम और एक होना चाहिए।

(२) उच्चतम समाज तथा उच्च विचार के मुख्य पात्र होने चाहिएं।

(३) गम्भीर तथा वीर भाव की छन्दःरचना होनी चाहिए और

(४) वार्तालाप (dialogue) एकान्तकथन (Soliloquy) और वर्णनात्मक लेखों की मिलावट से निबन्ध का विकास होना चाहिए।

किसी अत्यन्त आवश्यकीय नीति का सिखाना, समस्त

---

* हिन्दुओं के महाभारत और रामायण नामक संस्कृत महाकाव्य (Epics) जगत्प्रसिद्ध हैं। इनकी तुलना के किसी जाति या देश में अब तक महाकाव्य नहीं बने। ये बड़े महत्व के हैं। इनकी पवित्रता और नीति हिन्दुस्तान वा हिन्दुओं के लियेही नहीं वरन सम्पूर्ण संसार के लिये आदर्श हैं। वे बहुत बड़े भी हैं।

प्रचंड मनोविकारों को उसकी प्राप्ति में लगाना, हृदय को शुद्ध करना तथा उच्च और गुरु भावों से भरना महाकाव्य के कर्तव्य हैं। इस ग्रन्थ के विशेष वर्णन करने की यहां आवश्यकता नहीं है क्योंकि आगे इसका विस्तृत वर्णन किया जायगा। यहां केवल इस अंगरेज महाकवि की संक्षिप्त जीवनी के साथ उनके काव्यों की संक्षिप्त आलोचना लिखी जाती है जो विशेष कर अंगरेजी भाषानभिज्ञ पाठकों को रुचिकर होगी।

दिसम्बर १६०८ इस्वी में लन्दन नगरी में हमारे चरित नायक का जन्म हुआ। आपके पिता लन्दन में कानून लेखक का काम बड़ी सफलता से करते थे और पवित्री ÷ (Puritan) सम्प्रदाय के थे। संगीत से प्रेम और असहिष्णुता से घृणा इन दोनों गुणों को मिलटन ने अपने बाप से ही प्राप्त किया था। पिता ने आपको धर्म्मप्रचारक (पादरी) बनाने की इच्छा की थी और इसी लिये आप १६२४ ईस्वी में केमब्रिज भेजे गए जहां छात्रवृत्ति के साथ क्राइस्ट कालिज में शिक्षा पाने लगे। यहां सात वर्ष रहकर १६३१ ई० में बी० ए० और १६३२ ई० में एम० ए० की उपाधियों से विभूषित होकर आपने विश्वविद्यालय। (यूनिवर्सिटी) का परित्याग किया। तदनन्तर आपने चट पट कोई पेशा

÷ प्युरिटन (पवित्री) सम्प्रदाय उनलोगों से बना था जो महाराज्ञी एलिज़बेथ और प्रथम दो स्टुअर्टों के राज्य में डिसेण्टर (Dissenter) नामी मत-विरोधी होगए थे अर्थात् जिन्होंने अपने को स्थापित चर्च से अलग कर लिया था। ये बड़ी-कड़ी-नीतियों के पाबन्द थे।

स्वीकार नहीं कर लिया वलिक बकिङ्गहम प्रान्त (Shire) के हौर्टन ग्राम में अपने पिता के मकान में पांच वर्ष तक रह कर योरप महादेश में परिभ्रमण करने को निकले। ऐसे भावी महान् कवि का सर्वसाधारण की भांति विद्या समाप्त होने पर तुरंत किसी उद्यम में प्रवेश करजाना युक्त भी न होता। क्योंकि जो लोग विद्यालयों की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने ही को विद्वत्ता समझते हैं वे भूलते हैं, परीक्षा के पूर्व जो विषय याद किए जाते हैं उनका अधिकांश उत्तीर्ण होने पर प्रायः भूल जाता है। इसलिये परीक्षोत्तीर्ण मनुष्य भी यदि पुस्तकों का देखना छोड़ दे तो उसकी योग्यता कम होजाती है। परीक्षा के समय में जो अध्ययन का अभ्यास लग जाता है यदि उसे परीक्षा के अनन्तर बरसों तक जारी रक्खा जाय तो वह निस्सन्देह मनुष्य को योग्य बना देता है। कारण यह है कि ऐसा अध्ययन केवल योग्यता के लिये—न कि परीक्षोत्तीर्णता के लिये—किया जाता है। अतएव वह परीक्षा की हलचली और परतन्त्रता से मुक्त एवं सुस्थिरता और मनस्विता से युक्त होता है। यदि परीक्षा समय पढ़ने का है तो उसके अनन्तर का समय गुनने का है। बिना गुनने के पढ़ना व्यर्थ है। जितने बड़े बड़े विद्वान् दृष्टिगोचर होते हैं यदि उनके जीवन के मुख्य समय को घरेऊ रीति से (Privately) विद्या की चिन्तना मे अवश्य लगाया है। तब भला हमारे चरितनायक के लिये कब सम्भव था कि वे युनिवर्सिटी की उच्च पदविदां पाकर ही सन्तुष्ट हो जाते और अपने पिता के मकान में हौर्टन में रहकर तथा योरप में पर्यटन कर विद्योन्नति न करते? कहा भी है "शास्त्रं सुचिन्तियत्कि परिचिन्तनीयम्"। [क्रमशः]

शिवाजी की चतुराई।

—:o:—

१ औरंगजेब ने शाइस्ताखां और यशवन्तसिंह दोनों को रण में दक्षता न दिखाने के कारण दिल्ली में पुनः बुला लिया; और अपने पुत्र मुअज़िम को दिलावर खां के साथ भेजा। उसने अम्बराधिपति राजा जयसिंह को भी शिवाजी को विजय करने के लिये भेजा। विक्रमशाली जयसिंह चैत्र मास के अन्त में पूना नगरी में आए। जयसिंह ने आते ही दुर्ग-आक्रमण आरम्भ कर दिया। उन्होंने स्वयं अपने प्रभावशाली राजपूतों को लेकर अनेक गढ़ों को घेरा। महाराज शिवाजी हिन्दुओं से युद्ध ठानने में तत्पर न हुए। वे जयसिंह के नाम को, उनकी सेना के प्रमाण को, उनकी कुशाग्र बुद्धि को, दौर्दण्ड प्रताप को, और पराक्रम को भली भांति जानते थे इसलिये युद्ध करना ठीक न समझ उन्होंने संधि की प्रार्थना की। कुशाग्रबुद्धि जयसिंह शिवाजी की सब चलाकी जानते थे इस कारण उन्होंने इस संधि पर विश्वास न किया। अन्त में शिवाजी के विश्वासी मंत्री रघुनाथ पंत न्यायशास्त्री जयसिंह के पास आए और उन्होंने उनको भली भांति समझा दिया कि शिवाजी आपके साथ चतुराई नहीं करते हैं। ब्राह्मण के इस सत्यवाक्य को सुनकर जयसिंह ने विश्वास किया और मंत्री को कहा "द्विजवर! आपके कहने से मुझे आशा हुई, आप शिवाजी से कह दीजिए कि, जब तक हम हैं औरंगजेब आपके संग किसी प्रकार का कुव्यवहार नहीं कर सकता"। इसी प्रकार थोड़ी देर तक वार्तालापोपरान्त

मंत्री जी गृह पधारे और आकर सब हाल शिवाजी से उन्होंने कहा।

२ तदुपरान्त शिवाजी ने खुद चाहा कि मैं जयसिंह से मिलूं। शिवाजी ने तुरन्त ही प्रस्थान किया। कुछ घंटों में शिवाजी जयसिंह के पास पहुंचे। प्रतिहारी ने आकर जयसिंह से कहा "महाराज की जय हो, महाराज शिवाजी स्वयं द्वार पर खड़े हैं वे श्रीमान् से मिलना चाहते हैं। सभा अति विस्मय में हुई और महाराज जयसिंह स्वयं शिवाजी को लेने को डेरे के बाहर चले आए और बहुत आदर से हृदय लगाय गृह में ले आए, और राज सिंहासन पर दहिनी ओर उन्हें बैठाया, और कहा "राजन्! इस डेरे को भी आप अपना ही गृह समझिए।" शिवाजी ने उत्तर दिया "राजेन्द्र! यह सेवक आपकी आज्ञा से कब विमुख है। आपके सद्-व्यवहार से मैं सम्मानित हुआ हूं।" जयसिंह ने कहा "नृपतिवर! मैंने जो कहा था वह करूंगा, औरंगजेब आप के विद्रोहाचरण को क्षमा दे यथेष्ट सम्मान कर आपकी रक्षा करेंगे इस विषय में मैं बचन दे चुका हूं।" इस प्रकार थोड़ी देर में सभा भंग हुई, डेरे में अब केवल शिवाजी और जयसिंह के अतिरिक्त और कोई नहीं है। शिवाजी अब कपोल पर हाथ रख कर अफ़सोस करने लगे। शिवाजी को चिन्तित देखकर जयसिंह बोले "राजन्! आप यदि आत्मसमर्पण करके शोकाकुल हुए हों तो यह खेद निष्प्रयोजन है। आप हम पर विश्वास करके यहां आए हैं, राजपूत विश्वस्त के ऊपर हस्तक्षेप नहीं करते! आजही आप रात्रि में यहां से कुशलपूर्वक पधारिए, कोई राजपूत

आपके ऊपर हाथ नहीं उठावेगा। आप जाइए और युद्ध का सामान करिए, हां आप युद्ध में पुनः जयलाभ करें यह दूसरी बात है परन्तु हम लोग क्षत्री धर्म को कभी नहीं भूलेंगे।" शिवाजी ने कहा "क्षत्रिवर! इसका मुझको कुछ भी खेद नहीं है पर शोक केवल इस विषय का है कि बाल्यावस्था से जिस सनातन धर्म के निमित्त, जिस हिन्दू गौरव अर्थ चेष्टा की वह महान् उद्यम, आज एक बारगी नष्ट हो गया, बस इसीसे शोकाकुल हूं। राजन् मैंने आत्मसमर्पण किया। महाराज! आपको मैं पिता तुल्य समझता हूं इसलिये हे राजन्! आप इस पुत्रको परामर्श दीजिए।" मैं बाल्यावस्था में जब कोकण देश के असंख्य पहाड़ और तलौटियों पर भ्रमण करता, मेरे हृदय में हिन्दू जाति के लिये नाना प्रकार की चिन्ताएं उदय होतीं। कभी कभी यह विचारता मानों साक्षात भवानी जी मुझे स्वाधीनता स्थापन के निमित्त आज्ञा देती हैं। देवालयों की संख्या बढ़ाने को, ब्राह्मणों का सम्मान बढाने, गोरक्षा करने, धर्मविरोधी यवनों को दूर करने में देवी साक्षात् उत्तेजना देती थीं। मैं बालक था, उस स्वप्न से भूलकर खड्ग पकड़, वीर श्रेष्ठों को पराजित कर दुर्गों पर अधिकार जमाने लगा यही स्वप्न यौवन में देखा है कि हिन्दू धर्म की प्रधानता हिन्दू स्वाधीनता स्थापित हुई? इसी स्वप्न के बल से शत्रु जय किए, देश जय किए, मन्दिर स्थापन किए, राज्य विस्तार किया, वीर श्रेष्ट! क्या मेरा यह आशय बुरा है! क्या स्वप्न अलीक स्वप्न मात्र है, आप पुत्र को निज इच्छानुसार उपदेश दीजिए।"

३ दूरदर्शी जयसिंह क्षणेक मौन रह गए फिर धीरे से बोले "हे राजन्! इससे बढ़कर और कोई अन्य उद्देश्य नहीं है। राजपूत स्वाधीनता अभी तक तुम लोग भूले नहीं हो, और शिवाजी! तुम्हारा स्वप्न केवल स्वप्न ही मात्र नहीं है। चारों ओर देख जहां तक मैं विचारता हूं उससे विदित होता है कि अब मुग़ल राज्य का अन्त आ गया, यवन राज्य कलंकराशि से पूर्ण हुआ है, विलासप्रियता से जर्जरित हुआ है, गिरते हुए गृह की नाईं अब नहीं रह सकता। ऐसा जान पड़ता है कि शीघ्र अथवा विलम्ब में प्रासाद तुल्य मुगल राज्य धूल में मिल जायगा। तिसके पीछे हिन्दू-प्रधान होंगे। महाराष्ट्र जीवन अंकुरित होता है; जान पड़ता है कि महाराष्ट्र-यौवन भारतवर्ष में फैल जायगा।"

४ शिवाजी इन सब बातों को सुन कर अति हर्षित हुए और गदगद हो बोले तब फिर आप ऐसे महात्मा उस गिराऊ राज्य के स्तंभ क्यों हो रहे हैं। जयसिंह ने उत्तर में कहा जिस विषय में हम लोग वृती ही जाते हैं फिर उसका किसी न किसी भांति निर्वाह करते ही हैं। यदि आप राजपूतों का इतिहास पढ़िए तो आपको विदित होगा कि राजपूतों ने सुख दुःख सब में अपना सत्य व्रत पालन किया है। हरिश्चन्द्र को देखिए, धन दारा पुत्र कुटुम्बादिक सब को उन्होंने सत्य के आगे तुच्छ समझा। हम लोगों ने सहस्रों वर्ष मुसल्मानों से युद्ध किया है परन्तु कभी सत्य छोड़ा है? कभी विजयी हुए कभी पराजित, परन्तु जय पराजय सम्पद, विपद, सब में सर्वदा सत्य पालन किया है। अब हमारी गौरव की स्वाधीनता जाती रहे, पर सत्य पालन करने का

गौरव तो है। देश प्रदेश, विदेश में, शत्रु और मित्रों में राजपूतों का नाम प्रतिष्ठित है। क्षत्रियों ने क्या नहीं किया महाराज टोडरमल ने अपनी राजपूतही सेना से बंगाल को विजय किया, महाराज मानसिंह ने काबुल से उड़ीसा तक मुगलों की पताका फहराई थी परन्तु किसी ने दिए वचन के विरुद्ध न किया।" [क्रमशः]

—:o;—

सभा का कार्यविवरण।

[८]

साधारण अधिवेशन।

शनिवार ता० २९ फरवरी १९०८ सन्ध्या के ५½ बजे।

स्थान—सभाभवन।

[१] गत अधिवेशन (ता० २५ जनवरी १९०८) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

[२] प्रबन्धकारिणी सभा के ता० ८ दिसम्बर, ६ जनवरी और २५ जनवरी १९०८ के कार्यविवरण सूचनार्थ उपस्थित किए गए।

[३] निम्न लिखित महाशय नवीन सभासद चुने गए—

१ सेठ पोपटलाल हंसराज–जाम नगर–काठियावाड़ १॥), २ राव पन्ना लाल जी C/o श्रीमती माणिक जू कामदारिन पन्ना ३), ३ बाबू चतुर्भुज सहाय वर्म्मा–छतरपुर बुंदेलखण्ड १॥), ४ बाबू मृत्युञ्जय भट्टाचार्य हथौज मनियर बलिया ३), ५ डाक्टर देवी दत्त पंडया हेल्थ अफसर बनारस ६), ६ पं० तारा चन्द चौधरी अजमेर १॥), ७ पं० सुरेन्द्र नारायण शर्म्मा गायघाट बनारस १॥), ८ पं० निक्का मिश्र लाहोरी टोला बनारस १॥), ९ बाबू गणपतिराय सकसेना हिन्दू कालेज बनारस १॥), १० मिस्टर जी० एस० खस्ता अन्ता कोटा १॥)

[४] सभासद होने के लिये निम्नलिखित नवीन महाशयों के आवेदन पत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए—

१ बाबू खेमचन्द्र मुनसफी सहारनपुर, २ पं० उदित मिश्र नायब मुदर्रिस शिवपुर बनारस, ३ मिस्टर जी० एम० कार हेडमास्टर हरिश्चन्द्र स्कूल बनारस, ४ पं० चन्द्रदत्त शर्म्मा शिवपुर बनारस, ५ बाबू बल्देव प्रसाद वैश्य शिवपुर बनारस, ६ पं० देवी प्रसाद मिश्र मौजा खरिक काली थान बिदपुर जि० भागलपुर, ७ पं० राममणि दीक्षिताचार्य रामकटोरा बनारस, ८ बाबू त्रिबेनीप्रसाद दारागंज इलाहाबाद, ९ बाबू इश्कलाल पटवारी ध्याण पो० नागल जि० सहारनपुर, १० पं० गौरीशंकर व्यास, ११ बाबू मुन्नीलाल, क्राउन कम्पनी वरना का पुल बनारस, १२ रेवरेण्ड ई० एच० एम० वालर सिगरा बनारस, १३ बाबू गणेशप्रसाद नारायण शाही चौकाघाट बनारस, १४ लाला अर्जुनदास वासुदेव एकस्ट्रा असिस्टेण्ट कमिश्नर गुरगांव।

[५] बाबू श्यामसुन्दर दास के प्रस्ताव तथा पं० रामनारायण मिश्र के अनुमोदन पर निश्चय हुआ कि आनरेब्ल पं० सुन्दरलाल जिन्होंने हिन्दी कोश के लिये १०००) रु० से सभा की सहायता की है सभा के स्थायी सभासद चुने जांय।

[६] हरदोई के बाबू प्यारे लाल रस्तोगी का इस्तीफा उपस्थित किया गया और स्वीकृत हुआ।

[७] निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवाद पूर्वक स्वीकृत हुईं—
१ खड्ग विलास प्रेस बांकीपुर–बाबू साहिब प्रसाद सिंह की जीवनी, २ पं० शंकर राव काशी, लखलऊ की कब्र चौथा–भाग, परिभाषा सूत्र, ३ पं गणेश प्रसाद शुक्ल काशी–गर्ग मनोरमा, ४ बाबू श्यामसुन्दर दास काशी–अद्भुत रहस्य भा० १–४, ज्ञान वर्णमाला, व्याख्यान प्रबोध भाग १, ५ लाला बद्री प्रसाद अग्रवाल, प्रयाग–ज्वरांकुश, ६ बाबू गिरिधर दास, काशी–गंगोत्री मार्ग वर्णन ७ पं० कृष्णानन्द जोषी मुरादाबाद–ज्ञानसमुद्र, ८ श्रीमन्त सर्दार बलवन्त राव भया साहब सीदे–श्रीमद् भाषा भागवत दशम स्कन्ध, ९ पं० जनार्दन जोषी बी० ए–ज्योतिष चमत्कार, १० पं० श्यामसुन्दर लाल त्रिपाठी, काशी–

वक्तृतामाला भाग १, ११ महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी काशी–तुलसीसुधाकर, १२ बाबू लक्ष्मीनारायण धवन काशी–प्लानचेट, गीतावली, १३ बाबू मोतीचन्द काशी–वेदस्तुति व्याख्या, १४ बाबू हीरालाल जैन काशी–जैनव्यवस्था भूमिका, १५ पं० रघुनन्दन प्रसाद शुक्ल काशी–मरहठा सरदार।

संयुक्त प्रदेश की गवर्नमेंट General Report on Public Instruction in the United Provinces for the year ending 31st March 1907.

भारत की गवर्नमेंट Studies in the medicine of ancient India Pr. I.

[८] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

जुगुलकिशोर
मंत्री।

——:o:——

[१३]

प्रबन्धकारिणी सभा।

सोमवार ता० ९ मार्च १९०८–सन्ध्या के ५½ बजे।

स्थान—सभाभवन।

उपस्थित।

बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए०–सभापति, रेवरेण्ड ई० ग्रीव्स, मिस्टर गुन्नीलाल शा, बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद, बाबू बेणीप्रसाद, बाबू माधव प्रसाद, बाबू गोपालदास।

१ गत अधिवेशन (ता० ३ फ़रवरी) का कार्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

२ आगरे के बाबू श्यामलाल का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा के संरक्षक "नृपतिगण" के अतिरिक्त "हिन्दी के विशेष सहायक" भी बनाए जांय। निश्चय हुआ कि सभा इस समय इसे स्वीकार करना उचित नहीं समझती।

३ बाबू सन्नूलाल गुप्त की बनाई हुई शीघ्रलिपि प्रणाली की पुस्तक बाबू श्रीशचन्द्र बोस की इस सम्मति के सहित उपस्थित की गई कि यह पुस्तक ठीक नहीं है और सभा ने इस विषय की जो पुस्तक बनवाई है वह इससे कहीं उत्तम है। निश्चय हुआ कि बाबू सन्नूलाल गुप्त की पुस्तक उन्हें लौटा दी जाय।

४ ग्वालियर राज्य के नागरी हस्तलिपि परीक्षा के सन् १९०७ के पर्चे उपस्थित किए गए। निश्चय हुआ कि इनकी परीक्षा के लिये निम्नलिखित महाशयों की सब-कमेटी बना दी जाय- पण्डित रामनारायण मिश्र बी० ए०, बाबू अमीर सिंह और बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए०।

५ पण्डित रामनारायण मिश्र के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल के लेखों की परीक्षा के लिये जो सब-कमेटी नियत हुई है उसमें मिस ज्यार्ज हिन्दी भाषा नहीं जानतीं अतः उनके स्थान पर डाक्टर एस० के० चैाधरी नियत किए जांय।

६ पण्डित रामनारायण मिश्र की सम्मति के सहित राय शिवप्रसाद का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि पुस्तकालय की सूची विषयक्रम से तय्यार करने के लिये यह उत्तम होगा कि पुस्तकों की छपी हुई सूची ऐसे महाशयों के पास भेजी जाय जिन्होंने उन पुस्तकों को पढ़ा हो और उनसे प्रार्थना की जाय कि वे पुस्तकों के नाम के आगे उनका विषय लिख दें। निश्चय हुआ कि राय शिव प्रसाद के प्रस्ताव के अनुसार कार्य होने में बहुत अड़चन पड़ेगी।

७ पण्डित महादेव शरण पाण्डेय का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि गोरखपुर की छात्रोपकारिणी सभा की ओर से बाबू सीताराम सिंह इस सभा के सभासद चुने जांय और उनका चन्दा क्षमा किया जाय। निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया जा सकता।

८ महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी का 'रामकहानी की भूमिका' शीर्षक लेख उपस्थित किया गया। निश्चय हुआ कि यह नागरीप्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित किया जाय।

९ मंत्री ने सूचना दी कि अन्नपूर्णा मिल्स कम्पनी में सभा का जो एक शेयर था उसकी बिक्री का सभा को ३२) रु० मिला है। निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय।

१० संयुक्त प्रदेश के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर का १८ फरवरी का पत्र नं० जी-४६८४ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पूछा था कि हिन्दी कोश के लिये सभा स्वयं कितना द्रव्य जुटा सकेगी और क्या उसने हिन्दी प्रेमियों से इसके लिये चन्दा उगाहने का कोई प्रबन्ध किया है। निश्चय हुआ कि डाइरेक्टर साहब को लिखा जाय कि सभा इसके लिये चन्दा उगाहने का उद्योग कर रही है और उसे आशा है कि वह १५०००) रु० इसके लिये एकट्ठा कर लेगी। सभा की प्रार्थना है कि संयुक्त प्रदेश की गवर्मेंएट उसकी इस कार्य में विशेष सहायता करे।

११ मध्य प्रदेश के शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर का २७ फरवरी का पत्र नं० १३८६ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पूछा था कि हिन्दी कोश की एक प्रति का मूल्य क्या होगा और सूचना थी कि उसने इस कोश के काम में सहायता के लिये अपने प्रान्त से राय साहब नानक चन्द को प्रतिनिधि नियत किया था। निश्चय हुआ कि उनको लिखा जाय कि अभी यह ठीक ठीक नहीं कहा जा सकता कि इस कोश का मूल्य कितना होगा, अनुमान से वह २०) रु० के लगभग होगा। प्रतिनिधि नियत करने के लिये उन्हें धन्यवाद दिया जाय।

१२ पण्डित जगदीश्वर प्रसाद ओझा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि वे चांदी का एक पदक सभा द्वारा उस मनुष्य को दिया चाहते हैं जो "सूर्यपारी ब्राह्मणों की उत्पत्ति और इतिहास" पर एक सर्वोत्तम लेख लिखे।

निश्चय हुआ कि सभा की सम्मति में इस पदक का सर्यूपारी ब्राह्मण सभा द्वारा दिया जाना उपयुक्त होगा।

१३ पण्डित त्रैलोक्यनाथ पाठक का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने सभा से वीरविनोद नामक पुस्तक के नकल करने की आज्ञा मांगी थी। निश्चय हुआ कि उनको इसके लिये आज्ञा नहीं दी जा सकती।

१४ श्रीमान् राजा साहब भिनगा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि यदि सभा "Minor Hints by Sir. T. Madhava Rao" का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करे तो वे उसके अनुवाद तथा छपाई के लिये सभा को ३००) रु० की सहायता देंगे। निश्चय हुआ कि इस पुस्तक की केवल छपाई में ४००) से अधिक व्यय होगा और इसके लिये एक योग्य अनुवादक भी आवश्यक है। अतः सभा को यदि इसके लिये ७००) रु० की सहायता मिले तो वह इसे प्रकाशित कर सकती है।

१५ बाबू खानचन्द्र का पत्र पण्डित रामनारायण मिश्र की इस सम्मति के सहित उपस्थित किया गया कि जो पुस्तकें सभा के पुस्तकालय में आवें उनकी विशेष सूचना नागरीप्रचारिणी पत्रिका द्वारा दी जाय जिसमें पत्रिका पढ़ने वाले हिन्दी रसिक उनमें से चुन कर अच्छी अच्छी पुस्तकें अपने लिये मंगा सकें। निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव आगामी वर्ष में विचारार्थ उपस्थित किया जाय।

१६ सन् १९०७ की हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों की रिपोर्ट उपस्थित की गई। निश्चय हुआ कि यह स्वीकार की जाय और गवर्न्मेण्ट के पास भेज दी जाय।

१७ कोश प्रबन्धकर्त्तृ कमेटी के प्रस्ताव पर निश्चय हुआ कि निम्नलिखित महाशय उसकी बड़ी कमेटी के सभासद चुने जांय—

पण्डित मदनमोहन मालवीय, प्रयाग; पण्डित गणपत जानकी राम दुबे, ग्वालियर; ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा, प्रयाग; बाबू सन्नूलाल गुप्त, बुलन्दशहर; बाबू युगल किशोर अखौरी, बांकीपुर; पण्डित

गंगाप्रसाद अग्निहोत्री, हुशंगाबाद; पण्डित जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल, मुजफ्फरपुर; पण्डित लज्जाराम मेहता, बूंदी; बाबू ठाकुर प्रसाद, काशी; पण्डित विनायक राव, जबलपुर; पण्डित राधाचरण गोस्वामी, वृन्दावन; राजा कमलानन्द, सिंह श्रीनगर; पण्डित गंगा नाथ झा, प्रयाग; पण्डित रमाशङ्कर मिश्र, गाजीपुर; मिस्टर ड्यूहर्स्ट रायबरेली और मिस्टर आर० बर्न, गोंडा।

१८ निश्चय हुआ कि प्रबन्धकारिणी सभा में जो बाहरी सभासदों का चुनाव होता है वह स्थायी रूप से हुआ करे और प्रत्येक प्रान्त के प्रतिनिधि के चुनाव के लिये उस प्रान्त के सभासदों को प्रस्ताव करने का अधिकार दिया जाय।

१९ बाबू माधव प्रसाद का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने १७ मार्च को पवित्र होली का उत्सव करने के लिये सभाभवन मांगा था और मैजिक लालटैन भी बिना कुछ दिए मांगी थी। निश्चय हुआ कि इनकी प्रार्थना स्वीकार की जाय।

२० निश्चय हुआ कि सभा के नोकरों को वेतन मद्धे पेशगी रुपया बिना प्रबन्धकारिणी सभा की विशेष आज्ञा के किसी अवस्था में न दिया जाय।

२१ बाँकीपुर के बाल सम्मिलन समाज का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने अपने समाज के लिये सभा से पुस्तकों की सहायता मांगी थी। निश्चय हुआ कि सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की एक एक प्रति उन्हें अर्द्ध मूल्य पर दी जाय।

२२ निश्चय हुआ कि भविष्यत में प्रबन्धकारिणी सभा के अधिवेशनों की सूचना टाइप में छपाई जाय।

२३ इलाहाबाद युनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार का ४ मार्च का पत्र नं० ८७६ सूचनार्थ उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने लिखा था कि बोर्ड आफ़ स्टडीज की सम्मति में मेट्रिक्यूलेशन परीक्षा के लिये हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों में अभी परिवर्तन करने का समय नहीं है।

२४ प्रयाग की नागरी प्रवर्द्धिनी सभा का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने अपनी सभा के लिये नागरीप्रचारिणी पत्रिका बिना मूल्य दिए जाने की प्रार्थना की थी। निश्चय हुआ कि उनकी प्रार्थना स्वीकार की जाय।

२५ सुदामा चरित ग्रंथमाला में प्रकाशित होने के लिये उपस्थित किया गया। निश्चय हुआ कि सभा इसे नहीं प्रकाशित कर सकती।

वे इसे पा सकेंगे जो सभा की ओर से इस कार्य के लिये वेतन पर नियत हैं। जो लोग इस पुरस्कार को पाया चाहें उन्हें उचित है कि दो प्रतिष्ठित वकीलों के हस्ताक्षर सहित ७ जनवरी १९०९ तक सभा को सूचना दें कि उन्होंने कितनी अर्जियां सन् १९०८ में दाखिल की हैं।

भाग १३] *Registered No. A 414* [संख्या ३

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

सम्पादक—श्यामसुन्दर दास बी० ए०

प्रति मास की १५ ता० को

काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।

सितम्बर १९०८।

Printed by Madho Prasad at the Bharat Press, Benares, for the Publisher.

प्रति संख्या का मूल्य ≈)   वार्षिक मूल्य १)

विषय ।
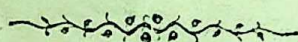
और देश दशा सुधारक कार्य में भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त करें। सब को यह दृढ़ विश्वास रखना चाहिए कि यह ऐसा पुण्य है कि जिसकी जड़ पाताल तक पहुंचेगी और जिसके वृक्ष की छाया में बैठकर भ्रातृगण सुख से उसी फल से अपना जीवन निर्वाह कर सकेंगे। प्रगट में यह कार्य अति कठिन ज्ञात होता है किन्तु "सात पांच की लाठी एक जने का बोझ" के अनुसार सब भाइयों के सम्मिलित होने से यह अति सुगम हो जायगा। अतएव अपनी अज्ञान रूपी तन्द्रा को हटा कर औद्योगिक शिक्षा सम्बन्धी एक बड़े कोश अर्थात् जातीय कोश स्थापित करने का प्रयत्न प्रत्येक पुरुष को करना चाहिए जिससे एक पैसे के बदले एक हज़ार रुपया उसको मिलने अर्थात् स्वदेश में आजाने अथवा बच जाने की पूर्ण आशा की जाती है।

(२) प्रान्तीय धनवानों से प्रान्तीय पाठशालाओं और शिल्पशालाओं को स्थापित करने और छात्रवृत्तियां, पारितोषिक और औद्योगिक व्यवसायियों को ऋण अथवा पारितोषिक देकर सहायता लेना।

महानुभावगण उपरोक्त विधि से भी एक प्रकार से औद्योगिक कोश की सहायता करें। क्योंकि कोश में रुपया देना अथवा स्वयं कोश के उद्देश्यानुसार कार्य करना एकही बात है। कोश में रुपया इन्हीं कार्यों में लगाया जायगा। अतएव सभा का कर्त्तव्य होगा कि वह धनवानों से कोश के लिये चन्दा मांगे अथवा पाठशाला, शिल्पशालादि स्थापित करावे अथवा छात्रवृत्तियां, पारितोषिक और औद्योगिक व्यवसायियों को ऋण देने के लिये

आग्रह करे । यदि धनवान् लोग स्वयं इस कार्य को निज के प्रबन्ध से करना चाहें तो भले ही करें परन्तु इसमें सभा की अनुमत्ति अवश्य लेवें जो कि उत्तम कार्य और साफल्य के लिये बहुत उपयोगी होगा। परन्तु दो में से कुछ करें अवश्य ।

(३) धनवानों को निज के तथा सर्वसाधरण को चन्दे के प्रान्तीय और जातीय कोश अथवा बैंक स्थापित करना।

इसके लिये धनवानों को स्वयं और सर्व साधारण की ओर से सभा को प्रयत्न तथा अपना अपना कर्त्तव्य पालन करना चाहिए । इस कार्य से धनवानों को देशोपकार करने के साथ स्वयं भी बहुत कुछ लाभ उठाने का अवसर मिलेगा। समस्त भारत की नहीं तो अपने प्रान्त अथवा ज़िले ही की कार्रवाई में उन लोगों को निज के धन से सहायता देनी चाहिए। और जिन्हों ने इस विभाग की सहायता करके स्वयं पाठशालाएं और शिल्पशालाएं खोलीं हों उनकी उदारता के विषय में तो कुछ कहना ही व्यर्थ है । इतना ध्यान अवश्य रहना चाहिए कि इन निज के कोशों से जो कुछ कार्य अर्थात् पाठशालाओं और शिल्पशालाओं का और छात्रवृत्तियों और पारितोषिकों का स्थापित होना, व्यवसायियों को ऋण देना आदि हो सबका आय व्यय आदि औद्योगिक सभा की सम्मति से होना चाहिए जो बहुत उचित और यथार्थ में उपयोगी होगा । इस प्रकार के कोश कम से कम प्रत्येक प्रान्त में एक, तथा जातीय विद्यालय के सम्बन्ध में समस्त देश के लिये एक, जिसे जातीय कोश कहना चाहिए, स्थापित होने चाहिएं और धनवान् लोग

अपने अपने ज़िले में अथवा प्रान्त में भी, जहां चाहें वहां, ऐसे कोश स्थापित करें और उनको सभाओं को इनका हिसाब रखने के लिये तथा उनके प्रबन्ध में सहायता देने के लिये सर्वदा तय्यार रहना चाहिए।

(४) गवर्न्मेंएट से आर्थिक सहायता मांगना।

यों तो सर्कार अनेक प्रकार से भारतवासियों को शिक्षित करने में उदारता दिखाही रही है जिसके लिये देश को उसका अत्यन्त कृतज्ञ होना चाहिए परन्तु इस निज के प्रयत्न में भली भांति सर्कार की सहायता मांगने से नहीं चूकना चाहिए क्योंकि वह काहिल भारतवासियों के मुंह की मक्खी उड़ाने को सदा कटिबद्ध रहती है और आशा है कि उसकी सहायता, स्वयं देशवासियों की अपने ही अर्थ उदारता से कहीं बढ़ कर होगी जिससे बहुत कुछ सफलता प्राप्त होने की सम्भावना है।

(६)

विशेष कर्त्तव्य।

उपरोक्त विधियों के अतिरिक्त, औद्योगिक शिक्षा प्रचार के लिये, उत्साही पुरुषों के कुछ और भी कर्त्तव्य होंगे जिनसे इस कार्य में शीघ्र स्थायी उन्नति होने की आशा है। वे कर्त्तव्य इस प्रकार हैं—

(१) छोटी बड़ी श्रेणी के सभी पुरुषों को बालकों को समान भाव से हस्तकार्य की और औद्योगिक शिक्षा देना और भाषा की साधारण पाठशालाओं में भी हस्त कार्य सम्बन्धी कक्षाएं स्थापित करना।

केवल जाति विशेष के व्यवसायियों में औद्योगिक शिक्षा का प्रचार करने से यथेष्ट सफलता नहीं हो सकती क्योंकि उन निर्धन और अशिक्षित जातियों को स्वयं उन्नति करने में बहुत कठिनता होगी और अधिकतर वे दूसरों ही की सहायता पर निर्भर रहेंगी। दूसरों की सहायता में भी जब तक सहायता देने योग्य पुरुषों में इस विषय की रुचि न हो सन्देह है। इसके अतिरिक्त परम्परा से पतित और तिरस्कृत जातियों से सहसा उन्नति की आशा करना भूल है। यदि शीघ्र सफलता प्राप्त करने की इच्छा है तो धनी मानी और उच्च जातियों के बालकों को मत भूलो। वे एक तो स्वाभाविक ही पतित जातियों के बालकों से अधिक चतुर, चंचल, ज्ञानी और बहुत कुछ अनुभवी होते हैं, दूसरे जब उनको इस विषय की शिक्षा दी जायगी तो निश्चय ही वे साधारण व्यवसायियों के बालकों से अधिक तेज निकलेंगे। उच्च और धनवान जातियों के बालकों को औद्योगिक शिक्षा देने से ये लाभ होंगे कि उनके लिये सर्व साधारण को कुछ विशेष व्यय नहीं करना पड़ेगा। उनकी रुचि इस ओर हो जाने से और उनको इसका ज्ञान हो जाने से वे स्वयं किसी की सहायता के अभाव से रुके बिना, कारखाने, पाठशाला आदि खोलेंगे और सर्वसाधारण को इस कार्य के लिये सहायता और उत्तेजना देंगे और अच्छी आर्थिक स्थिति में होने के कारण निश्चिन्त हो उदारता पूर्वक इस उद्देश्य को पूरा करने का प्रयत्न करेंगे। अतः यह भली भांति समझ लेना चाहिए कि साधारण विद्यार्थियों से धनवानों और कुलीनों के बालकों को औद्यो

गिक शिक्षा देना कम आवश्यक नहीं है। जब दोनों श्रेणी के लोग सदृश्य भाव से ऐकता धारण कर आगे बढ़ेंगे तो सफलता हाथ जोड़कर उनके आगे आखड़ी होगी।

इसके लिये आरम्भ में हस्तकार्य की शिक्षा का प्रबन्ध करना चाहिए। समस्त औद्योगिक पाठशालाओं और विद्यालयों में, और जहां तक सम्भव हो साधारण भाषा की पाठशालाओं में भी हस्तकार्य की कक्षाएं खोली जावें। ये आरंभिक औद्योगिक शिक्षा और बालकों की कार्य सम्पादन शक्ति बढ़ाने के लिये अत्यावश्यक हैं। इन कक्षाओं में समभाव से सर्वसाधारण और धनी उच्चवंशीय बालकों को अवश्य (compulsory) शिक्षा दी जाय और ऐसाही प्रबन्ध औद्योगिक शिक्षा के लिये भी दोनों—दरिद्र नीच अथवा धनवान उच्च कुल के—विद्यार्थियों के सम्बन्ध में रक्खा जाय।

(२) उच्चशिक्षाभिलाषियों को छोड़ कर शेष सब को भारतवर्ष की मातृभाषा हिन्दी पढ़ाना और उसी के द्वारा सब प्रकार की शिक्षा देना।

उच्चशिक्षाभिलाषियों को, जो अनुभव, परीक्षा आदि का कार्य करने तथा सुयोग्य शिक्षक और निरीक्षक होने की इच्छा रखते हैं और जिन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिये विदेश जाना है, विदेशीय भाषा की उच्चशिक्षा दी जाय क्योंकि इसके बिना औद्योगिक उच्च शिक्षा का भारतवर्ष में आविर्भाव होना दुर्लभ है। शेष और विद्यार्थियों को, जो स्वदेश ही में पढ़ लिखकर और औद्योगिक शिक्षा प्राप्त कर नेताओं की सम्मति के अनुसार व्यवसाय कर स्वदेश ही में अपना

आद्योपान्त जीवन व्यतीत करेंगे, व्यर्थ विदेशीय भाषा की शिक्षा देकर निर्बल और स्वास्थ्य रहित करना इष्टसंगत नहीं है। विदेशीय भाषा के अध्ययन से, जैसा की प्रायः देखा जाता है, अधिकांश विद्यार्थी अपने अमूल्य जीवन का बहुत सा समय तथा स्वास्थ्य रत्न खो बैठते हैं। फिर ऐसी दशा में वे कितना उपयोगी औद्योगिक कार्य करने को समर्थ होंगे? अतएव यदि देश को बुद्धिवान और बलवान बनाने की इच्छा है तो सर्वसाधारण में विदेशीय भाषा के प्रचार का विचार परित्याग कर देना ही श्रेय है नहीं तो उसी की हाय हाय में देश रसातल को गिरता चला जायगा। दूसरी बात यह भी है कि यदि यह देखा जाय कि बिना विदेशी भाषा के सर्व साधारण में फैलाए उन्नति ही नहीं हो सकती तो उसका होना आवश्यक माना जाय किन्तु सो नहीं है। क्योंकि जापान की शिक्षा विदेशी भाषा में न हो कर मातृ भाषा जापानी में होती है। ऐसे ही अन्य देशों में भी मातृभाषा ही के द्वारा सब शिक्षा, कार्रवाई आदि होती है, फिर यह कुछ आवश्यक नहीं जचता कि भारतवर्ष कीं शिक्षा मातृभाषा में न हो कर विदेशीय भाषा का कोई कैसा ही महान् पंडित क्यों न हो जाय पर वह जितने स्पष्ट रूप से सरलता पूर्वक अपनी मातृभाषा समझ सकता है उतना विदेशीय भाषा को कदापि नहीं। भारतवर्ष में मातृभाषा की शिक्षा और उसी के द्वारा औद्योगिक आदि अनेक विषयों की शिक्षा होने से अनेकानेक लाभ हैं जब कि विदेशीय भाषा की शिक्षा से केवल "सर के पीछे से हाथ घुमाकर नाक पकड़ने

के सदृश कठिन परिश्रम उठाना मात्र है। चाहे हिन्दी भाषा में शिक्षा हो अथवा विदेशीय भाषा में बात एकही होगी। केवल अपनी मूर्खता के कारण उस भाषा का अध्ययन करने का परिश्रम उठाना और उसमें अपनी आयु का एक उत्तम भाग नष्ट करना बहुत बड़ी अदूरदर्शिता है। इसके अतिरिक्त यह भी है कि समस्त, भारतवर्ष तो विदेशीय भाषा पढ़ नहीं सकता है और हम विदेशी भाषा में शिक्षा देकर सफलता की आशा करें तो कैसा विचित्र तमाशा है। मान भी लिया जाय कि कुछ बालक विदेशीय भाषा पढ़कर औद्योगिक शिक्षा प्राप्त करने लगें तो इससे सर्व साधारण को क्या लाभ हुआ? अतएव जैसा ऊपर कहा गया है केवल उच्चशिक्षाभिलाषियों को छोड़ शेष सब को मातृभाषा हिन्दी पढ़ाना और उसी में शिक्षा देना ठीक है।

(३) साधारण शिक्षा को उन्नति देना और देश में शिक्षितों की संख्या बढ़ाना।

जहां साधारण शिक्षा की उन्नति होगी वहां उस बड़े जनसमूह में से कितने ही ऐसे विचारवान सुयोग्य और उच्चभाव के पुरुष रत्न प्रगट हो जांयगे जो देश की भलाई करने में सहायक होंगे और औद्योगिक कार्य को हस्तगत करके उसके संचालक बनेंगे। विद्वान लोग औद्योगिक शिक्षा के उपयोग को भली भांति समझ कर उससे प्रेम करेंगे और इस प्रकार सुगमता से शिक्षित जन समूह की अधिकता के अनुसार उसके प्रचार की अधिकता होगी। शिक्षित लोग उद्योग को नीच कर्म समझना छोड़ देंगे और स्वयं रुचि से

उसे करेंगे और शिल्पकार आदि औद्योगिक व्यवसायियों का आदर करेंगे । और साधारण शिल्प व्यवसायी आदि भी शिक्षित होने के कारण सुगमता से औद्योगिक शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे । शिक्षा के अगनित लाभ हैं और उसके द्वारा सुगमता से सब कार्यों में सफलता प्राप्त हो सकती है । अतएव उपरोक्त मन्तव्य के अनुसार साधारण मातृभाषा और विदेशीय भाषा की शिक्षा सर्व साधारण में फैलाना अत्यावश्यक है ।

(४) सर्वदा सब कार्यों में गवर्न्मेंट की सहायता मांगना ।

इस कार्य में प्रयत्न और सहायता की बहुत आवश्यकता है । प्रयत्न तो उत्साही लोगों की ओर से किया ही जायगा, रही सहायता सो जैसे और जहां से हो सके प्राप्त करनी चाहिए । किसी एक की आशा पर सर्वथा निर्भर रहना और प्रत्येक से सहायता मांगने में लज्जा अथवा आलस्य करना अच्छा नहीं है । ऐसा करने से सफलता मिलना कठिन होगा । प्रत्येक पुरुष से लज्जा त्याग कर सहायता की भिक्षा मांगनी चाहिए । यह भिक्षा अथवा सहायता कुछ अपने पेट के लिये तो है नहीं जो किसी से संकोच अथवा लज्जा की जाय। इसमें तो मुक्त कंठ से सब से प्रार्थना करनी चाहिए और सब को उदारता पूर्वक जितना हो सके, बिना छोटी बड़ी रक़म का विचार किए सहायता देनी चाहिए। सबसे अधिक सहायता की आशा गवर्न्मेंट से है। वह अनेक प्रकार से औद्योगिक शिक्षा की उन्नति के प्रत्येक मन्तव्य में बहुत कुछ सहायता दे सकती है और

इसकी उदार प्रकृति के कारण उससे बहुत कुछ लाभ होने का पूर्ण विश्वास होता है। अतएव सब भारत भाइयों से सहायता मांगने के साथ गवर्न्मेंगट से भी सहायता की प्रार्थना करनी चाहिए।

(५) इस कार्य का भार केवल दीन, अशिक्षित, प्राचीन ढांचे के उद्योगी पुरुषों, व्यवसायियों, व्यापारियों और शिल्पकारों के कंधों पर न डाल कर, उच्चश्रेणी के धनवानों विद्वानों और साहसी पुरुषों को जो अल्प समय तथा सहज में ही यथार्थ उन्नति कर सकते हैं, धर्म अथवा जाति द्वेष त्याग कर, परस्पर मित्र भाव और सहानुभूति सहित सँभालना।

अन्त में यह कहना है कि ऐसे बड़े कार्य के लिये इनेगिने नहीं बरन समस्त देश भाइयों की सहायता की आवश्यकता है। किन्तु भारतवासियों के सम्बन्ध में इसको उनकी सहायता नहीं कहना चाहिए क्योंकि वे इसमें जो कुछ करेंगे वह स्वयं उन्हीं के लाभ का होगा, न कि किसी दूसरे के स्वार्थ का। संकुचित स्वभाव वाले भले ही मान लें कि इससे उनके निज का कुछ स्वार्थ नहीं है; परन्तु ये जो सब उपरोक्त विधियां बताई गई हैं किसी एक व्यक्ति विशेष के लिये नहीं हैं किन्तु समस्त भारतवासियों को एक जाति रूप मान कर उसी के लिये कही गई हैं। और जब तक "मेरा, तेरा" का भाव भारतवासियों के परस्पर के बर्ताव से जायगा नहीं, तब तक उन्नति लाभ की आशा पूर्ण दुराशा मात्र है। अतएव प्रत्येक भारतवासी को जो यथार्थ में भारत संतान है और देश में समान स्वत्वों का

अधिकारी और लाभ हानि का भोक्ता है, धर्म द्वेष और संकुचित भावों को परित्याग कर, परस्पर ऐक्य धारण कर इस उद्देश्य की उन्नति के उपलक्ष में उदारता पूर्वक तन मन धन से प्रयत्न करना चाहिए । विद्वानों को अपनी विद्वता द्वारा, धनवानों को अपने धन द्वारा, बलवानों को अपने बल द्वारा और उत्साहियों को अपने उत्साह और प्रयत्न द्वारा औद्योगिक शिक्षा का प्रचार और उसकी उन्नति करनी चाहिए और अनुदार भाव को परित्याग कर यह दृढ़ विश्वास रखना चाहिए कि यह सब उन्हीं के स्वार्थ के लिये है, न कि किसी दूसरे के लिये । इस बात की दृढ़ आशा है कि चिर काल से उदार स्वभाव आर्यगण जो "वसुधैव कुटुम्बकम्" के अनुसार अन्य देशवासियों से भी द्वेष नहीं रखते हैं, शीघ्रही परस्पर मित्र भाव और सहानुभूति सहित आगे बढ़ेंगे और अपने दीन अशिक्षित शिल्पकार और अन्य व्यवसायी भाइयों को अकेलेही इस महत्कार्य का भार उठाने से बचावेंगे; क्योंकि भारत के केवल शिल्पकार और व्यवसायी आदि के प्रयत्न और शिक्षा से जो उनकी दीन और अशिक्षित अवस्था के कारण शीघ्रता से सफलता पूर्वक नहीं हो सकती, शीघ्र साफल्य लाभ की कम आशा होती है । अतएव सबको एक साथ इस कार्य में हाथ लगाना चाहिए और देखना चाहिए कि समदर्शी भगवान् कैसी उदारता के साथ सहायता देकर कार्य पूर्ण करते हैं !

ऊपर जो विधियां औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षा का प्रचार भारतवर्ष में करने के लिये बताई गई हैं, उनके सम्बन्ध में विद्वान और अनुभवीगण जो कुछ परि-

वर्तन संशोधन आदि करना उचित समझें करें, तदुपरान्त शीघ्र ही उनको कार्य रूप में परिणत करने का प्रयत्न आरंभ कर दें क्योंकि अब समय खोने का अवसर नहीं है जितना बिलम्ब होगा भारतवर्ष उतने ही पीछे रह जायगा और उस त्रुटि को पूरा करना प्रति दिन दुस्तर होता जायगा।

ये मन्तव्य प्रथम देखने में तो बहुत लंबे चौड़े बहुत कठिन और अतिव्ययी प्रतीत होंगे किन्तु यह बात तब नहीं रहेगी जब देशवासी उनको पूरा करने की दृढ़ प्रतिज्ञा करलेंगे। भारतवासियों के लिये, जो अपनी उदारता से विदेशों की दरिद्रता दूर कर उनको शक्ति देते और कंचनपुरी बनाए हुए हैं अपने लिये इतना कर लेना कुछ कठिन नहीं वरन बाएं हाथ का खेल है, केवल उनकी दृष्टि के एक बार इस ओर फिर जाने की देर है। सब से प्रथम कर्तव्य कार्य औद्योगिक सभा का स्थापित करना है। इसमें कुछ भी व्यय नहीं होना है अतएव इसको तुरंत ही बनाना चाहिए फिर वह सब की फिकिर अपने आप कर लेगी।

अन्त में सृष्टिकर्त्ता ईश्वर से विनय पूर्वक यह प्रार्थना है कि "हे प्रभु करुणा सिन्धु! इन सदा से स्वच्छ हृदय भारतवासियों की ओर अपनी उदार दृष्टि का पातकर और इनके चित्त का अंधकार नाश कर, इनको नींद से सचेत कर, देशकार्य करने की सुमति दे और कृपा कर इन्हें भी संसार में किसी गिन्ती के योग्य बना।"

—:०:—

ध्रुवीय देश के वासी।

[डाक्टार महेन्दुलाल गर्ग लिखित।]

यह स्थिर हो चुका है कि पृथ्वी नारंगी के समान गोल है जिसके उत्तर दक्षिण भाग चपटे हैं और ध्रुव कहलाते हैं। पृथ्वी की लट्टू के समान दो चालें हैं वह अपनी कीली पर भी घूमती है और सूर्य की परिक्रमा भी करती है। कीली पर घूमने से दिन रात होते हैं, और सूर्य की प्रदक्षिणा करने में ऋतुओं का परिवर्तन होता है। इस प्रदक्षिणा में ६ महीने तक एक ध्रुव की ऐसी स्थिति होती है कि पृथ्वी की दैनिक चाल में वह सूर्य से ओझल में हो जाता है और वहां रात रहती है, इसके विरुद्ध दूसरा ध्रुव निरंतर सूर्य के सामने रहता है और वहां ६ महीने दिन रहता है। ध्रुवीय देश में सूर्य की किरणें सर्वदा तिरछी पड़ती है इसी से वहां इतनी गर्मी नहीं पड़ती कि पानी अपने तरल रूप में रहे। वहां का सब समुद्र जम कर वर्फ बना रहता है। यूरोप देश के अनेक यात्रियों ने इस की सैर की है और अपनी देश भाषा में वहां के अनेक वृतान्त लिखे हैं। उन्हीं की कही हुई बातों में से कुछ का संग्रह इस लेख में किया गया है।

उत्तर ध्रुव की ओर जाने में मनुष्य की वस्ती जिस गांव में अन्त होती है, उसका नाम एटा है। इसकी स्थिति ७८ उत्तरीय अक्षांश और ७९ पश्चिमीय देशान्तरांश पर है मानों ये आदमी इस धरती की छोर पर रहने वाले हैं। इस गांव के आस पास कोई घास पात फल फूल नहीं लगता। सर्दी के दिनों की कौन कहे यहां गर्मी में भी

मनुष्य को उदर पूर्ण करने का कुछ सहारा नहीं है ! शिकार के लिये एटा निवासी दूर तक जाते हैं । ध्रुव के एक यात्री ने ८१°-४४′ अक्षांश पर समुद्र में वर्फ पर चलने वाली एक नांव, दीपक और हड्डी की छुरी देखी थी जो निस्सन्देह उन ध्रुव देशीय लोगों के पदार्थ थे और सिद्ध करते थे कि शिकार के लिये एटा निवासी वहां तक पहुंचते थे ।

केवल जल वायु के अन्तर से मनुष्य के रूप रंग में बड़ा अन्तर हो जाता है । जब यूरोप निवासी जहाज़ पर चढ़ कर एटा निवासियों के पास पहुंचे तो परस्पर एक दूसरे का रूप देख कर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ । उन्हों ने तो यूरोपियन लोगों को सचमुच भूत ही समझा । क्यों-कि अनन्त काल से कभी कोई मनुष्य इस रूप का उन्हों ने देखा न था, उनके विचार में उनकी ही बस्ती समस्त संसार और वहां के जीवजन्तु ही समस्त सृष्टि के जीव थे । सन् १८१८ में रौस नाम के एक यात्री का जहाज़ एटा निवासियों ने देखा, इसको प्रेत का माया जाल समझा, दूर से जहाज़ का मस्तूल इन्हें ऐसा दिखाई देता था कि मानों आकाश से कोई बिमान उतर रहा है । उनके स्वर्ग में लकड़ी की बहु-तायत और खान पान की बाहुल्यता बताई जाती है सो इस बिमान में इन दोनों चीजों की कुछ कमी न थी । जब ये लोग जहाज़ पर चढ़े तो जहाज़ की लकड़ी को आश्चर्य से टटोलते थे और कहते थे "स्वर्ग के सिवाय इतनी लकड़ी और कहां हो सकती है ?"

जब सभ्य लोगों को एटा निवासियों का पता चला तो कितने ही जहाज़ वहां तक पहुंचने लगे । ह्वेल के शिका-

रियों का यह प्रधान अड्डा हुआ। क्रमश: लेन देन होने लगा। बर्फ़ीले रीछ और सील मछली का चमड़ा और तेल बदले में आने लगा और गृहस्थी के लिये आवश्यक पदार्थ और औज़ार हथियार वहां जाने लगे। एक वार कुछ जर्मन यात्रियों का एक दल सर्दी के दिनों में इन लोगों के पास ही रहा और उसने यहां का सब कुछ चमत्कार देखा। उन्हीं की कही हुई कुछ बातें यहां वर्णन की जाती हैं।

ध्रुव देश का उदाहरण ध्रुव देश ही है, वर्फ़ के पहाड़ वर्फ़ के मैदान और वर्फ़ के टापू, ६ महीने का दिन और ६ महीने की भयानक, निस्तब्ध रात्रि, उत्तर दिशा की सुई चोबने वाली वायु, आस पास ऐसी उजाड़ चट्टानें की जिन पर कभी घास भी नहीं जमती। यहां पर बात की बात में बर्फ़ के महल तयार होते और देखते देखते भयानक शब्द करके चूर चूर होते हैं। ऐसा कुहर जो अभी चारों ओर अंधकार कर रहा था अचानक लोप होगया।

दिन में जब सूर्य की किरणें वर्फ़ पर पड़ती हैं तो दृष्टि चकाचौंध हो जाती है। बर्फ़ पिघलने से यहां की स्थिति में अनेक परिवर्तन होते हैं। वर्फ़ के पहाड़ पानी होकर समधरातल बन जाते हैं। जमा हुआ समुद्र जगह जगह से फट कर अलग अलग टापू बन जाता है और ये आपस में टक्कर खाकर घोर शब्द करते हैं।

जब रात्रि आती है तो यहां का दृश्य कुछ का कुछ हो जाता है यह देश सचमुच प्रेतलोक जान पड़ता है। मनुष्य की समझ और हिम्मत दूर हो जाती है। दिन में सूर्य को देख कर मन में कुछ सहारा रहता है परन्तु रात्रि

आने से यहां प्रेत पुरी हो जाती है । एक पैर इधर उधर करने में भय होता है कि कहीं किसी गढ्ढे में न जा गिरें अथवा किसी बर्फ़ीले टीले से सिर न टकरा जाय । वर्फ़ के टीले जो आपस में टकराते हैं बड़ा भयंकर शब्द करते हैं।

इसी अन्धकार में अरोराबोरिएलिस अर्थात् सुमेरु ज्योति का दृश्य देखने में आता है । केवल आकाश में अरुण प्रकाश दीखने लगता है, फिर एक ज्वाला प्रगट हो कर उसमें चारों ओर को किरणें फैलती हैं और सहस्रों लटाएं बिखर पड़तीं हैं। ऐसा जाना जाता है मानो देवता लोग अग्नि क्रीडा कर रहे हैं । कुछ देर पीछे क्रमश: सब फीका पड़ जाता है।

कभी कभी अकाश में सूर्य के समान कई प्रकाश दीखने लगते हैं जिनकी संख्या ७—८ से १६ तक पहुंचती है। कभी आकाश में सैकड़ों नक्षत्र प्रज्वलित होकर दृष्टि को चका-चौंध कर देते हैं। इस देश की रात्रि में चन्द्रमा का प्रकाश मनुष्यों का बड़ा सहायक है । यहां पर इस काल में ऐसा सुनसान होता है कि मनुष्य को अपने दिल की धड़क अपने कानों से सुनाई देती है । आकाश में जो अद्भुत प्रकार के प्रकाश दिखाई देते हैं उनकी झलक जमी हुई वर्फ़ का रूप क्षण क्षण पर बदलती रहती है। उस वर्फ़ में कहीं संगमरमर के स्तूप देख पड़ते हैं कहीं महल और अटारी का सन्देह होता है कहीं जवाहिरात बिखरे जान पड़ते हैं। चन्द्रमा की किरणें वर्फ़ के ऊपर पड़कर अनोखे अनोखे रूप धारण करती हैं।

पृथ्वी की भाफ़ ऊपर आकर जब जमती है तो उसके परमाणु अनोखे शब्द करते हैं। जान पड़ता है कोई कपड़ा

फाड़ रहा है या रस्सी तोड़ रहा है । अकाश में जब तब विजली सी कोंधती है परन्तु गरज सुनाई नहीं देती। कहीं यदि गरज भी सुनाई देती है तो वह जल के भीतर सोतें के वर्फ़ रूप धारण करने के कारण होती है ।

यह जो अवाज़ आरही है और घंटी बजने का शब्द सुनाई पड़ रहा है ऐसा जान पड़ता है कि यह सब बहुत निकट है परन्तु घंटों बीत जाने पीछे आने वाले आते हैं। यहां का आकाश ऐसा है कि शब्द का परिचालन बहुत ही शीघ्र होता है : समुद्र में बड़े अनोखे दृश्य देखे जाते हैं। कहीं उठे हुए पहाड़ दीखते हैं कहीं बाग़ का बाग़ सरकता हुआ जान पड़ता है । एक टीले के पीछे दूसरा टीला चलता है चलते चलते कहीं कुछ लुप्त हो जाता है कही कोई नया दृश्य उठ खड़ा होता है । समुद्र में से भाफ़ का धुआं उठ कर फ़ौज का केम्प सा जान पड़ता है । वर्फ़ खंड आपस में टकरा कर तोपों का सा भयंकर शब्द करते हैं ।

एक यात्री इस शीतप्रधान प्रान्त का विवरण इस प्रकार लिखता है -

अन्त को बड़े ज़ोर शोर का जाड़ा आ पहुंचा । थर्मामीटर का पारा ५२ (सेंटीग्रेड) अंश पर आ पहुंचा । हमारे स्थान पर १४ फ़ीट वर्फ़ चढ़ गई । उस बरछी सी भोंकने वाली हवा से बचने के लिये हम दिन रात अंगीठी को घेरे बैठे रहते थे और तेल तथा कोयले जला कर यथासंभव उष्णता प्राप्त करते थे । पारे को निकाल कर बाहिर रक्खा तो वह ऐसा जम गया कि उसे लोहे की तरह हथौड़े से कूट सकते थे । हम अपना खान पान अर्थात् मांस रोटी और तेल कुल्हाडियों से चीर चीर कर बांटते थे । हम में से

एक ने दस्ताने पहिनने में तनिक देर कर दी हाथ ठिठुर कर रह गया। उसे गरम पानी में रक्खा तो पानी की बर्फ़ बन गई, लाचार हाथ काटना पड़ा। जनवरी में यहां के रहने वाले आए और हमसे कुछ ब्रांडी और सूखी मछलियां मांगी। हमने उन्हें कुछ तमाकू भी दी जिसे पाकर वे बड़े खुश हुए। इन लोगों का सर्दार कहता था कि भूख से तंग आकर उस ने अपनी स्त्री और दो बच्चे खा डाले।

एक दूसरे यात्री का कथन है "यहां की सर्दी यहां के सफ़ेद भेड़िए और भालू से भी अधिक भयानक है। सर्दी चुपचाप मनुष्य का शिकार करती है और तत्काल ऐंठ कर रख देती है। यदि कोई सर्दी से बचने का ठीक प्रबन्ध करले तो उसके लिये यहां की हवा बहुत लाभदायक है। बल और भूख बढ़ाती है। खाना अच्छी तरह पचता है जिससे शरीर अंगीठी की सी गर्मी पैदा करता है। शरीर में पीड़ा नहीं होती और न रुधिर स्राव होता है। यदि इससे मृत्यु भी हो जाय तो कुछ क्लेश बोध नहीं होता, आदमी सुख की नींद सो जाता है। सर्दी ऐसी होती है कि इसमें कोई चीज़ सड़ने नहीं पाती। समुद्र के पानी में से नमक नीचे बिठा देती है और ऊपर का पानी पीने योग्य कर देती है। दूध और शराब भी दृढ़ रूप धारण कर लेते हैं। मांस बिगड़ने नहीं पाता। उसके पकाने की भी कुछ आवश्यकता नहीं रहती। बारहसिंघे के बदन की भाफ़ का रंग शिकारी को इस जीव की विद्यमानता दूर से ही बतला देता है। जिस चीज़ को छूओ वह गोंद की तरह चिपक जाती है। हजामत बनाना असंभव

हो जाता है, बाल कंघी करने से टूट जाते हैं।" अनेक यात्रियों ने ध्रुवीय देश निवासियों को पशुओं के समान बताया है। कारण इसका यह है कि उनको इन लोगों का परिचय पाने का संयोग नहीं हुआ। एशिया के अन्य देशों में लोग अपने सुभीते के लिये एक देश से दूसरे देश में चले जाते हैं और अपना आचरण तथा परिवार का भी परिवर्तन कर लेते हैं परन्तु ध्रुव के निकटस्थ लोग अपना जीवन एक और ही प्रकार से व्यतीत करते हैं। शीत की अधिकता और बर्फ़मय संसार होने के कारण अन्य लोग इस ओर अधिक जाते आते नहीं। और इसी से आज तक वहां सभ्यता ने उनकी रीति भांतियों में कुछ भी विगाड़ नहीं पहुंचाया है। जब उन्हें यूरोपियन यात्रियों ने देखा तो इन्हें उन लोगों के समान पाया जो किसी समय में पत्थर के हथियार बरतते थे अथवा हड्डियों के औज़ार बनाते थे। लोहे का दर्शन तो उन्होंने वर्तमान काल ही में किया है।

इन लोगों का धड़ बड़ा होता है हाथ पैर छोटे होते हैं। खोपड़ी की शकल नौका के समान होती है। गाल की हड्डियां उठी हुई, चिहरा चौड़ा और भरा हुआ, बाल काले और कड़े होते हैं, नाक बैठी होती है। हमारे देश में तोते की सी नाक सराही जाती है परन्तु यदि इन लोगों की नाक नुकीली और लंबी होती तो अवश्य सर्दी से कट कर गिर जाती। इनकी शकल कुछ कुछ चीनियों से मिलती है विशेष करके इनकी आंखे चीनियों के ही समान होती हैं। इनके शरीर को छूओ तो ठंढा जान पड़ेगा। ये लोग

चमड़े पर चर्बी मल लिया करते हैं। उंचाई में ये लोग साढ़े चार से पांच फीट तक होते हैं।

अन्य देशवासी इनका नाम स्कीमाक्स अर्थात् "कच्चा खाने वाले" रखते हैं परन्तु ये अपने तईं "इनाइट" कह कर परिचय देते हैं। "इनोइट" शब्द का अर्थ मनुष्य है। इनमें फिर दो प्रकार के लोग हैं। जो बड़े हैं वे अपने को "कैलासी" कहते हैं। उनका कथन है कि परमेश्वर ने मिट्टी लेकर जब मनुष्य का पुतला गढ़ा तो वह किसी मूर्ति को देख कर प्रसन्न नहीं हुआ, जब उसने सब से सुन्दर मूर्ति गढ़ी तो उसका नाम "इनाइट" अर्थात् मनुष्य रक्खा। बहुत से ध्रुव देशी लोग यही समझते हैं कि इस संसार में सिवाय इनके और कहीं मनुष्य ही नहीं हैं।

इनाइट लोग गर्मियों में कहीं और सर्दियों में कहीं रहते हैं—दोनों मौसिमों के लिये इनके स्थान नियत हैं। सर्वदा उन्हीं स्थानों में डेरा लगाते हैं। इस देश में रहते रहते इन का स्वभाव अब ऐसा पड़ गया है कि यहां से बाहर जाकर रहने को इनका हियाव ही नहीं पड़ता। गर्मियों में ये लोग शिकार के लिये दूर दूर तक पहुंचते हैं और निर्वाह की चीज़ें बर्फ़ के ऊपर वाली किश्ती में रख कर उस किश्ती को कुत्तों से खिंचवाते हैं। कुत्ते इन लोगों के खूब बड़े बड़े होते हैं। कुत्ता इनका उतना ही प्यारा सहायक है जैसा रेगिस्तान के लिये ऊंट और अरबवालों को घोड़ा। वही इनकी सवारी, वही इनका साथी और पेट के लिये और कुछ न मिलने पर अन्त में वही एक मात्र संस्थान होता है।

एक किश्ती को खींचने के लिये दर्जनों कुत्ते लगाए जाते हैं। मालिक एक लंबा चाबुक हाथ में लेता है। जब जब किश्ती को तेज़ चलाना मंजूर हुआ सब से पिछले कुत्तों को चाबुक मारता है। चाबुक लगते ही वे कुत्ते अपने अगले कुत्ते के चूतड़ों को जोर से काटते हैं मानों तेज़ चलने के लिये आग्रह करते हैं। वह कुत्ता अपने से अगले वाले को काटता है, इसी तरह से सब कुत्ते सचेत होकर दौड़ने लगते हैं और किश्ती हवा की तरह खिसकती चली जाती है। कुत्तों में जो सब से तीव्र गामी और दृढ़ होता है वह उनका राजा समझा जाता है। उसका आदर सब से अधिक होता है और उसकी प्यारी कुतिया रानी गिनी जाती है। इन दोनों की प्रतिष्ठा को कुत्ते समझते और उनके समान बनने की चेष्टा में लगे रहते हैं। बूढा अथवा निकम्मा होने पर उसको पदच्युत करके दूसरे को सम्मान दिया जाता है।

ध्रुव देशियों को जिन जीवों से काम पड़ता है उनमें ह्वेल और वालरस मछली, भालू, सील (दर्याई बछड़ा), भेड़िया, लोमड़ी, खरगोश तथा ऊद बिलाव मुख्य हैं। इन्हीं की तलाश, शिकार, और भक्षण में उनका जीवन व्यतीत होता है। सील और वालरस मछली इन लोगों के जीवन का प्रधान आश्रय है। इन मछलियों का मांस खाया जाता है चमड़ा ओढ़ने बिछाने के काम आता है। चर्बी से घर में प्रकाश किया जाता है। किश्तियां और बेड़े बनाने में भी इन मछलियों का चमड़ा काम आता है। हड्डियों से सब तरह के हथियार और औज़ार तयार होते हैं।

सील (दर्यायी बछड़ा) के आचरणों से इन मनुष्यों ने बहुत कुछ सीखा है। मनुष्यों के बर्फीले मकान सील की मांद के समान ही होते हैं। शरीर की बनावट भी एकसी ही है—लंबा धड़ और छोटे हाथ पैर दोनों के होते हैं, दोनों की आंखें एक सी चमकदार होती हैं गृहस्थी के प्रेमी दोनों हैं। मनुष्य की अपेक्षा दर्यायी बछड़ा अपनी स्त्री के लिये बड़े बड़े कष्ट उठाता है। गर्मियों का प्रारंभ होते ही इन जीवों का स्वयंबर प्रारंभ होता है। जल किनारे बहुत से बछड़े इकट्ठे हो जाते हैं और जब इनकी जाति की कोई स्त्री पति की तालश में इनके पास पहुंचती है तो उसको अपना अपना पुरुषार्थ दिखाने के लिये वे घोर युद्ध करते हैं जिसमें अनेक तो मर जाते हैं, अनेक घायल होकर वा थक कर भाग जाते हैं और जो पीछे सब को जीत कर स्थिर रहता है वही स्त्री को पाता है, तिस पीछे भी बहुत से बछड़े दांव घात लगा कर इसकी अर्द्धांगिनी को भगा ले जाने की चिन्ता में रहते हैं। कोई कोई तंग आकर दुराचारिणी घरवाली के प्राण संहार कर के छुट्टी पाते हैं।

इस देश का भालू भी एक अद्भुत जीव है वह देखने में बड़ा भद्दा जंचता है परन्तु अपने काम में बड़ा चालाक है। उसका ताज़ा मांस खाया जाय तो स्वादिष्ट जान पड़ता है, परन्तु बासी का पचाना कठिन है। जिगर उसका ऐसा जहरीला है कि लोग अपने वैरियों को नष्ट करने के लिये इसे संभाल कर रखते हैं। सील (दर्याई बछड़े) का शिकार करने में अनेक बातें इस्कीमो लोगों ने भालू से ही सीखी हैं। बर्फ में छिप कर भालू एक अनोखे

प्रकार का शब्द करता है जिसको सुन कर सील मोहित हो कर सो जाते हैं और तब ही भालू उन पर झपटता है। इसी प्रकार का शब्द सुन कर वे मनुष्य के बस में आते हैं। जिस किसी को वह मोहन मंत्र आगया उसको फिर शिकार की कमी नहीं है।

जब कोई शिकारी अच्छा शिकार कर घर लाता है तो फिर कई दिन घर से बाहर नहीं निकलता। भालू और सील मारने पीछे उनको प्रायश्चित्त करना पड़ता है। प्रायश्चित के नियमित विधान हैं। कभी तो तत्काल ही क्रिया की जाती है और कभी कुछ दिन ठहर कर। शिकार का मूत्राशय निकाल कर एक लंबे बांस के ऊपर घर के दरवाजे के पास लटका दिया जाता है और इस फुकने के भीतर शिकारी अपने भाले और बरछों के फल भी रख देता है। यदि शिकार मादा है तो स्त्री का जेवर अर्थात् कांच के मनिए (मणि) और पीतल के कड़े चूड़ी भी इसी में रक्खे जाते हैं। तीन दिन रात तक यह मूत्राशय बांस के ऊपर लटकता रहता है। इन लोगों का यह विश्वास है कि जीव की आत्मा मूत्राशय में ही निवास करती है और जब उसमें ऐसे सुन्दर पदार्थ रख दिए जाते हैं तो वह सन्तुष्ट होकर मनुष्य का कोई नुकसान नहीं करती। यही फुकना (मूत्राशय) एक बांस के सहारे नाव पर लटका दिया जाता है। ऐसा करने से वह डूबती नहीं। भाले और बरछे में बाँध देने से यह लाभ होता है कि मछली के शरीर में लग कर यदि बरछा हाथ से छूट जाय तो वह डूबता नहीं तैरता रहता है।

सूत्राशय के सिवाय जिगर भी मुख्य अंग समझा जाता है और जब कोई मनुष्य सील मार कर लाता है तो उसका जिगर लेने के लिये वे लोग बड़े लालायित होते हैं, जिन्हें कई दिन से शिकार नहीं मिला है, जादू टोने जानने वाले उस जिगर का टुकड़ा मंत्र पढ़ कर उन लोगों को देते हैं। उस टुकड़े को तत्काल चाब लेने से उनकी क़िस्मत खुल जाती है और उन्हें शीघ्र ही शिकार मिलता है।

शिकार का मौसिम शुरू होने पर जो पहिली मछली मारी जाती है उसका बड़ा आदर होता है, स्त्रियां उसको छूने नहीं पातीं और उसको बड़ा नाम देकर पुकारते हैं। उसे मछलियों की रानी कहते हैं।

ध्रुव वासियों की भाषा आपस में बहुत मिलती जुलती है। ऐशिया के उत्तरी किनारे और बेहरिंग मुहाने से लेकर ग्रीनलैंड, लब्रेडोर और मैकेंजी नदी तक एक स्वर की ही भाषा है। न जाने किस समय से इन लोगों के किस्से कहानी बाप दादों की ज़ुबानी चले आते हैं जहां सुनों वही बातें सुनाई देंगी। अन्य देशों से संबंध न होने के कारण उनमें कोई नूतन परिवर्तन नहीं हुआ।

ध्रुव समीपी लोग उंगलियों से गिनते हैं। एक हाथ का पंजा पांच और हाथ पांव में २० उंगलियां होने के कारण बीस बराबर एक मनुष्य के होता है जब आठ कहने हुए एक पंजा और तीन उंगलियां उठाई गईं। जब २६ कहना हुआ तो एक मनुष्य, एक पंजा और एक उंगली कही गई।

ध्रुव समापियों के घर एक से नहीं होते, जिसको जैसा मसाला मिल जाता है उसी से वह अपनी कुटी बना लेता है।

बहुधा गर्मी का घर अलग और सर्दी का अलग होता है। सर्दी काटने के लिये जो घर बनता है उसमें बड़ी कोशिश की जाती है, क्योंकि तीस पैंतीस दर्जे की सर्दी साधारण बात नहीं है। तहख़ाने नुमा घर अधिक पसन्द किया जाता है जो बिल्कुल जमीदोज होता है केवल छतही छत ऊपर चमकती है। जिस रस्ते से घर में उतरते हैं उसी रस्ते से घर का धुआं बाहर आता है। लकड़ियां केवल सोट और खंभे का काम देती हैं, शेष काम के लिये भांति भांति की चीज़ें बरती जाती हैं यथा स्लेट पत्थर, रीछ की पसलियां, ह्वेल की रीढ़ के टुकड़े। वालरस मछली के बाहर वाली कांप (दांत) दीवारों पर अन्दर की ओर मढ़ दी जाती है जिससे मकान की दीवारों को लीपने पोतने की आवश्यकता नहीं रहती।

सिवाय घास के और कोई ईंधन नहीं मिलता जिसको मछली के तेल में बसाकर अंगीठी में जलाते हैं और दीपक तथा अगिहाने का काम एकही अग्नि से निकालते हैं।

और अधिक उत्तर की ओर जाने से सर्दी के कारण धरती की मिट्टी इतनी कड़ी रहती है कि उसको खोदकर घर बनाना असंभव काम है। इसलिये वहां के लोग वर्फ़ के टुकड़ों को ईंट की तरह काम में ला कर घर बनाते हैं। वर्फ़ की ईंटों को वह जिस युक्ति से रखते हैं उसका उदाहरण नहीं दिया जा सकता। ये दीवारें नीचे मोटी और ऊपर पतली होती हैं। जान फ्रेंक्लिन नाम के एक यात्री का कथन है कि जब ये घर तयार होते हैं तो मनुष्य के हाथ का बना हुआ एक अद्भुत दृश्य होता है—

"स्वच्छ बिल्लौरी ईंटें बड़ी सफ़ाई से चुनी हुई होती हैं! इन की दीवरों में से प्रकाश बिना रोक भीतर चला जाता है जो बात संगमरमर में हो ही नहीं सकती। परियों के महल से बढ़ कर इनकी शोभा होती है"।

परन्तु जब मनुष्य अपने बाल बच्चे ले कर इनमें रहना आरम्भ करते हैं तो मांस मछली ईंधन कूड़ा सब भीतर भरते हैं। हवा के आने जाने के मार्ग न होने के कारण सब दुर्गन्धि भीतर ही रहती है फिर वह सफ़ाई कहां और कैसे रह सकती है। बनते समय जिस मकान को परियों का महल कहा गया था मनुष्यों के वस बास करने से वह भूतों का अड्डा हो जाता है।

यद्यपि ध्रुव के समीपी लोग बड़े मैले कुचैले होते हैं परन्तु वह कभी कभी भाफ़ से स्नान किया भी करते हैं, परन्तु साधारणतः उन्हें स्नान करने से बहुत डर लगता है। फिर घुटे मकानों में मैले कुचैले रहने का जो प्रतिफल होता है वह समझ लिया जा सकता है। इन मकानों से एक ऐसी दुर्गन्धि उठा करती है कि अन्य देशी लोगों का सिर चकरा देती है। भीतर रक्खा हुआ मांस और चमड़ा सड़ कर इस दुर्गन्धि को और भी बढ़ा देता है। इन घरों के आस पास मछलियों की हड्डियां, कुत्तों की खोपड़ी, चमड़े के चिथड़े, रीछ और बारहसिंघे तथा मनुष्य तक की लाशें पड़ी रहती हैं। घर में वेही चीजें होती हैं जिनसे पेट का गुज़ारा चलता है। बर्तन भांड़े तथा औज़ार बहुत कम होते हैं। हड्डी की बनी हुई बर्फ़ पर खिसकने वाली ढकेल, हड्डी की नोंक वाले बरछे, दो एक छुरी ज़रूरी सामान है।

एक ध्रुव समीपी ने घड़ी का खट खट सुनकर पूछा कि क्या घड़ियां बोलती भी हैं? तब उस को फोनोग्राफ वाली घड़ी दिखाई गई और कहा गया कि "इस से पूछो अब क्या बजा है?"

"सुन्दरी! क्या मेरा यह पूछना आप को कष्ट कर तो न होगा कि अब क्या बजा है?"

घड़ी दिखाने वाले यात्री ने स्प्रिंग दबा दिया, घड़ी में से शब्द निकला "सवा तीन"।

ध्रुव समीपी ने बड़ा उपकार माना और कहा 'सुन्दरी! आपकी बड़ी कृपा हुई मैं बहुत उपकृत हुआ।

एटा निवासी तीर कमान का नाम ही सुनते हैं उन्हों ने उससे कभी शिकार नहीं किया। परन्तु दूसरे ध्रुव समीपी लोग बड़े तीरन्दाज होते और बाजे बन्दूक से भी निशान मारते हैं।

एक और आश्चर्य यह है कि एटा निवासियों के पास नाव नहीं है। आश्चर्य है-समुद्र के किनारे बस कर और नौका का व्यवहार न हो! अन्य ध्रुव समीपी नौका चलाने में बढ़े चतुर हैं। उनके घरों की गिनती नाव से ही होती है। घर पीछे एक नाव का होना तो साधारण बात है।

एक यात्री का कथन है कि यदि एटा निवासियों के पास नाव होती तो वे बहुत से दुःखों से बच जाते। यथावश्यकता मछली पकड़ कर भूखों मरने से रक्षा पाते। इस में सन्देह नहीं कि इन लोगों के बाप दादे नाव का व्यवहार करते थे परन्तु किसी कारण से अब उस कर्म को ये भूल

गए हैं। कहा जाता है कि यहां का समुद्र बहुधा जमा रहने से नाव का कुछ फायदा नहीं है। नाव द्वारा शिकार करने की अपेक्षा हाथ पैरों से शिकार प्राप्त करना अच्छा है। इसी लिये नौका का व्यवहार छोड़ दिया गया।

इनाइट नामी ध्रुव समीपियों के वस्त्र बड़े सोच विचार से बने हुए जान पड़ते हैं और देखने में भी अच्छे दीखते हैं। जिन जहाज़ियों को ग्रीनलैंड जाने और इन लोगों के साथ आमोद प्रमोद मनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है उनका यही कथन है। पहिले पहिल देखने में स्त्री पुरुष के कपड़ों में कुछ भेद नहीं जान पड़ता है परन्तु ध्यान स्थिर होने पर मालूम होता है कि स्त्रियों के वस्त्र लंबे होते हैं। स्त्रियां जो ओढ़नी ओढ़ती हैं उसको इस प्रकार पहिनती हैं कि उसमें अपने बच्चे को आराम से लिटाए चल सकें। बहुत सी स्त्रियां अपनी ओढ़नी के नीचे के सिरे जूते में उरसे रहती हैं, ऐसा होने से बच्चे के लिये झोली नहीं बनती। सब से ऊपर का चोगा सील मछली की आंतों से तयार किया जाता है। यह बरसाती की अपेक्षा हलका और सुन्दर होता है। कहीं पुरुष पंख वाले और स्त्रियां चमड़े के वस्त्र पहिनती हैं। कहीं परों के बने वस्त्र भीतर और चमड़े के ऊपर पहिनते हैं। क्वारे स्त्री पुरुषों के जूते सफ़ेद रंग के होते हैं और व्याहे लोग उन को लाल रंगते हैं। ध्रुव समीपियों की जाति का अन्तर पुरुषों के जूड़े और स्त्रियों के गोदने से जाना जाता है।

माताएं अपने बच्चों के सिर के बाल संभालने के लिये कंघी का व्यवहार नहीं करतीं, हाथों की उँगलियों से ही उनकी लटें सुरझा देती हैं। बहुधा घर की स्त्रियां बच्चों को लेकर उन के बाल सुधारने बैठती हैं, उस समय इधर उधर की अनेक गप शप होती है। बाल सुरझा कर जूआं देखने लगती हैं। इस काम में वे बन्दरों से भी बढ़कर हैं। उनका हाथ सिर से मुंह में, सिर से मुंह में बड़ीही जल्द जल्दी जाता है। जूंआं नज़र आईं नहीं कि चुटकी द्वारा उनके मुंह में पहुंची नहीं।

बन्दरों में जूं खाने की आदत मनुष्य की प्राचीन प्रथा बताती है जो अब सभ्यता के प्रताप ने बंद कर दी है परन्तु ध्रुव समीपियों की प्रेम भरी कहानियों के सुनने वालों को यह बात सुन कर बड़ा कौतूहल होगा कि जब प्रेमी अपनी प्राण प्रिया को अपने हृदय की दशा सुनाते सुनाते उसके पैरों में सिर रख देता है तो वह सिर को गोद में उठा लेती है और बालों को सुरझा जूंएं खाना प्रारभ करती है, प्रेमी को इससे इतना आनन्द आता है कि वह अल्प काल ही में खर्राटे की नींद भरने लगता है।

ध्रुव समीपी स्त्रियां कपड़ों के भीतर से शरीर खुजाने के लिये एक हड्डी रखती हैं और इसी को कपड़ों के भीतर से शरीर की खुजली वाली जगह के सुहराने के काम में लाती हैं।

मौसिम अच्छा होने पर ध्रुव समीपियों को शिकार की कमी नहीं रहती फिर उनको जो फुरसत मिलती है उसे अपने घरके आसपास टहलने, नींद भर कर सोने और खाने

में ही व्यतीत करते हैं। भोजन उनके लिये सब से बड़ा आनन्द और सब से प्यारी चीज़ है। उनका कथन है कि क्षुधा की इतनी तीव्रता उनको देवताओं की कृपा से प्राप्त हुई है। यह कहना कि 'मनुष्य जीने के लिये खाता है और खाने के लिये नहीं जीता' उनके विचार में उलटी बात है। माताएं छोटे दूध मुँहे बच्चों को ही बर्फ़ चुसाना और मांस चटाना सिखा देती हैं। इनके यहां कम खाने वाले मेहमान की कुछ तारीफ़ नहीं क्योंकि गृह स्वामी अपना अभिमान इसमें समझता है कि अपने मिहमान की क्षुधा एक वार पूरी पूरी निवृत्त कर दे! वह अपने पेट के अन्दाज़ से कुछ अधिक खाने को परोसता है। यदि मेहमान उस सब को नहीं खा सकता तो बचे हुए को अपनी झोली में रख कर उसे ले जाना पड़ता है।

ध्रुव समीपी बड़े ही पेटू हैं। उनकी खोपड़ी की बनावट जबड़ों के ऊपर निर्भर है और जबड़ों का आकार भोजन शक्ति के अनुसार है। सब शरीरही केवल खाने के लिये बना है तो इनका मुंह शायद ही बन्द होता है। एक यात्री ने लिखा है "हम दस आदमियों को तीन मछली बस होती थी। ध्रुव समीपी अकेला उनमें से दो खा जाता है। हमारा मेहमान (ध्रुव देशीय) बात करते करते सात सेर मछली खागया। मैंने उसके पेट पर हाथ फेरा तो पेट इतना तना हुआ था कि हम लोग ऐसा होने से जी नहीं सकते।"

वे सड़ी हुई मछली और सड़े हुए पक्षियों को बड़े चाव से निगलते जाते हैं। फिलेपाइन निवासियों के समान उन्हें मांस के ऊपर गोबर निचोड़ कर उसे स्वादिष्ट समझने

में कुछ सन्देह नहीं है । वे रीछ की आंतो को खाने से नहीं हिचकते, आंतों में जो मल होता है उसे खाना उन्हें बड़ा अच्छा लगता है । बारहसिंगे के पेट से निकली हुई अधपकी खुराक को बांट लेने के लिये उनमें खूब तकरार होती है।

बेरों का अचार मछली के तेल में डाला जाता है । उसे वे बड़े स्वाद से खाते हैं । चरबी उनके लिये अमृत है । सील मछल के बच्चों के पेट से निकाला हुआ दूध भी बड़ी स्वादिष्ट चीज़ गिना जाता है । परन्तु सब से बढ़िया वह रुधिर गिना जाता है जो जीते जानवर की नसों में से निकालकर पिया जाय, इसके लिये एक खास औजार है । वे अपने शिकार का गला नहीं काटते उसका दम घोटकर रुधिर पान करते हैं । गला काटने से बहुत सा लोहू नष्ट होने का भय किया जाता है । यदि किसी ध्रुव समीपी की नाक से रुधिर बहे तो वह उसे जीभ से चाट लेता है । वह कच्चे मांस को चूसने चबाने में बड़ा मगन होता है मांस का अर्क़ ज्यों ज्यों उस के पेट में जाता है त्यों ही त्यों उसको आनन्द आता है । जाड़े के दिनों में औसत खुराक हर एक आदमी की १२ सेर है ।

ध्रुव समीपी बर्फ़ीले देश में रहकर खाने के प्रताप से ही जीते रहते हैं । ये लोग आग बहुत कम तापते हैं । इनकी अंगीठी इनका पेट है, जहां सर्वदा चर्बी और तेल का होम होता रहता है और उसीकी गर्मी से इनको बाहरी गर्मी की आवश्यकता नहीं रहती । एक यात्री का कथन है कि इन लोगों की प्यास कभी नहीं बुझती, वे प्यासे ही रहते हैं जब वे हम से मुलाकात करने आते थे तो पानी

मांगते थे और वह इतना पीते थे कि हम उनको यथेष्ट पानी दे नहीं सकते थे। इनके शरीर की यह गर्मी इस लिये भी अच्छी है कि इनको तापने के लिये आग नहीं जलानी पड़ती, नहीं तो गर्मी से इनके वर्फ़ के मकान पिघल जाते, घर में रक्खा हुआ मांस बहुत जल्दी सड़ जाता। इतनी सर्दी में भी कुछ दिन पीछे मांस इतना दुर्गन्धित हो जाता है कि अन्य देशियों को उसके पास खड़ा रहना कठिन हो जाता है। जो यूरोपियन ध्रुव यात्रा कर आए हैं उनका कथन है कि यदि कपड़ा और पेट दोनों ठीक हैं तो तापने की कोई आवश्यकता जान नहीं पड़ती। यदि गर्मी का आश्रय लिया जाय तो थोड़ीही देर में थकावट मालूम होती है और जी व्याकुल सा होने लगता है।

वसन्त ऋतु में यहां तनदुरुस्ती बिगड़ जाने का भय है क्योंकि घरों में भीतर गर्मी मालूम होती है और बाहर निकलते ही सर्दी सताती है।

घर में इतनी सामग्री होती है कि फ़ालतू जगह नहीं रह जाती। मनुष्यों के सांस और दीपक जलाने से इतनी गर्मी पैदा होती है कि अन्य प्रकार से अधिक उष्णता उत्पादन करने की आवश्यकता नहीं रहती। दीपक में चर्बी या तेल जलता है और उसके ऊपर पीने के लिये पानी बनाने के लिये वर्फ़ पिघलाने की कढ़ाई चढ़ी रहती है। वर्फ़ से सिकुड़े हुए जूते भी पुरुष इसी पर सेंकते हैं, और पीछे उस जूते पर स्त्री तेल लगा कर उसे नर्म करती है। भोजन भी इसी लम्प पर पकता है। यह लम्प महीनों की लंबी रात भर जलता रहता है। यह जो कहा जाता है कि

अपने लाभ के लिये मनुष्य ने अग्नि को पैदा किया सो बिल्कुल ठीक है। अग्नि के प्रताप से ही मनुष्य पशु रूप से नर रूप को पहुंचा है। ध्रुव समीपियों के घर में यह दीपक न होता तो वे भी भालू और बारहसिंघे के समान पशुरूप में ही होते। इस एक दीपक ने ही उनमें इतना रूपान्तर डाल दिया है। यथार्थ में दीपक ही उनके गृहस्थ की जान है।

बहुत खाने के कारण शरीर में भीतर गर्मी बहुत रहती है और यही कारण है कि इनके बच्चे थोड़ीही उमर में तरुण हो जाते हैं। दस बारह वर्ष की लड़कियां न्यूनाधिक इसी उमर के लड़कों के साथ व्याह दी जाती हैं। लड़कियों के दहेज़ में छुरी, खुरपी और गंडासा और यदि बन पड़े तो दीपक के लिये कढ़ाई दी जाती है। दूलह की ओर से लड़की के लिये पूरे कपड़े आते हैं। विवाह होने से पहिले लड़के लड़कियां चोरी चोरी परन्तु विवाहोपरान्त निर्लज्ज होकर मैथुन करते देखे गए हैं। पादरी यात्रियों ने इसी कारण ध्रुव समीपियों को पशुओं के समान बताया है परन्तु यथार्थ में वे लाचार हैं उनके पास सिवाय एक घर के और कोई ऐसा स्थान नहीं है जहां वे गोपनीय रूप से इस पशुकर्म को कर सकें।

इनाइट लोगों में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या अधिक है और यही कारण है कि उनमें एक से अधिक स्त्री रखने का प्रचार है। समुद्र में शिकार के लिये जाने के कारण बहुधा दुर्घटना होती रहती हैं और मरे हुए पड़ौसियों का परिवार अन्य पड़ौसियों को संभालना होता है, उनके जोरू बच्चे अपनाने पड़ते हैं। एटा निवासी समुद्र में किश्ती लेजा

सभा के पारितोषिकों की सूची।

१ इस वर्ष के सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं। ये लेख ३१ दिसम्बर १९०८ तक सभा में आजाने चाहिएं।

वैज्ञानिक विषय।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव।

साधारण (विद्या) विषय।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था।

२ डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल—यह सोने का मेडल उस व्यक्ति को दिया जायगा जिसका लेख "छूत वाले रोग और उनसे बचने के उपाय" पर सबसे उत्तम होगा। लेख सरल हिन्दी में होना चाहिए और सभा के पास ता० ३१ दिसम्बर १९०८ तक आजाना चाहिए।

३ संयुक्त प्रदेश के न्यायालयों में जो अर्जीनवीस सब से अधिक अर्जियां लिखकर सन् १९०८ में दाखिल करेगा उसे २५) रु० का एक पुरस्कार दिया जायगा और जो उससे कम अर्जियां देगा उसे १५) रु० पुरस्कार दिया जायगा। ये पुरस्कार एकही ज़िले के दो अर्जीनवीसों को न मिलेंगे। न वे इसे पा सकेंगे जो सभा की ओर से इस कार्य के लिये वेतन पर नियत हैं। जो लोग इस पुरस्कार को पाया चाहें उन्हें उचित है कि दो प्रतिष्ठित वकीलों के हस्ताक्षर सहित ७ जनवरी १९०९ तक सभा को सूचना दें कि उन्होंने कितनी अर्जियां सन् १९०८ में दाखिल की हैं।

५००) का पुरस्कार-सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका के आधार पर जो हिन्दी का सब से उत्तम व्याकरण लिखेगा उसे यह पुरस्कार दिया जायगा । व्याकरण ३१ दिसम्बर १९०९ तक सभा के पास आजाना चाहिए। यदि कई व्याकरणों के भिन्न भिन्न अंश उत्तम समझे जांयगे तो यह पुरस्कार उन सब लोगों में बाँट दिया जायगा और उन ग्रन्थों को घटाने बढ़ाने आदि का इस सभा को पूरा अधिकार होगा। सभा द्वारा निश्चित अनुक्रमणिका दो पैसे का टिकट डाक व्यय के लिये भेजने पर सभा के मंत्री से मिल सकती है।

——:o:——

भाग १२] *Registered No. A 414* [संख्या १०

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

सम्पादक—श्यामसुन्दर दास बी० ए०
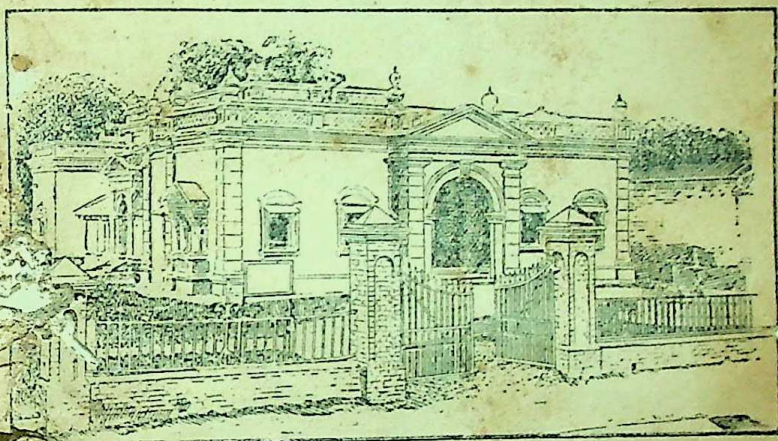
प्रति मास की १५ ता० को

काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।

अप्रैल १९०८।

Printed at the Bharat Press, Benares.

प्रति संख्या का मूल्य =) वार्षिक मूल्य १)

विषय ।

निवेदन ।

जिन सभासदों ने अब तक अपना वार्षिक चन्दा भेजने की कृपा नहीं की है उनसे प्रार्थना है कि वे उसे शीघ्र भेज कर सभा को अनुगृहीत करें ।

जुगुलकिशोर,

मंत्री ।

विशेष सूचना ।

गत दो वर्षों से प्रबन्धकारिणी सभा में ६ बाहरी और १४ नगरस्थ सभासद रहते आए हैं। अभी तक यह कार्य परीक्षारूप में होता था अब सभा ने इस प्रबन्ध को स्थायी रुप से रखना निश्चित किया है जैसा कि इस पत्रिका में प्रकाशित कार्य-विवरण से स्पष्ट होगा। अतएव सब सभासदों को सूचना दी जाती है कि नियमानुसार वे जिन जिन महाशयों का नाम आगामी वर्ष के पदाधिकारी तथा प्रबन्धकारिणी सभा में सभासद होने के लिये चुना चाहें उनकी सूचना १५ मई तक सभा को दे दें जिसमें सब प्रस्तावों पर विचार कर प्रबन्धकारिणी सभा नियमित सूची प्रकाशित कर सके।

काशी
१५-४-०८

जुगलकिशोर
मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा।

नागरीप्रचारिणी पत्रिका।

भाग १२] अप्रैल १९०८। [संख्या १०

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ॥ १ ॥
करहु बिलम्ब न भ्रात अब, उठहु मिटावहु सूल।
निज भाषा उन्नति करहु, प्रथम जु सबको मूल ॥ २ ॥
विविध कला शिक्षा अमित, ज्ञान अनेक प्रकार।
सब देशन सों लै करहु, भाषा मांहि प्रचार ॥ ३ ॥
प्रचलित करहु जहान में, निज भाषा करि यत्न।
राज काज दर्बार में, फैलावहु यह रत्न ॥ ४ ॥

हरिश्चन्द्र।
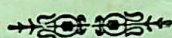
सिकन्दर शाह।

[नवें अंक के आगे]

इसी अवसर में दारा का एक एलची फिर से सिकन्दर के पास आया। उसने अपने परिवार प्रति सिकन्दर के सभ्य एवं राज्योचित व्यवहार पर धन्यवाद प्रकाश करते हुए लिखा कि मैं एशिया को छोड़ देता हूं और मेरे बाद आपही यहां के बादशाह रहिए मेरा विचार तो यह है कि इफ्रेतात

के पूर्व के समस्त प्रदेश पर आप शासन करें और मेरी एक लड़की के साथ आप व्याह करना भी स्वीकार करें तो अच्छा हो। इसके उत्तर में सिकन्दर ने दारा को लिखा कि मैं तुम्हारी चाहे जिस लड़की को ब्याह सकता हूं जब कि वे मेरी बन्दी हैं तब ये सर्वथा मेरे अधीन हैं, मैं उस वस्तु का एक थोड़ा सा भाग पाकर कभी सन्तुष्ट नहीं हो सकता जिस पर कि सर्वथा मेरा हक है।

इसके पश्चात् सिकन्दर ने सीरिया में पैठकर फिलिस्लाइन प्रदेश के किनारे किनारे कूच किया। फिलिस्लाइन निवासी जन समूह यद्यपि सब तरह से सिकन्दर का साम्हना करने योग्य थे परन्तु वे सदा से पूर्वी जातियों के शासनाधीन चले आते थे इस लिये उनकी रगों मे तेजस्विता का खून और स्वतंत्रता की इच्छा जरा भी शेष न थी। फिलिस्लाइन प्रदेश के पांच शहरों में से चार ने तो आपसे ही सिकन्दर का अधिपत्य स्वीकार कर लिया लेकिन पांचवें शहर गाज़ा के अधिपति ने जो कि एक हब्शी जनखा था—अपने तन पिंजर में प्राण पखेरू के रहते दम तक स्वतंत्रता व रखना विचार कर सिकन्दर का साम्हना करने का साहस किया। उसकी उत्तेजना जनक एवं उत्कर्षमय शिक्षा के कारण बहुत से अरबी और स्वाधीनता खोए हुए फिलास्लोनियनस में से भी कुछ लोग उसका साथ देने को तय्यार हो गए। जनखे का नाम बतीस था।

गाज़ा।

जिस समय सिकन्दर की फ़ौज शहर गाज़ा के बाहरी प्रान्त में घेरा डाले हुए साधारण टोक टोक कर रही थी और सिकन्दर अपने नियमानुसार कुछ ज्योतिषी और विद्वान यूनानियों की मंडली सहित अपने कुल देवताओं को बलि

दे रहा था कि सिकन्दर के सर पर से उड़ते हुए एक गिद्ध ने एक ऐसा पत्थर का ढोका छोड़ा कि जिससे उसकी कंठमाला (हंसुली) पर कड़ी चोट बैठी । इस पर उसके ज्योतिषियों ने विचार किया कि इस युद्ध में सिकन्दर विजयी तो अवश्य होगा परन्तु उसे कोई गहरी चोट भी लगेगी । सिकन्दर के सगुनिया लोगों ने और मैमारों ने भी यही बात कही कि गाजा का किला अभेद्य है परन्तु सिकन्दर ने उनकी इन बातों पर ध्यान न दे कर अपनी फौज को किले पर आक्रमण करने की आज्ञा दी । तीन दिन तक बराबर लड़ाई होती रही परन्तु किले वालों का बाल भी बांका न हुआ वरन किले वालों के चलाए हुए पत्थरों में से एक पत्थर सिकन्दर की ठीक कंठमाला में ऐसा लगा कि वह मूर्छित होकर गिर पड़ा किन्तु जब उसे कुछ चेत हुआ उसने फौरन किले की दीवार के नीचे सुरंग लगाने की आज्ञा दी । जब तक एक तरफ से सुरंग लगी तब तक सिकन्दर के एक निज रिश्तेदार ने दूसरे बाजू से इस चाल से धावा किया कि किले का फाटक टूट गया और यूनानी सेना किले में घुस पड़ी । किले की फौज के सहस्रों सिपाही खड़े काट डाले गए—बहादुर बतीस अगनित घावों के कारण लोहू से तरातर अधमरा गिरफ्तार कर लिया गया—कहा जाता है कि सिकन्दर ने बतीस को हाथी के पैर में बंधा कर शहर पनाह के गिर्द घसीटे जाने की आज्ञा दी ।किन्तु यह बात विश्वसनीय नहीं हो सकती क्योंकि सिकन्दर शूर वीर पुरुषों का बड़ाही सच्चा दोस्त था और क्या अश्चर्य है कि उसने उस मृतप्राय कंचुकी की कुछ इज़्ज़त की हो ।

"गाजा की लूट में धूप और इत्र दो चीजें अधिकता से पाई गईं थीं और ये चीजें अपनी किस्म की अच्छी भी थीं"। सिकन्दर को इसी समय अपने बचपने की एक बात याद आ गई '। एक समय उसकी धा कुछ पूजन अर्पण कर रही थी और वह खेल रहा था। उसने धूप का बड़ा भारी भेजा उठा कर आग में डाल दिया इस पर उसकी धा ने अत्यन्त कुपित होकर उसे बहुत झिड़का और डपटा; इसलिये सिकन्दर ने कई मन धूप अपनी बुढ्ढी धा के पास भेज कर लिख भेजा कि मैं बहुत सा धूप भेजता हूं सो देवतओं को अर्पण कीजिए और मेरी लड़कई का अपराध क्षमा कीजिए।

जेरूसलम और मिश्र।

इस प्रकार गाजा पर अधिकार जमा कर सिकन्दर ने अपने लश्कर की लगाम शहर जेरूसलम की तरफ फेरी; पहाड़ी और जंगली रास्ते तै करता हुआ वह जिस समय जेरूसलम के पास पहुंचा तो उसने देखा कि समस्त जेरूसलम निवासी जन समूह उसकी तरफ आरहे थे। उन लोगों के हाथ में न तो कोई तलवार, बंदूक या तीर कमठा वगैरह हथियार था, न कोई लड़ाई का सामान; वे सब के सब नीले गोटदार टिहुने तक लंबे सफेद अंगे पहने और सर पर सफेद पगड़ी बांधे सोने चांदी की तुरही बजाते और अपने उदासीन धर्म सम्बन्धी पवित्र गीत गाते हुए एक बड़े समारोह से सिकन्दर की तरफ चले आ रहे थे। उनके मुखियां या प्रोहित या नेता का नाम युद्धा था उसकी पोशाक भी उसी तरह की थी परन्तु उसमें चमक विशेष

थी और किनारे पर लैस (गोटा) भी लगी हुई थी और सीने पर बहु मूल्य रत्न जड़े हुए थे। उसकी टोपी पहाड़ियों की तरह थी जिसकी सलामी पर सुनहले अक्षरों में लिखा हुआ था कि "ईश्वर पवित्र है"।

फिनीशियन लोगों का जो कि सिकन्दर के साथी बन गए थे अथवा उसके अन्य साथियों का अनुमान था कि सिकन्दर उन पर आक्रमण किए जाने की आज्ञा देगा। किन्तु ज्योंही वे कुछ और पास आकर दिखादाव में हुए सिकन्दर फौरन साष्टांग दण्डवत करके पृथ्वी पर लकुटाकार गिर पड़ा; उसने फिर उठकर दोनों हाथ फैला कर बड़ी सभ्यता के साथ युद्दा को प्रणाम किया और उसका आशीर्वाद लिया। उसी समय युद्दा के अन्यान्य साथी लोगों ने सिकन्दर को चारों ओर से घेर लिया। यद्यपि सिकन्दर के मुख्य सेनापति परमिनो तथा अन्यान्य सैनिक नेताओं को सिकन्दर का युद्दा के साथ इस प्रकार सहसा मित्र भाव का व्यवहार अच्छा न लगा और उन्होंने अपना मत भी प्रकाश किया परन्तु सिकन्दर ने उनसे कहा कि मैं यह व्यवहार किसी मनुष्य के साथ नहीं कर रहा हूं वरन यह सब युद्ध की टोपी पर लिखे हुए ईश्वर के नाम पर है। सिकन्दर इस साहस से अपने साथियों को संतोष देकर युद्दा के साथ हो लिया। उसने युद्दा के देवमंदिर में जाकर उचित श्रद्धा के साथ पूजन किया और बलि भी दिया, देवमन्दिर से लौटते वक्त युद्दा ने अपनी भविष्यवाणी के लेख का लपटा हुआ चर्मपत्र निकला और इस प्रकार कहने लगा कि आपका आक्रमण हम लेगें को पहिले से

मालूम था । हमारे उस प्रचीन नेता या बादशाहों ने जिन्हें पारस के बादशाह नौशेरवां और कैखुसरो वगैरह की गुलामी और कैद भोगनी पड़ी इस भविष्यवाणी में लिखा है कि उन्होंने स्वयं देखा कि पश्चिम की तरफ से एक मेढ़े ने आकर मेदा और फारिस के सब मेढों को मार भगाया, और इसका फल एक स्वर्गीय दूत ने यह बतलाया कि यह मेढा (ग्रीस) यूनान का है अतएव आगे होने वाला यूनानी बादशाह इन सब को परास्त करे गा । यूडा ने कहा कि जिस समय आपका घेरा गाजा पर पड़ा हुआ था तभी मुझे स्वप्न हुआ था कि भविष्यवाणी में वर्णन किया हुआ जगत् विख्यात विजेता आ रहा है शीघ्र ही उसके लिये शहर का दरवाजा खोला जाय और सब लोग उसकी अगवानी के लिये जांय अतएव हम लोगों ने वैसाही किया । जैरूसलम के युडा से इस प्रकार भविष्य वाणी सुनकर एवं उसके सद् व्यवहार से प्रसन्न होकर सिकन्दर ने तमाम जैरूसलम के सिपाहियों पर तथा अन्य यहूदी जाति पर बड़ी ही कृपा दिखाई । उसने उनकी धार्मिक उदासीनता को भी उत्तम तत्व सूचक पंथ माना—सिकन्दर ने वहां से कूच करते समय यहूदियों को अपनी सेना में सम्मान सहित चलने की आज्ञा दी ।

जैरूसलम हस्तगत होते ही मिश्र का प्रशस्त भूभाग भी बिना प्रयास सिकन्दर के हाथ लगा । क्या जाने मिश्र वासी लोग या तो सिकन्दर के प्रचण्ड प्रकोप से डर गए या फारिस के शासन से दुखी थे । खैर जो हो । यहां पर इतना और कह देना आवश्यक है कि उस समय मिश्र में यूनानी लोगों की बस्ती अधिक थी । सिकन्दर की यह भी इच्छा

थी कि जहां तक होसके उन यूनानी लोगों पर जो कि अन्यान्य देश में निवास करते थे और अन्यान्य जातियों के शासनाधीन थे अपना अधिकार केवल नाम मात्र को जमा कर उन्हें यूनान देश की उन्नति शाली विद्याओं से परिचित करके अच्छी अच्छी राजनैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षाएं देवे और इस प्रकार से उन्हें प्रदेश का स्वतंत्र नेता या शासक बनाकर संसार भर में यूनान के उन्नतिशाली विचारों का आधिपत्य फैला दे—सिकन्दर की यह इच्छा मिश्र में पूर्णतया सफल हुई। सिकन्दर के मिश्र में पहुंचते ही समस्त मिश्र प्रदेशवासी जन समूह ने सिकन्दर के आधिपत्य को प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करलिया। सिकन्दर मैसीडोन छोड़ कर अब तक जितने भूभाग का सफर कर चुका था उतने में उसे अन्य, कोई स्थान ऐसा अच्छा न जंचा जैसा कि मिश्र—मिश्र की समयोचित्त उत्तम जलवायु, जहां तहां उमदा उमदा फल फूल और मेवों के वृक्षों तथा समस्त प्रदेश के हरे भरे उपजाऊ रमणीक स्थल ने सिकन्दर का मन मोह लिया। उसने ऐसी उत्तम भूमि पर अपने नाम का अचल कीर्ति स्थंभ रोपने अथवा पूर्व और पश्चिम के देशों में व्यापारिक सम्बन्ध का द्वार खोलने के लिये एलेकजेण्ड्रिया के शहर की नींव डाली। कहा जाता है कि सिकन्दर ने पहिले तो उक्त शहर की नींव मिश्र देश के मध्य प्रदेश में स्थापित करना विचारा किन्तु उसी रात्रि को स्वप्न में एक वृद्ध पुरुष—जो कि उसके अनुमान से उसका पूर्व पुरुष था दिखाई दिया और उसने सिकन्दर से कहा कि वह नाइल नदी के मुहाने पर अमुक अमुक स्थान पर ही अपेक्षित नगर को आबाद

करे क्योंकि उक्त स्थान पर बसाया हुआ नगर केवल उसका कीर्ति स्तम्भ और व्यापारिक आय व्यय का द्वारही न होगा वरन वह मिश्र देश निवासी यूनानी मनुष्यों की रक्षा के लिये मिश्रदेश रूपी दुर्ग का फाटक भी होगा । अत एव सिकन्दर ने ऐसाही किया । जिस समय सिकन्दर उक्त स्थल पर पहुंचा उसे भी स्वप्न सम्बन्धी बातें यावत् ठीक जंची। इस लिये उसने उसी समय पिसान को पगेर कर सिकन्दरिया की नीव की डोरी डलवाई । सिकन्दर ने सिकन्दरिया में यहूदी यूनानी और प्राचीन मिश्र निवासी आदि सब लोगों को उचित स्थान दिए । जब सिकन्दरिया हाट बाट चैाहटे बाजार बाग बगीचे आदि सब भांति से सज बज कर एक उत्तम शहर बन गया तब उसने कहा कि वह मिश्र निवासी लोगों की इष्ट देवी के टूटे हुए मन्दिर को निज व्यय से बनवा कर दुरुस्त कर दे । परन्तु मिश्र निवासियों ने सिकन्दर की इस उदारता को एक राजनैतिक चाल समझ कर किसी प्रकार टाल दिया ।

इस समय सिकन्दर की अवस्था केवल २४ वर्ष की थी। यूनान वासी लोगों का मत था कि उनके वे पूर्वज जो कि अत्यन्त भाग्यशाली एवं पराक्रमी पुरुष हो मरे हैं किसी न किसी देवी या देवता के अवतार स्वरूप थे। सिकन्दर यद्यपि जानता था कि उसके माता पिता मनुष्य हैं परन्तु लगातार फतहयाबियों ने उसके दिल में भी इस बात का ख्याल डाल दिया था कि वह भी अपने को किसी न किसी शक्तिशालिनी देवी का अवतार मानता था । उसके दल के ज्योतिषी और शकुनियां भी उसके इस विचार के उत्तेजक थे ।

[क्रमशः]

रामकहानी की भूमिका।

[नवेँ अंक के आगे।]

मेरा यह कहना है कि हिंदी भाषा के लिये हम लोगोँ को दूर पूर्व बंगाले या पच्छिम दिल्ली तक न जाना चाहिए। बीच मेँ ठहर कर ऐसी राह बनानी चाहिए जिस मेँ सब को सुभीता हो। जो काव्य करना हो तो अपनी भाषा को बढिआँ बनाने के लिये चाहे जैसे शब्दोँ का गहना (अलङ्कार) पहनाइए। जैसे–

कल कलकत्ते से रेल गाड़ी आई, जिसके सेकंड क्लास की गाडी रचना की कला से ऐसी चित्रित थी कि जो यही चाहता था कि रचयिता के हाथ की अर्चा करेँ। लंडन राजधानी की चर्चा जाने दीजिए, आज कल कलकत्ते के देखने से धी चकरा जाती है। सकल जन यह कहा करते हैँ कि कलकत्ता कल का आकर है। कालिका-जननी की दया से देश देश के कारीगर निज कर से अनन्त कल रच कर ककत्ते शहर की छटा अधिक कर दिए हैँ।

इसमेँ कवि को इच्छा थी कि पवर्ग और उ, ऊ, ओ, औ अक्षर न आवेँ इसलिये इस काव्य मेँ कठिन शब्द अर्चा (पूजा) धी (बुद्धि), कर (हाथ)......के ले आने मेँ कुछ दोष नहीँ। पर यह समझ रक्खो कि काव्य मेँ भी उसी काव्य की तारीफ़ होती है जिसमेँ कि प्रसादगुण हो बाक़ी और सब काव्य दुष्ट काव्य हैँ।

सूरदास का कूट—

* सारँगतट † सारँगहित सजनी अब कबहूँ नहिँ जैहैँ।
बिन समझे ‡ बिपरीतमालिका कौन § बदन महँ लैहैँ॥
‖ पगरिपु लगत सघनकुच ऊपर बूझत कहा बनैहैँ।
सूरदास अब वा मग सजनी भूलिहु नाहिँ चितैहैँ ॥

मेरा दो अक्षर का दोहा र, ल के सावर्ण्य से—

ररैँ नीर नर नरन नर नारा नारी नार ।
ररैँ नीर नर न रन नर नारा—नारी नार ॥
(लरैँ नील नल न रन नर नारा—नारी नाल)॥

मेरा एक अक्षर का दोहा र, ड, ल के सावर्ण्य से—

लाल लालिली लालि लल लोली ले ले लोल ।
लालैँ ली लीला ललैँ लालि लालि ललि लोल ॥
(लाल लाडिली डारि डर रोरी ले ले डोल ।
डारैँ री लीला लडैँ लालि लालि लडि डोल ॥)

ए सब दुष्ट काव्य हैँ ।

तुलसीदास की चौपाइआँ—

कोटि मनोज लजावनहारे ।
सुमुखि कहहु को आहिँ तुम्हारे ॥

---

* सारँग=सारङ्ग=तालाव ।
† सारँग=सारङ्ग=कमल ।
‡ विपरीतमालिका=मालिका का उलटा=कालिमा=कारिख ।
§ वदन=वदन=मुँह ।
‖ पगरिपु=पैर का शत्रु—काँटा ।

सुनि सनेहमय मंजुल बानी।
सकुचि सीय मन महँ मुसुकानी॥
तिन्हहिँ बिलोकि बिलोकति धरनी।
दुहुँ सकोच सकुचति बरबरनी॥
सकुचि सप्रेम बालमृगनयनी।
बोली मधुरबचन पिकबयनी॥
सहज सुभाय सुभग तन गोरे।
नाम लखन लघु देवर मोरे॥
बहुरि बदन बिधु अंचल ढाँकी।
पिय तन चितइ भौंहँ करि बाँकी॥
खंजन मंजु तिरीछे नैंनन।
निज पति कहेउ तिन्हहिँ सिय सैंनन॥

प्रसादगुण और स्वभावोक्ति से भरी हैं।

और बिहारी के—

फिरि फिरि बूझति कहि कहा कह्यो सावँरे गात।
कहा करत देखे कहाँ अली चली क्यों बात॥

इस दोहे में भी प्रसादगुण है।

सुनतेही सुननेवाले के मन में सब अर्थ झलक उठे उसी को प्रसादगुण कहते हैं।

आज कल सब देश के लोगों की यही राय है कि भाषा ऐसी होनी चाहिए जिसे पढतेही मन में मतलब आ जाय। बनारस के बडे बडे पण्डितों की चिट्ठी देखो तो अचरज करोगे; उस में भी अवच्छेदकता—अवच्छिन्न भरे

कहते हैं; उन्हीं के ऐसा जो हो उसी का काम है कि सब मतलब समझ सके।

भाषा सुधारने के लिये कमेटी बैठाने की ज़रूरत नहीं है, हम लोग घर में जैसी बोली बोलते हैं उसी को सुधार कर लिखने की आदत डालें तो थोडेही दिनों में आप से आप भाषा सुधर जाय।

आज कल लोग 'यदि, और 'इत्यादि, को बहुत लिखने लगे हैं पर बोल चाल में ए आते ही नहीं। यदि की जगह जो, जौं और अगर आते हैं; जैसे 'जो यह बात है तो', या 'जौं यह बात है तो', या 'अगर यह बात है तो', । यदि को तो लोग बडी खुशी से लिखते हैं पर इस के भाई तदा को तो लिखना कौन कहे फूटी आँख से भी नहीं देखते। संस्कृत यदि, यदा, यर्हि, से हिंदी का जो, जौं, जब और संस्कृततदा, तर्हि से हिन्दी का तो, तब बना है। बोलचाल की हिंदी में जब, तब, और जो, तो बराबर आते हैं; कभीं कभीं संस्कृत "तदा तु" की जगह बोल चाल में 'तब तो भी' आता है।

अब मेरा कहना है कि 'जो' को निकाल कर यदि रखने से क्या बात सुधर जाती है। बहुत से लोग कहते हैं कि 'जो' भद्दा जान पडता है इसलिये 'यदि' रक्खा गया। मेरी समझ में भद्दा और बढिआँ अपनी आदत पर है। हम लोग जिस सितार की गत सुन कर मोह जाते हैं यूरोप के लोग उसी को सुनकर कडुआ समझ कान बंद कर लेते हैं। आफ़्रिका में काले और कश्मीर में गोरे रंग की तारीफ़ की जाती है। शङ्कर, रामानुज, श्रीधर वग़ैरह के भग-

वद्गीता के अर्थ फीके पड गए। अब श्रीमती बीबी बेसंट का किया हुआ अर्थ अच्छा लगता है।

सभी के मुँह में जो शब्द बसे उसी को मैं अच्छा समझता हूँ। लल्लू जी ने अपनी पोथिओं में "यदा" तदा, की जगह आगरे के बोल चाल के "जद" तद, लिखे हैं।

बोलचाल में जिस शब्द के आगे "इत्यादि" लगाना होता है उस शब्द के पहिले अक्षर की जगह व कर फिर उस को दोहरा देते हैं जैसे धोती वोती=धोती इत्यादि। लोटा वोटा=लोटा इत्यादि। बहुत से लोग "इत्यादि की जगह" वग़ैरह बोलते हैं जैसे धोती वग़ैरह। अब फ़ैसला कीजिये कि नहाने के लिये धोती वोती लाओ, स्नानार्थ धोती इत्यादि लाओ, स्नानार्थ धौतवस्त्र प्रभृति लाओ, इन में कौन वाक्य बोलें जिस से मेरा आदमी झट बात को समझ ले। मेरी समझ में अगर "वोती" को भद्दा समझो तो वग़ैरह से सब साफ़ साफ़ समझेंगे। "लिये" की जगह "वास्ते" को रखना यह अपने पसंद पर है आज कल की बोलचाल में दोनों बराबर आते हैं। "उस के लिये इस काम को करो" या "उसके वास्ते इस काम को करो" दोनों बोल चाल में आते हैं। मैं "यदि" और "इत्यादि" का विरोधी नहीं पर जो बात है उसको सच कहा चाहता हूं।

खड़ी बोली–मेरे मित्र बाबूराधाकृष्णदास ने कुछ हिंदी के बारे में लिखा था, उस समय मुझ से पूछा था कि खड़ी बोली से क्या मतलब है; शायद मेरे अर्थ को वे लिखे भी हों।

हिंदी और संस्कृत में र, ड, ल का अक्सर अदल बदल हुआ करता है इसलिये "खरी बोली" के स्थान में

"खड़ी बोली" है। जैसे खरे खोटे मिले जुले सिक्कौं में से परख कर खरे सिक्कौं को चुन लेने से फिर वे खरे सिक्के कहलाने लगते हैं उसी तरह खोटी खरी बोलिऑं में से खरी को चुन लेने से खरी बोली कहलाने लगी। बोली से शब्द लिआ गया है।

अपनी भाषा में शब्दों के रहते उन की जगह भूल से जो दूसरे शब्द आ गए हौं उन्हें खोटे शब्द कहते हैं; उन्हें निकाल देने से खरे शब्द को "खरी बोली" कहते हैं। जैसे 'यह किताब अच्छी है, इस में पोथी शब्द के रहते दूसरे देश का शब्द 'किताब, आगया है। इसे निकाल देने से खरी बोली "यह पोथी अच्छी है" हुई। ऐसे ही "यह रेल गाडी किस तेज़ी से दौडती है" यहाँ "रेल" को खोटी बोली न समझना क्यौंकि इस की जगह हिंदी में दूसरा शब्द ही नहीं। इस लिये ऊपर के वाक्य को खरी बोली कहेंगे।

जो गवाँरी बोली को मोटिआ कपडा समझो और अपनी हिंदी की विभक्ति और क्रियाऔं को रेशम का टुकडा, तो मोटिए के टुकड़े में रेशम के गोटे लगा देने से नया डुपट्टा बनेगा। बहुत से लोग इसी डुपट्टे को सच्ची हिंदी कहते हैं। ए लोग गवाँरी बोली दूध में पहले से मिले हुए फ़ारसी शब्द पानी को हंस वन कर अलगाए हैं पर अलगाने में कहीं कहीं खींचा खींची से डुपट्टे में खोंच लग गए, डुपट्टा फट गया, लोगौं के काम का न रहा, अपने अपने मन के गाढे शब्दौं से जोड़ मिलाने से वह डुपट्टा और भी भद्दा हो गया।

ठेँठ हिंदी–खरी बोली ही के अर्थ में दूसरा शब्द

'ठेँठ हिंदी, चला आता है पर इस के पदोँ के अर्थ से खरी बोली का अर्थ नहीँ आता।

ऊख जब सूख जाती है तब उसे ठेँठा या ठेँठ कहते हैँ, इस लिये ठेँठ सूखे को कहते हैँ। ठेँठ हिंदी से सूखी हिंदी, जिस मेँ दूसरी भाषा का रस न हो।

पण्डित श्री अयोध्यासिंह ने इस सूखी हिंदी ते फूलोँ का गुच्छा (अधखिला फूल) तयार किया है। इस गुच्छे मेँ जो जो शब्द फूल लगाए गए हैँ उन मेँ बहुतेरे ऐसे हैँ जो खरी, या ठेँठ हिंदी मेँ कहीँ नहीँ पाए जाते। पण्डित जी ने जो "इसतरी" आदि शब्द लिखे हैँ वे बनारस वगैरह मेँ कहीँ नहीँ बोले जाते। ठेँठ हिंदी से सूखी हिंदी याने मरी हुई हिंदी अगर ली जाय तो शायद किसी पुराने जमाने मेँ लोग 'इसतरी' बोलते होँ पर किसी पुरानी पोथिओँ मेँ "इसतरी" नहीँ मिलता। तिरिया, नारी, यही शब्द मिलते हैँ आज कल तो सब जगह गवाँरोँ मेँ "मेहरारू" "मेहरिया" और औरत प्रसिद्ध है। पोथी के पढ़ने से साफ साफ जान पड़ता है कि पण्डित जी की भूमिका से वह गुच्छा नहीँ पैदा हुआ है। भूमिका मेँ जो फूल हैँ वे गुच्छे मेँ नहीँ मिलाए गए।

मुझसे पण्डित जी से आज तक भेँट नहीँ पर पण्डित जी के भाई गुरुसेवक सिंह से मुझ से भेँट है। वे मुझ से क्वीन्स कालेज मेँ बी० ए० का गणित पढते थे। पण्डित जी ने अपनी भूमिका मेँ लिखा है कि मेरे भाई से पं० सुधाकर द्विवेदी ने जो जो बातेँ पूछी थी भूमिका मेँ सब

का उत्तर हो गया। मेरे पास वह पोथी न थी मैं ने दूसरे से मँगनी लेकर दो तीन बेर भूमिका पढी पर अपनी बातौं का उत्तर कहीं नहीं देखा। मेरी बात ही क्या है, इतना ही तो कहना है कि आप जिस बोली में रात दिन बात किया करते हैं उसे लिखने के समय क्यौं भूल जाते हैं।

हिंदी रीडर की कमेटी में गवर्नमेंट की ओर से मैं भी एक मेंबर था, उस में सब अवध के मेंबर थे, लड़कपन से उन लोगौं की बोली में फारसी शब्द मिले हैं इस लिये उन्हीं के रखने के लिये उन लोगौं की राय होती थी और काम भी जल्दी में किया गया; तो भी जहाँ तक हो सका मैं ने और मेरे मित्र बर्न साहेब ने हिंदी की ओर बहुत ध्यान दिया।

राजा शिवप्रसाद फारसी के पण्डित थे स्कूल की इन्सपेक्टरी मिल जाने से इन्हें हिंदी की ज़रूरत पडी, बनारस नार्मलस्कूल के पण्डित विष्णुदत्त जी से सब अपनी पोथिआँ शुद्ध कराते थे तो भी पोथिओं में बहुत फारसी के शब्द आ गए हैं। मेरी समझ में थोडे से शब्दौं के हेर फेर से उनकी पोथिओं की भाषा बहुत ठीक हो जायगी। इन्हें पोथिओं के नामकरण पर बहुत प्रेम था, बड़े बड़े पण्डितौं की सलाह से बडे कडे संस्कृत शब्दौं में पोथिओं के नाम 'भूगोलहस्तामलक, वामामनरंजन, इतिहासतिमिरनाशक, रक्खे हैं।

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र की खास हिंदी भाषा अपने देश की बोल चाल से भरी है, कुछ यदि इत्यादि के मेल जरूर हैं। इनका बादशाह दर्पण, और मेरी बनाई इनकी

जन्मकुण्डली पर इनकी राय के पढने से साफ साफ मालूम हो जायगा कि ए उसी हिंदी को चाहते थे जिसकी चर्चा यहाँ हो रही है ।

चिट्ठी—पत्री—आज कल लोग अँगरेजी चाल पर चिट्ठी पत्री लिखने लगे हैं । जिस "डीयर" का तर्जुमा प्रिय या प्रियवर करते हैं वह अँगरेजी में बाप बेटे भाई बंधु सभी के लिये आता है, पर हमारे लोगों में सब के लिये एक शब्द नहीं आ सकता। प्रिय या प्रियवर भी बोल चाल का शब्द नहीं हैं । बहुत से लोग संस्कृत से जुदे जुदे शब्दों को लिये भी हैं पर मेरी समझ में आने जाने पर जिस चाल से जो छोटे बड़े पुकारे जाते हों उसी तरह से संबोधन में जो उनके नाम लिखे जायँ तो बहुत अच्छा हो। जैसे बाबूजी, बड़े भैया, बड़े चाचा या खाली प्रणाम, आशीर्वाद, नमस्कार, लिखना चाहिए । संबोधन के आगे बड़े छोटे के लायक़ प्रणाम, आशीर्वाद भी लगा देना चाहिए । अंत में बड़े बढ़े हितैषी,—शुभचिंतक... संस्कृत शब्दों का कुछ काम नहीं उन की जगह में बोल चाल के छोटे छोटे शब्दों को लिखना चाहिए । जैसे —

भाई रामदास, आशीर्वाद ।

कल गजेट में तुमारे बी ए पास होने की खबर देख जी बहुत खुश हुआ, भगवान से बिनती है कि दिनों दिन तुमारी बढ़ती हो । अपनी चाची से कह देना कि बड़े दिन की छुट्टी में चाचा ज्यादे कामों में लगे थे इस लिये घर

न आ सके भगवान चाहेगा तो आगे आखिरी शनीचर को रात की गाड़ी में घर आवेंगे ।

१४-१-०८ } तुमारा हितू
भगवानदास ।

मैं पहले लिख चुका हूँ कि कलम पकड़ने की नशे से मैं भी बचा नहीं हूँ पर आप और दूसरों के बचाने के उपाय में लगा हूँ । ऊपर सब जगह मैं ने "लफ्ज" की जगह "शब्द" या पद लिखा है, वह नशे का झोंक नहीं है, मेरी ओर इसका बहुत प्रचार है इस लिये जान बूझ कर लिखा है । हिंदी के पंडितों से अर्ज है कि मेरे लिखने पर ध्यान दें मानना न मानना उनकी राय पर है मैं हठी नहीं, जैसा वें लोग कहेंगे उसी को मैं भी मानूँगा पर थोड़ी सी तकलीफ और करें, आगे हिंदी में लिखी मेरी रामकहानी को धीरे धीरे ध्यान देकर पढ़ जायँ फिर हिंदी के सुधारने की तदबीर करें—

सुधाकरद्विवेदी ।

——:o:——

महाकवि मिलटन

और

उनके काव्य ।

[नवें अंक के आगे ।]

इन्होंने मुख्य कर इटाली देश में परिभ्रमण किया जहां इनकी जगत्प्रसिद्ध गलीलियो साहब से भेंट तथा बात

चीत हुई जिन्हे अनुशासन समिति (Inquisition)* ने अनेक स्वतंत्र सम्मतियां प्रकाश करने के लिये उस समय कैद कर रखा था जिनमें मुख्य यह थी कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। ध्यान देने की बात है कि जिस सिद्धान्त को प्रकाश करने के लिये योरप में यह दुर्दशा होरही थी उसके † बहुत पहिलेही भारतवासी सिद्धान्तशिरोमणिकार ने सूर्य के समान्तातर पृथ्वी का परिभ्रमण स्पष्ट अक्षरों में कहा था यद्यपि कुछ अल्पज्ञ पाश्चात्यों ने समझ रखा है कि यह सिद्धान्त गलीलियो के पूर्व भारतवासियों को विदित नहीं था।

इटली के अनेक प्रसिद्ध मनुष्यों ने तथा साहित्य समाजों ने मिलटन साहब का बड़ा सत्कार किया और उनकी प्रशंसा के इटालियन ज़बान में गीत बनाए जिनके उत्तर भी हमारे चरितनायक ने उसी भाषा के गीतों ही द्वारा दिए। आपने ग्रीक हिब्रू और रोमन भाषाओं के उत्तमोत्तम ग्रन्थों को तथा सामयिक लेखकों के लेखों को भी पढ़कर बड़ी विद्वत्ता प्राप्त की और अपने को उस महान कार्य के लिये धीरे धीरे योग्य किया जिसके निमित्त परमेश्वर ने आपको इस संसार में भेजा था।

---

* रोमन कार्थोलिक देशों में प्रचलित मत विरोधियों को दंड देने के लिये यह एक सभा थी।

† परम प्रसिद्ध अद्वीतीय ज्योतिर्विद श्रीमान् भास्कराचार्य ने अपना सिद्धान्त शिरोमणि नामक विख्यात ग्रन्थ ११५० ई० में लिखा था क्योंकि आचार्य जी स्वयं इसी ग्रन्थ में लिखते हैं कि मेरा जन्म शाके १३०६ अर्थात् १११४ ई० में हुआ और मैं ने ३६ वेर्ष की उम्र में सिद्धान्त शिरोमणि बनाया।

मिलटन साहब के सहयोगी पवित्री लोग (Puritans) धार्म्मिक दृष्टि से इनके इटालियन भ्रमणों को दूषण समझते थे। क्योंकि इटाली सारे योरप भर में संगीत के लिये प्रसिद्ध थी इसलिये उनकी दृष्टि में वह दुराचरण की खानि थी। धार्म्मिक और नैतिक उत्साह के अतिरिक्त हमारे चरित-नायक दर्शन, साहित्य, संगीत, कला कौशल इत्यादि के बड़े प्रेमी थे। आप आरगन (Organ) बाजा बहुत अच्छा बजाते थे। किन्तु ये सब गुण उस धार्म्मिक और राजनैतिक सम्प्रदाय के सभ्यों में बहुत ही कम पाए जाते थे जिसके महान् विद्रोह (Great Revolution) के समय मिलटन साहब भी सभासद थे। पवित्रयों को संगीत से इतनी चिढ़ थी कि * परमेश्वर की प्रार्थना करने में सङ्गीत से सहायता लेना उनको सह्य नहीं था। ये लोग चित्रकारी, रङ्गसाज़ी प्रभृति सुन्दर कलाओं के ऐसे विरोधी थे कि गवैयों बजवैयों और चित्रकारों को अपनी रक्षा और उन्नति के लिये केवल बादशाह प्रथम चार्ल्स और उनकी कचहरी का मुंह ताकना पड़ता था। इस भांति मिलटन साहब अपने सम्प्रदाय से इस विषय में स्पष्ट रूप से पृथक थे। संक्षेपतः बात तो यह

* हिन्दुओं के यहां प्राचीन काल से संगीत का बड़ा आदर चला आता है यहां तक कि यह ईश्वर-भजन का सर्व्व प्रधान साधन समझा जाता है। भगवान् श्रीकृष्ण का कथन है—

नाहं वसामि वैकुण्ठे, योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति, तत्र तिष्ठामि नारद॥

इसके अतिरिक्त "प्रथम नाद तब बेद" की कहावत मशहूर है। प्रिय पाठक-इस ख़याल को पवित्रियों के ख़याल से मिलाइए तो सही, कितना अन्तर है!

थी कि हमारे चरित्रनायक साहित्य और कला की सुन्दरता को बखूबी समझ सकते थे जब कि उनके सम्प्रदाय के लोग (जिनके मज़हब और मूल सिद्धान्त यद्यपि एक थे) केवल बाइबिल पढ़ते थे और साहित्य, दर्शन और कला के अहानिकर आनन्दों की ठीक वैसी निन्दा करते थे जैसी दुराचारिता और नास्तिकता की ।

जब इंगलैंड देश में विद्रोह और आपस के युद्ध (Civil war) की आग भड़कने वाली थी तब उसकी खबर आपको भी मिली । आपने ऐसे समय में स्वदेश लौट जानाही अपना प्रधान कर्तव्य समझा और सन् १६३९ ई० में सीधे घर की राह ली ।

केम्ब्रिज में रहने के समय आपने कई काव्य भी लिखे थे जिनमें सबसे उत्तम 'क्राइस्ट-जन्म, (Ode on Nativity-Brith of Christ) है जिसकी गणना अँगरेजी भाषा के उत्तमोत्तम गीतों में है । हार्टन में रहने के समय भी आपने अनेक कविताएं लिखी थीं जिनमें से लैलिग्रो* (L' Allegro) इल पेनसेरोसो (Il Penseroso) अर्किडीज़ (Arcades) कोमस (Comus) और लिसिडास (Lycidas) प्रसिद्ध हैं । लैलिग्रो

* L' Allegro=प्रफुल्लित मनुष्य, Il Penseroso=शोकित मनुष्य । थियासोफी अर्थात् ब्रह्मज्ञान किसी काल देश पात्र वा समाज की विशेष अपनी सम्पत्ति नहीं है बल्कि सब देशों सब कालों सब पात्रों और सब समाजों की साधारण जायदाद है । आधुनिक थिओसोफिकल सोसाइटी (ब्रह्मज्ञान-समाज) के पूर्व थिओसोफिस्ट (ब्रह्मज्ञानी) और थिओसोफी नहीं थी ऐसा नहीं कह सकते । इच्छा है कि कतिपय प्राचीन देशी और विदेशी थिओसोफिस्टों का वृतान्त पाठकों की सेवा में और समर्पण करूं ।

का पूरक इल पेनसेरोसा है । पहिले में प्रफुल्लित मनुष्य के उपभोग दृश्य और प्रयत्न दिखलाए गए हैं और दूसरे में शोकातुर मनुष्य के। आर्केडीज़ और कोमस अल्पाभिनय (Masque) हैं । मास्क (अल्पाभिनय विशेष) किसी राज्योत्सव के उपलक्ष में अथवा धनिकों के भवन में प्रायः खेले जाते हैं। कोमस अधिक प्रख्यात और वृहत् है । मिलटन साहब के शुभचिन्तक ब्रिजवाटर के अर्ल* (ज़मीन्दार) के मकान पर लडलो किले में १६३४ ई० में अभिनय करने के लिये कवि ने इसकी रचना की थी। अर्ल साहब की एक लड़की और दो लड़कों ने इसे पहिले पहिल खेला था† । अंगरेजी भाषा में यह सर्वोत्तम मास्क है । इसमें वार्तालाप के मिस बहुत अच्छी नीतियों का उपदेश किया गया है और यह दिखाया गया है कि सत्पंथ पर चलने वालों की बड़ी कड़ी जाँच होती है जिसमें उत्तीर्ण होने से अन्त में विजय प्राप्त होती है। इसमें दो तीन अत्युत्तम मधुर गीत भी हैं। इसमें कचहरियों की बुराइयों पर कटाक्ष हैं। लिसिडास मृत्युशोक प्रकाशक काव्य है जो कवि के एक सहपाठी की मृत्यु पर लिखा गया था। इसमें हमारे कवि जी ने क्रिस्तानी धर्म्म के कट्टरपने और हठशीलता

---

* अर्ल शराफत की तीसरी ब्रिटिश पदवी है ।

† नाटक खेलना जिसमें गाना बजाना नाचना और भाव बताना चतुष्क्रिया सम्मिलित हैं प्राचीन भारत की सभ्योचित कला थी जिससे प्रेम करने वाले रामकृष्णार्जुन प्रभृति नरोत्तम थे। समय के हेर फेर से कुसंगति के संसर्ग से यह कला आज दिन अपमानित और दूषित समझी जाती है । किन्तु इस कला के भाग्य से कुछ शुभ चिन्ह देख पड़ने लगे हैं ।

पर बहुत अफसोस करके सच्चे थिओसोफिस्ट (ब्रह्मज्ञानी) का काम किया है ।

अब मिलटन साहब ने राजनैतिक और मजहबी पुस्तिकाओं का लिखना आरम्भ किया । १६३९ ई० के अनन्तर २० वर्ष तक इन्होंने केपल १४ पक्ति वाली सैानेट (Sonnet) नाम की छोटी छोटी कविताएँ (जो इटालियन कवियों को बहुत पसन्द थीं) बहुत सी लिखीं जिनमें पीडमेंट का कतल (Massacre of Peedmont) अपने अन्धेपने और क्रामवेल पर जो सौनेट लिखे गए हैं वे बहुत विख्यात हैं ।

[क्रमशः]

—— :o: ——

सभा का कार्य विवरण ।

[१४]

प्रबन्धकारिणी सभा ।

वृहस्पति वार ता०१२ मार्च १९०८-सन्ध्या के ५½ बजे ।

स्थान-सभाभवन ।

उपस्थित ।

बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० सभापति, बाबू जुगुलकिशोर, बाबू गौरीशङ्कर प्रसाद, बाबू माधव प्रसाद, पण्डित माधव प्रसाद पाठक, बाबू गोपालदास ।

गत अधिवेशन के निश्चय नं० १० के अनुसार संयुक्त प्रदेश के शिक्षाविभाग के डाइरेक्टर को जो पत्र सभा से भेजा जाना चाहिए

था उसके मजमून पर पुनः विचार किया गया और घटा बढ़ा कर मजमून ठीक किया गया और निश्चय हुआ कि यह चिट्ठी भेजी जाय।

जुगुलकिशोर,

मंत्री ।

———:o:———

[९]

साधारण अधिवेशन ।

शनिवार ता० २८ मार्च १९०८ सन्ध्या के ६ बजे ।

स्थान—सभाभवन ।

[१] गत अधिवेशन (ता० २८ फरवरी १९०८) का कार्य्यविवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ ।

[२] प्रबंधकारिणी सभा का तारीख ३ फरवरी का कार्य्य विवरण सूचनार्थ उपस्थित किया गया ।

[३] प्रबंधकारिणी सभा के निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए –

[क] सभा की नियमावली के ग्यारहवें नियम में यह बढ़ा दिया जाय– "इनमें से १४ काशीस्थ और ६ बाहरी होंगे। बाहरी सभासद इस प्रकार होंगे–संयुक्त प्रदेश से २, पंजाब से १, बंगाल विहार से १, मध्यप्रदेश से १, मध्यभारत और राजपूताना से १ ।

[ख] २८ वें नियम के अन्तर्गत १ उपनियम में "स्थानिक" निकाल दिया जाय ।

[४] निम्न लिखित महाशय नवीन सभासद चुने गए–

[१] बाबू खेमचन्द्र, मोहर्रिर इजराय डिगरी मुंसफी सहारनपुर ३) । [२] पण्डित उदित मिश्र-नायब मुदर्रिस-शिवपुर बनारस १॥) । [३] मस्टिर जे० एम० कार-हेडमास्टर-हरिश्चन्द्र स्कूल बनारस १॥) । [४] पण्डित चंद्रदत्त शर्म्मा-शिवपुर-बनारस१॥)। [५] बाबू बलदेवप्रसाद वैश्य मुनीब, शिवपुर-बनारस १॥) । [६] पण्डित देवीप्रसाद मिश्र-मौजा खरिक-कालीसोन पो० बिहरपुर, जि० भागलपुर १॥) । [७] पण्डित राममणि दीक्षिताचार्य्य-रामकटोरा बनारस ३) । [८] बाबू त्रिवेनीप्रसाद-दारागंज-इलाहाबाद १॥) । [९] बाबू इश्कलाल-च्यराग-परगना-नागल-जिला सहारनपुर१॥) । [१०] पण्डित गौरीशंकर व्यास-प्राइवेट सेक्रेटरी श्रीमान् इन्द्रगढ़-नरेश, इंद्रगढ़ ३) । [११] बाबू चुन्नीलाल-बरना का पुल-काशी १॥) । [१२] रेवरेंड ई० एच० एम० वालर-सिगरा-बनारस ३) । [१३] बाबू गणेशप्रसाद नारायण शाही चौकाघाट-बनारस २५) । [१४] लाला अर्जुनदास वसुदेव-एक्स्ट्रा असिस्टेण्ट कमिश्नर गुरगांव ।

[५] सभासद होने के लिये निम्न लिखित महाशयों के नवीन आवेदनपत्र सूचनार्थ उपस्थित किए गए –

[१] बाबू रामनाथ राय शिक्षक अगरौली पाठशाला–पो० भेलसड़ जि० बलिया । [२] पण्डित साधुशरण पाण्डेय शिक्षक शिवपुर दियर पो० भेलसड़ जिला बलिया । [३] पण्डित गंगादीन द्विवेदी C/o चैाधुरी रनबहादुरसिंह रामनगर बनारस । [४] पण्डित बैजनाथ मिश्र भारद्वाजी, गायघाट, काशी । [५] पण्डित हरिशंकर जुटसी, गायघाट, काशी । [६] पण्डित वसंत शर्म्मा टंडनी कोठी भंग, सहारनपुर । [७] पण्डित बद्रीनारायण मिश्र डिप्टी इंसपेक्टर-आफ स्कूल्स इलाहाबाद । [८] बाबू खुशहालसिंह मानी पो० फूलपुर जि० बनारस । [९] पण्डित रामदत्त पंत-असिस्टेंट इंस्पेक्टर आफ स्कूल्स जि० गोरखपुर । [१०] मिस्टर सी० वाई० चिंतामणि असिस्टेंट सेक्रेटरी इंडियन इंडिस्ट्रियल कानफरेंस अमरावती (बरार)।

[६] निम्न लिखित पुस्तकें धन्यवादपूर्वक स्वीकृत हुईं—

[१] सेठ खेमराज श्री कृष्णदास, बम्बई ।

भक्तमाल हरिभक्तप्रकाशिका, वैश्यकुलभूषण, हारीत संहिता, श्रीमद्भगवद्गीता पंचरत्न, भक्तसागरादि १७ ग्रंथ, लघुसिद्धांतकौमुदी, आध्यात्म रामायण भाषा, पत्री मार्ग प्रदीपिका, बुद्धिप्रवेश भा० १, ३, मानसागरी, आल्हा रामायण सातोकाण्ड, शीतलापरिहार, रसमोदक हजारा, महामन मोहनी, मीज़ान तिब्ब, ज्वरतिमिरनाशक, विवाहपद्धावली, विवाह पद्धति, वीर मालोजी भैांसले, कर्मविपाक संहिता, सुशीला विधवा, जातिनिर्णय, भुवनदीपक, दत्तात्रेय तंत्र, आश्चर्य्य योगमाला तंत्र, सिद्धांत योग, लग्नवाराही, जोगलीला, रंभा और माधव, वृहद्द्रावक होडाचक्र, बाल शिशु विवाह नाटक, फूल चरित्र, व चिड़िया चरित्र, गुप्तनाद, वंध्यातंत्र, मसलनामा, जानकी सत्सई, एक मारवाड़ी की घटना, हास्य उपन्यास, मनहरण उपन्यास, कादम्बरी, मृत्युसभा प्रहसन, ऋषिपंचमी व्रत कथा, छंदपयोनिधि, राजनीति पंचोपाख्यान, तर्कसंग्रह भाषा टीका, स्तोत्र रत्नमाला, ज्योतिष की लावणी, पञ्चयंत्र, चर्पट पञ्जरी, जंजीरा, जादू बंगाला, नशा खण्डन चालीसी, द्रव्य स्तोत्र, गोपी वियोग की बारहखरी, वर्ष योग समूह, वर्ष ज्ञान, तुलसीदास का जीवन चरित्र, शिवरात्रिमाहात्म्य, संसार का महास्वप्न, राधा सुधानिधि स्तोत्र, पुरंजनाख्यान, शकुन्तला नाटक, परिहास दर्पण, मुहूर्त गणपति, शतश्लोकी, रघुवंश महाकाव्य, क्षेत्रप्रकाश, आत्मपुराण, भर्तृहरिशतक, श्री सीताराम पीयूष अमृत की बूंद, श्राद्धादर्पण, प्रेमाम्बु बारिधि, प्रेमाम्बु प्रस्रवण, प्रेमाम्बु प्रवाह, द्रव्यगुण शतक छोटा, अमृत लहरी, माधव शकुनेन्दु चंद्रिका, स्वामी दयानंद मतपरीक्षा, हरिनाम सुमिरिणी, आरती संग्रह, हनुमद्बन्दी मोचन, प्रेमप्रपञ्च, ज्ञानमाला, व्यापार समाचार, गोविन्दाष्टक, ज्ञानभैषज्य मंजरी, कल्पपञ्चक प्रयोग श्रीकृष्णचंद्रचंद्रिका, प्रथम वैष्णव शास्त्र, नीतिमनोरमा, ज्ञानानंद रत्नाकर दूसरा भाग, मुहूर्त मंजरी, कल्याण कल्पद्रुम, ऊषाचरित्र, जातक चंद्रिका, महाभारत,

विराट पर्व नेपाली, गणेश सङ्कठ चतुर्थी कथा, मुक्ताभरण सप्तमी व्रतकथा, पंचभीष्मक कथा, अनन्तव्रत कथा, अजिर विहार।

[२] पं० गणेश प्रसाद शुक्ल काशी—रस लहरी, ऊषा अनिरुद्ध का व्याह आल्हा, [३] सुख संचारक समिति, मथुरा—सुख सञ्चारक पञ्चाग सम्वत् १९६५ का, [४] बाबू मुकुन्दलाल काशी—ब्रह्मद्रोह का फल। [५] बाबू मनोहर जी काशी—रामचंद्रोदय, सदुपदेश, अङ्कगणित, सङ्कट मोचन, प्राइमरी भूगोल, रेखागणित, भावार्थ सिंधु, हिन्दी भूगोल, [६] खरीदी गईं—आर्य भजन संग्रह, शकुन्तला पिंकट साहब की, जनक बाग दर्शन, चंद्रशेषर, श्रीमद्भगवद्गीता सुबोध कौमुदी टीका सहित, वायसनेय संहितोपनिषद्, तलवकारोपनिषद् मुण्डक उपनिषद् और माण्डूक्य उपनिषद्, प्रश्न उपनिषद् ऐतरेय उपनिषद्, बृहदारण्यक उपनिषद्, आर्ष ग्रंथावली भा० ३ स० १, २, ५, ६, ७, और ८ [७] पण्डित विनायक शास्त्री वेताल काशी—शिक्षापत्री ध्वान्तभास्कर।

[८] Indian Antiquary for December 1907.

[९] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

जुगुल किशोर,

मंत्री।
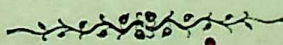
बोर्ड आफ ट्रस्टीज़

का एक साधारण अधिवेशन सोमवार ता० ६ अप्रैल को सन्ध्या के ५॥ बजे सभाभवन में हुआ ।

उपस्थित ।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी—सभापति, पण्डित रामनारायण मिश्र, बाबू जुगुलकिशोर, बाबू श्यामसुन्दर दास ।

[१] गत अधिवेशन का कार्य्य विवरण पढ़ागया और स्वीकृत हुआ ।

[२] निश्चय हुआ कि जब कहीं से निश्चित् आय की कुछ भी आशा नहीं है तो कोई बजेट नहीं बनाया जा सकता ।

[३] निश्चय हुआ कि स्थायी कोश के लिये रुपया एकत्रित करने के निमित्त जून मास के आरम्भ में निम्न लिखित महाशय इलाहाबाद तथा अन्य स्थानों में जांय ।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी, बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०, बाबू जुगुलकिशोर, बाबू माधवप्रसाद ।

आगामी वर्ष के लिये बाबू गौरीशंकर प्रसाद और बाबू लक्ष्मीदास आडिटर चुने गए ।

श्यामसुन्दरदास,

सहायक मंत्री ।

[१५]

प्रबन्धकारिणी सभा।

सोमवार ता० ६ अप्रैल १९०८ सन्ध्या के ६ बजे।

स्थान-सभाभवन।

उपस्थित।

महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी-सभापति, बाबू श्यामसुन्दर दास, बाबू जुगुलकिशोर बाबू गौरीशंकर प्रसाद, बाबू माधव प्रसाद, रेवरेंड ई० ग्रीव्स, पण्डित रामनारायण मिश्र, पण्डित माधव प्रसाद पाठक, बाबू गोपाल दास।

[१] गत अधिवेशनों (ता० ८ मार्च और १२ मार्च ०८) के कार्य्य विवरण उपस्थित किए गए और स्वीकृत हुए।

(२) बाबू श्यामसुन्दर दास का यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि सभा हिन्दी के विद्वानों तथा सेवियों को प्रति वर्ष कुछ उपाधियां दिया करे।

निश्चय हुआ कि अभी इस प्रस्ताव के अनुसार कार्य करने की आवश्यकता नहीं जान पड़ती।

[३] सभा के क्लार्क बाबू महादेव प्रसाद का प्रार्थना पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने बिना वेतन के ६ मास की छुट्टी मांगी थी।

निश्चय हुआ कि बाबू महादेव प्रसाद की छुट्टी स्वीकार की जाय और पण्डित विश्वनाथ तिवारी उनके स्थान पर ६ मास के लिये १० मासिक वेतन पर नियत किए जांय।

[४] ग्वालियर की हिन्दी हस्तलिपि परीक्षा के पर्चों के सम्बंध में सब-कमेटी की रिपोर्ट उपस्थित की गई।

निश्चय हुआ कि ग्वालियर से जो भिन्न भिन्न विभाग के परचे छांट कर आए हैं वे यदि ठीक हैं तो कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार बालकों को पारितोषिक और प्रशंसा पत्र दिए जांय । इस विषय की जांच ग्वालियर चिट्ठी लिख कर की जाय ।

[५] सभा के चैाकीदार तथा पुस्तकालय के चपरासी का प्रार्थना पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन लोगों ने प्रार्थना की थी कि सभाभवन में उन्हें रहने की कोठरी के आगे रसोई बनाने के लिये एक ओसारा बनवा दिया जाय ।

निश्चय हुआ कि बाबू माधव प्रसाद से प्रार्थना की जाय कि वे ३०) रु० तक के व्यय में एक उपयुक्त ओसारा बनवा दें ।

[६] हिन्दीग्रंथोत्तेजक पारितोषिक के लिये औद्योगिक और कला सम्बन्धी शिक्षा के प्रचार के विषय में कुँअर प्रतिपाल सिंह का लेख पण्डित माधव राव सप्रे, बाबू ठाकुर प्रसाद और बाबू श्यामसुन्दर की सम्मति के सहित उपस्थित किया गया ।

निश्चय हुआ कि कुँअर प्रतिपाल सिंह को इस लेख के लिये पारितोषिक दिया जाय ।

[७] पण्डित रामनारायण मिश्र का ६ मार्च का पत्र उपस्थित किया गया जिसके साथ उन्होंने श्रीमान् राजा साहब भिनगा का २२ मार्च का पत्र भेजा था कि सर टी माधव राव के माइनर हिंट्स की ५०० प्रतियों के अनुवाद और छपोई में ३००) से अधिक व्यय नहीं होना चाहिए । साथ ही पं० चंद्रधर शर्म्मा और बारहट केशरी सिंह के पत्र उपस्थित किए गए जिनमें उहोंने लिखा था कि उहोंने इस पुस्तक का अनुवाद किया है ।

निश्चय हुआ कि यदि इस पुस्तक की केवल ५०० प्रतियां छपवानी हैं तो श्रीमान् राजा साहब का यह प्रस्ताव स्वीकार किया जाय ।

पंण्डित चन्द्रधर शर्म्मा और बारहट केशरी सिंह के अनुवाद मँगवाए जांय और उनके आने पर पण्डित रामनारायण मिश्र से प्रार्थना की जाय कि वे इनके विषय में सभा को अपनी सम्मति दें ।

[८] बाबू अमीर सिंह का ३० मार्च का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने बिना वेतन के तीन मास की छुट्टी माँगी थी।

निश्चय हुआ कि उनकी छुट्टी स्वीकार की जाय।

[९] बाबू भगवानदास एम० ए० का ५ अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने अस्वस्थता के कारण हिन्दी कोश कमेटी का सभासद होना अस्वीकार किया था।

निश्चय हुआ कि उनका इस्तीफा स्वीकार किया जाय।

[१०] पण्डित रामनारायण मिश्र का ५ अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने प्रस्ताव किया था कि सभा के लाइब्रेरियन पण्डित गोविन्द प्रसाद का कार्य्य अब बहुत सन्तोष जनक है अतः उनका मासिक वेतन दो रुपया और बढ़ा दिया जाय।

निश्चय हुआ कि १ अप्रैल १९०८ से उनका मासिक वेतन २) रु० बढ़ा दिया जाल।

[११] पण्डित हरनन्दन जोशी का १ अप्रैल का पत्र उपस्थित किया गया जिसमें उन्होंने पूछा था कि क्या सभा एक शिक्षा विभाग सम्बन्धी मासिक पत्र निकालने का भार ले सकती है।

निश्चय हुआ कि उन्हें तार द्वारा सूचना दी जाय कि सभा इस कार्य्य के भार लेने क सहर्ष उद्योग कर सकती है।

[१२] सभापति को धन्यवाद दे सभा विसर्जित हुई।

जुगलकिशोर,

मंत्री।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय व्यय का हिसाब।

मार्च १९०८।

आय	धन की संख्या			व्यय	धन की संख्या		
गत मास की बचत	११२९	१३	७	आफिस के कार्यकर्ताओं का वेतन	७६	८	०
सभासदों का चन्दा	४१	१३	०	पुस्तकालय	१०९	२	९
पुस्तकों की बिक्री	१९५	७	३	पृथ्वीराज रासो	२०	१	०
रासो की बिक्री	१३३	०	०	नागरी प्रचार	२३	६	०
पुस्तकालय	५७	४	०	पुस्तकों की खोज	५८	९	०
राधाकृष्णदास स्मारक	२०	०	०	फुटकर	१५	७	९
स्थायी कोष	०	२	०	डांक व्यय	५१	१२	९
				हिन्दी कोष	२९८	१	६
	१५६८	७	१०	छपाई	३९	१४	०
				स्थायी कोष	६०	०	०
				पुस्तकों की बिक्री	६२	४	०
				असबाब	११	०	०
				जोड़	८२६	२	९
देना ६०००)				बचत	७३२	५	१
				जोड़	१५६८	७	१०

जुगुलकिशोर, मंत्री।

प्राचीन भारतवर्ष की सभ्यता

के

इतिहास का तीसरा भाग छप गया मूल्य १)

मि० रमेशचन्द्रदत्त के लिखे हुए पुस्तक का

(अनुवाद)

यह पुस्तक काशी "इतिहास प्रकाशक समिति" की ओर से छपी है। हिन्दी भाषा में अपने ढंग का नया इतिहास है और भाषा में इतिहास के अभाव को दूर कर रहा है। इस पुस्तक के अधिक बिकने से नए नए इतिहास "समिति" की ओर से निकल सकेंगे अवश्य मंगाइए।

मूल्य--भाग पहिला १) भाग दूसरा १) भाग तीसरा १)

पुस्तक कार्य्यालय
धर्म्मकूप
बनारस सिटी

लाला लाजपत राय जी

की लिखी हुई

मेज़िनी के जीवन चरित्र

का हिन्दी अनुवाद

बा० केशव प्रसाद द्वारा

छप गई स्वस्ति छप गई

मूल्य ।)

क्या आप खरीदेंगे ? यदि खरीदें तो पता नीचे लिखा है

पुस्तक कार्य्यालय
धर्म्मकूप
बनारस सिटी

भारत प्रेस बनारस।

सभा के पारितोषिकों की सूची।

१ इस वर्ष के सभा के नियमित दो मेडलों के लिये निम्न लिखित विषय नियत हैं। ये लेख ३१ दिसम्बर १९०८ तक सभा में आजाने चाहिएं।

वैज्ञानिक विषय।

प्राकृतिक अवस्था का उत्तर भारत के सामाजिक जीवन पर प्रभाव।

साधारण (विद्या) विषय।

अकबर के पूर्व हिन्दी की अवस्था।

२ डाक्टर छन्नूलाल मेमोरियल मेडल—यह सोने का मेडल उस व्यक्ति को दिया जायगा जिसका लेख "छूत वाले रोग और उनसे बचने के उपाय" पर सबसे उत्तम होगा। लेख सरल हिन्दी में होना चाहिए और सभा के पास ता० ३१ दिसम्बर १९०८ तक आजाना चाहिए।

३ कालिदास रजत पदक-हल्दी घाट के युद्ध पर खड़ी बोली में जो सबसे अच्छी कविता लिखेगा उसे यह चाँदी का मेडल दिया जायगा। कविता ३० जून १९०८ तक पहुंच जानी चाहिए।

४ संयुक्त प्रदेश के न्यायालयों में जो अर्जीनवीस सब से अधिक अर्जियां लिखकर सन् १९०८ में दाखिल करेगा [illegible] २५) रु० का एक पुरस्कार दिया जायगा और जो उससे [illegible] अर्जियां देगा उसे १५) रु० पुरस्कार दिया जायगा। [illegible] स्कार एकही ज़िले के दो अर्जीनवीसों को न मिलेंगे न

वे इसे पा... जो सभा की ओर से इस कार्य के लि
वेतन पर नियत हैं। जो लोग इस पुरस्कार को पाया चा
उन्हें उचित है कि दो प्रतिष्ठित वकीलों के हस्ताक्ष
सहित .. जनवरी १९०९ तक सभा को सूचना दें कि उन्हों
कितनी अर्जियां सन् १९०८ में दाखिल की हैं।

बाबू राधाकृष्णदास विरचित

प्रतापनाटक

का

दूसरा संस्करण

छपकर तय्यार है।

मूल्य ॥)

बाबू कालिदास माणिक

रचित

सचित्र

सरल व्यायाम

[बालिकाओं के लिये]

छप कर तय्यार है।

मूल्य ।≤)

जुगुलकिशोर,
मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा,
काशी।